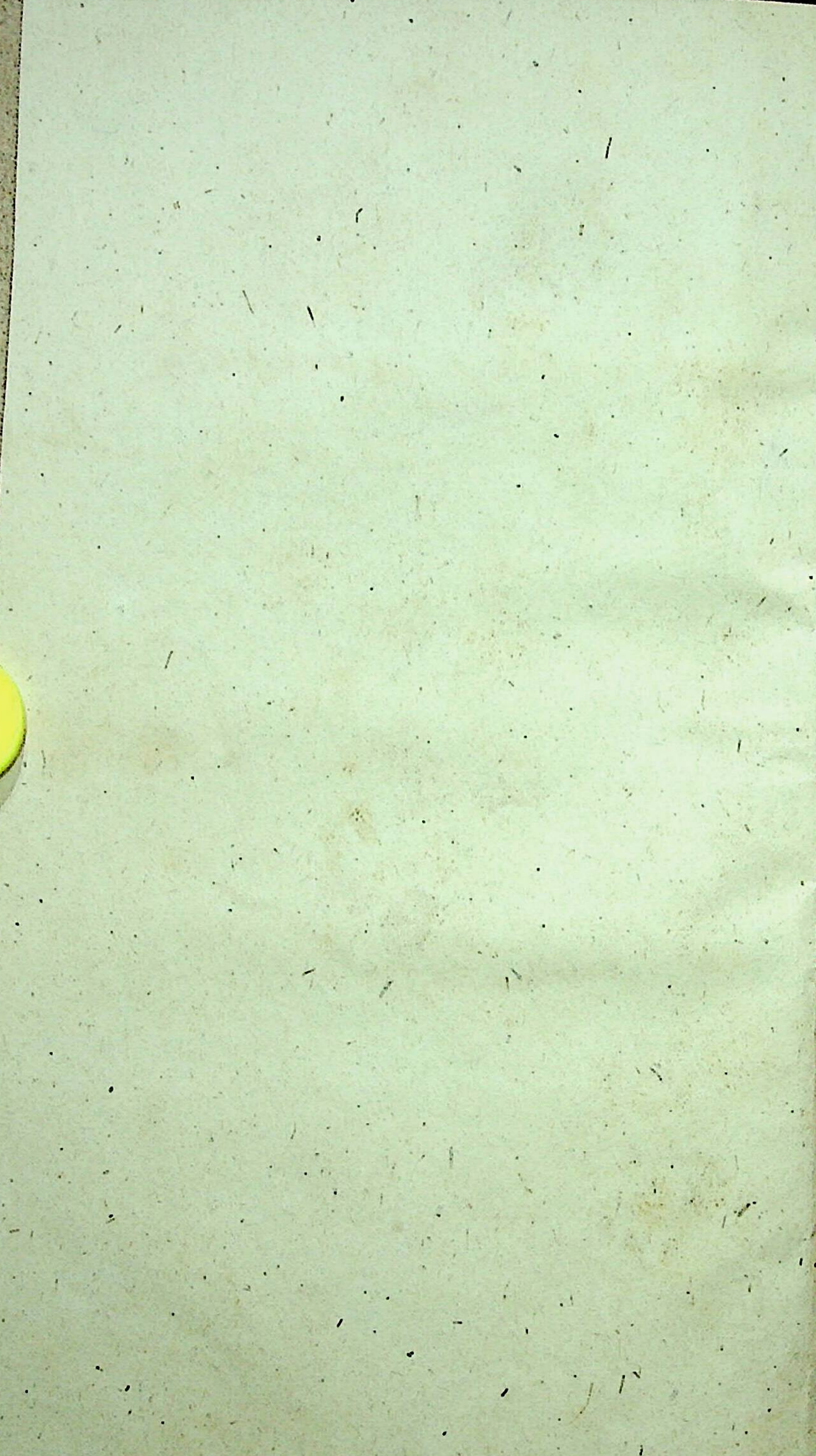






॥ ईशावास्य उपनिषद् ॥

जिसका भाषाटीका

मध्यदेशी भाषा में बाबू जालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर जिला फ़ैजाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल व लखनऊ व पोस्टमास्टर जनरल रियासत ग्वालियरने पण्डित गङ्गादत्त जोशी और पण्डित रामदत्त जोशीकी सहायता से अनुवाद किया—

तिसको

श्रीमान् परमधार्म्मिक शुभगुणनिधान मुंशी प्रयागनारायणजीने सर्वलोकहितार्थ—

पहिली बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव के प्रबन्धसे

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के यन्त्रालय में मुद्रित कराया

सन् १९०८ ई० ॥









आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम् । यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यर्वाक् तीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः । षट्चक्रादिविचारसारकुशला नन्दन्ति योगीश्वराः तं वन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् ॥ २ ॥

दो० करौं बन्दना ब्रह्मको । जो अनन्त निजरूप ॥
जेहिजानेजगभ्रमसकल । मिटै अन्धतम कूप ॥
नाम रूप जामें नहीं । नहीं जाति अरु भेद ॥
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं । रहित त्रिविध परिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद । ताका करूं विचार ॥
भाषामें तिस अर्थको । लखै सकल संसार ॥
सन्त संगसे जो लख्यो । सो मैं करूं बखान ॥
परमानन्द सहाय ते । जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट । अकबरपुर है गांव ॥
जन्मभूमि मम जान तू । जालिमसिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है, इस के पार होने के लिये उपनिषद् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौका है, जिस में बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागरके पार होगये हैं, और होते जाते हैं, और भविष्यत्काल में होंगे, जो मुमुक्षुजन हैं उनके हितार्थ यह भाषा टीका रचीगई है।

इसटीका में पहिले मूलमन्त्र है, फिर पदच्छेद है, फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दिया है, और दक्षिण हस्तकी ओर पदार्थ लिखा है, यदि वामतरफ का लिखा हुआ ऊपर से नीचेतक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा, और यदि दक्षिण हस्तके तरफवाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्यदेशीय भाषा में मिलेगा, और यदि बायेंतरफ से दाहिने तरफ को पढ़ाजावे तो हरएक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलैगा, जहांतक होसका है, प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्तिके अनुसार लिखागया है, इस टीका के पढ़नेसे संस्कृत विद्याका भी अभ्यास होगा, इस टीका में मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पाया है, और मन्त्रका पूरा २ अर्थ उसीके शब्दोंहीं से सिद्ध कियागयाहै, अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगई है, हां कहीं कहीं ऊपरसे संस्कृत पद मन्त्र के अर्थ स्पष्ट करनेके लिये रखागया है, और उसपदके प्रथम यह + चिह्न लगा दिया गयाहै, ताकि पाठकजनोंको विदित होजावै कि यह पद मूलका नहीं है । इस टीकाको बाबू जालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल व लखनऊ व पोस्टमास्टर जनरल रियासत ग्वालियर सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गङ्गादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अलमोड़ाख्य नगरके रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान् पुरुषों के चरणकमल में अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धताहो उससे टीकाकर्ता को सूचनाकरें ताकि अशुद्धता दूर होजावै ॥

अथ ईशावास्योपनिषद् ॥

हरिः ॐ यजुर्वेदीयवाजसनेयसंहितायाम्
ईशावास्योपनिषत् तत्र आरम्भशान्तिः

मूलम् ॥

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्ष-
भिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳩसस्तनूभिर्व्यशेम-
हिदेवहितंयदायुः ॥ १ ॥

पदच्छेदः

भद्रम् कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रम् पश्येम
अक्षभिः यजत्राः स्थिरैः अङ्गैः तुष्टुवांसः तनूभिः
व्यशेमहि देवहितम् यत् आयुः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यजत्राः =	हे पूजनकरने वालों की रक्षाकरनेवाले	+भवत् प्रसादात् =	तुम्हारी कृपा से
		कर्णेभिः =	कानोंद्वारा
		भद्रम् =	कल्याणको
देवाः =	देवताओ	शृणुयाम =	सुनैं हम

+च = और
अक्षभिः = नेत्रोंद्वारा
भद्रम् = कल्याणको
पश्येम = देखैं हम
×च = और
स्थिरैः = स्थिर याने दृढ़
अङ्गैः = अंगोंकरके
×च = और
+स्थिराभिः = स्थिर याने दृढ़
तनूभिः = शरीरोंकरके
+युष्माकम् = आपकी
तुष्टुवांसः = सदा स्तुति करतेहुये
×वयं = हम
आयुः = आयुको
यत् = जोकि
देवहितम् = देवतों का हितहै याने यज्ञ दान आदिसेदेवतों का हित करनेवाला है
व्यशेमहि = प्राप्तहोवैं
×ॐशान्तिः शान्तिः शान्तिः = हमारे ताप त्रय की शान्तिहोवै अर्थात् आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैविकरूप जो दुःखत्रय हैं उनका नाशहोवै

ॐहरिःॐ

मूलम् ॥

ईशावास्यमिदꣳसर्वं यत्किंचजगत्याञ्जगत् तेन त्यक्तेनभुञ्जीथा मागृधः कस्यस्विद्धनम् ॥ १ ॥

पदच्छेदः

ईशा वास्यम् इदम् सर्वम् यत् किञ्च जगत्याम्

जगत् तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः माग्रधः कस्यस्वित् धनम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यत्किञ्च	= जो कुछ	त्यक्तेन	= पृथक् होकरके
जगत्याम्	= जगत् बिषे	+ स्वात्मानम्	= अपने आत्माको
जगत्	= नामरूपात्मक जगत् है	भुञ्जीथाः	= रक्षाकरै
+ तत्	= सो	+ च	= और
इदम्	= यह	कस्यस्वित्	= किसीके भी
सर्वम्	= सब	धनम्	= { विषय भोगरूपधनकी
ईशा	= ईश्वरकरके	माग्रधः	= आकांक्षा न करै
वास्यम्	= आच्छादित है		
तेन	= तिससे यानी जगत् से		

ॐम्

भावार्थ।

"ईशावास्यमिदꣳसर्वमिति" "उपनिषद्" में तीन पद हैं, उपनिषदें, "उप,, पदका अर्थ समीपताहै, या ऐक्यता है, और "नि" पद का अर्थ निश्चयहै, और "षद्" पदका अर्थ नाश या मुक्ति है तीनोंपदोंके मिलने से ऐसा अर्थ होताहै कि जो जीव और ब्रह्मके अभेदको विषयकरनेवाली ब्रह्मविद्या है, वह विद्वानों के जन्म मरण रूपी अनर्थको नाशकरके ब्रह्मको प्राप्त करती है, या बुद्धि के समीपस्थित ब्रह्म की प्राप्ति करनेवाली जो निश्चयकरके विद्या

है, उसीविद्याका नामही ब्रह्मविद्या है, वह ब्रह्मविद्या जिस ग्रन्थमें होवे, उस ग्रन्थका नाम उपनिषद् है, ब्रह्मविद्याका साधक होने के कारण लक्षणकरके ग्रन्थका नामभी उपनिषद्है और अज्ञात जो ब्रह्म है सो प्रत्यक्षादि प्रमाणों करके इस ग्रन्थका विषयहै, ब्रह्मविद्याद्वारा मुक्ति इसका फल है, और प्रतिपाद्य प्रतिपादक भाव इसका संबन्धहै, अर्थात् जीव ब्रह्मकी ऐक्यता प्रतिपाद्यहै और ग्रन्थ उसका प्रतिपादकहै, और विवेक, वैराग्य, समाधि, षट्सम्पति, और मुमुक्षता, ये चार ज्ञानके साधन हैं, इनहीं चारोंसाधनों करके संपन्न जो पुरुष है, वही इस ग्रन्थका अधिकारी है, और विषय, प्रयोजन, सम्बन्ध अधिकारी इन चारों का नामही अनुबन्धचतुष्टय है, और अनुबन्ध चतुष्टय होनेके कारण विद्वानों को यह ग्रन्थ स्वीकारही करने योग्य है, और ईश्वर प्रणीत होनेके कारण सर्व प्रमाणों से मुख्य प्रमाणता भी इसीहीकी ऋषियों ने मानी है, इसलिये मुमुक्षु पुरुषोंको उचित है कि इसी उपनिषद्के श्रवण मननका अभ्यास करें ॥ अब ग्रन्थका प्रारंभ करते हैं ॥ कोई एक स्थूल बुद्धिवाला जो कर्मी पुरुषहै ऐसा मानताहै कि "ईशावास्यं" इत्यादि जो मंत्र हैं, सो इषेत्वादि मन्त्रों की तरह मंत्रात्वहेतु होनेसे कर्मकाही प्रतिपादिक हैं ॥ जैसे "इषेत्वादि" मन्त्रों में मंत्रत्व हेतु है, और कर्म का प्रतिपादकत्वरूप साध्य भी है, तैसे ही ईशावास्यादि मंत्रों में भी मंत्रत्व हेतु है, इनको भी कर्मका प्रतिपादक मानो इस अनुमान करके कर्मी लोग, ईशावास्यादि मंत्रों को भी कर्मका प्रतिपादक मानते हैं, सो उनका मानना ठीक नहीं है, क्योंकि ईशावास्यादि जो मंत्रहैं, वे आत्माके यथार्थ स्वरूपको प्रकाशते हैं, और इसी उपनिषद् के अगले मंत्रों ने आत्मा के स्वरूपको शुद्ध, नित्यमुक्त, सर्वगत, पापसे रहित, कहा है, यदि इन मंत्रोंको कर्मका प्रतिपादक मानोगे तो इनके अर्थके

---

१ जैसे "इषेत्वा" इस मंत्र करके यज्ञमें पलाश की शाखा का छेदन कियाजाताहै १

साथ विरोध होगा, आत्मा शेष और मंत्र शेषीहोजायेंगे, जो जिसके लिये होता है वह शेष कहाजाता है, और दूसरा शेषी कहा जाता है जैसे "पुरोडाश" एक त्रिकोनरोट यज्ञ में यज्ञकर्म के लिये पकायाजाता है रोट, कर्मका शेष कहाजाता है, क्योंकि वह उत्पाद्य होताहै, अर्थात् उत्पन्न कियाजाता है, सो आत्मा ऐसा नहीं है, इसलिये कर्मका शेष नहींहै, इसलिये यह सिद्धहुआ कि इशावास्यादि मंत्रकर्मका बोधक नहीं हैं, परन्तु आत्मा के यथार्थ रूपको प्रतिपादन करते हैं, जो पुरुष आत्मा को अनेक मानता है, और कर्त्ता, भोक्ता, स्वर्गी, नर्की, मानता है, उसी को कर्मों में अधिकार है, जो पुरुष पूर्वोक्त रीतिसे विलक्षण अकर्ता, अभोक्ता, एक, व्यापक, असंग मानताहै, उसको कर्मों में अधिकार नहींहै, उसीको उपनिषद् के अवलोकन में अधिकार है ॥ अब इशावास्य मन्त्रके भावार्थको लिखतेहैं ॥ गुरु या ज्ञानी मुमुक्षु या शिष्य प्रति कहता है हे प्रियदर्शन ! यह तत्पदकालक्ष्य स्वरूप ईश्वर करके नानाप्रकारकी प्रतीतियों का विषयभूत संपूर्ण जगत् आछादित है, अर्थात् व्याप्त है ॥ और जो कुछ ईश्वर ने तुझको दिया है, उसको स्वीकारकरके किसी के धनकी इच्छा मतकर। न कर्म्मणानप्रजयाधनेनत्यागेनैकेअमृतत्वमान शुरिति ॥ न कर्म्मों करके न प्रजा करके न धन करके कोई मोक्षको प्राप्त होता है, किंतु इनके सबके त्याग से ही मोक्ष मिलताहै, श्रुति भी कहती है, कि पुत्र वित्तलोक लोकान्तर की इच्छा को त्याग करके मुमुक्षु ज्ञान होने पर संन्यस्त आश्रम को ग्रहण करे, यह मंत्र केवल ज्ञानी संन्यासी के लिये है, क्योंकि वह अपने आत्माको सब में और सबको अपने आत्मा में देखता है, उसके अन्तःकरण में जगत्भाव आत्मा से विमुक्त नहीं रहता है ॥

यह प्रथम मंत्रका उपदेश उत्तम अधिकारी मुमुक्षु के लिये है ॥

मूलम् ॥

कुर्व्वन्नेवेहकर्म्माणि जिजीविषेच्छतंसमाः
एवन्त्वयिनान्यथेतोऽस्ति नकर्म्मलिप्यतेनरे ॥ २ ॥

पदच्छेदः

कुर्व्वन् एव इह कर्माणि जिजीविषेत् शतम् समाः एवम् त्वयि न अन्यथा इतः अस्ति न कर्म्म लिप्यते नरे ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इह	= इससंसार में	अन्यथा	= और कोई उपाय
कर्माणि	= निष्काम कर्मों को	न	= नहीं
एव	= अवश्यही	अस्ति	= है
कुर्वन्	= करते हुये	एवम्	= इस प्रकार करते हुये
शतम्	= सौ	त्वयि	= तुझ
समाः	= वर्ष	नरे	= मनुष्य बिषे
जिजीविषेत्	= जीनेकी इच्छाकरै	कर्म	= कर्म्म
		न	= नहीं
इतः	= इसके सिवाय	लिप्यते	= लिपायमान होगा

नोट–लिप्यते यह वर्तमान काल है परन्तु अर्थ भविष्यत्काल काही देताहै और इस मन्त्र का उपदेश मध्यमाधिकारी मुमुक्षु के प्रति है ॥ २ ॥

भावार्थ।

कुर्वन्नेवेहेति॥ जो पुरुष धन का अभिलाषी है, और ईश्वर के जानने में भी असमर्थ है, उसका त्याग में अधिकार नहीं, उसके प्रति श्रुतिकर्महीं करनेका उपदेशकरती है॥ इहेति॥ इसमृतलोक मेंअधिकारी पुरुष नित्यकर्म जो अग्निहोत्र और सन्ध्यादिकहैं,उन को करता हुवा और फलकी अभिलाषा से रहितहोताहुवा सौ वर्ष तक जीनेकी इच्छा करे,हे शिष्य! इसप्रकार जब तू कर्मकरेगा तब तू कर्म के बंधन में नहीं पड़ेगा,अर्थात् कियेहुये कर्म तुझको जन्ममरणरूपी संसार में नहीं बांधेंगे,किंतु अन्तःकरणके शुद्धि के हेतु होवेंगे और अन्तःकरण के शुद्धि होनेपर ज्ञानकी प्राप्ति होगी और ज्ञानद्वारा मुक्ति को तू प्राप्त होगा इसलिये स्ववर्णाश्रम के कर्मोंका अनुष्ठान करना उचित है, गृहस्थ पुरुषको उनका त्याग उचित नहीं है॥ २॥

मूलम्॥

असुर्य्यानामतेलोका अन्धेनतमसावृताः
तांस्तेप्रेत्याभिगच्छन्ति येकेचात्महनोजनाः ३॥

पदच्छेदः

असुर्य्याः नाम ते लोकाः अन्धेन तमसा आवृताः
तान् ते प्रेत्य अभिगच्छन्ति ये के च आत्महनः जनाः

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+ये	जो	आवृताः	आवृत हैं
लोकाः	लोक	ते	वे
अन्धेन	अदर्शनात्मक (अति)	असुर्य्याः	असुरोंकेसमान
तमसा	अज्ञान से	नाम	प्रसिद्ध हैं
		च	और

ये = जो	जनाः = जनहैं
के = कोई	ते = वे
आत्महनः = आत्महत्यारे याने अपनेआत्माकोनहीं उद्धार करनेवाले	तान् = उन लोकों को
	प्रेत्य = मरकरके
	अभिगच्छन्ति = प्राप्त होते हैं

भावार्थ ।

असूर्या नामतेलोकेति॥ यह तीसरामंत्र अज्ञानी कर्मियों का निंदाकरता है ॥असूर्याइति ॥ सुष्ठुरमंतेइतिसुरा ॥ भलीप्रकारसे जो आत्मामें रमणकरैं व क्रीड़ाकरैं,उनकानाम सुराहै,वही आत्माराम कहेजाते हैं, उनसे जो भिन्न विषयोंमें रमण करनेवाले हैं,वे असुरकहेजाते हैं,उनके कर्मोंसे उत्पन्न हुये जो लोकहैं,औरजिनमें वे जाकर भोगते हैं, वे असुर लोक कहे जाते हैं,लोककाअर्थ यहां योनि है,अर्थात् कामुक कर्मोंके करनेवाले कूकर सूकरादि योनियोंमें जाते हैं,और वेदविहित कर्मोंके करनेवाले देवतादि योनियोंमें जाकर शरीर को धारण करते हैं, और उन योनियोंमें कर्मों के फलको भोगते हैं,ये सब असुर कहेजाते हैं, क्योंकि आत्मा का अज्ञानरूपी जो तम है, उस करके उनके चित्त आछादित होते हैं, वे आत्मा के ज्ञानसे शून्य होने के कारण संसारचक्र में भ्रमते ही रहते हैं,अर्थात् एक शरीर को त्यागकर दूसरे शरीर में दूसरे से फिर तीसरे में जातेहैं, इसप्रकार घटी यंत्रकी तरह उनका चक्र चलताही रहता है, वास्तव में वे आत्महत्यारे हैं, वे आत्माका हनन करते हैं ॥ ३ ॥ अपने अज्ञान करके अजर अमर आत्माको जरामरणादि धर्मोंवाला मानते हैं, और इसी से

बार २ जन्म मरणको प्राप्तहोतेहैं यही आत्मा हननहै (प्र०) देवयो-
नियों से इतर योनि को असुर कहना चाहिये क्योंकि वह निषि-
द्धकर्मोंके करने से मिलतीहै, देवयोनि तो बड़े भारी पुण्य कर्मों
से मिलती है, उसको असुरयोनि कहना उचित नहीं है, (उ०)
शुभ कर्मों के करने से देवयोनि की प्राप्ति होती है इसमें कोई
संदेह नहीं, परंतु वह देवयोनि केवल विषय भोगोंके लियेही हो-
तीहै, आत्मज्ञानकी प्राप्तिके लिये नहीं होती है, इसीवास्ते दे-
वता भी सब महान् भोगी होतेहैं आत्मज्ञान से शून्य होते हैं,
अनेक कुकर्मों को करते हैं और अपने शरीर से गिरकर फिर
छोटी योनियों में जाते हैं, इसीसे देवयोनिको भी असुर योनि
कहाहै ॥ ३ ॥

नोट–इस मंत्रका उपदेश सकामकर्मियों के निंदाके प्रति है॥

मूलम् ॥

अनेजदेकम्मनसो जवीयोनैतद्देवा आप्नुवन्पूर्व-
मर्शत् तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपोमात-
रिश्वादधाति ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

अनेजत् एकम् मनसः जवीयः न एतत् देवाः
आप्नुवन् पूर्वम् अर्शत् तत् धावतः अन्यान् अ-
त्येति तिष्ठत् तस्मिन् अपः मातरिश्वा दधाति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
एतत्	= यह आत्मा	तिष्ठत्	= विकाररहितहै
अनेजत्	= अचलहै	एकम्	= अद्वैतहै

मनसः = मनसे
जवीयः = आगे जानेवालाहै
पूर्वम् = पहलेसेही
अर्शत् = गयाहुवाहै
+ यत् = जिसको
देवाः = चक्षुरादि इन्द्रिय अभिमानीदेवताभी
न = नहीं
आप्नुवन् = प्राप्तहोते हैं
तत् = वही आत्मा
धावतः = शीघ्र चलतेहुये
अन्यान् = औरोंको यानी मनआदिकों को
अत्येति = उल्लंघन करता है यानी पीछे छोड़ देता है
+ च = और
तस्मिन् = उसी चेतन आत्मा बिषे
मातरिश्वा = सूत्रात्मा प्राण वायु
अपः = अग्नि आदित्य आदि और सबप्राणियों के ज्वलन दहन आदि सब कर्मों को
दधाति = धारण करता है याने सबको अपने अपने कर्मों बिषे प्रेरणा करता है

भावार्थ ।

" अनेजदेकमिति " (प्र०) जिस आत्मा के स्वरूप के अज्ञान से अज्ञानीलोक जन्म मरणरूपी संसारको प्राप्तहोते हैं और ज्ञानीलोक जिस आत्मा के स्वरूप के ज्ञानसे मुक्तहोजातेहैं तिस आत्माका स्वरूप कैसा है (उ०)॥ अनेजत् ॥ वह आत्मा चलनादि

क्रियोंसे रहित है,सारे जगत् में एकही है, नाना नहीं है,शरीरों के भेदसे भी भेद रहित है,मनसे भी वेगवालाहै,(प्र०) आपने आत्मा को"अनेजत्"याने क्रियासेरहित पूर्व कहा,अब आप उसको मनसे भी अतिवेगवाला अर्थात् क्रियावाला कहते हैं,एकमेंही दो विरोधी धर्म कैसे रहसक्ते हैं (उ०) विरोध नहीं आताहै क्योंकि जो आत्मा निरुपाधिक है अर्थात् अन्तःकरणादि उपाधियों से रहित है,वह व्यापकहै,और वह क्रिया से रहित ध्रुव है,और अन्तःकरणादि, उपाधियों में प्रतिबिंबित जो विशेष चेतनहै,वह जीवात्माहै,उसमें अन्तःकरणके साथ संबंध होने से क्रिया प्रतीत होती है और इसलिये उपाधि के संबन्ध से क्रियावाला कहाजाता है, मन सङ्कल्प करके देशांतर लोकांतरको क्षणमात्र में प्राप्त होताहै,और आत्मा व्यापक होनेसे वहां पर प्रथमहीं प्राप्तहै,इसीकारण मंत्र ने उसको मनसे भी अधिक वेगवाला कहाहै , (प्र०) मनकरके रूपादिकों का प्रत्यक्ष नहीं होताहै पर चक्षुरादिकों करके उनका प्रत्यक्ष होताहै तैसे ही आत्माका प्रत्यक्ष भी चक्षुरादिकों करके क्या न होनाचाहिये (उ०) ॥देवा॥ चक्षुरादि इन्द्रियकरके आत्मा प्राप्त नहीं होसका है,जैसे मनमें स्थित मनका जो परिमाण है, तिसका मन करके ग्रहण नहीं होताहै,तैसे ही मनमें अनुगत आत्मा का भी मन करके ग्रहण नहीं होताहै,और जैसे चक्षु इन्द्रिय के गोलक में स्थित जो अंजन है तिसका प्रत्यक्ष चक्षु इन्द्रिय करके नहीं होताहै, तैसे चक्षुमें अनुगत आत्माका भी चक्षुकरके प्रत्यक्ष नहीं होताहै , (प्र०) जिस आत्माका प्रत्यक्ष मन और चक्षुकरके नहीं होता है, वह असत् होगा (उ०) वह असत्य नहीं, किंतु सद्रूपहीहै, क्योंकि वह आत्मा व्यापक होने के कारण मन आदिकों से प्रथमहीं प्राप्तहै, और जहां मन इन्द्रियादिक दौड़कर प्राप्तहोते हैं,वहां वह उनसे प्रथमहीं प्राप्त रहता है, और चेतन आत्मामें मातरिश्वा जो समष्टी प्राणोंका अभिमानी हिरण्यगर्भहै, वह चेतनद्वारा ब्रह्म होकर जगत् और रूपादिकों को

कर्त्ता है और उनको और संपूर्ण जीवों को विभागकरके स्थापन करताहै, तात्पर्य यहहै कि संपूर्ण कार्य करण संघात का व्यापार बिना अधिष्ठान चेतन के नहीं होसक्ताहै ॥

नोट–आप्नुवन्भूतकालहै परन्तु अर्थ वर्त्तमानकाल का देताहै ॥

मूलम् ॥

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वदन्तिके तदन्तरस्यसर्वस्य तदु सर्वस्यास्यबाह्यतः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

तत् एजति तत् न एजति तत् दूरे तद्वत् अन्तिके तत् अन्तः अस्य सर्वस्य तत् उ सर्वस्य अस्य बाह्यतः॥

अन्वयः	पदार्थ
तत्	सोई आत्मा
एजति	चलता है उपाधी करके
तत्	सोई आत्मा उपाधी बिना
न	नहीं
एजति	चलता है
तत्	सोई आत्मा
दूरे	अविद्वानों से दूर है
तद्वत्	वैसेही
अन्तिके	विद्वानों के समीप है
×च	और
तत्	सोई आत्मा
अस्य	इस
सर्वस्य	संपूर्ण जगत् के
अन्तः	अभ्यन्तर बिषे स्थित है
उ	और
तत्	सोई आत्मा
अस्य	इस
सर्वस्य	सब जगत् के
बाह्यतः	बाहर है

भावार्थ ।

"तदेजतीति" मंत्रों को आलस्य नहीं है यानी एकही वस्तु की बार २ बाधार्थ कहा करते हैं इसीहेतु से कहेहुये अर्थ को फिर मंत्र कहते हैं ॥ ईश्वररूप आत्मा वायुआदि उपाधि करके चलता प्रतीतहोता है, और ईश्वररूप आत्मा स्वभाव करके चलता नहीं है, क्योंकि वह अपने स्वभाव से क्रिया रहित है, वही ईश्वररूप आत्मतत्त्व अज्ञानियों को दूर प्रतीतहोता है, याने अज्ञान के कारण करोड़ों बरसों तकभी उनको प्राप्त नहींहोताहै, और वही ईश्वररूप आत्मा ज्ञानवानों को अतिसमीपहै, क्योंकि वह उनका अपना आप आत्मा है, वही ईश्वरात्मासंपूर्ण चराचर जगत् के अन्तर बाहर आकाश की तरह व्यापक है ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

यस्तुसर्वाणिभूतान्यात्मन्येवानुपश्यति सर्वभूतेषुचात्मानं ततोनविचिकित्सति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

यः तु सर्वाणि भूतानि आत्मनि एव अनुपश्यति सर्वभूतेषु च आत्मानम् ततः न विचिकित्सति

अन्वयः	पदार्थ
तु	और
यः	जोज्ञानी पुरुष
सर्वाणि	सब
भूतानि	भूतोंको
आत्मनि	आत्मामें(यानी अपने में)
एव	निश्चयकरके
अनुपश्यति	देखता है
च	और
सर्वभूतेषु	सम्पूर्णभूतों में
आत्मानम्	आत्माको (यानीअपनेको)

×अनुपश्यति = देखताहै	न = नहीं
+सः = वह	विचिकित्सति = सन्देह को प्राप्त होताहै याने संशय विपर्यय से रहितहुआ जीवन्मुक्त होताहै
ततः = इसप्रकारके दर्शन से	

भावार्थ ।

"यस्तुसर्वाणीति"—अब आत्मज्ञानके फलकोकहते हैं ॥ जो विद्वान् ब्रह्मा से चीटी पर्यन्त संपूर्ण भूतोंको अर्थात् संपूर्ण प्राणियों को अपना आत्मा जानता है,और संपूर्ण भूतों में अपनेही आत्माको देखता है,अर्थात् मैंहीं संपूर्ण भूतों में स्थित हूं, वह किसी प्राणी की निंदा नहीं करताहै,निंदा वह कर्त्ताहै जो अपने से भिन्न दूसरे को देखता है, सो विद्वान् अपने से भिन्न किसी को भी नहीं देखताहै किंतु सबको अपना आत्मारूप करकेही देखताहै और जब अपने आत्मा की निंदा अज्ञानी पुरुष भी नहीं करता है तब ज्ञानवान् कैसे करैगा ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः
तत्रकोमोहः कःशोकएकत्वमनुपश्यतः ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मा एव अभूत् विजानतः तत्र कः मोहः कः शोकः एकत्वम् अनुपश्यतः ॥

अन्वयः	पदार्थ
यस्मिन्	= जिसकाल में
विजानतः	= ज्ञानवान् को
सर्वाणि	= संपूर्ण
भूतानि	= भूत
आत्मा	= आत्मा
एव	= ही
अभूत्	= सिद्ध होताहै याने प्रतीत होताहै
तत्र	= तिस काल में
एकत्वम्	= एकत्व को याने अभेद
अनुपश्यतः	= देखनेवाले पुरुष को
कः	= कहां
मोहः	= मोह है
×च	= और
कः	= कहां
शोकः	= शोकहै किन्तुमोह शोक रहित होता है ॥

भावार्थ ।

"यस्मिन्सर्वाणीति"—जिस पूर्वोक्त अभेद ज्ञानी विद्वान् को प्राणीमात्र अपना आत्माही प्रतीति होनेलगता है,याने जब उसको ऐसा अनुभवहोताहै कि संपूर्ण प्राणियों का आत्मा मैं हीं हूं, तिस विद्वान् को न मोह है, न शोक है, क्योंकि उसकी मूलाविद्या आत्मविद्या करके नाशको प्राप्त होजाती है, और अविद्या के नाश होनेसे अविद्या के कार्य्य जो शोक मोहादिक हैं, वे भी सब उसके साथही नाशको प्राप्तहोजातेहैं, क्योंकि कारण के नाशसे कार्य का भी नाशही होजाताहै ॥ ७ ॥

नोट—अभूत् भूतकाल है परंतु अर्थ वर्त्तमान का देताहै ॥

मूलम् ॥

सपर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳशुद्ध मपापविद्धम् कविर्म्मनीषी परिभूःस्वयम्भूर्याथात थ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

सः पर्य्यगात् शुक्रम् अकायम् अव्रणम् अस्ना विरम् शुद्धम् अपापविद्धम् कविः मनीषी परिभू स्वयम्भूः याथातथ्यतः अर्थान् व्यदधात् शाश्व तीभ्यः समाभ्यः ॥

अन्वयः	पदार्थ
सः	वहपूर्वोक्त आत्मा
पर्य्यगात्	व्यापक है
शुक्रम्	प्रकाशकहै
अकायम्	लिंगशरीर रहित है
अव्रणम्	छिद्ररहितहै
अस्नाविरम्	नाड़ी रहितहै
शुद्धम्	निर्मलहै
अपापविद्धम्	पापरहितहै
कविः	त्रिकाल दर्शी है
मनीषी	सर्वज्ञहै
परिभूः	सबके ऊ परहै
स्वयम्भूः	स्वयं वि द्यमान
च	और
शाश्वतीभ्यः	अनंतका लस्थायी
+ सःएव	वही

समाभ्यः = ब्रह्माआदि प्रजापतियों के लिये	अर्थान् = अग्निहोत्रादिकर्मों को
याथातथ्यतः = यथा उचित	व्यदधात् = विधानकरता भया ॥

भावार्थ ।

सपर्य्यगाच्छुक्रमिति ॥ प्र० ॥ पूर्व्व जो कहाहै कि यह सम्पूर्ण जगत् ईश्वरकाही स्वरूप है ॥ इसप्रकार जो जानता है उसके आवरण और विक्षेप दूर होजातेहैं, सो वार्त्ता नहीं बनती है, क्योंकि ॥ ईश्वरः शरीरवान् आत्मत्वात् जीवत् ॥ ईश्वर भी शरीर वाला है आत्मत्व के कारण जीवकी तरहहै ॥ जैसे जीव में आत्मत्व है और शरीरवाला है तैसे ईश्वर में भी आत्मत्वहै, इस लिये वह भी शरीरवाला है ॥ उ० ॥ जिस आत्मत्व हेतु से तुम ईश्वरको शरीरवाला सिद्ध करते हो सोई तुम्हारा हेतु सत् प्रतिपक्ष है, जिस हेतुके साध्य के अभावका साधक दूसरा हेतु विद्यमानहो वह हेतु सत्प्रतिपक्ष कहाजाता है, सो तुम्हारे साध्यके अभावका साधक दूसरा हेतु विद्यमान है, इसलिये यह तुम्हारा हेतु सत्प्रति पक्ष याने व्यभिचारी है ॥ ईश्वरः शरीराऽभाववान् व्यापकत्वात् आकाशवत् ॥ जैसे आकाश व्यापक है, और उसमें शरीरका अभाव है, तैसेही ईश्वर भी व्यापक है, और उसमें शरीरका अभाव है, यह व्यापकत्व हेतुही शरीर के अभावका साधक है, इसलिये तुम्हारा हेतु व्यभिचारी है, और व्यभिचारी होने से अपने साध्यके सिद्ध करने में असमर्थ है, और मंत्र भी ईश्वरके शरीर के अभाव को कहकरके ईश्वरके स्वरूप को दिखाताहै ॥ सपर्य्यगात्॥ पूर्व्वोक्त रीति से ईश्वरात्मा

सर्व ओर से प्राप्त है, याने आकाशवत् व्यापक है, अब आगे तिसी ईश्वरात्मा के विशेषणों को मंत्र कहता है ॥ शुक्रम ॥ वह शुद्ध है, अर्थात् प्रकाशमान है ॥ अकायम् ॥ वह लिंग शरीरसे रहित है ॥ अव्रणम् ॥ वह छिद्रसे रहितहै ॥ अस्नाविरं ॥ वह नाड़ी रहितहै ॥अव्रणम्॥ और अस्नाविरं॥ इन दो विशेषणों करके मन्त्रने ईश्वरके स्थूल व लिंग शरीरका निषेध किया है, याने ईश्वर का न तो लिंग शरीर है, और न स्थूल शरीर है, ॥ अपापविद्धं ॥ वह धर्माऽधर्मादि पापों से भी रहित है, याने अविद्या मल से रहित है, ऐसा कहने से कारण शरीर का मन्त्रने निषेध कियाहै ॥ कविः ॥ यह सबका द्रष्टा है ॥ मनीषी ॥ मनादिकोंका प्रेरकहै याने जाननेवालाहै अर्थात् सर्वज्ञ है ॥ परिभूः ॥ नानारूपों करके सर्वओर से प्रकाशमान होरहा है, या सर्व के ऊपर है, याने मालिक है ॥ स्वयंभूः ॥ यह स्वतः सिद्धहै, अर्थात् उसका कारण कोई नहीं है और आप सब का कारण है ॥ शाश्वतीभ्यः ॥ निरन्तर है ॥ समाभ्यः ॥ संवत्सर नाम प्रजापतियों के लिये ॥ याथातथ्यतः ॥ यथा उचित साध्य साधनरूप करके अर्थात् चेतन अचेतनरूप करके ॥ व्यदधात् ॥ नाना प्रकार के पदार्थों की कल्पना को करता भया ॥ इस मन्त्रमें यथार्थ रूपसे ईश्वरके स्वरूप का निरूपण किया है ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते ॥
ततोभूयइवते तमोयऽउसम्भूत्याᳫं रताः ॥ ९ ॥

पदच्छेदः

अन्धम् तमः प्रविशन्ति ये असम्भूतिम् उपासते
ततः भूयः इव ते तमः ये उ सम्भूत्याम् रताः ॥

अन्वयः	पदार्थ
ये	जो कोई
असम्भूतिम्	प्रकृतिको
उपासते	उपासना करते हैं
+ ते	वे
अन्धम्	अदर्शनात्मक
तमः	अज्ञान विषे
प्रविशन्ति	प्रवेशकरते हैं याने गिरते हैं
उ	और
ये	जो कोई
सम्भूत्याम्	कार्यब्रह्म हिरण्यगर्भविषे
रताः	रतहैं
ते	वे
ततः	उससे भी
भूयःइव	अधिकतर
तमः	अन्धकार याने अज्ञान विषे
+प्रविशन्ति	प्रवेश करते हैं ॥

भावार्थ ।

ज्ञान के प्रकरण को समाप्त करके अब इस बातको दिखलाते हैं कि जो पुरुष पूर्वोक्त आत्मतत्त्व को नहीं जानता है, और संन्यास में भी जिसका अधिकार नहीं है, किंतु संसारसे अत्यन्त प्रीति दिखलानेवाला है, उसके प्रति जो कामुक कर्म करना और भिन्न भाव से देवता की उपासना करना कहाहै उन दोनों की मंत्र निंदा करता है ॥ अंधमिति ॥ जो धनके अभिलाषी अज्ञानी अविद्याकी अर्थात् ज्योतिष्टोमादिरूप कर्म की उपासना को करते हैं वे अहंममाभि मानरूपी संसारको प्राप्त होते हैं ॥प्र०॥ यदि कर्म्मों की उपासना करने से संसार की प्राप्ति होती है तब फिर कर्मों का त्याग करके देवताओं की उपासना करनी चाहिये अथवा ॥ अहंब्रह्मास्मि ॥ ऐसी उपासना करनी चाहिये ॥ उ० ॥

जो कर्मों के त्यागी अज्ञानी कर्मोंको त्याग करके देवताओं की उपासनामें प्रीतिवाले हैं, और जो आत्मा के साक्षात्कार बिना मुखसे "अहंब्रह्मास्मि" ऐसा कहते हैं, वे दोनों पूर्वोक्त अहंममाभिमानरूप संसारसे भी अधिक तर अहंममाभिमानरूप तमको प्राप्तहोते हैं ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात् इति शुश्रुमधीराणांयेनस्तद्विचचक्षिरे ॥ १० ॥

पदच्छेदः

अन्यत् एव आहुः सम्भवात् अन्यत् आहुः असम्भवात् इति शुश्रुम धीराणाम् ये नः तत् विचचक्षिरे ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सम्भवात्	सम्भूति करके	ये	जो कोई
अन्यत् एव	औरही	नः	हमारेलिये
+ फलम्	फल	तत्	उस सम्भूति और असम्भूति के फलको
आहुः	कहते हैं	विचचक्षिरे	कहतेभये
च	और	+ तेषाम्	तिन
असम्भवात्	असम्भूति करके	धीराणाम्	धीरपुरुषों के
अन्यत्	औरही	+ वचनम्	वचनको
+ फलम्	फल		
आहुः	कहते हैं		

इति = इसप्रकार	श्रवण किया
शुश्रुम = हमलोगोंने	है ॥

भावार्थ।

अन्यदेवाहुरिति ॥ प्र० ॥ कर्म और उपासना ये दोनों पुरुषों को करनी उचित हैं सो दोनों की आप निंदा करते है, तब फिर दोनों का कुछ भी फल नहीं होगा ॥ उ० ॥ दोनोंका फल भिन्न भिन्न है ॥ अन्यदेव ॥ देवताकी उपासनाका फल देवलोक की प्राप्ति है, और कामुक कर्मोंके करने का फल पितृलोक की प्राप्ति है, और निष्काम कर्मोंके करने का फल चित्तकी शुद्धिद्वारा आत्मज्ञानकी प्राप्ति है ॥ तीनों फल एक दूसरे से श्रेष्ठ हैं, याने पित्रलोकसे श्रेष्ठ देवलोक है, और देवलोकसे श्रेष्ठ आत्मज्ञान है, क्योंकि इसके द्वारा मुक्ति होती है ॥ १० ॥

मूलम् ॥

सम्भूतिञ्चविनाशञ्चयस्तद्वेदोभयथं सहविनाशेन मृत्युन्तीर्त्वासम्भूत्यामृतमश्नुते ॥ ११ ॥

पदच्छेदः

संभूतिम् च विनाशम् च यः तत् वेद उभयम् सह विनाशेन मृत्युम् तीर्त्वा सम्भूत्या अमृतम् अश्नुते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो कोई	च	= और
तत्	= उस	विनाशम्	= असम्भूतिको
उभयम्	= दोनों	सह	= एकही
सम्भूतिम्	= सम्भूति	वेद	= जानता है

सः = वह	तीर्त्वा = तर करके
विनाशेन = असंभूति-द्वारा	असंभूत्या = सम्भूतिद्वारा
मृत्युम् = मृत्यु को	अमृतम् = अमरभावको
	अश्नुते = प्राप्त होताहै।

भावार्थ।

विद्यांचाविद्यांचेति ॥ पूर्वले मन्त्र में कर्म और देवताकी उपासना का पृथक् २ फल कहा है, अब इस मन्त्र में दोनों के समुच्चय के फल को कहते हैं ॥ विद्यांचविद्यांचेति ॥ जो पुरुष देवताकी उपासना और कर्मोंको एक साथही करताहै वह कर्म करके मृत्युको उत्क्रमण करता है, और देवताकी उपासना कर के अमरभाव उपास्यरूप देवताको प्राप्त होताहै ॥ ११ ॥

नोट—असंभूति प्रकृति को कहते हैं उसका उपासक प्रकृतिविषे लय होता है, इसलिये वह जन्म मरण भावसे अमर समझा गया है = सम्भूति हिरण्यगर्भ को कहते हैं उसका उपासक अणिमा आदि सिद्धियोंको प्राप्त होताहै, इसलिये वह भी जन्म मरणभावसे रहित समझागयाहै ॥ ११ ॥

मूलम् ॥

अन्धन्तमः प्रविशन्तियेऽविद्यामुपासते ततो भूयइवतेतमोऽउविद्यायाछंरताः ॥ १२ ॥

पदच्छेदः

अन्धम् तमः प्रविशन्ति ये अविद्याम् उपासते ततः भूयः इव ते तमः ये उ विद्यायाम् रताः ॥

अन्वयः	पदार्थ
ये	= जो कोई अविवेकी पुरुष
अविद्याम्	= अविद्या के आश्रय अग्नि होत्रादि सकाम कर्मों को
उपासते	= स्वर्गादि फल के निमित्त उपासना करते हैं
+ ते	= वे
अन्धम्	= अदर्शनात्मक
तमः	= अज्ञानावृत शरीर में
प्रविशन्ति	= प्रवेश करते हैं
उ	= और
ये	= जो कोई
विद्यायाम्	= सकामकर्म त्यागकरके केवल देवतों के भेद भाव उपासना विषे
रताः	= तत्पर हैं
ते	= वे
ततः	= उस अंधतम से भी
भूयः इव	= अत्यंत
तमः	= अन्धकारको
प्रविशन्ति	= प्राप्त होते हैं॥

भावार्थ।

अन्धंतमःप्रविशंतीति ॥ इस बारहवें मन्त्रमें व्याकृत अव्याकृत उपासना की निंदा करते हैं॥ अंधमिति ॥ अव्याकृत नामक जो जगत्का कारणी भूत प्रकृति है उसकी अज्ञ पुरुष उपासना करते हैं, और कहते हैं कि वह प्रकृति हमहीं हैं, वे अंधतम को अर्थात् अहंममाभिमानरूप अज्ञानको ही प्राप्त होतेहैं, और जो पुरुष संभूति की अर्थात् कार्यरूप हिरण्यगर्भकी उपासना करते

हैं, वे पूर्वोक्त तमसे भी अधिक अहंममाभिमानरूप संसार को प्राप्तहोते हैं ॥ इस मंत्र में जो असंभूति पद है, वह कारणरूप प्रकृति का वाचक है, और संभूति पद जो है वह कार्यरूप हि- रण्यगर्भ का वाचक है ॥ १२ ॥

मूलम् ॥

अन्यदेवाहुर्विद्याया अन्यदाहुरविद्याया इतिशुश्रुमधीराणांयेनस्तद्विचचक्षिरे ॥ १३ ॥

पदच्छेदः

अन्यत् एव आहुः विद्यायाः अन्यत् आहुः अवि- द्यायाः इति शुश्रुम धीराणाम् ये नः तत् विचचक्षिरे ॥

अन्वयः	पदार्थ
विद्यायाः	= विद्याका
अन्यत्एव	= औरही
+ फलम्	= फल
आहुः	= कहते हैं
अविद्यायाः	= अविद्याका
अन्यत्एव	= औरही
+ फलम्	= फल
आहुः	= कहते हैं
इति	= ऐसा
तेषाम्	= उन
धीराणाम्	= बुद्धिमान्पुरुषों के
+ वचनम्	= वचनको
शुश्रुम	= हमने सुना है
ये	= जिन्होंने
नः	= हमारे लिये
तत्	= उसको याने कर्म्म और ज्ञानको
विचचक्षिरे	= उपदेश कियाहै

भावार्थ ।

अन्यदेवाहुरिति ॥ अब इस मन्त्रमें संभूति असंभूति की उपासना से जो फल होताहै उस फल के भेदको कहते हैं ॥ सं

भवात् ॥ हिरण्यगर्भरूपी कार्य्य की उपासना से अणिमादि ऐ-श्वर्य्यकी प्राप्तिरूपी फल उपासिक को मिलता है, और अ-सम्भवात् ॥ व्याकृत की उपासना से प्रकृति में लयरूपी फल मि-लता है, वेदके वेत्ताधीर पुरुष इसप्रकार दोनोंके फलोंको भिन्न २ कथन करते हैं, ऐसा हमने वेदके वेत्ता जो आचार्य्य और वि-द्वान् हैं उनसे सुनाहै, मूलमें जो " सम्भव " पदहै वह कार्य-रूपी हिरण्यगर्भका वाचक है, और जो " असम्भव " पदहै वह कारणरूपी प्रकृति का वाचक है ॥ १३ ॥

मूलम् ॥

विद्याञ्चविद्याञ्चयस्तद्वेदोभयथंऽसह अविद्यया मृत्युन्तीर्त्वाविद्ययामृतमश्नुते ॥ १४ ॥

पदच्छेदः

विद्याम् च अविद्याम् च यः तत् वेद उभयम् सह अविद्यया मृत्युम् तीर्त्वा विद्यया अमृतम् अश्नुते ॥

अन्वयः	पदार्थ
च	और
यः	जो कोई
विद्याम्	विद्या याने देवताओंकी अभेद उपासना
च	और
अविद्याम्	अविद्या याने अग्निहोत्रादि निष्कामकर्म
तत्	उन
उभयम्	दोनोंको
सह	एकही पुरुष करके अनुष्ठानकरने योग्य

वेद = जानताहै
+ सः = वह पुरुष
अविद्यया = { अविद्याद्वारा यानै कर्म्मों द्वारा
मृत्युम् = मृत्यु को
तीर्त्वा = तरकरके

विद्यया = { विद्याद्वारा यानै अहं ग्रह उपास ना द्वारा
अमृतम् = अमरभावको
अश्नुते = प्राप्त होताहै॥

भावार्थ ।

संभूतिंचेति ॥ पूर्वोक्त दोनों उपासना के अब फल को मन्त्र दिखाताहै ॥ सम्भूतिंच ॥ वास्तव में यह पद असम्भूति है, इसमें अकार का लोप होगया है, असम्भूति नाम अव्याकृत प्रकृति का है, वहा संपूर्ण जगत् का मूल कारण है, और विनाश नाम नाश को प्राप्त होनेवाले हिरण्यगर्भका है, वह प्रकृति का कार्य है, जो पुरुष पूर्वोक्त प्रकृति की और हिरण्यगर्भकी उपासना एक साथ ही करना उचित समझता है और करता है तो वह उपासिक हिरण्यगर्भ की उपासनासे अनैश्वर्यरूप दोषों से तरता है, और प्रकृति की उपासनासे प्रकृति में लयरूप अमरभाव को प्राप्त होताहै ॥ १४ ॥

मूलम् ॥

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् तत् त्वम्पूषन्नपावृणु सत्यधर्म्माय दृष्टये ॥ १५ ॥

पदच्छेदः

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्य अपिहितम् मुखम् तत् त्वम् पूषन् अपावृणु सत्यधर्म्माय दृष्टये ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
पूषन्	= हे पोषणकर्त्ता सूर्य	पात्रेण	= पात्रकरके
सत्यस्य	= सत्य परमात्माके	अपिहितम्	= आच्छादित है
तत्	= उस	त्वम्	= तू
मुखम्	= द्वारको	सत्यधर्माय	= मुझसत्यधर्म्मा के
× यत्	= जो	दृष्टये	= दर्शनके अर्थ
हिरण्मयेन	= तेजोमय	अपावृणु	= खोलदे

भावार्थ ।

हिरण्मयेनेति ॥ पूर्वले मन्त्र में "अविद्यायामृत्युंतीर्त्वाविद्ययाऽमृतमश्नुते" उस समुच्चय उपासना करके सूर्य्य मण्डल में स्थित जो पुरुष है उसी की प्राप्ति उस उपासक को होती है ॥ जिसकालमें उपासक पुरुष अपने शरीरको त्याग करके इसलोक से सूर्य्यमण्डल को जाता है तब वहां सूर्य्यमण्डलस्थ पुरुष से प्रार्थना करता है ॥ हिरण्मयेनेति ॥ हे पूषन्! हे जगत् के पालन करनेहारे! आपकृपा करके सत्य परमात्मा के द्वारको जो आपके तेजोमय पात्रसे आच्छादितहै मुझ सत्य धर्मावलम्बी के दर्शनार्थ खोल दीजिये, मैं आपका सेवक हूं, दूसरा अर्थ यह है हे जगत् के पालन करनेवाले! मेरे प्राप्ति का द्वार आपका मुख है, वह स्वर्ण की तरह प्रकाशमान पात्र करके आच्छादित है, सो तिस तेजको आप हटा लेवो तो मैं आपका दर्शन करूं मैंने सत्य धर्म को ग्रहण करके विधिपूर्वक आपकी उपासनाकी है, उसका फल अब मुझ सत्यधर्मावलम्बी को प्राप्त होना चाहिये, इस प्रकार उपासक सूर्य्यमण्डलमें जाकर सूर्य्यमण्डलस्थ पुरुष के आगे प्रार्थना करता है ॥ १५ ॥

मूलम् ॥

पूषन्ने कर्षे यम सूर्य्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह । तेजो यत्ते रूपङ्कल्याणतमन्तत्ते पश्यामि योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि ॥ १६ ॥

पदच्छेदः

पूषन् एकर्षे यम सूर्य्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह तेजः यत् ते रूपम् कल्याणतमम् तत् ते पश्यामि यः असौ पुरुषः सः अहम् अस्मि ॥

अन्वयः	पदार्थ
पूषन्	= हे पोषण कर्त्ता
एकर्षे	= हे एकचलनेवाला
यम	= हे सर्वकेसंयम न कर्त्ता
सूर्य	= हे सर्व्वरसके स्वीकार कर्त्ता सूर्य
प्राजापत्य	= हे प्रजापति के पुत्र
+ स्वान्	= अपने
रश्मीन्	= किरणों को
व्यूह	= अलगकर
× च	= और
तेजः	= तेजको

अन्वयः	पदार्थ
समूह	= एकत्रकर
× तु	= ताकि
यत्	= जो
ते	= तुम्हारा
कल्याणतमम्	= कल्याण तम
रूपम्	= रूपहै
तत्	= तिसको
ते	= तुम्हारे
× प्रसादेन	= प्रसाद से
पश्यामि	= देखूं मैं
यःअसौ	= जो यह
× त्वयि	= तेरे बिषे
× परिपूर्णः	= परिपूर्ण

पुरुषः = पुरुष है	अहम् = मैं
सः = सोई	अस्मि = हूं
असौ = यह	

भावार्थ ।

पूषन्नेति ॥ इस मन्त्र में भी बहुतप्रकार के विशेषणों करके उपासिक सूर्य्यमण्डलस्थ पुरुष को संबोधन करताहुआ प्रार्थना करताहै ॥ पूषन्नेति ॥ हे संपूर्ण जीवों के पोषण करनेवाले ॥ हे एका की गमन करनेवाले ! हे संपूर्ण जीवों के नियामक ! हे संपूर्ण लोकों को उनके कर्मों में प्रवृत्त करनेवाले ! हे प्रजापति के पुत्र ! आप अपने तेजोमय किरणों को समेट लो ता कि मैं आपका अतिशय कल्याणरूप को देखूं, मेरी और कोई याचना नहीं है, आप बिषे जो पूर्ण पुरुष स्थित है, वह मेराही स्वरूप है, याने मैं हीहूं ॥ १६ ॥

नोट–सूर्य्य भगवान् का उपासक सूर्य्य भगवान् की प्रार्थना मरते समय ऊपर कहेहुये प्रकार करताहै ॥

मूलम् ॥

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्त ँ शरीरम् । ॐ क्रतो स्मर कृत ँ स्मर क्रतो स्मर कृत ँ स्मर ॥ १७ ॥

पदच्छेदः

वायुः अनिलम् अमृतम् अथ इदम् भस्मान्तम् शरीरम् ओम् क्रतो स्मर कृतम् स्मर क्रतो स्मर कृतम् स्मर ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अथ	= इसकालमेंयाने देहावसानसमय	वायुः	= प्राण वायु
		* मम	= मेरा

अनिलम् = सूत्रआत्मा समष्टि प्राणको	+ च = और
+ च = और	क्रतो = हे मन
+ मम = मेरा	ओम् = ॐकारको
अमृतम् = लिंगशरीर	स्मर = स्मरण कर
+स्वकारणम् = अपनेकारण तत्त्वको	× च = और
+ प्राप्येत = प्राप्तहो	कृतम् = कियेहुये शु[illegible] कर्म्मों को
+ च = और	स्मर = स्मरण कर
इदम् = यह	क्रतो = हे मन
शरीरम् = स्थूलशरीर	कृतम् = कियेहुये शु[illegible] कर्म्मोंको
भस्मान्तम् = अन्त भस्म भावको	स्मर = स्मरण कर
+ भूयात् = प्राप्तहो	स्मर = स्मरण कर

भावार्थ ।

मरणकाल में उपासक पुरुष सूत्रात्मा प्राण को इसप्रका[illegible] अनुसंधानयाने चिंतन करना चाहिये ॥ वायुरिति ॥ मेरे जो प्राण हैं सो अमरभावरूप वायु देवता में लीनहों मेरा जो यह स्थू[illegible] शरीर है सो अग्नि में हवन किया हुआ भावको प्राप्त हो [illegible] मन ! ॐकारके वाच्य ईश्वर को स्मरण कर, संपूर्ण शुभकर्म को स्मरण कर, हे मन सभल सावधानहो, परमात्मा में चि[illegible] लगा, इसीकाल के वास्ते तू कर्म उपासना और ज्ञान में प्रवे[illegible] हुआथा ॥ १७ ॥

नोट—सूत्रात्मा प्राणका उपासक मरते समय ऊपर कहेहु[illegible] प्रकार ॐकार को स्मरण करताहै ॥

मूलम् ॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् युयोध्यस्मज्जहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ॥ १८ ॥

पदच्छेदः

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् युयोधि अस्मत् जुहुराणम् एनः भूयिष्ठाम् ते नमउक्तिम् विधेम ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
देव	हे प्रकाशात्मक देव,	अस्मत्	हमारे
अग्ने	हे अग्ने !	जुहुराणम्	कुटिल वचनात्मक
विश्वानि	सर्व	एनः	पापको
वयुनानि	कर्म्मोंको	युयोधि	नाशकर
विद्वान्	जाननेवाला तू	ते	तेरे अर्थ
अस्मान्	हम कर्म कर्त्ताओं को	भूयिष्ठाम्	बहुत से
राये	कर्मफलके अर्थ	नमउक्तिम्	नमस्कार के वचन
सुपथा	शुभमार्ग से	विधेम	हम कहते हैं
नय	लेचल		
+ च	और		

भावार्थ।

अग्नेनयेति ॥ अग्नि देवता का उपासक मरण काल में सुन्दर मार्गसे चलनेके लिये इसप्रकार प्रार्थना करताहै ॥ अग्ने

रिति ॥ हे अग्ने ! कर्म उपासना के समुच्चयका अनुष्ठान करने वाले हमको शोभन मार्ग से अर्थात् उत्तरायणमार्ग से उपास्य देवके पास कर्म और उपासनाके फल के भोगने के लिये प्राप्त करो, हे देव ! आप हमारे संपूर्ण उपासना और कर्मों के जानने वाले हो, आप हमारे कुटिल वचनरूपी पाप को नाशकरो, आप के प्रति वारंवार मैं नमस्कार करता हूं ॥ १८ ॥

इति ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

नोट–अग्नि देवताका उपासक मरण कालमें अपने मनो अग्नि देवताकी प्रार्थना करताहै ॥ १८ ॥

इति वाजसनेयसंहितायामीशावास्योपनिषद् समाप्तिमगात् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥



आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम्। यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यर्वाक् तीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः। षट्चक्रादिविचार-सारकुशला नन्दन्ति योगीश्वराः तं वन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् २ ॥

दो० करौं बन्दना ब्रह्मको। जो अनन्त निजरूप ॥
जेहिजानेजगभ्रमसकल। मिटै अन्धतम कूप ॥
नाम रूप जामें नहीं। नहीं जाति अरु भेद ॥
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं। रहित त्रिविध परिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद। ताका करूं विचार ॥
भाषामें तिस अर्थको। लखै सकल संसार ॥
सन्त संग से जो लख्यो। सो मैं करूं बखान ॥
परमानन्द सहाय ते। जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट। अकबर पुरहै गांव ॥
जन्मभूमि मम जान तू। जालिम सिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है, इसके पार होनेके लिये उपनिषद् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौका है, जिसमें बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागरके पार होगये हैं, और होते जाते हैं, और भविष्यत्कालमें होंगे, जो मुमुक्षुजन हैं उनके हितार्थ यह भाषा टीका रचीगईहै।

इसटीका में पहिले मूलमन्त्र है, फिर पदच्छेद है, फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दिया है, और दक्षिण हस्त की ओर पदार्थ लिखा है, यदि वाम तरफ का लिखा हुआ ऊपर से नीचे तक पढ़ा जावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा, और यदि दक्षिण हस्त के तरफ वाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्यदेशी भाषा में मिलेगा, और यदि बायेंतरफ से दहिने तरफ को पढ़ा जावे तो हरएक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलेगा, जहांतक होसका है, प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्तिके अनुसार लिखा गया है, इस टीकाके पढ़नेसे संस्कृत विद्याका भी अभ्यास होगा, इस टीकामें मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पाया है, और मन्त्रका पूरा २ अर्थ उसीके शब्दोंही से सिद्ध कियागयाहै, अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगई है, हां कहीं २ ऊपरसे संस्कृत पद मन्त्रके अर्थ स्पष्ट करनेके लिये रखागया है, और उसपदके प्रथम यह + चिह्न लगा दिया गयाहै, ताकि पाठकजनोंको विदित होजावे कि यह पद मूलका नहीं है । इस टीकाको बाबू ज़ालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल व लखनऊ व पोस्टमास्टर जनरल रियासत ग्वालियर सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गङ्गादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अलमोड़ाख्य नगरके रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान् पुरुषोंके चरणकमलमें अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धता हो उससे टीकाकर्त्ताको सूचना करैं ताकि अशुद्धता दूर होजावे ॥

सामवेदब्राह्मणभागे ॥

अथ केनोपनिषद् ॥

मूलम् ॥

ॐ केनेषितंपततिप्रेषितंमनःकेनप्राणः प्रथमः प्रैतियुक्तःकेनेषितांवाचमिमांवदन्तिचक्षुः श्रोत्रंकउ देवोयुक्ति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

केन इषितम् पतति प्रेषितम् मनः केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः केन इषिताम् वाचम् इमाम् वदन्ति चक्षुः श्रोत्रम् कः उ देवः युनक्ति

अन्वयः	पदार्थ
केन	किस करके
इषितम्	इच्छाकियागया
+च	और
+केन	किस करके
प्रेषितम्	प्रेरा हुआ
मनः	मन
पतति	गिरताहैयानेविषयों के सन्मुख दौड़ता है
+च	और
केन	किस करके
युक्तः	प्रेरा हुआ
प्राणः	प्राण
+यः	जो
+सृष्टिकार्ये	सृष्टि कार्यविषे
प्रथमः	प्रथम है
+कर्मसु	कर्मों में
प्रैति	प्रवृत्त होताहै
+च	और

केन = किसकरके	चक्षुः = नेत्र को
इमाम् = इस	+ च = और
इषिताम् = प्रेरित	श्रोत्रम् = श्रोत्र को
वाचम् = बाणी को	कः = कौन
+जनाः = मनुष्य	देवः = देवता
वदन्ति = उच्चारण करते हैं	युनक्ति = विषयों के अभिमुख प्रेरणा करता है
उ = और	

भावार्थ ।

केनेति-आत्माके स्वरूपकाबोध होना अतिकठिनहै इसलिये गुरुशिष्य के प्रश्नोत्तर रीतिसे मंत्रने आत्माका कथनकियाहै प्रथम शिष्यका प्रश्नहै ॥ केनेति ॥ शिष्य कहताहै हे गुरो ! किसकर्त्ताकी प्रेरणा करके संकल्प विकल्परूपी मन विषयों के ओर दौड़ता है। किसकर करके प्रेरितहुआ २ प्राण जो शरीरविषे इन्द्रियादिकों में मुख है और बिना जिसके कोई भी इन्द्रिय चेष्टा नहीं करसक्ते हैं, ऊर्ध्वअधोलोकों में गमनकरता है, किस करके प्रेरितहुई वागिन्द्रिय ताल्वादि आठस्थानों में स्थितहोकर शब्दात्मिक बाणी को बोलतीहै,और किस देवता करके प्रेरणा कियाहुआ चक्षुरूप क्रियादिकों को देखता और श्रोत्रेन्द्रिय,शब्दादिकों को सुनताहै॥ १ ॥ हे गुरो ! बिना किसी चेतन प्रेरक के इन जड़ इन्द्रियों को स्वयं प्रवृत्ति तो कभी नहीं होसक्ती है ॥

नोट-ब्रह्मजिज्ञासुवों के उद्धार्थ श्रीमान् परमात्मा इस केनउपनिषदविषे गुरु शिष्यके संवादद्वारा ब्रह्मविद्याका उपदेश करताहै॥

और इसी उपनिषद् के प्रथममन्त्र बिषे शिष्यया जिज्ञासुका गुरु के प्रति प्रश्नहै और द्वितीय मन्त्र से लेकर प्रथम खण्डकी समाप्ति पर्यंत गुरुका उत्तर है ॥

मूलम् ॥

श्रोत्रस्यश्रोत्रं मनसोमनोयद्वाचोहवाचं सउ प्राणस्यप्राणश्चक्षुषश्चक्षुरतिमुच्यधीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृताभवन्ति ॥ २ ॥

पदच्छेदः

श्रोत्रस्य श्रोत्रम् मनसः मनः यत् वाचः ह वाचम् सः उ प्राणस्य प्राणः चक्षुषः चक्षुः अतिमु-च्य धीराः प्रेत्य अस्मात् लोकात् अमृताः भवन्ति

अन्वयः	पदार्थ
यत्	= जो
श्रोत्रस्य	= श्रोत्रका
श्रोत्रम्	= श्रोत्रहै
+यत्	= जो
मनसः	= मनका
मनः	= मन है
उ	= और
+ यत्	= जो
वाचः	= वाकका
ह	= भी
वाचम्	= वाक है
सः	= सोई
प्राणस्य	= प्राणका
प्राणः	= प्राण है

अन्वयः	पदार्थ
सः	= सोई
चक्षुषः	= चक्षुका
चक्षुः	= चक्षु है
+तदात्मानंज्ञात्वा	= उस अपने आत्मा को जानकर
+ अनात्मभावम्	= देहइन्द्रिय आदिबिषे आत्मभावको
अतिमुच्य	= भली प्रकार त्याग के
धीराः	= विवेकी पुरुष
अस्मात्	= इस
लोकात्	= लोक से

प्रेत्य = छूटकरयाने देहत्यागकर	अमृताः = अमरभावके भवन्ति = प्राप्तहोते हैं

भावार्थ ।

श्रोत्रस्येति पूर्वोक्त शिष्यके प्रश्नों को सुनकर गुरू उत्तरदेते हैं ॥ श्रोत्रस्येति ॥ श्रोत्रेन्द्रिय स्वतःजड़ है, पर उसचेतनकी सत्ता करके शब्दके ग्रहण करने में सामर्थ्यहै, इसलिये वहब्रह्महै, श्रोत्र का श्रोत्र उसकी सत्ता लेकरके श्रोत्रेन्द्रिय शब्दोंको ग्रहणकरताहै संपूर्ण विषयोंके जाननेमें साधारण कारण मनहै,वह स्वरूपसे जड़ है,पर उसकी सत्ताकरके वह सब विषयोंको जानताहै, इसलियेवह मनकाभी मनहै, वागिन्द्रियस्वतः जड़है, पर उसकी सत्ताकरके शब्दोंके उच्चारणकरने में सामर्थ्य है, इसलिये वह वाणीका वाणी है, प्राणभीस्वतः जड़है, पर उसकी सत्ताकरके वहभी शरीर के धारण करनेको और ऊर्ध्वअधो देशमें गमनकरनेको सामर्थ्य है इसी से वह प्राणका भी प्राण है, उसीकी सत्ताकरके चक्षुः जो स्वतः जड़ है रूपादिकों को देखताहै इसलिये वह चक्षुका भी चक्षु है, वही सबको सत्तादेनेवाला चेतन ब्रह्म है, वागादि इन्द्रिय और मन उसीकी सत्ताकरके अपने अपने विषयों को जानते हैं वही चेतन ब्रह्म सबका प्रेरक है, और सबके अन्तर असङ्ग होकर स्थित है, वही आत्मा अमृतरूप है, उसको जानकर विद्वान् श्रोत्रादिक इन्द्रियों में आत्मबुद्धिको त्यागकरके शरीर पातके पश्चात् अमरभावको प्राप्त होताहै ॥

मूलम् ॥

नतत्रचक्षुर्गच्छतिनवाग्गच्छति नोमनोनविद्मोनविजानीमो यथैतदनुशिष्यादन्यदेवतद्विदितादथोऽविदितादधि इतिशुश्रुमपूर्वेषांयेनस्तद्व्याचचक्षिरे ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

न तत्र चक्षुः गच्छति न वाक् गच्छति नो मनः न विद्मः न विजानीमः यथा एतत् अनुशिष्यात् अन्यत् एव तत् विदितात् अथो अविदितात् अधि इति शुश्रुम पूर्वेषाम् ये नः तत् व्याचचक्षिरे ॥

अन्वयः	पदार्थ
तत्र	तिसब्रह्मबिषे
चक्षुः	चक्षु
न	नहीं
+गच्छति	प्रवेशकरसक्ता है
+ तत्र	तिसबिषे
वाक्	बाणी
न	नहीं
गच्छति	प्रवेशकरसक्ती है
मनः	मन
न	नहीं
गच्छति	प्रवेशकर सक्ताहै
यथा	जिसप्रकार
एतत्	इसब्रह्मको
अनुशिष्यात्	उपदेशकरैं
+ तत्	उसको
+न	नहीं
विद्मः	जानतेहैंहम
+ च	और
न	नहीं
विजानीमः	जानतेहैंहम सम्यक्प्रकार
इति	ऐसा
पूर्वेषां	पूर्व
+आचार्य्याणां	आचार्य्योंके
वचनम्	वचनको
शुश्रुम	हमनेसुनाहै
ये	जिन्होंने

तत् = उसब्रह्मको	अन्यत् = पृथक्है
नः = हमारेलिये	अथो = और
व्याचच-क्षिरे = कहाहै कि	अविदि-तात् = अविदितसे
तत् = वहब्रह्म	एव = भी
विदितात् = विदितसे	अधि = पृथक्है

भावार्थ ।

नतत्रेति (प्र०) जिस चेतनकरके मनआदिक प्रेरितहुये अपने २ विषयों को जानते हैं वह चेतन इदन्ता का विषय क्यों नहीं दिखाता (उ०) ॥ नतत्रेति ॥ चक्षुआदि इन्द्रियां अन्तरबाह्य मुख स्थित होनेके कारण ब्रह्ममें प्रवेश नहीं करसकी हैं, क्योंकि ब्रह्म उनका प्रेरक अधिष्ठान है अर्थात् वे उसको विषय नहीं करसक्ती हैं (प्र०) चक्षुआदिका विषय मतहो पर वह चेतन मनका तो विषय होगा अर्थात् मनकरके तो अवश्यही विषय किया जायगा (उ०) मनका भी वह विषय नहीं है, क्योंकि मन भी जड़है और चेतनके सत्ताको लेकर विषयों को विषय करता है, मन और चक्षुरादिक सब जड़ हैं, वे आपही पराधीन हैं, स्वतः सत्तास्फुरति से रहित हैं, वे ब्रह्मको नहीं विषय करसके हैं ॥ चेतन ब्रह्म चक्षुरादिकों का अविषय होनेसे मन्त्रने कहाहै न विद्मः न विजानीमः ॥ हे शिष्य ! आचार्य्यके उपदेशके विना अपनी बुद्धिकरके अविषय आत्मा के दर्शनके उपाय को मनादि के द्वारा हम नहीं जानसक्ते हैं और हम यह भी नहीं जानते हैं कि शास्त्र के द्वारा आचार्य्य अधिकारी पुरुष प्रति आत्मतत्त्व को किसप्रकार उपदेश करते हैं ॥ श्रोत्रस्यश्रोत्रम् ॥ वह श्रोत्रका श्रोत्रहै ऐसा मन्त्रनेकहाहै क्योंकि वह इदन्ताका विषय नहीं है, कि उसको तुम शिष्यों के प्रति और बतावें, जो पूर्णहै, व्यापक है, इदन्ताका विषय नहीं है, अधिष्ठान होकरके सबका साक्षी है, वह केवल अपने अनुभव सेही

साक्षात् कार होताहै, अगर किसी पुरुष के पेट में दरद है, और दूसरा पूंछे कि क्या हाल है बताओ, वह क्या बतासक्ताहै, वह यही कहैगा कि यार तुमको कभी दरद हुआ होगा तब तुम अनुभव करसकेहो कि मेरेको कैसा दरद होगा, मैं दरद को जिसको मैं अनुभव कररहाहूं नहीं बतासक्ताहूं क्योंकि वह इन्द्रियका विषय नहीं है, जब दरद जो अविद्याका एक विकार है इन्द्रियोंकरके नहीं जाना जासका है, केवल अनुभव सेही प्रतीत होताहै तो ब्रह्म जो अति सूक्ष्म है और इंद्रियादिकका अधिष्ठान है तो उनका वह विषय कैसे होसक्ता है, पूर्वले मन्त्र करके जो कहा कि वह श्रोत्रका भी श्रोत्र है, उसीको फिर इसमन्त्रमें निरूपण करतेहैं ॥ अन्यदेवतादिति ॥ तत्त्वब्रह्म ॥ ब्रह्मज्ञानका विषय नहीं है, (प्र०) यदि ज्ञान का विषय नहीं तब वह ब्रह्म अज्ञात् स्वरूपही होगा अर्थात् किसी करके भी विदित नहीं होगा (उ०) ज्ञानकाअविषय जो अव्याकृत है, उससे भी वह अति सूक्ष्म और पृथक् है, तो वह ज्ञानका विषय कैसे होसक्ता है, जो पदार्थ ज्ञानक्रिया करके प्रतीत होताहै, वह ज्ञात कहाजाता है, जैसे कार्यरूप पदार्थ ज्ञान क्रिया करके भान होता है, वह ज्ञात अर्थात् प्रत्यक्षका विषय कहाजाता है, परब्रह्म तो ऐसा नहीं, और जो ज्ञानक्रिया करके नहीं ज्ञातहोता है, वह अज्ञात कहाजाता है,जैसे प्रकृति सो ऐसा भी ब्रह्म नहीं तब वह ब्रह्म कैसा है, वह ज्ञाता यानी सब पदार्थों का जाननेवाला है, जो प्रत्येक आत्माहै, उसका बाह्यस्वरूप नहीं वह नित्य अपरोक्ष है, ऐसी वार्त्ता हमने पूर्वले श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ आचार्य्यों से सुनी है ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

यद्वाचानभ्युदितं येनवागभ्युद्यते तदेवब्रह्मत्व विद्धि नेदंयदिदमुपासते ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

यत् वाचा अनभ्युदितम् येन वाक् अभ्युद्यते तत्

एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते।

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यत्	= जो	एव	= ही
वाचा	= बाणी करके	त्वम्	= तू
अनभ्युदितम्	= प्रकाशित नहीं है	+ब्रह्म	= ब्रह्म
+च	= और	विद्धि	= जान
येन	= जिस करके	इदम्	= यह
वाक्	= बाणी	ब्रह्म	= ब्रह्म
अभ्युद्यते	= प्रकाशित होती है	न	= नहीं है
तत्	= तिसको	यत्	= जिसको
		इदम्	= ये लोक
		उपासते	= उपासनाकरते

भावार्थ ।

यद्वाचानभ्युदितमिति—जो ब्रह्मवाक् आदि इन्द्रियों का अ- षयहै वह किसप्रकार जानने योग्यहै, इसवार्त्ताको दिखलाते हैं हे शिष्य! जो ब्रह्म बाणींकरके कथन नहीं किया जाताहै, अर्थात् जि को इदंता करके बाणी निरूपण नहीं करसक्तीहै, और जिस स करके वागिन्द्रिय वर्णात्मिक शब्दोंका उच्चारण करती है, औ अपने अनेक व्यापारके करनेमें सामर्थ्य होतीहै, उसी चेतनको तु ब्रह्मजानो और जिस ज्ञाताज्ञेय भेदवाले उपाधि विशिष्ट परिछि चेतनको याने जीवको लोकउपासना करतेहैं वह ब्रह्म नहीं है ॥४

मूलम् ॥

यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनोमतं तदेवब्र त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

यत् मनसा न मनुते येन आहुः मनः मतम् तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यत्	= जो	आहुः	= ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म कहते हैं
मनसा	= मनकरके	तत्	= तिसको
न	= नहीं	एव	= ही
मनुते	= मननहोता है	त्वम्	= तू
+च	= और	ब्रह्म	= ब्रह्म
येन	= जिस करके	विद्धि	= जान
मनः	= मन	इदम्	= यहब्रह्म
मतम्	= विषय कियाहुआ अर्थात् अपने कार्य करने में सामर्थ होता है उसीको	न	= नहीं है
		यत्	= जिसको
		इदम्	= ये लोक
		उपासते	= उपासनाकरते हैं

भावार्थ ।

यन्मनसेति–जो चेतन स्वप्रकाश आत्मारूप ब्रह्म मनकरके भी विषय नहीं कियाजाता है अर्थात् मनभी जिसको विषय नहीं करसक्ता है और जिस करके मन अपने संकल्प विकल्परूप व्यवहारको करता है उसीको तुम ब्रह्मजानो परिछिन्न जीव जिसकी लोक उपासना करते हैं वह ब्रह्म नहीं है ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

यच्चक्षुषानपश्यति येनचक्षूंषि पश्यति तदेवब्रह्म त्वं विद्धि नेदंयदिदमुपासते ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

यत् चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषि पश्य[ति] तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इद[म्] उपासते ॥

अन्वयः	पदार्थ
यत्	जिसको
चक्षुषा	चक्षुकरके
न	नहीं
पश्यति	देखता है
+ च	और
येन	जिसकरके
चक्षूंषि	चक्षुवों को
पश्यति	देखता है
तत्	उसी को
एव	निश्चयकरके
त्वम्	तू
ब्रह्म	ब्रह्म
विद्धि	जान
इदम्	यहब्रह्म
न	नहीं है
यत्	जिसको
इदम्	ये लोक
उपासते	उपासना करते हैं

भावार्थ ।

यच्चक्षुषरिति–जो प्रकाशस्वरूप चेतनआत्मा ब्रह्मचक्षु इन्द्रि[य] करके नहीं देखाजासक्ताहै, और जिसकी सत्ताको पाकर चक्षु[रू]पादिकोंको देखताहै, उसीको तुम ब्रह्मजानो, जिस परिछिन्नमू[र्]त्तिमान् की लोकउपासना करते हैं, वह ब्रह्म नहीं है ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

यच्छ्रोत्रेणनशृणोति येनश्रोत्रमिदंश्रुतम्तदे[व] ब्रह्मत्वंविद्धिनेदंयदिदमुपासते ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

यत् श्रोत्रेण न शृणोति येन श्रोत्रम् इदम्

श्रुतम् तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यत्	= जिसको	तत्	= उसी को
श्रोत्रेण	= श्रोत्र करके	एव	= ही
न	= नहीं	त्वम्	= तू
शृणोति	= श्रवण करताहै	ब्रह्म	= ब्रह्म
+च	= और	विद्धि	= जान
येन	= जिस करके	इदम्	= यह
इदम्	= यह	+ब्रह्म	= ब्रह्म
श्रोत्रम्	= श्रोत्रइन्द्रिय	न	= नहीं है
श्रुतम्	= सुनागया है यानेसुननेको समर्थ होताहै	यत्	= जिसको
		इदम्	= ये लोक
		उपासते	= उपासना करतेहैं

भावार्थ ।

यच्छ्रोत्रेणेति–जो चेतन ब्रह्मशब्दकी उपलब्धिका साधनभूत है, वह श्रोत्र इन्द्रिय करके विषय नहीं कियाजासक्ता है, अर्थात् जो श्रोत्रेन्द्रियद्वारा भी इदंताका विषय नहीं होसक्ता है और जिसकी सत्ताको पाकर श्रोत्रेन्द्रिय अपने कार्य्य करने में सामर्थ्य होतीहै, उसीको तुम ब्रह्मजानो, लोक जिस परिछिन्न मूर्त्तिमान् की उपासना करते हैं, वह ब्रह्मनहीं है ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

यत्प्राणेननप्राणिति येनप्राणःप्रणीयतेतदेव ब्रह्मत्वंविद्धिनेदंयदिदमुपासते ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

यत् प्राणेन न प्राणिति येन प्राणः प्रणीयते त
एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपास

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदा
यत्	= जो	प्रणीयते	= ग्रहण किया जाता है
प्राणेन	= प्राणापानादि पंचवृत्ति रूप प्राण करके	तत्	= उसी को
न	= नहीं	एव	= निश्चयकरके
प्राणिति	= ग्रहण किया जाता है	त्वम्	= तू
+च	= और	ब्रह्म	= ब्रह्मव्यापक चेतन
येन	= जिस करके	विद्धि	= जान
प्राणः	= पंचवृत्तिरूप प्राण	इदम्	= यह दृष्टिगोचर
		न	= ब्रह्म नहीं है
		यत्	= जिसको
		इदम्	= ये लोक
		उपासते	=उपासना करते हैं

इति प्रथमः खण्डः ॥

भावार्थ ।

यत्प्राणेनेति–जो चेतन ब्रह्म घ्राणेन्द्रिय करके याने प्राण अपान उदान व्यान समानात्मक पंचवृत्तिरूप प्राणों करके प्रत्यक्षका विषय नहीं होसक्ता है और जिस चेतनकी सत्ताकर के पंचवृत्तिरूप प्राण अपने व्यापार को करते हैं, उसी चेतनरूप आत्माको तुम ब्रह्मजानो, जिस परिछिन्न मूर्त्तिमान् की लोक उपासना करते हैं, वह ब्रह्म नहीं है ॥ ८ ॥ इति प्रथमःखण्डः ॥

मूलम् ॥

यदिमन्यसेसुवेदेतिदभ्रमेवापिनूनं त्वंवेत्थब्रह्मणोरूपंयदस्यत्वं यदस्यदेवेष्वथनुमीमांस्यमेव तेमन्येविदितम् ॥ १ ॥

पदच्छेदः

यदि मन्यसे सुवेद इति दभ्रम् एव अपि नूनम् त्वम् वेत्थ ब्रह्मणः रूपम् यत् अस्य त्वम् यत् अस्य देवेषु अथ नु मीमांस्यम् एव ते मन्ये विदितम्

अन्वयः	पदार्थ
+गुरुःशिष्यंप्रतिवदति	गुरुशिष्य के प्रति कहताहै कि
यदि	अगर
+इति	ऐसा
मन्यसे	मानता है तू कि
+ब्रह्म	ब्रह्मको
सुवेद	भली प्रकार जानताहूं मैं
तू	तो
दभ्रम् एव	अल्प

अन्वयः	पदार्थ
अपि	ही
नूनम्	निश्चयकरके
त्वम्	तू
ब्रह्मणः	ब्रह्मके
रूपम्	रूपको
वेत्थ	जानताहै
+च	और
+यदि	अगर
यत्	जो
अस्य	इसब्रह्मके
रूपम्	रूपको
+त्वम्	तू

+अध्यात्मोपाधिषु = अध्यात्म उपाधियों बिषे याने देहइन्द्रिय अंतःकरण विशिष्ट जीवक्षेत्रज्ञ आत्मा बिषे

वेत्थ = जानता है

+च = और

यत् = जो

अस्य = इस ब्रह्मके

रूपम् = रूपको

देवेषु = ब्रह्माविष्णु शिवआदि देवता उपाधिपरिच्छिन्न शरीरों बिषे

+वेत्थ = जानता है

अथनु = तौभी

ते = तुझको

मीमांस्यमएव = विचारका ने के योग है क्योंकि अल्पही जानता है फिर भी बिचारकरना चाहिये इसके श्रवण पश्चात् शिष्य विचार करके फिर गुरु समीपआकर अपने अनुभवको कहता है कि

अहम् = मैं

+अद्य = अब

+ब्रह्म = ब्रह्मको

विदितम् = जानाहुआ

इति = ऐसा

मन्ये = मानताहूं

अब इस दूसरे खण्ड में असंभावनादि दोषसे जो शिष्यको शङ्का उत्पन्नहुई है तिसको दूर करते हुये गुरू शिष्यसे कहते हैं ॥

भावार्थ ।

यदिमन्यसेति–गुरू कहता है हे शिष्य! यदि तुम ऐसा मानतेहो कि ब्रह्म मनादि इन्द्रियोंका विषय है तो ऐसा तुम्हारा निश्चय अल्पही है अर्थात् तुच्छहै, क्योंकि ब्रह्मइन्द्रियादिकों का अविषय है, और यदि तुम इन्द्रियादि देवतों के शरीरों बिषे ब्रह्म को जानतेहो, तौभी तुम अल्पहो ज्ञानतेहो, इसलिये तुमको फिर ब्रह्मके स्वरूपका विचारकरना चाहिये, जब गुरूने इसप्रकार शिष्य से कहा तब शिष्य एकान्त में वेदके अर्थको विचार करके और युक्तियों से तिसको निश्चय करके गुरूके समीप पुनः जाकरके कहता है ॥ मन्येविदितमिति ॥ मैंने ब्रह्मको जाना है ऐसा मैं मानताहूं तब गुरु ने कहा किसप्रकार १०।१ ॥

मूलम् ॥

नाहंमन्येसुवेदेति नोनवेदेतिवेदच योनस्तद्वेदतद्वेद नोनवेदेतिवेदच ॥ २ ॥

पदच्छेदः

न अहम् मन्ये सुवेद इति नो न वेद इति वेद च यः नः तत् वेद तत् वेद नो न वेद इति वेद च

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अहम्	मैं	इति	ऐसा
सुवेद	भलीप्रकार ब्रह्मकोजानताहूं	न	नहीं
		मन्ये	मानताहूं
		च	और

+ब्रह्म = ब्रह्मको
न = नहीं
वेद = जानताहूं
+इति = ऐसाभी
+न = नहीं
वेद = समुझताहूं
यः = जो
नः = हममेंसे
तत् = उसब्रह्मको
वेद = विचार कर-
केजानताहै

तत् = वही
वेद = जानताहै
वेद = जानताहै
इति = ऐसा
नो = नहीं
च = और
न = नहीं
वद = जानताहै
इति = ऐसाभी
नो = नहीं

भावार्थ ।

तब ब्रह्मके जानने में शिष्य कारणको कहताहै ॥ नाहमिति । मैंने ब्रह्मको भलीप्रकार जानलिया है ऐसा मैं नहीं मानता और मैं ब्रह्मको नहीं जानताहूं ऐसा भी नहीं मानताहूं क्योंकि जानना व न जानना धर्मबुद्धिका है जब ब्रह्म साक्षात् होता तब बुद्धिका अभावहोता है, और बुद्धिके अभावहोनेसे मैं कैसे कहसक्ताहूं कि मैं ब्रह्मको जानताहूं, या नहीं जानताहूं, जब शास्त्र प्रमाण करके, गुरुके उपदेशकरके, और अपने अनुभव करके सम्पूर्ण जगत् ब्रह्महीस्वरूप है, और जाननेयोग्य जो ब्रह्महै, सो मैंहीहूं तब मैं कैसे कहसक्ताहूं कि मैं ब्रह्मको जानताहूं या नहीं जानताहूं जो एक रूपसे सर्व गुणातीत होकर व्यापक है, उसमें जानना व न जानना बनता नहीं (प्र०) हे शिष्य! जब गुरु अथवा और कोई ब्रह्मके साक्षात् होनेपर तुम से पूंछे कि तुम ब्रह्म को जानतेहो तब तुम क्या जवाब दोगे (उ०) हे प्रभो ॥ वेद नो । मैं ब्रह्मको नहीं जानताहूं ऐसा भी नहीं कहसक्ता, और ब्रह्मको

मैं जानताहूं ऐसा भी नहीं कहसक्ता, क्योंकि वह ज्ञात व अज्ञात से भिन्नहै अवाच्यहोकर चुपरहनाही यथार्थ उत्तर है ॥ ११।२ ॥

नोट–सारवस्तु यहहै कि अगर शिष्य समझताहो कि मैं ब्रह्मको जानताहूं, तो ठीक नहीं, क्योंकि ज्ञाता चैतन्य होताहै, और ज्ञेय जड़ तो चैतन्य आप बना, और ब्रह्मको जड़ बनाया, सो श्रुति-स्मृति विरुद्धहै, और अगर ऐसा कहै कि मैं ब्रह्मको नहीं जानता हूं, तोभी ठीक नहीं, क्योंकि जब ब्रह्म अज्ञातहो तब कहसक्ता है कि मैं ब्रह्मको नहीं जानसक्ताहूं ब्रह्मतो सदा पूर्ण एकरस सर्वत्र स्थित है वह अज्ञात कैसे होसक्ता है जो अपना रूप है, उसविषे जानना और न जानना दोनों नहीं होसक्ते हैं– ॥ २ ॥

मूलम् ॥

यस्यामतंतस्यमतंमतंयस्यनवेदसः अविज्ञातं विजानतांविज्ञातमविजानताम् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

यस्य अमतम् तस्य मतम् मतम् यस्य न वेद सः अविज्ञातम् विजानताम् विज्ञातम् अवि-जानताम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यस्य	= जिसको	यस्य	= जिसको
+ब्रह्म	= ब्रह्म	मतम्	= ज्ञात है
अमतम्	= अज्ञात है	सः	= वह पुरुष
तस्य	= उसीको	+कथयति	= कहताहै कि
+तत्	= वह	+अहम्	= मैं
मतम्	= ज्ञात है	न	= नहीं
च	= और	वेद	= जानताहूं

क्योंकिब्रह्म-ज्ञानका विषय नहीं है	अविज्ञातम् = अविज्ञात
+अतःएव = इसी लिये	+ च = और
विजानताम् = जाननेवालेको	अविजानताम् = नहींजाननेवालेको
+ ब्रह्म = ब्रह्म	+ ब्रह्म = ब्रह्म
	विज्ञातम् = विज्ञात है

भावार्थ ।

यस्यामतमिति ॥ गुरु शिष्यके संवाद की सिद्धिके लिये श्रुति कहती है ॥ यस्यामतमिति ॥ यस्य ॥ जिस विद्वान् अमतं ॥ कर्त्तृकर्मादि रूपकरके ब्रह्म अमत है, याने ज्ञातनहीं अर्थात् वह ब्रह्म नतो किसी क्रियाका कर्म है, और न कर्त्ताहै, ऐ जिस विद्वान्का निश्चय है ॥तस्य॥ तिसी विद्वान्को ॥मतं॥ कहना ज्ञातहै अर्थात् उसीने ब्रह्मको यथार्थरूप ब्रह्मकरके जाना यस्य॥ जिस अविद्वान्को ॥मतं॥ मतहै याने ज्ञातहै कि वह त्रि अवगाहि ज्ञानका विषय है ॥ स नवेद ॥ सो ब्रह्म को नहीं जान है, वही ब्रह्मको जानताहै जिसको ऐसा अनुभवहै कि ब्रह्म त्रि ज्ञानका विषय नहीं या ॥ विजानतां ॥ नानाप्रकारके प्रमा प्रमाण, प्रमेयादि, ज्ञानोंका विषय मानकरके जो अविद्वान् हतेहैं कि हम ब्रह्मको जानते हैं ॥ अविज्ञातं ॥ उनको ब्रह्म अ ज्ञात है, अर्थात् उन्होंने ब्रह्मको नहीं जानाहै ॥ अविजानतां नानाप्रकारके प्रमाता प्रमाण प्रमेयादि ज्ञानोंका ब्रह्म विषय न है, वह त्रिविध परिच्छेदसे शून्यहै, वही हमारा आत्मा है, वि विद्वानों का ऐसा निश्चय है ॥ विज्ञातं ॥ उन्हींको ब्रह्मज्ञात अर्थात् उन्होंनेही ब्रह्मको यथार्थरूप से जानाहै ॥ १२।३ ॥

मूलम् ॥

प्रतिबोधविदितंमतममृतत्वंहिविन्दते ।
नोविन्दतेवीर्यंविद्ययाविन्दतेऽमृतम् ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

प्रतिबोधविदितम् मतम् अमृतत्वम् हि विन्दते आत्मना विन्दते वीर्यम् विद्यया विन्दते अमृतम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
+ तत्	वह ब्रह्म
प्रतिबोध विदितम्	अंतःकरण कीअहंवृत्ति सेप्रकाशित है
+ इति	ऐसी
मतम्	ज्ञानी पुरुष की संमति है
+ अतः एव	इस लिये
+ आत्मदर्शी	ज्ञानीपुरुष
अमृतत्वम्	मोक्षको

अन्वयः	पदार्थ
हि	निश्चय करके
विन्दते	प्राप्तहोताहै
+ च	और
आत्मना	ब्रह्म
विद्यया	विद्याकरके
वीर्यम्	सामर्थ्यको
विन्दते	प्राप्तहोताहै
+ च	और
अमृतम्	अमरभाव को
विन्दते	प्राप्तहोताहै

प्रश्न ॥ जब ब्रह्म किसी भी इन्द्रिय करके नहीं जाना जाता है तो उसका भान कैसे होता है ॥ उ० ॥ प्रतिबोधेति ॥ बोधपदका अर्थ बुद्धि की वृत्ति है जो चेतन बुद्धिकी सबवृत्तियों में प्रतिबिम्बित होकर उन्हीं वृत्तियोंका साक्षी रूप से स्थितहै वही ब्रह्म है ॥ विदितंमतं ॥ वहां ऐसा भान होताहै ॥ अब आत्मज्ञान के फलको कहते हैं ॥ अमृतत्वं ॥ आत्मा के ज्ञानसे पुरुष अमृतत्वको अर्थात् मोक्षको प्राप्त होकर जन्म मरण से छूटजाता है ॥ आत्मना ॥ और समाहित मन करके अर्थात् एकाग्रचित्त करके ॥

वीर्य्यं ॥ आचार्य्य से उपदेश की हुई ब्रह्मविद्यारूपी सामर्थ्य को प्राप्तहोताहै ॥ विद्यया ॥ और आत्मज्ञानरूपी ब्रह्मविद्या करके अमृतं ॥ मोक्षको प्राप्तहोता है ॥ आत्मा नित्य कंठमें स्थित भू-णिकी तरह प्राप्त है, जैसे किसी के कंठमें मणिजड़ित भूषण पड़ाथा, उसको यह भ्रम होगया कि मेराभूषण खोगया है, इधर उधर खोजनेलगा, एकने पूछा कि हे भाई ! क्या खोजतेहो, उसने कहा मैं अपनी मणिको खोजताहूं, तब उसने कहा वह मणि तो तुम्हारे कंठमेंही स्थित है, तब उसने हाथसे यकीन किया कि मणि मेरेगलेमें थी और कहा कि खोईहुई मणि मिलगई, इसी प्रकार ब्रह्म सदा प्राप्त है वह अपना आत्मा है, और कोई वस्तु नहीं है, मूढ़ पुरुष ब्रह्मको तीर्थों में खोजताहै जिसकाल आचार्य शिष्यको उपदेश करताहै कि वह ब्रह्म तूही है तत्कालही वह शिष्य गरजकर कहता है ॥ अहंब्रह्मास्मि ॥ मैं ब्रह्मरूपहूं फिर ऐसा कहकर अवाच्य होजाता है क्योंकि ज्ञान होतेही वह अखंड आनन्द को प्राप्त होजाताहै जहांसे मन हटता नहीं और बिना मनके वाक्इन्द्रिय कुछ कहनहीं सक्ती है ॥ १३ । ४ ॥

मूलम् ॥

इहचेदवेदीदथसत्यमस्तिनचेदिहावेदीन्महती विनष्टिः । भूतेषुभूतेषुविचिन्त्यधीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृताभवन्ति ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

इह चेत् अवेदीत् अथ सत्यम् अस्ति न चेत् इह अवेदीत् महती विनष्टिः भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः प्रेत्य अस्मात् लोकात् अमृताः भवन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
चेत्	= अगर	इह	= इसी जन्म में

+ब्रह्म = ब्रह्मको
अवेदीत् = जानताभया
अथ = तो
सत्यमस्ति = सफल है
+च = और
चेत् = यदि
इह = इसीजन्म में
न = नहीं
अवेदीत् = जानताभया
तू = तो
महती = महान्
विनष्टिः = { विनाश को प्राप्त होताहै याने वारंवार जन्मता मरता रहता है }

भूतेषुभूतेषु = सब भूतों में
आत्मानम् = अपनेप्रत्यक् आत्मा को
विचिन्त्य = स्थितजान कर
धीराः = धीरपुरुष
अस्मात् = इस
लोकात् = लोकसे
प्रेत्य = देह त्यागकर
अमृताः = अमर
भवन्ति = { होते हैं याने जन्म मरण भावसेरहित होजाते हैं }

इति द्वितीयःखण्डः ॥ २ ॥

भावार्थ ।

अज्ञान के वशमें होकर पुरुष नानायोनियों के अनेक प्रकार के कष्टोंको उठाता है, वे कष्ट केवल आत्मज्ञान सेही दूर होते हैं सो आत्मज्ञानकी प्राप्ति इसी मनुष्य शरीरमें होने योग्यहै, इसी वार्ताको कहते हैं ॥ इहेति ॥ आत्मज्ञान की प्राप्ति मनुष्य शरीरही में होती है यदि आत्माको इसी शरीर में जानलिया तो सफल है और अगर इसी शरीर में ॥ अहं ब्रह्मास्मि ॥ करके आत्माके स्वरूपका साक्षात्कार न करसका तो ॥ महतीविनष्टिः ॥

महान् विनाश को प्राप्त होगा, अर्थात् अनन्त कालतक ज
मरणादि से छुटकारा नहीं पावेगा,इस मनुष्य जन्ममें मोक्ष
फलवाला आत्मज्ञान दुर्लभ नहीं है ॥ भूतेषु भूतेषु ॥ चरा
प्राणियोंमें स्थित जो प्रत्येक ब्रह्महै, उसका चिन्तनकरके पुरु
अस्मात् लोकात् ॥ अहंमम अविद्यारूपी अभिमान से ॥ प्रेत्य
निवृत्त होकर ॥ अमृताः ॥ मुक्त होजाता है ॥ १४ । ५ ॥

इति द्वितीयःखण्डः ॥ २ ॥

एक समय अग्नि वायु और इन्द्र देवता असुरों को परा
करके किसी एक पहाड़ पर बैठकर परस्पर सहित अभिमान
मारतेथे, और कहतेथे कि हम लोग कैसे लड़े और शत्रुओं
मारा और भगादिया,इस अहंकारको परमात्मा सह न सका,
देवताओं का अभिमान दूरकरने के अर्थ और उनके कल्याण
लिये यक्षका रूप धारण कर जहां वे सब बैठेथे समीप आकर
खलाई दिया, जब उन देवताओंने यक्षके अद्भुतरूपको देखा
आश्चर्य्य को प्राप्तहो परस्पर विचारनेलगे कि कौन यह अलौकि
पूजनीयहै, उसके पासजाकर देखना चाहिये, तब उन तीनों दे
ताओंमें से प्रथम अग्निदेवता गया, फिर वायु देवता गया,
हार मानकर दोनों लौट आये,सबके पीछे इन्द्र देवता गया,
जब उसका अभिमान दूर हुआ,तब परमात्मा यक्ष के रूपको
रोभाव करके उमानामक ब्रह्मविद्या के रूपको धारण कर उस
को दर्शन दिया,और फिर सबको उपदेश किया कि तुम सबो
स्वशक्ति कुछ भी नहींहै,मेरीशक्ति लेकर सब शक्तिमान् हो रहे
तुम लोग वृथा अहंकार करतेथे, और असुरों को तुमने अप
शक्ति करके नहीं जीता, जब मैंने अपनी शक्ति तुमलोगों में
वेश किया तब तुम जीतको प्राप्त हुये, उसी तरह जब मैं तुमलो
में से अपनी शक्ति को खींच लेताहूं,और असुरों को देताहूं
तुमलोग हारमानकर भागतेहो, और असुर जीत जातेहैं, यह
ख्यायि अगले मंत्रों से जाहिर होताहै ॥

मूलम् ॥

ब्रह्महदेवेभ्योविजिग्येतस्यहब्रह्मणो विजयेदेवा अमहीयन्ततऐक्षन्तास्माकमेवायं विजयोऽस्माक मेवायंमहिमेति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

ब्रह्म ह देवेभ्यः विजिग्ये तस्य ह ब्रह्मणः विजये देवाः अमहीयन्त ते ऐक्षन्त अस्माकम् एव अयम् विजयः अस्माकम् एव अयम् महिमा इति

अन्वयः	पदार्थ
ब्रह्म	ब्रह्म
ह	ही
देवेभ्यः	देवतोंके लिये
विजिग्ये	विजयको प्राप्तकरताभया
तस्य	तिस
ह	ही
ब्रह्मणः	ब्रह्मके
विजये	विजयमें
देवाः	देवतालोक
अमहीयन्त	महिमा को प्राप्तहोते भये
+च	और

अन्वयः	पदार्थ
ते	सोई देवता
ऐक्षन्त	जानतेभये कि
अस्माकम्	हमाराही
एव	निश्चय कर के
अयम्	यह
विजयः	विजयहै
च	और
अस्माकम्	हमाराही
एव	निश्चय करके
अयम्	यह
महिमा	महिमाहै

मूलम् ॥

तद्धैषांविजज्ञौ तेभ्योहप्रादुर्बभूवतन्नव्यजानन्त किमिदंयक्षमिति ॥ २ ॥

पदच्छेदः

तत् ह एषाम् विजज्ञौ तेभ्यः ह प्रादुर्बभूव तत् न व्यजानन्त किम् इदम् यक्षम् इति

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तत्	= वह ब्रह्म	ह	= निश्चय करके
एषाम्	= इनदेवताओंको	तत्	= तिस ब्रह्मको
विजज्ञौ	= अभिमानी जानता भया	+ ते	= वह देवता
+ च	= और	न	= नहीं
तेभ्यः	= तिन देवताओं के अभिमान दूरकरनेकेअर्थ	व्यजानन्त	= जानतेभये कि
ह	= निःसन्देह	किम्	= कौन
प्रादुर्बभूव	= प्रगट होताभया	इति	= ऐसा
		इदम्	= यह
		यक्षम्	= पूजनीय है

भावार्थ ।

उत्तम अधिकारी के प्रति निर्गुणब्रह्म के ज्ञानको कहकर मन्दअधिकारी के प्रति सगुण ब्रह्म की उपासनाका विधान करते हैं ॥ ब्रह्मेति ॥ एक कालमें देवतों और दैत्योंका परस्पर घोरयुद्ध हुआ, उस युद्धमें दैत्य की हार और देवता की जीत हुई जीतसे देवतों को बड़ा अभिमान उत्पन्न हुवा, अभिमानही

शका कारण है ऐसा ख्याल करके उनके अभिमान को दूर करने के लिये यक्षरूप धारण करके जहांपर सब देवता स्थित थे उससे थोड़ीदूरपर ब्रह्म प्रगट हुवा, ब्रह्मसच्चिदानन्द देवतों के अनुग्रह के लिये उनके प्रतिकूल जो असुर हैं उनको जीतता भया, तिस सच्चिदानन्द ब्रह्मकी जयहोनेपर इन्द्र अग्नि वायु प्रभृति जो देवता हैं वे सब महिमा को प्राप्त होतेभये और अहंकार करतेभये कि हमलोगों ने असुरोंको निश्चय करके जीताहै वास्तव में पराजय करनेवाला ब्रह्मथा वह इन इन्द्रादि देवतों के मिथ्या अभिमान के दूर करनेकेलिये यक्षके रूपको धारण करके आकाश में प्रगट होताभया देवतों ने उसको नहीं जाना कि यह कौनहै १६ । २ ॥

मूलम् ॥

तेऽग्निमब्रुवन् जातवेद एतद्विजानीहिकिमेतद्यक्षमिति तथेति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

ते अग्निम् अब्रुवन् जातवेदः एतत् विजानीहि किम् एतत् यक्षम् इति तथा इति

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
ते	= वे देवता	इति	= ऐसा
अग्निम्	= अग्नि से	एतत्	= यह
अब्रुवन्	= कहते भये कि	यक्षम्	= यक्षहैयाने पूज्य है
जातवेदः	= हे अग्नि	तथाइति	= बहुतअच्छा ऐसाउत्तरअग्निदेवताने दिया
एतत्	= इसको		
विजानीहि	= जानतूकि		
किम्	= कौन		

मूलम् ॥

तदभ्यद्रवत्तमभ्यवदत्कोऽसीति अग्निर्वा अ-
मस्मीत्यब्रवीज्जातवेदा वा अहमस्मीति ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

तत् अभ्यद्रवत् तम् अभ्यवदत् कः असि इ-
अग्निः वै अहम् अस्मि इति अब्रवीत् जातवेदा
वै अहम् अस्मि इति

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदा-
+यदा	= जब	+ सः	= वह
तत्	= उसयक्षके सम्मुख	अभ्यवदत्	= कहताभया कि
अग्निः	= अग्निदेवता	अग्निः	= अग्निदेवता
अभ्यद्रवत्	= जाताभया	वै	= निश्चयकर
इति	= तब	अहम्	= मैं
तम्	= उससे	अस्मि	= हूं
यक्षम्	= यक्ष	इति वै	= और
+अभ्यवदत्	= पूछता भया कि	जातवेदाः	= जातवेदाभी
कः	= कौन	अहम्	= मैं
असि	= तू है	अस्मि	= हूं
		इति	= ऐसा
		अब्रवीत्	= कहताभया

भावार्थ ।

तेऽग्निमब्रुवन् ॥ जिसकाल में इन्द्रादिक देवता अपनी २ ग-
भारते थे, उसीसमय उन्होंने दूरसे यक्षको देखा और उस य-
के जानने की इच्छा उत्पन्न हुई कि यह कौन है, और कहां

आया है, ऐसा विचार करके देवतों ने अग्नि देवता से कहा, हे जातवेदा! जो यह आगे खड़ा देखाई देता है इससे जाकर दरियाफ्त करो कि तू कौन है इस प्रकार प्रणित हुआ अग्नि देवता यक्ष के समीप गया, और पूछने परही था कि तू कौन है इतने में यक्षनेही पूछा तू कौन है, अग्नि देवता ने कहा मैं अग्नि हूं, और जातवेदा भी मुझको कहते हैं ॥ १७ । १८ ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

तस्मिँस्त्वयिकिंवीर्यमित्यपीदछं सर्वंदहेयं यदिदंपृथिव्यामिति ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

तस्मिन् त्वयि किम् वीर्यम् इति अपि इदम् सर्वम् दहेयम् यत् इदम् पृथिव्याम् इति

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तस्मिन्	तिस	दहेयम्	मैंजलादूं
त्वयि	तेरे बिषे	+ च	और
किम्	क्या	यत्	जो कुछ
वीर्य्यम्	सामर्थ्य है	इदम्	यह
इति	ऐसा	पृथिव्याम्	पृथिवीबिषेहै
+ यक्षम्	यक्ष	+तत्अपि	उसकोभी
+ अब्रवीत्	कहताभया	+दहेयम्	जलादूं
अपि	संभवहै कि	इति	ऐसा
इदम्	इस	+अग्निः	अग्निदेवता
सर्वम्	संपूर्णजगत्को	+आह	कहताभया

भावार्थ ।

तस्मिंस्त्वयीति ॥ जब यक्ष अग्नि देवता से कहा है तेरे में

क्या सामर्थ्य है तब अग्नि ने कहा यह जो दृष्टि गोचर जगत् है और जो कुछ कि पृथिवी पर है उस सबको मैं एक क्षणमात्र बिषे भस्म करसक्ता हूं ॥ १६ ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

तस्मैतृणंनिदधावेतद्दहेतितदुपप्रेयायसर्वजवेन तन्नशशाकदग्धुंसःततएवनिववृतेनैतदशकंविज्ञातुंयदेतद्यक्षमिति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

तस्मै तृणम् निदधौ एतत् दह इति तत् उपप्रेयाय सर्वजवेन तत् न शशाक दग्धुम् सः ततः एव निववृते न एतत् अशकम् विज्ञातुम् यत् एतत् यक्षम् इति

अन्वयः	पदार्थ
+तत्	= वह
+यक्षम्	= यक्ष
तस्मै	= तिस अग्नि के सन्मुख
तृणम्	= एक तृणको
निदधौ	= रखता भया
+च	= और
इति	= ऐसा
आह	= कहता भया कि
एतत्	= इसको
दह	= दहनकर

अन्वयः	पदार्थ
सः	= सो अग्नि
तत्	= उस तृणके
उपप्रेयाय	= समीप जाता भया
+परन्तु	= परंतु
सर्वजवेन	= अपनी सर्वशक्तिकरके भी
तत् दग्धुम्	= उसके जलाने को
नशशाक	= नहीं सामर्थ्य होताभया
+तदा	= तब

सः = वह अग्नि
ततः = उस यक्ष के समीपसे
निवहृतेएव = लौटताभया
+च = और
इति = ऐसा(अपने साथियोंसे)
+आह = कहता भया कि

एतत् = इसके
विज्ञातुम् = जाननेकोकि
तत् = कौन
एतत् = यह
यक्षम् = यक्ष है
नअशकम् = मैं नहीं समर्थ होताभया

भावार्थ ।

॥ तस्मैतृणमिति ॥ तब ऐसे अभिमानी अग्नि देवता के सामने क्षने एक तृणको रख दिया और कहा इसको तू दाह कर, तब ह देवता उस तृण के समीप बड़े वेग से आया और संपूर्ण बलको गाया, पर तृणको दाह न करसका, लज्जित होकर अपने साथी वतों के पास लौट आया, और अभिमानसे रहित होकर उनसे हनेलगा जो यह सामान्यरूप करके अस्मदादिकों के सन्मुख स्थित यक्ष है इसको मैं विशेषरूप करके नहीं जानता भया कि ह कौन है, और क्या इसका नाम है ॥ २० ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

अथवायुमब्रुवन् वायवेतद्विजानीहि किमेतद्यक्ष मिति तथेति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

अथ वायुम् अब्रुवन् वायो एतत् विजानीहि किम् तत् यक्षम् इति तथा इति

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदा
अथ	तिसके अनंतर	विजानीहि	जानतू कि
वायुम्	वायुसे	किम्	कौन
अब्रुवन्	सब कहते भये कि	इति	ऐसा
वायो	हे वायु	एतत्	यह
एतत्	इसको	यक्षम्	पूजनीय
		तथाइति	वायुने क बहुतअच्छ

भावार्थ ।

अथ वायुमिति ॥ अग्नि देवता के लौटआने के पश्चात् श्रे देवतों ने वायु देवता से कहा हे वायो ! इस यक्षको तुम जा दर्याफ्त करो यह कौन है, इसका क्या नाम है, और किस वा यहां आया है २१ ॥ ७ ॥

सूलम् ॥

तदभ्यद्रवत्तमभ्यवदत्कोऽसीति वायुर्वा अह स्मीत्यब्रवीन्मातरिश्वावा अहमस्मीति ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

तत् अभ्यद्रवत् तम् अभ्यवदत् कः असि इति वायुः वै अहम् अस्मि इति अब्रवीत् मातरिश्वा अहम् अस्मि इति

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदा
वायुः	वायुदेवता	अभ्यद्रवत्	शीघ्र जा भया
तत्	उसयक्ष के समीप	+तदा	तब

तम् = उस से	सः = वह
यक्षम् = यक्ष	+अब्रवीत्=कहताभया
अभ्यवदत् = पूछता भया कि	+च = और
कः = कौन	मातरिश्वा = { मातरिश्वा याने अन्तरिक्षगामी
असि = तू है	वै = भी
+वायुः = वायु	अहम् = मैं
अहम् = मैं	अस्मि = हूं
+वै = निश्चयकरके	इति = ऐसा
अस्मि = हूं	अब्रवीत् = बोलताभया
इति = ऐसा	

भावार्थ ।

तदभ्यद्रवत् ॥ तब वायु देवता उस यक्षके समीप जाताभया और पूछने कोही था कि इतने में यक्षने खुदही पूछा तू कौन है वायु ने कहा मेरा एक नाम वायु है, और दूसरा नाम मातरिश्वा है ॥ २२ ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

तस्मिँस्त्वयिकिंवीर्यमित्यपीदꣳसर्वमाददीयंयदिदं पृथिव्यामिति ॥ ९ ॥

पदच्छेदः

तस्मिन् त्वयि किम् वीर्य्यम् इति अपि इदम् सर्वम् आददीयम् यत् इदम् पृथिव्याम् इति

अन्वयः पदार्थ	अन्वयः पदार्थ
तस्मिन् = तिस	किम् = क्या
त्वयि = तुझबिषे	वीर्यम् = पराक्रमहै

इति = ऐसा	पृथिव्याम् = पृथिवी
+अब्रवीत् = पूछताभया	चराचर
+वायुः = वायुदेवता	इदम् = उस
इति = ऐसा	सर्वम् = सब को
+अब्रवीत् = उत्तर देता भया कि	अपि = ही
यत् = जो कुछ	आददीयम् = मैं धार करसक्ता
इदम् = यह	

भावार्थ ।

तस्मिंस्त्वयीति ॥ यक्षने कहा तुम्हारे में क्या सामर्थ्य है, वायुने कहा सहित पृथ्वी के जितना कुछ पृथिवी पर है इस स लेकर मैं आकाश में गमन कर सक्ताहूं,–जब वायु ने साभि ऐसा कहा तब यक्ष ॥ २३ ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

तस्मै तृणं निदधावेतदादत्स्वेति तदुपप्रेय सर्वजवेन तन्न शशाकादातुं स तत एव निववृते, तदशकं विज्ञातुं यदेतद्यक्षमिति ॥ १० ॥

पदच्छेदः

तस्मै तृणम् निदधौ एतत् आदत्स्व इति उपप्रेयाय सर्वजवेन तत् न शशाक आदा स: ततः एव निवव्टते न एतत् अशकम् विज्ञा यत् एतत् यक्षम् इति

अन्वयः	पदार्थ
यक्षम्	यक्ष
तस्मै	उस वायु के सम्मुख
तृणम्	एकतृण को
निदधौ	रखताभया
च	और
इति	ऐसा
आह	कहताभयाकि
एतत्	इसको
आदत्स्व	उठा
+तदा	तब
वायुः	वायुदेवता
तत्	उस तृण के
उपप्रेयाय	समीपजाता भया
+परन्तु	परन्तु
सर्वजवेन	सर्व्व पुरुषार्थ करके
अपि	भी
तत्	उस तृणके
आदातुम्	उठानेको
न	नहीं

अन्वयः	पदार्थ
शशाक	समर्थ होता भया
तदा	तब
सः	वह वायु
ततः	उस यक्ष के समीप से
एव	निश्चयकरके
निववृते	लौटताभया
+च	और
+आह	सब देवतों से कहता भया कि
एतत्	इसके
विज्ञातुम्	जानने को
+अहम्	मैं
न	नहीं
अशकम्	समर्थ होता भया कि
यत्	कौन
एतत्	यह
इति	ऐसा
यक्षम्	यक्ष है

भावार्थ ।

तस्मैतृणमिति ॥ तिस वायु के आगे एक शुष्क तृण को फें दिया और कहा इस तृणको लेकर तू प्रथम आकाश में गम करजा जब तू इस तृणको उठाकर उड़जावैगा तब हमको नि श्चय होजायगा कि पृथिवी आदि सबको भी उड़ासकैगा यक्ष इस वार्त्ताको सुनकर बड़े वेगके साथ वायु देवता तृणके समी गया और अपना सम्पूर्ण बल लगाया परन्तु तृणको न उड़ास तब निरभिमान और लज्जित होकर वायु देवतों से आकर कह लगा कि मैं इस यक्षको नहीं जानताभया कि कौनहै ॥ २४ ॥ १०

मूलम् ॥

अथेन्द्रमब्रुवन्मघवन्नेतद्विजानीहि किमेतद्य मितितथेति तदभ्यद्रवत्तस्मात्तिरोदधे ॥ ११ ॥

पदच्छेदः

अथ इन्द्रम् अब्रुवन् मघवन् एतत् विजानीं किम् एतत् यक्षम् इति तथा इति तम् अभ्यद्रव तस्मात् तिरोदधे

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदा
अथ	= तिसकेअनंतर	एतत्	= यह
इन्द्रम्	= इन्द्रसे	यक्षम्	= यक्ष है
अब्रुवन्	= सब देवताक-हतेभये कि	तथाइति	= बहुत अच्छा कहके
मघवन्	= हे इन्द्र	सः	= वह इन्द्र
एतत्	= इसको	तत्	= उसयक्षके मीप
विजानीहि	= जानतू कि		
किम्	= कौन	अभ्यद्रवत्	= जाताभया

तस्मात् = उस इन्द्रसे	तिरोदधे = तिरोधान या-
+ तत् = वह	ने अदृश्यहो
+ यक्षम् = यक्ष	ताभया

भावार्थ।

अथेन्द्रेति ॥ अभिमान रहित वायु के वचन को श्रवण करके सब देवता इन्द्र के प्रति कहते भये ॥ हे इन्द्र! आप जाकर इस यक्ष के हाल को दर्याफ्त करो कि यह कौन है, ॥ तथास्तु ॥ करके इन्द्र यक्षकी तरफ चला, इन्द्रको आते देखकर वह यक्ष अन्तर्द्धान होगया ॥ २५ ॥ ११ ॥

मूलम् ॥

स तस्मिन्नेवाकाशेस्त्रियमाजगाम बहुशोभमा नामुमां हैमवतींताछंहोवाचकिमेतद्यक्षमिति १२ ॥

पदच्छेदः

सः तस्मिन् एव आकाशे स्त्रियम् आजगाम बहुशोभमानाम् उमाम् हैमवतीम् ताम् ह उवाच किम् एतत् यक्षम् इति

अन्वयः पदार्थ	अन्वयः पदार्थ
सः = वह इन्द्र	हैमवतीम् = हिमाचल कन्या
तस्मिन्एव = तिसही	स्त्रियम् = देवी के स-मीप
आकाशे = आकाश में	आजगाम = प्राप्तहोता भया
बहुशोभमानाम् = अत्यन्त शोभायुक्त	च = और
उमाम् = उमा नाम वाली	

ताम् = तिससे	किम् = कौन
ह = ही	एतत् = यह
उवाच = पूछताभया कि	इति = ऐसा
	यक्षम् = यक्षथा

इतितृतीयः खण्डः

भावार्थ ।

सतस्मिन्निति ॥ इन्द्र देवता अभिमान से रहित होकर उस स्थान में नम्रता के साथ खड़ारहा जहां वह यक्ष स्थित था, और उस यक्षका ध्यान करनेलगा, इतने में वह क्या देखता है कि यक्ष के बदले ब्रह्मविद्या स्त्रीरूप धारण कियेहुये चुपचाप स्थित है, वह बड़ी स्वरूपवान् है, स्वर्ण के आभूषणोंसे युक्त है, उससे इन्द्रदेव हाथ जोड़कर कहताहै, कि हे माता जो यक्ष सम्मुख स्थित था, और मेरे आतेही अन्तर्द्धान होगया, वह कौनथा ॥ २६।१२

इति तृतीय खंडः ॥ ३ ॥

नोट–जब यक्ष इन्द्रदेवके आनेपर अन्तर्द्धान होगया तब इन्द्र अत्यन्त पश्चात्तापवान् होताभया, तब यह यक्ष उसको अहंकार रहित देखकर उसपर अनुग्रह करके साक्षात् ब्रह्मविद्या उमारूप होकर उसके समीप प्रकट होताभया ॥

मूलम् ॥

सा ब्रह्मेतिहोवाचब्रह्मणोवा एतद्विजयेमही-ध्वमितिततोहैव विदाञ्चकार ब्रह्मेति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

सा ब्रह्म इति ह उवाच ब्रह्मणः वै एतत् वि-जये महीय ध्वम् इति ततः ह एव विदाञ्चकार ब्रह्म इति

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तत्	वहयक्ष	सा	वहउमा
ब्रह्म ह	ब्रह्महीथा	उवाच	कहतीभई
+च	और	तत्	वह
ब्रह्मणःवै	ब्रह्मकेही	ब्रह्म	ब्रह्म
विजये	विजयमें	एव	हीथा
इतिएतत्	ऐसेइस	इति	ऐसा
महीयध्वम्	महिमाकोतु मसब प्राप्त हुयेहो	इन्द्रः	इन्द्र
इति	इसप्रकार	ततः	तत्पश्चात्
		विदाञ्चकार	जानता भया

भावार्थ ।

साब्रह्मेति ॥ इन्द्रके वचन को सुनकर वह उमा कहती है, हे इन्द्र ! देशकाल वस्तु परिच्छेद से रहित जो ब्रह्म है, वही यक्षकेरूप को धारण करके इसी जगह में स्थित था, और वही तुम्हारी विजयका कारण भी था, यह जो विजय तुम्हारा हुआहै, सो ब्रह्म ही का विजय था, तुम वृथाही अभिमान करतेहो, कि हमने विजय किया है, तुम्हारे अभिमान के दूर करने के लिये ब्रह्मने यक्षका रूप धारण किया था तब इन्द्रने ऐसा सुनकर कहा कि हे माता ! तू सत्य कहती है, आज तेरे प्रसाद से मैंने ब्रह्मको जाना ॥ २७॥ १ ॥

मूलम् ॥

तस्माद्वाएतेदेवा अतितरामिवान्यान्देवान्यद्ग्निर्वायुरिन्द्रस्तेह्येनन्नेदिष्ठं यस्पृशुस्तेह्येनत्प्रथमो-विदाञ्चकारब्रह्मेति ॥ २ ॥

पदच्छेदः

तस्मात् वै एते देवाः अतितराम् इव अन्या
देवान् यत् अग्निः वायुः इन्द्रः ते हि एनम्
दिष्टम् पस्पृशुः ते हि एनत् प्रथमः विदाञ्च
ब्रह्म इति

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पद
यत्	= जिसकारण	ते	= वे
अग्निः	= अग्नि	इति	= इसप्रका
वायुः	= वायु	एनत्	= इसब्रह्म
इन्द्रः	= इन्द्र	प्रथमः	= प्रथम
एते	= येसब	हि	= निश्चयपू
देवाः	= देवता	विदाञ्चकार	= जानतेभ
एनत्	= इस	तस्मात्	= तिसीका
नेदिष्टम्	= समीपस्थ ब्रह्मको	ते	= वे
हि	= भलीप्रकारसे	वै	= निश्चयके
पस्पृशुः	= स्पर्शकरतेभये याने दर्शन करते भये	अन्यान्	= और
च	= और	देवान्	= देवतों
		अतितराम् इव	अत्यन्तश्रे ष्ठहैं

भावार्थ ।

तस्माद्वेति ॥ ब्रह्मके साथ संवाद होनेसे और ब्रह्मके
पाने से वायु और अग्नि देवता और देवतों की अपेक्षा
हुये और इन्द्र इनका और अन्य देवतों का राजा हुआ

उसने उमा माता के प्रसादरूपी वचन द्वारा ब्रह्मको जानता भया ॥ २८ ॥ २ ॥

मूलम् ॥

तस्माद्वा इन्द्रोऽतितरामिवान्यांन्देवान्सह्येनन्नेदिष्टंपस्पर्शसह्येनत्प्रथमोविदाञ्चकारब्रह्मेति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

तस्मात् वै इन्द्रः अतितराम् इव अन्यान् देवान् सः हि एनत् नेदिष्टम् पस्पर्श सः हि एनत् प्रथमः विदाञ्चकार ब्रह्म इति

अन्वयः	पदार्थ
हि	= जिसकारण
सः	= वह इन्द्र
एनत्	= इस
नेदिष्टम्	= समीपस्थब्रह्मको
पस्पर्श	= स्पर्श करता भया याने दर्शन करता भया
+ च	= और
हि	= जिसकारण
सः	= वह
इति	= ऐसे
एनत्	= इस

अन्वयः	पदार्थ
ब्रह्म	= ब्रह्मको
प्रथमः	= प्रथम
विदाञ्चकार	= उमाके उपदेशसे जानताभया
तस्मात्	= तिसीकारण
सः	= वह
वै	= निश्चयपूर्वक
अन्यान्	= और
देवान्	= देवतों से
अतितराम् इव	= अतिशय श्रेष्ठहै

मूलम् ॥

तस्यैषआदेशोयदेतद्विद्युतोव्ययद्युतत्तदाइती-
न्यमीमिषदाइत्यधिदैवतम् ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

॥ तस्य एषः आदेशः यत् एतत् विद्युतः व्यद्यु-
तत् आ इति इति न्यमीमिषत् आ इति अ-
धिदैवतम्

अन्वयः	पदार्थ
इति	ऐसा
यत्	जो
तस्य	उसब्रह्मका
एषः	यह
आदेशः	दृष्टान्तक उपदेश है
च	और
इति	ऐसा
+ तस्य	उसका
+ यत्	जो
अधिदैवतम्	देवता वि-षयक

अन्वयः	पदार्थ
+ उपदेशः	उपदेश है
+सः	सो
एतत्	यह
विद्युतः	बिजलीके
व्यद्युतत्	चमकनेके
आ	तुल्य है
+ अथवा	या
न्यमीमिषत्	पलकमा-रने के
आ	तुल्य है

भावार्थ ।

तस्येति ॥ इन्द्र करके अवगत जो ब्रह्म है तिसका यह वक्ष्य-
माण आदेश है याने उपमा रहित ब्रह्म का उपमा करके उपदे-
है, यह उपदेश कनिष्ठ मुमुक्षु प्रति है, क्योंकि उनका ब्रह्म सा-

कालप्राप्त नहीं रहता है कभी २ बिजुली की तरह चमककरतिरोधान होजाता है, कारण यह है कि उनको पूरा २ वैराग्य नहीं है, ऐसेही इन्द्रय की बिजुलीके समान दिखाकर वह ब्रह्म तिरोधान होगया, क्योंकि इन्द्रय शुभक्रिया करके शुभ कामना के वश होनेसे उसको तीव्र वैराग्य नहीं था यहां पर मतलब यह है कि जो मुमुक्षु अहंकार सहित है उसको ब्रह्म कभी नहीं प्राप्त होता है जैसे अग्नि देवता और वायु देवताको जो अहंकार से भरे थे ब्रह्म और नहीं प्राप्त हुआ, जो मुमुक्षु अहंकार रहित है और वैराग्य सम्पन्न है चहै उसको ब्रह्मका पूरा २ उपदेश न भी मिलाहो उसको ब्रह्म बिजुलीके समान दिखाई देकर हट जाता है जैसे इन्द्रिय को हुआथा❀ जो यज्ञ की कामना से भरा होताहै वह यज्ञ करता है, और जब वह सौ यज्ञ करलेता है तब वह इन्द्रयपद को प्राप्त होता है, इसलिये जो इन्द्रय होता है, वह कामनावों से भरा होता है, इसीकारण उसको हस्तामलकवत् ब्रह्म प्राप्त नहीं होता है, जिस वक्त वैराग्य उत्पन्न होताहै उस वक्त ब्रह्म प्राप्त होताहै मगर थोड़ीदेरमें तिरोधान होजाता है जैसे इन्द्रयको हुआथा, यह आदेश उपमा देकर मुमुक्षु के प्रति मुमुक्षुके अन्तःकारण के बाहरस्थित ब्रह्मका है, अब अगला मन्त्र मुमुक्षु के अन्तर ब्रह्म का उपदेश करैगा ॥ ३० । ४ ॥

❀ नोट—क्योंकि जब इन्द्रय यक्षके पास को चला तो बहुत नम्रता से चला और जब यक्ष अन्तर्द्धान होगया तब उसको बड़ी ग्लानि हुई यही उसका साधारण बैराग्य था ॥

मूलम् ॥

अथाध्यात्मंयदेतद्गच्छतीवचमनोऽनेन चैतदुपस्मरत्यभीक्ष्णं सङ्कल्पः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

अथ अध्यात्मम् यत् एतत् गच्छति इव मनः अनेन च एतत् उपस्मरति अभीक्ष्ण सङ्कल्पः

अन्वयः	पदार्थ
च	और
अथ	देवताविषयक उपदेशके पश्चात्
यत्	जिसब्रह्मको
एतत्	यह
मनः	मन विषयकरता
गच्छति	है वृत्तिव्याप्तिकरके
अनेन	इसीमनकरके
एतत्	उसब्रह्मको
+मुमुक्षुः	मुमुक्षु
अभीक्ष्णम्	अत्यन्त
उपस्मरति	समीपवर्ति होकरस्मरण करताहै
एतत्	यही
सङ्कल्पः	मनसम्बं
अध्यात्मम्	अध्यात्म पदेश है

भावार्थ ।

अथाध्यात्ममिति ॥ अधिदैवत उपदेशके अनंतर अध्यात्म अर्थात् अंतरात्मिकविषयकेउपदेशकामंत्रनिरूपणकरता है॥ यत् प्रसंगमें प्राप्तजोब्रह्म है, उस प्रत्यगात्मकब्रह्म में ऐसा मालूम हो है कि मानों हमारा मन प्रवेश करता जाताहै और उससे स्पर्शि जाता है ॥ अनेनमनसा ॥ इसी मनकरकेही "अहंब्रह्मास्मि उपासिक निरंतर ब्रह्मका स्मरण करताहै यह अनुभव अति अधिकारी पुरुषोंको होताहै ॥ ३१ । ५ ॥

मूलम् ॥

तद्धतद्वनंनामतद्वनमित्युपासितव्यं सयएतदेवं वेदाभिहैनं सर्वाणिभूतानिसंवाञ्छन्ति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

तत् ह तद्वनम् नाम तद्वनम् इति उपासितव्यम् सः यः एतत् एवम् वेद अभि ह एनम् सर्वाणि भूतानि संवाञ्छन्ति

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तत्	= वह ब्रह्म	यः	= जो
ह	= निश्चयकरके	एतत्	= इसब्रह्मको
नाम	= प्रसिद्ध	एवम्	= इसप्रकार
तद्वनम्	= पूजनीय है	वेद	= जानता है
तद्वनम्	= सबकापूजनीयहै	एनम्	= उसको
इति	= ऐसा	सर्वाणि	= सब
उपासितव्यम्	= उपासना करने योग्यहै	भूतानि	= प्राणी
सः	= वह	अभि	= सब प्रकारसे
		ह	= निश्चयकरके
		संवांछंति	= आदर करतेहैं

भावार्थ ।

तद्धतद्वनमिति ॥ तत् ॥ वह जो जीवाभिन्न ब्रह्महै ॥ तद्वनंनाम ॥ वह प्राणीमात्र करके पूजा नित्य भजनीय है, अर्थात् जीवमात्र उसकी उपासना करते हैं ॥ तद्वनंनाम ॥ का ब्रह्मवाच्य है, और ॥ तद्वनंनाम ॥ उसका वाचक है उपासिकों का एकाग्र चित्तकरके ॥ तद्वनंनाम ॥ ब्रह्म काही चिन्तन करना चाहिये ॥

पदच्छेदः

अथ अध्यात्मम् यत् एतत् गच्छति इव मनः अनेन च एतत् उपस्मरति अभीक्ष्ण सङ्कल्पः

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदा
च	और	एतत्	उसब्रह्मको
अथ	देवताविषय-क उपदेशके पश्चात्	+मुमुक्षुः	मुमुक्षु
यत्	जिसब्रह्मको	अभीक्ष्णम्	अत्यन्त
एतत्	यह	उपस्मरति	समीपवर्ति होकरस्मर करताहै
मनः	मन विषयकरता	एतत्	यही
गच्छति	है वृत्तिव्या-प्तिकरके	सङ्कल्पः	मनसम्बं
अनेन	इसीमनकरके	अध्यात्मम्	अध्यातम पदेश है

भावार्थ ।

अथाध्यात्ममिति ॥ अधिदैवत उपदेशके अनंतर अध्यात्म अर्थात् अंतरात्मिकविषयकेउपदेशकामंत्रनिरूपणकरताहै॥ य प्रसंगमें प्राप्तजोब्रह्म है, उस प्रत्यगात्मकब्रह्म में ऐसा मालूम हो है कि मानों हमारा मन प्रवेश करता जाताहै और उससे स्पर्शि जाता है ॥ अनेनमनसा ॥ इसी मनकरकेही "अहंब्रह्मास्मि उपासिक निरंतर ब्रह्मका स्मरण करताहै यह अनुभव अति अधिकारी पुरुषोंको होताहै ॥ ३१ । ५ ॥

मूलम् ॥

तद्धतद्वनंनामतद्वनमित्युपासितव्यं सयएतदेवं वेदाभिहैनं सर्वाणिभूतानिसंवाञ्छन्ति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

तत् ह तद्वनम् नाम तद्वनम् इति उपासितव्यम् सः यः एतत् एवम् वेद अभि ह एनम् सर्वाणि भूतानि संवाञ्छन्ति

अन्वयः	पदार्थ
तत्	= वह ब्रह्म
ह	= निश्चयकरके
नाम	= प्रसिद्ध
तद्वनम्	= पूजनीय है
तद्वनम्	= सबकापूजनीयहै
इति	= ऐसा
उपासितव्यम्	= उपासना करने योग्यहै
सः	= वह

अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो
एतत्	= इसब्रह्मको
एवम्	= इसप्रकार
वेद	= जानता है
एनम्	= उसको
सर्वाणि	= सब
भूतानि	= प्राणी
अभि	= सब प्रकारसे
ह	= निश्चयकरके
संवांछंति	= आदर करतेहैं

भावार्थ ।

तद्धतद्वनमिति ॥ तत् ॥ वह जो जीवाभिन्न ब्रह्महै ॥ तद्वनंनाम ॥ वह प्राणीमात्र करके पूजा नित्य भजनीय है, अर्थात् जीवमात्र उसकी उपासना करते हैं ॥ तद्वनंनाम ॥ का ब्रह्मवाच्य है, और ॥ तद्वनंनाम ॥ उसका वाचक है उपासिकों का एकाग्र चित्तकरके ॥ तद्वनंनाम ॥ ब्रह्म काही चिन्तन करना चाहिये ॥

यानी सदा ऐसा चिन्तनकरैं कि जीव ब्रह्मही रूप है और जो कुछ स्थावर जंगम दिखाई देताहै सो सब जीवमात्रहै अब इस तद्वनंनाम ॥ की उपासना के फल को कहते हैं ॥ सयएतत् जो स्वयंप्रकाश सर्व व्यापक ब्रह्मकी पूर्वोक्तप्रकारसे उपासना करताहै ॥ एनं ॥ उस उपासिक की सम्पूर्ण प्राणी सेवा करने की इच्छा करते हैं ॥ ३२ । ६ ॥

मूलम् ॥

उपनिषदं भो ब्रूहीत्युक्तातउपनिषद्ब्राह्मींवाव त एतउपनिषदमब्रूमेति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

उपनिषदम् भो ब्रूहि इति उक्ता ते उपनिषत् ब्राह्मीम् वाव ते उपनिषदम् अब्रूम इति

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
भोः	= हे भगवन्	वाव	= निश्चय-पूर्वक
उपनिषदम्	= उपनिषद्को	मया	= मुझकरके
ब्रूहि	= कहो	उक्ता	= कहागया है
इति	= यह वचन	ते	= तेरे लिये
+शिष्यः गुरुम् आह	= शिष्यगुरु से कहताभया	इति	= ऐसा
+तदागुरुः उवाच	= तब गुरू कहते भये कि	ब्राह्मीम्	= ब्रह्मसंबन्धी
ते	= तेरे लिये	उपनिषदम्	= उपनिषद् को
उपनिषद्	= उपनिषत्	अब्रूम	= कहा है हमने

भावार्थ ।

उपनिषिदमिति ॥ शिष्य गुरूसे कहताहै ॥उपनिषदंभोब्रूहि॥ हे भगवन् ! यदि ब्रह्मविद्याका कोई साधनान्तर हो अर्थात् कोई दूसराभी साधन हो तो आप कृपाकरके उसकोभी मेरेप्रति कहिये ॥ उपनिषद् का अर्थ ब्रह्मविद्या है, उस ब्रह्मविद्याको तो गुरूने शिष्यके प्रति पहलेही उपदेश करदियाहै, इसलिये ब्रह्मविद्या विषयक प्रश्न नहीं बनताहै,ब्रह्मविद्याके साधनान्तर परक शिष्यका प्रश्न बनसक्ता है, या गुरूने जो शिष्यके प्रति पूर्वब्रह्मविद्याका उपदेश कियाथा उसमें जो कुछ बाकी रहगयाहो उस विषयक शिष्यका प्रश्न गुरूसे होसक्ताहै, गुरू शिष्यके प्रश्नका उत्तर कहते हैं ॥ उक्तेति ॥ हे प्रियशिष्य ! सम्पूर्ण ब्रह्मविद्या को हमने तेरे प्रति कहदिया है, अब कुछभी शेष कथन करने को नहीं है, और साधनान्तरसे बिनाहीं ब्रह्मविद्याकरके अविद्याकी निवृत्ति हो सक्ती है ॥ ब्राह्मींवाच ॥ परब्रह्म विषयिणी ब्रह्मविद्याको निश्चय करके हमने तेरेप्रति कहदिया है, अब तिसी ब्रह्मविद्याके साधन जो तपादिक हैं, उनको तेरेप्रति कहेंगे ॥ ३२।७ ॥

मूलम् ॥

तस्यै तपोदमःकर्मेति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम् ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

तस्यै तपः दमः कर्म इति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यम् आयतनम्

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तस्यै	= उस ब्रह्मविद्या कीप्राप्तिकेलिये	दमः	= दम
		+च	= और
तपः	= तप	कर्म	= निष्कामकर्म

इति = इत्यादि
+उपायाः
सन्ति } =उपाय हैं
+ च = और
वेदाः = चारों वेद
सर्वाङ्गानि = छयों वेदाङ्ग
प्रतिष्ठा = चरणहैं उस

ब्रह्मविद्या
च = और
सत्यम् = सत्य
आयतनम् = { घर है या सत्यब्रह्म ध्याकेनिवा का स्थान

भावार्थ ।

तस्यैतपइति ॥ हे प्रियदर्शन ! इन्द्रियों और मनके नि करनेका जो शमदमादिक तप हैं, स्ववर्णाश्रम के जो श्रौत स्मा कर्म हैं, और जो एकान्त देशका सेवन है ॥ वेदाङ्गोंका जो पढ़ और सत्यभाषण करना है, येही सब ब्रह्मविद्याके निवास स्थान हैं, जो पुरुष इनका सेवन करता है, उसीको ब्रह्मवि अवश्य प्राप्त होती है ॥ ३४ । ८ ॥

मूलम् ॥

योवाएतामेवंवेदापहत्यपाप्मानमनन्ते स्व लोकेज्येयेप्रतितिष्ठतिप्रतितिष्ठति ॥ ९ ॥

पदच्छेदः

यः वै एताम् एवम् वेद अपहत्य पाप्मान अनन्ते स्वर्गे लोके ज्येये प्रतितिष्ठति प्रति तिष्ठति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो	एताम्	= इस ब्रह्मवि ध्याको
वै	= निश्चयकरके		

एवम् = इसप्रकार
वेद = जानता है
+सः = वह पुरुष
पाप्मानम् = पापोंको
अपहत्य = नाशकरके
अनन्ते = अविनाशी

ज्येये = सर्वोत्तम
स्वर्गेलोके = सुखस्वरूपब्र-
ह्मविषे
प्रतितिष्ठति = प्राप्तहोताहै
प्रतितिष्ठति = अवश्यही
प्राप्तहोताहै

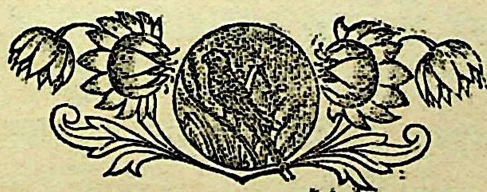
इतिचतुर्थः खण्डः

इतिकेनोपनिषत्समाप्ता ॐहरिः ॐ

भावार्थ ।

योवाइति ॥ जो मुमुक्षुसाधन चतुष्टयसम्पन्न केनउपनिषद् पढ़करके कथनकरी ब्रह्मविद्या को पूर्वोक्तप्रकारसे जानता है, और उसका अनुष्ठान करताहै, वह अविद्या और अविद्या के कार्य कर्मरूप संसारको नाशकरके अविनाशी स्वर्गको प्राप्तहोता है' अथवा सुख स्वरूप स्वयंप्रकाश जो ब्रह्म है, उसमें उत्थानसे शून्य होकर लीन होताहै ॥ ३५ । ६ ॥

इति चतुर्थखण्डः ॥ केनोपनिषद् समाप्त ॥ ३ ॥







आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम् । यद्ध्योदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यर्वाक् तीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः । षट्चक्रादिविचारसारकुशला नन्दन्ति योगीश्वराः तंवन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् २ ॥

दो० करौं वन्दना ब्रह्मको । जो अनन्त निजरूप ॥
जेहिजानेजगभ्रमसकल । मिटै अन्ध तमकूप ॥
नाम रूप जामें नहीं । नहीं जाति अरु भेद ॥
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं । रहितत्रिविधपरिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद । ताका करूं विचार ॥
भाषामें तिस अर्थको । लखै सकल संसार ॥
सन्त संग से जो लख्यो । सो मैं करूं बखान ॥
परमानन्द सहाय ते । जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट । अकबर पुरहै गांव ॥
जन्मभूमि मम जान तू । जालिम सिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है इसके पार होनेके लिये उपनिषत् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौकाहै जिसमें बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागरके पार होगये हैं और होते जाते हैं और भविष्यत्कालमें होंगे जो मुमुक्षुजन हैं उनके हितार्थ यह भाषा टीका रचीगई है ।

इसटीका में पहिले मूलमन्त्र है फिर पदच्छेद है फिर वाम
की ओर संस्कृत अन्वय दिया है और दक्षिण हस्तकी ओर
दार्थसहित भाषार्थ लिखा है यदि वाम तरफका लिखा
ऊपर से नीचेतक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा और
दक्षिण हस्तके तरफवाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका
देशिय भाषा में मिलेगा और यदि बायेंतरफ से दहिने तरफ
पढ़ाजावे तो हर एक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मि
जहांतक होसकाहै प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्तिके अनु
लिखागया है इस टीका के पढ़ने से संस्कृत विद्याका भी अभ्
होगा इस टीका में मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पायाहै
मन्त्रका पूरा २ अर्थ उसी के शब्दोंहीं से सिद्ध कियागयाहै अ
कल्पना कुछ नहीं कीगई है हां कहीं कहीं ऊपरसे संस्कृत प
न्त्रके अर्थ स्पष्ट करने के लिये रखागया है और उसपदके प्र
यह + चिह्न लगा दिया गयाहै ताकि पाठक जनोंको विदित
जावै कि यह पद मूलका नहीं है । इस टीकाको बाबू जालि
सिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फैजाबाद हेड पोस्टमा
नैनीताल सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गंगादत्त ज्योति
निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योति
निवासी अल्मोड़ाख्य नगरके रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाश
पुरुषों के चरणकमल में अर्पण करता है और आशा रखता
कि जहां कहीं अशुद्धताहो उससे टीकाकर्ता को सूचनाकरैं ता
अशुद्धता दूर होजावै ॥

अथ कठवल्ली उपनिषद् ॥



मूल

(१) उशन्हवैवाजश्रवसः सर्ववेदसं ददौ तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस ॥ १ ॥

पदच्छेद

ओम् उशन् ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसम् ददौ तस्य ह नचिकेताः नाम पुत्रः आस–

अन्वय पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

हवै = निश्चय करके
उशन् = यज्ञके फल की इच्छा करता हुआ
वाजश्रवसः = वाजश्रवा का पुत्र उद्दालक ऋषि
सर्ववेदसम् = सब धन को विश्वजित यज्ञ में
ददौ = देताभया
तस्य = तिसका
ह = ही
नचिकेताः = नचिकेता
नाम = नाम
पुत्रः = एक पुत्र
आस = था

नोट—वाज नाम अन्नका है तिस अन्न के दान करनेसे हुआ है श्रव याने यश जिसका तिसका नाम है वाजश्रवा तिसका जो

पुत्र है उसका नाम है वाजश्रवस उसीका नाम उद्दालक भी
वह उद्दालक यज्ञके फल की इच्छा करताहुआ विश्वजित नाम
यज्ञ में सर्वस्व दक्षिणा देता भया ॥ १ ॥

मूल

(२) त ँ ह कुमार ँ सन्तं दक्षिणासु नीय
मानासु श्रद्धाऽऽविवेश सोऽमन्यत ॥ २ ॥

पदच्छेद

तम् ह कुमारम् सन्तम् दक्षिणासु नीयमाना
श्रद्धा आविवेश सः अमन्यत

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तम्	तिस नचिकेता को
कुमारंसंतम्	कुमार अवस्था होतसन्ते
ह	भी
दक्षिणासु	दक्षिणा में गौओं को
नीयमानासु	ले जानेपर
श्रद्धा	श्रद्धा
आविवेश	होतीभई
+ च	और
सः	वह
अमन्यत	विचार करताभया

नोट--वह नचिकेता जिसकी आयु पांच वर्ष से अधिक न
ऐसा सोचता भया कि वेदोक्त यज्ञ के विगुण व्यतिक्रम होने
अनिष्टफल की प्राप्ति होती है जब ऐसी बुद्धि उस की हुई

वह पिताके अनिष्टफल की निवृत्ति के वास्ते विचार करताहै ॥२॥
जैसे कि दूसरे मन्त्र में लिखाहै ।

मूल ॥

(३) पीतोदकाजग्धतृणादुग्धदोहानिरिन्द्रियाः॥
अनन्दानाम ते लोकास्तान्स गच्छति ता ददत्॥३॥

पदच्छेद

पीतोदकाः जग्धतृणाः दुग्धदोहाः निरिन्द्रियाः अनन्दाः नाम ते लोकाः तान् सः गच्छति ताः ददत्

अन्वय पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

पीतोदकाः = पान करलियाहै जल जिन्होंने याने आगे जल पान करने की शक्ति नहीं है जिनको
जग्धतृणाः = खालियाहै घास जिन्होंने याने अब घास खानेकी शक्ति नहीं है जिनको
दुग्धदोहाः = दोह लियागया है दुग्ध जिनका याने आगे को प्रसूतयोग्य नहीं हैं जो
निरिन्द्रियाः = निष्फल होगईहैं इन्द्रियां जिनकी याने मरने के समीपहैं जो
ताः = ऐसी गौवों को
यः = जो पुरुष
ददत् = देता है
ते = वे
\+ ये = जो

पुत्र है अनन्दाः = आनन्दरहित

व॰ नाम = वाले

लोकाः = लोक हैं

तान् = तिनको

सः = वह

गच्छति = प्राप्त होताहै

मूल ॥

(४) सहोवाच पितरं तत कस्मै मान्दास्यसी[illegible] द्वितीयं तृतीयन्तꣳहोवाच मृत्यवे त्वा ददामीति[illegible]

पदच्छेद

सः ह उवाच पितरम् तत कस्मै माम् दास्य[illegible] इति द्वितीयम् तृतीयम् तम् ह उवाच मृत्यवे त्[illegible] ददामि इति

अन्वय	पदार्थ	अन्वय	पदार्थ
सः	वह नचिकेता	+ यदा	जब
ह	निश्चयकरके	द्वितीयम्	दूसरी
पितरम्	पितासे	तृतीयम्	तीसरी बार
उवाच	कहताभया कि	सः	वह नचिके[illegible]
तत	हे तात हे पिता	ह	हठकरके
कस्मै	किसके प्रति	उवाच	कहताभया
माम्	मुझको	त्वा	तुझको
दास्यसि	देगा तू	मृत्यवे	मृत्युके प्रति
इति	इसप्रकारसे	ददामि	देऊंगा मैं

इति = ऐसा तब	आह = कहताभया
उद्दालकः = उद्दालक	

मूल ॥

(५) बहूनामेमि प्रथमो बहूनामेमि मध्यमः किंस्विद्यमस्य कर्त्तव्यं यन्मयाद्य करिष्यति॥५॥

पदच्छेद

बहूनाम् एमि प्रथमः बहूनाम् एमि मध्यमः किंस्वित् यमस्य कर्त्तव्यम् यत् मया अद्य करिष्यति ॥ ५ ॥

अन्वय	पदार्थ	अन्वय	पदार्थ
बहूनाम्	बहुतेरों में	किंस्वित्	क्या
प्रथमः	प्रथम	यमस्य	यमराज का
एमि	होता हूं मैं	कर्त्तव्यम्	प्रयोजन है
+च	और	+यत्	जो
बहूनाम्	बहुतेरों में	मया	मुझकरके
मध्यमः	मध्यम	अद्य	अब
एमि	होता हूं मैं	करिष्यति	सिद्धहोगा

नोट-ऐसा नचिकेता अपने पिताके कहनेपर अपने मनमें विचार करता भया और जब उद्दालक को शाप के पीछे पश्चात्ताप होनेलगा तब नचिकेता अगले मन्त्रमें समझाता है ॥

मूल ॥

(६) अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथापरे स-

स्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिव जायते पुनः

पदच्छेद

अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथा अपरे सस्य
इव मर्त्यः पच्यते सस्यम् इव जायते पुनः

अन्वय पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

+ हे तात = हे पिता
यथा = जैसे
पूर्वे = पूर्व तुम्हारे पिता पितामह आदि
थे उनको
अनुपश्य = देखो
तथा = तैसेही
अपरे = अन्य जो शिवि दशरथादि हुयेहैं उन
प्रतिपश्य = अच्छीतरहसे देखो अर्थात् जैसे वे
अपने वचनों को पालते थे वैसेही
भी अपने वचनको पालन करो
सस्यम् इव = धानके वृक्षके समान
मर्त्यः = मनुष्य भी
पच्यते = परिपक्क होकर नाश होताहै
+ च = और
सस्यम् इव = धानके वृक्षवत्
पुनः = फिर
मनुष्यः = मनुष्य मरकरके
जायते = उत्पन्न होता है

नोट—नचिकेता पितासे कहता है कि जैसे तुम्हारे पिता पितामहादि अपने वचनों की पालना करते आये हैं और दशरथादिकोंने जैसे किया है वैसे आपभी अपने वचनकी पालना करो अर्थात् हमको यमपुरी जानेकी आज्ञा देवो यह शरीर तो धान के वृक्षवत् उत्पत्ति नाश होताही रहताहै मेरे में मोह को त्यागकर यमपुरी भेजनेवाले वचन को आज्ञा देकर सत्य करो ॥ ६ ॥ जब पिताने नचिकेताको यमराजके पास जाने की आज्ञादी तब वह शरीरसहित पितृभक्तिके प्रभावसे यमपुर में गया और जब यमपुरीके द्वार पर पहुँचा तब उसको मालूम हुआ कि यमराज किसी कार्य के प्रति देशान्तर को गये हैं तब तिस पुरी के द्वारपर खड़ारहा जब यमराज की स्त्री को मालूम हुआ कि एक अतिथि ब्राह्मण हमारे द्वारपर निराहार खड़ा है तब उसने आकर बड़े सत्कार से भोजन करने के लिये कहा तब नचिकेताने कहा कि विना यमराज के भेंट किये मैं अन्न जलका ग्रहण नहीं करूंगा जब तीन रात्रि दिन नचिकेता निराहार खड़ारहा और चौथे दिन यमराज आये तब उन की स्त्रीने नचिकेताके आनेका समाचार कहा और मन्त्र पढ़कर उनको समझाती हैं कि—

मूल ॥

(७) वैश्वानरः प्रविशत्यतिथिर्ब्राह्मणो गृहान्
तस्यैताꣳशान्तिं कुर्वन्ति हर वैवस्वतोदकम् ॥७॥

पदच्छेद

वैश्वानरः प्रविशति अतिथिः ब्राह्मणः गृहान् तस्य एताम् शान्तिम् हर वैवस्वत उदकम्

अन्वय पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

वैवस्वत = हे विवस्वत सूर्य के पुत्र हे भगवन्
+ यथा = जैसे
वैश्वानरः = वैश्वानर अग्नि
गृहान् = घरों में
प्रविशति = प्रवेश करता है
+ तथा एव = वैसाही
+ एषः = वह
अतिथिः = अतिथि
ब्राह्मणः = ब्राह्मण अग्निरूप
+ तव द्वारे = तुम्हारे द्वारपर
+ स्थितः = स्थित है
उदकम् = जलको
हर = ले जावो
+ च = और
तस्य = उसके
एताम् = इस
+ तैजसीम् = तेजको
शान्तिम् = शान्ति
+ कुरु = करो

नोट-जिसके द्वारपर अतिथि भूखा रहजावे उसका जो' है उसको अगले मन्त्र में यमराज की स्त्री कहती है ॥

मूल ॥

(८) आशाप्रतीक्षेसङ्गतथंसूनृताञ्चेष्टापूर्ते

पशूᳺश्च सर्वान् एतद्वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो
यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे ॥ ८ ॥

पदच्छेद

आशा प्रतीक्षे सङ्गतम् सूनृताम् च इष्टापूर्ते पुत्र पशून् च सर्वान् एतत् वृङ्क्ते पुरुषस्य अल्पमेधसः यस्य अनश्नन् वसति ब्राह्मणः गृहे

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यस्य	= जिस
अल्पमेधसः	= अल्पबुद्धिवाले
पुरुषस्य	= पुरुष के
गृहे	= गृह बिषे
अनश्नन्	= भूखा
ब्राह्मणः	= ब्राह्मण
अतिथिः	= अतिथि
वसति	= वास करता है
एतत्	= उसका भूखा रहना
तस्य	= उस गृहस्थ पुरुष के
आशा प्रतीक्षे	= स्वर्गादि सुख तथा मनन कियेहुये सुख की इच्छाको
संगतम्	= सत्सङ्गके फलको
सूनृतम्	= प्रियवाणी बोलनेकेफलको
इष्टापूर्ते	= इष्टपूर्त कर्म को
+ च	= और
सर्वान्	= सब
पुत्रपशून्	= पुत्र और पशुओं को
वृङ्क्ते	= नाश करताहै

नोट—जब यमराज महाराज ने अपनी स्त्री से ऐसा सुना
शीघ्र द्वारपर जाकर नचिकेता से कहते भये ॥

मूल ॥

तिस्रोरात्रीर्यदवात्सीर्गृहेमेऽनश्नन् ब्रह्मन्नति
र्नमस्यः नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मेऽस्तु तस्
त्प्रतित्रीन् वरान् वृणीष्व ॥ ९ ॥

पदच्छेद

तिस्रः रात्रीः यत् अवात्सीः गृहे मे अनश्
ब्रह्मन् अतिथिः नमस्यः नमः ते अस्तु ब्र
स्वस्ति मे अस्तु तस्मात् प्रति त्रीन् व
वृणीष्व ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थस सूक्ष्म भा
ब्रह्मन्	= हे ब्रह्मन्	+ ततः	= तिस कारण
तिस्रः	= तीन	नमस्यः	= पूजनीय है
रात्रीः	= रात तक	नमः	= नमस्कार
मे	= मेरे	ते	= तेरे प्रति
गृहे	= घरमें	अस्तु	= होवे
यत्	= जो	ब्रह्मन्	= हे ब्रह्मन्
अनश्नन्	= भूखा	+ यतः	= जिससे
अतिथिः	= अतिथिहोकर	मे	= मेरे लिये
अवात्सीः	= रहा तू	स्वस्ति	= कल्याण

तस्मात् = तिसलिये	त्रीन् = तीन
प्रति = तीन रातों के बदले	वरान् = वरको
	वृणीष्व = मांगले तू

नोट-नचिकेता से यमराज कहते हैं कि जो तू अतिथि होकर तीन रात्री मेरे द्वारपर भूखा खड़ा रहाहै इसवास्ते तीन वर तू मांगले सो नचिकेता अब वरों को मांगता है ॥

मूल ॥

(१०) शान्तसङ्कल्पः सुमना यथा स्याद्वीतमन्युर्गौतमो मामभिमृत्यो त्वत्प्रसृष्टं माऽभिवदेत् प्रतीतएतत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे ॥ १० ॥

पदच्छेद

शान्तसङ्कल्पः सुमनाः यथा स्यात् वीतमन्युः गौतमः मा अभि मृत्यो त्वत्प्रसृष्टम् मा अभिवदेत् प्रतीतः एतत् त्रयाणाम् प्रथमं वरं वृणे ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
शान्तसङ्कल्पः	= शान्तहुआ है सङ्कल्प जिसका	वीतमन्युः	= दूर होगयाहै क्रोधजिसका
सुमनाः	= शुद्ध हुआहै चित्त जिसका	यथा	= ऐसा
		गौतमः	= उद्दालक मेरा पिता

त्वत्प्रसृष्टः = तुझकरकेछूटे हुये	अभिवदेत् = सम्भाषण
मा अभि = मुझसे	त्रयाणाम् = तीनोंवरोंमें
मृत्यो = हे भगवन्	एतत् = इस
प्रतीतः = प्रसन्न	प्रथमम् = प्रथम
स्यात् = हो	वरं = वरको
च = और	वृणे = मांगताहूं

नोट-नचिकेता कहता है कि हे मृत्यु भगवान् गौतम जो पिताहै उसको जो यह चिन्ता होरही है कि मेरे पुत्रकी यम के जानेपर क्या जाने कैसी दशा होरही है सो इस सङ्कल्प से रहित होकर प्रसन्नचित्तहो और मेरे पर जो उसका क्रोधहुआथा भी दूर होजावे और जब मैं तुम्हारे यहां से फिर पिता के वापिस जाऊं तब वह पूर्ववत् मेरे को जाने कि यह मेरा पुत्र यह पहला वर मैं मांगता हूं उसके जवाब में मृत्यु भगवान् कहते हैं कि-

मूल ॥

(११) यथापुरस्ताद्भविताप्रतीतऔद्दालकि रुणिर्मत्प्रसृष्टः सुखꣳरात्रीः शयितावीतमन्युस्त्वां ददृशिवान्मृत्युमुखात्प्रमुक्तम् ॥ ११ ॥

पदच्छेद

यथा पुरस्तात् भविता प्रतीतः औद्दालकिः आरुणिः मत्प्रसृष्टः सुखम् रात्रीः शयिता वीतमन्युः त्वाम् ददृशिवान् मृत्युमुखात् प्रमुक्तम्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यथा	जैसे	भविता	रहैगा
पुरस्तात्	पहले	च	और
+ आसीत्	था	त्वाम्	तुझको
+ तथा	वैसाही	मृत्युमुखात्	मृत्युके मुखसे
औद्दालकिः	उद्दालक	प्रमुक्तम्	छुटाहुवा
आरुणिः	अरुणका पुत्र	ददृशिवान्	देखकर
वीतमन्युः	क्रोधसेरहित होता हुआ	मत्प्रसृष्टः	मेरेप्रसाद से
+ च	और	सुखम्	सुखपूर्वक
प्रतीतः	प्रसन्न होता हुआ	रात्रीः	रातोंतक
		शयिता	सोवैगा

मूल ॥

(१२)स्वर्गेलोकेनभयं किंचनास्ति नतत्रत्वंन जरयाबिभेति उभेतीर्त्वाअशनापिपासेशोकाति गोमोदतेस्वर्गलोके ॥

पदच्छेद

स्वर्गे लोके न भयम् किञ्च न अस्ति न तत्र त्वम् न जरया बिभेति उभे तीर्त्वा अशनापिपासे शोकातिगः मोदते स्वर्गलोके

अन्वय	पदार्थ	अन्वय	पदार्थ
स्वर्गेलोके	= स्वर्गलोकमें	कः	= कोई पु
किञ्चन	= कुछभी	न बिभेति	= भयको प्राप्तहोत
भयम्	= भय	+च	= और
न	= नहीं	अशना पिपासे	= क्षुधा पिपा
अस्ति	= है	उभे	= दोनोंक
+च	= और	तीर्त्वा	= तरकरवे
तत्र	= तहां	शोकातिगः	= शोकसे तहोता
त्वम्	= तुम मृत्युभी	स्वर्गलोके	= स्वर्गल
न	= नहीं	मोदते	= हर्षको होता है
असि	= हो		
+च	= और		
+तत्र	= तहां		
जरया	= जराअवस्थाकरके		

मूल ॥

(१३) स त्वमग्निꣳस्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो ब्रूहि तꣳश्रद्दधानाय मह्यम् स्वर्गलोका अमृ भजन्त एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण (१३)

पदच्छेद

सः त्वम् अग्निम् स्वर्ग्यम् अध्येषि मृत्यो

हि तथ्यं श्रद्दधानाय मह्यम् स्वर्गलोकाः अमृतत्वम् भजन्ते एतत् द्वितीयेन वृणे वरेण

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
मृत्यो	हे मृत्यु भगवान्	श्रद्धधानाय	श्रद्धावान् के लिये
+ यदि	अगर	प्रब्रूहि	कहो
सः	वह	यं ज्ञात्वा	जिसको जानकर
त्वम्	तुम	स्वर्गलोकाः	स्वर्गनिवासी
स्वर्ग्यम्	स्वर्ग साधक	अमृतत्वम्	अमरभावको
अग्निम्	अग्निको	भजन्ते	प्राप्त होते हैं
अध्येषि	जानते हो	एतत्	इसको
+ तु	तो	द्वितीयेन	दूसरे
तम्	उसको	वरेण	वर करके
मह्यम्	मुझ	वृणे	मांगता हूं मैं

मूल ॥

(१४) प्रते ब्रवीमि तदुमे निबोध स्वर्ग्यमग्निं नचिकेतः प्रजानन् अनन्तलोकाप्तिमथोप्रतिष्ठाम् विद्धि त्वमेनन्निहितं गुहायाम् ॥ १४ ॥

पदच्छेद

प्रते ब्रवीमि तत् उ+मे निबोध स्वर्ग्यम् अ-

ग्निम् नचिकेतः प्रजानन् अनन्तलोकाप्तिम् अ
प्रतिष्ठाम् विद्धि त्वम् एनम् निहितम् गुहा

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थस सूक्ष्म भा
नचिकेतः	= हे नचिकेता	अथो	= और
अहम्	= मैं	प्रतिष्ठाम्	= सबका आश्रय
स्वर्ग्यम्	= स्वर्गसाधक	च	= और
अग्निम्	= अग्निको	गुहायाम्	= हृदयरूप गुहामें
प्रजानन्	= जानताहुवा	निहितम्	= स्थित
ते	= तेरे प्रति	एनम्	= इसअ को
ब्रवीमि	= कहताहूं	त्वम्	= तू
तत्	= उसको	विद्धि	= जान
मे	= मुझसे		
निबोध	= जान तू		
उ	= और		
अनन्तलोकाप्तिम्	= स्वर्गमेंपहुचानेवाली		

मूल ॥

(१५) लोकादिमग्निन्तमुवाचतस्मैयाइष्टका वतीर्वायथावासचापितत्प्रत्यवदद्यथोक्तमथास्य त्युःपुनरेवाहतुष्टः १५ ॥

पदच्छेद

लोकादिम् अग्निम् तम् उवाच तस्मै

इष्टकाः यावतीः वा यथा वा सः च अपि तत् प्रत्यवदत् यथोक्तं अथ अस्य मृत्युः पुनः एव आह तुष्टः ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
लोकादिम्	= लोकोंकेआ- दि कारण
अग्निम्	= अग्निको
च	= और
याः	= जो
इष्टकाः	= ईंट के कुंड
यावतीः	= जितनी हो- नी चाहिये उसको
वा	= और
यथा	= जिसप्रकार काहोना चा- हिये
तम्	= तिस सबको

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्मै	= नचिकेताके प्रति
यमः	= यमभगवान्
उवाच	= कहतेभये
च	= और
सः	= वहनचि- केता
अपि	= भी
तत्	= उसको
प्रत्यवदत्	= वैसाहीकह- ताभया
यथोक्तम्	= जैसाकियम महाराज ने कहा था

नोट–जैसा यमराज भगवान् ने अग्निका विधान वर्णन किया था वैसेही नचिकेता समुझकर उनको सुनाताभया ॥

मूल ॥

तमब्रवीत् प्रीयमाणो महात्मा वरन्तवेहाद्य

ददामि भूयः तवैव नाम्ना भवितायमग्निः सृ
चेमामनेकरूपां गृहाण ॥ १६ ॥

पदच्छेद

तम् अब्रवीत् प्रीयमाणः महात्मा वरम्
इह अद्य ददामि भूयः तव एव नाम्ना भवि
अयम् अग्निः सृङ्काम् च इमाम् अनेकरू
गृहाण ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थस सूक्ष्म भा
तम् =	तिसनचिकेतासे	अग्निः =	अग्नि
प्रीयमाणः =	प्रसन्नहोकर	तवएव =	तेरेही
महात्मा =	यमराज	नाम्ना =	नामक
अब्रवीत् =	कहतेभयेकि	भविता =	प्रसिद्ध होगी
+इदम् =	यह	भूयः =	और
वरम् =	वर	इमाम् =	इस
तव =	तुझको	अनेकरूपाम् =	विचित्र पवाली
ददामि =	देताहूं कि	सृङ्काम् =	माला
इह =	संसार में	गृहाण =	ग्रहण करतू
अद्य =	अब		
अयम् =	यह		

मूल ॥

त्रिणाचिकेतस्त्रिभिरेत्यसन्धिं त्रिकर्मकृत्

जन्ममृत्यू ब्रह्मजज्ञं देवमीड्यं विदित्वा निचाय्य माᳬशान्तिमत्यन्तमेति ॥ १७ ॥

पदच्छेद

त्रिणाचिकेतः त्रिभिः एत्य संधिम् त्रिकर्मकृत् तरति जन्म मृत्यू ब्रह्मजज्ञम् देवम् ईड्यम् विदित्वा निचाय्य इमां शान्तिम् अत्यन्तम् एति ॥

अन्वय — पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

त्रिभिः = तीनों माता पिता और आचार्यद्वारा
त्रिणाचिकेतः = तीनबार ग्रहण किया है अग्नि को जिसने ऐसाअग्निका उपासकपुरुष
सन्धिम् = अनुसन्धान यानी स्वर वर्ण और मात्रा को प्राप्त होकर
त्रिकर्मकृत् = तीनों कर्मोंको अर्थात् यज्ञ अध्ययन और दान को करता हुआ
जन्ममृत्यू = जन्मरणको यानी आवागमनको
तरति = पारकरजाता है
+ च = और
ब्रह्मजज्ञम् = ब्रह्महिरण्य गर्भसे उत्पन्नभये सर्वज्ञ
ईड्यम् = स्तुतिकरनेयोग्य
देवम् = वैश्वानर अग्नि आत्मदेवको
विदित्वा = जानकर
+ च = और
निचाय्य = अनुभव करके

इमाम् = इस	शान्तिम् = शान्ति
अत्यन्तम् = अत्यन्त	एति = प्राप्त होत

मूल ॥

(१८) त्रिणाचिकेतस्त्रयमेतद्विदित्वा य। विद्वांश्चिनुते नाचिकेतम् स मृत्युपाशान् पु प्रणोद्य शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके ॥ १८॥

पदच्छेद

त्रिणाचिकेतः त्रयम् एतत् विदित्वा यः ए विद्वान् चिनुते नाचितम् सः मृत्युपाशान् पु प्रणोद्य शोकातिगः मोदते स्वर्गलोके ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहि सूक्ष्म भाव
यः	= जो	एतत्	= इस
विद्वान्	= विद्वान्	त्रयम्	= तीनप्रकार
त्रिणाचिकेतः	= त्रिणाचिकेत संज्ञक अग्निकासेवन करनेवाला	नाचिकेतम्	= नाचिके नामक अ ग्निको
एवम्	= इसप्रकार	चिनुते	= उपासना कर है
विदित्वा	= जान करके	सः	= वह

पुरतः = पहिलेही से	शोकातिगः = शोक रहित होताहुआ
मृत्यु पाशान् = मृत्युके पाशों को	स्वर्गलोके = स्वर्ग लोक में
प्रणोद्य = काटकर	मोदते = प्रसन्न होताहै

मूल ॥

एष तेऽग्निर्नचिकेतः स्वर्ग्योऽयमवृणीथा द्वितीयेन वरेण एतमग्निं तवैव प्रवक्ष्यन्ति जनासस्तृतीयं वरन्नचिकेतो वृणीष्व ॥ १९ ॥

पदच्छेद

एषः ते अग्निः नचिकेतः स्वर्ग्यः अयम् अवृणीथाः द्वितीयेन वरेण एतम् अग्निम् तव एव प्रवक्ष्यन्ति जनासः तृतीयम् वरम् नचिकेतः वृणीष्व ॥ १९ ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एषः	यह	द्वितीयेन	दूसरे
अयम्	वह	वरेण	वरकरके
स्वर्ग्यः	स्वर्गसाधक	ते	तेरे लिये
अग्निः	अग्नि है	+ दत्तः	दिया मैंने
नचिकेतः	हे नचिकेता	एतम्	इस
+ यम्	जिसको	अग्निम्	अग्नि को
अवृणीथा	तू पूछताभया	तवएव	तेरेही

नाम्ना = नाम से	अद्य = अब
जनासः = लोक	तृतीयम् = तीसरे
प्रवक्ष्यन्ति = कथन करैंगे	वरम् = वरको
नचिकेतः = हे नचिकेता	वृणीष्व = मांगले

मूल ॥

येयम्प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्ये के यमस्तीतिचैके एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वया ऽहंवरा मेषवरस्तृतीयः ॥ २० ॥

पदच्छेद

या इयम् प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये अस्ति। एके न अयम् अस्ति इति च एके एतत् वि म् अनुशिष्टः त्वया अहम् वराणाम् एषः तृतीयः ॥ २० ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थस सूक्ष्म भा
+नाचिकेतउवाच	नचिकेतापूछताभयाकि	मनुष्ये	पुरुषमें
एके	कोई एक	+ आत्मा	आत्मा
+आचार्य्याः	आचार्य्य	अस्ति	है
इति	ऐसा	च	और
+ वदन्ति	कहते हैं कि	एके	कोई आर्य्य
प्रेते	मरेहुये	इति	ऐसा

+ वदन्ति = कहते हैं कि	अहम् = मैं
नाऽस्ति = नहीं है	त्वया = आप करके
इयम् = यह	अनुशिष्टः = शिक्षितहुआ
या = जो	विद्याम् = जानूं
विचिकित्सा = संशय है	एषः = यह
तस्याः = तिसकी	तृतीयः = तीसरा
+ निवृत्तिः = निवृत्ति	वरः = वर
या = जो है	वराणाम् = वरोंमें से
एतत् = उसको	याचे = मांगताहूं मैं

मूल ॥

(२१) देवैरत्रापिविचिकित्सितं पुरा न हि सुविज्ञेयमणुरेषधर्मः अन्यं वरं नचिकेतो वृणीष्व मा मोपरोत्सीरतिमासृजैनम् ॥ २१ ॥

पदच्छेद

देवैः अत्र अपि विचिकित्सितम् पुरा न हि सुविज्ञेयम् अणुः एषः धर्मः अन्यम् वरम् नचिकेतः वृणीष्व मा मा उपरोत्सीः अति मा सृज एनम्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अत्र	= इस ब्रह्मविद्या विषे	पुरा	= पहलेसे
देवैः	= देवतों करके	विचिकित्सितम्	= संशय किया गया है
अपि	= भी	हि	= क्योंकि

एषः = यह	वरम् = वरको
अणुः = सूक्ष्म	वृणीष्व = मांगलेतू
धर्मः = धर्म	माम् = मुझको
नसुविज्ञेयम् = अच्छे प्रकार जाननेको अशक्य है	माउपरोत्सीः = मतरोक
नचिकेतः = हे नचिकेता	मा = मेरे लिये
अन्यम् = और	एनम् = इसवरको
	अतिसृज = छोड़देतू

मूल ॥

(२२) देवैरत्रापिविचिकित्सितं किल त्वं मृत्यो यन्न सुविज्ञेयमात्थ वक्ता चास्य त्वादृग न लभ्यो नान्यो वरस्तुल्य एतस्य कश्चित् ॥ २

पदच्छेद

देवैः अत्र अपि विचिकित्सितम् किल त्वम् मृत्यो यत् न सुविज्ञेयम् आत्थ वक्ता च अ त्वादृक् अन्यः न लभ्यः न अन्य वरः तु एतस्य कश्चित्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भाव
अत्र	इस बिषय में	विचिकित्सितम्	संशया कि गया है
देवैः	देवतोंकरके	च	और
अपि	भी		

मृत्यो	= हेमृत्युभगवान्	त्वादृक्	= आपकेतुल्य
यत्	= जो	अन्यः	= और कोई
त्वम्	= आप	नलभ्यः	= मिलने योगनहीं है
एनम्	= इसको	च	= और
सुवि यम्	= दुर्विज्ञेय	अन्यः	= दूसरा
आत्थ	= कहतहो	कश्चित्	= कोई
किल	= सोठीकहै	वरः	= वर
परन्तु	= परंतु	एतस्य	= इसके
अस्य	= इसका	नतुल्यः	= तुल्यभी नहींहै
वक्ता	= कहनेवाला		

मूल ॥

(२३)शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् स्तिहिरण्यमश्वान् भूमेर्म्महदायतनं वृणीष्व वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि ॥ २३ ॥

पदच्छेद

तायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्ति-रण्यम् अश्वान् भूमेः महत् आयतनम् वृणीष्व वयम् च जीव शरदः यावत् इच्छसि

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तायुषः	= सौवर्षकी आयुवाले	पुत्रपौत्रान्	= पुत्रपौत्रों को
		वृणीष्व	= मांगलेतू

बहून् = बहुतसे	वृणीष्व = मांगले
पशून् = पशुवोंको	च = और
हस्तिहिरण्यम् = हस्ती और द्रव्यों को	स्वयम् = तभी
	यावत् = जबतक
अश्वान् = घोड़ोंको	इच्छसि = इच्छा
भूमेः = पृथिवीके	तावत् = उतने
महत् = बड़े	शरदः = वर्षोंत
आयतनम् = स्थानको	जीव = जीता

मूल ॥

(२४) एतत्तुल्यं यदि मन्यसे वरं वृणीष्व चिरजीविकाञ्च महाभूमौ नचिकेतस्त्वमेधि मानां त्वा कामभाजं करोमि ॥ २४ ॥

पदच्छेद

एतत्तुल्यम् यदि मन्यसे वरम् वृणीष्व वि चिरजीविकाम् च महाभूमौ नचिकेतः त्वम् कामानाम् त्वा कामभाजम् करोमि

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थ सूक्ष्म भा
यदि	= अगर	वित्तम्	= धनको
एतत्तुल्यम्	= इसवर के तुल्य	च	= और
नचिकेतः	= हेनचिकेता	चिरजीविकाम्	= बड़ीआ

वरम् = श्रेष्ठ	एधि = वृद्धिकोप्राप्तहो
मन्यसे = समझता है तू	कामानाम् = सबभोगोंका
तु = तो	त्वा = तुझको
वृणीष्व = मांगले	कामभाजम् = भोगयके योग्य
महाभूमौ = महानभूमि में	करोमि = करताहूं मैं
त्वम् = तू	

मूल ॥

(२५) ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके सर्वान्
ामाँश्छन्दतः प्रार्थयस्व इमा रामाः सरथाः सतू-
र्या नहीदृशा लम्भनीया मनुष्यैः आभिर्मत्प्रताभिः
रिचारयस्व नचिकेतो मरणं मानुप्राक्षीः ॥ २५ ॥

पदच्छेद

ये कामाः दुर्लभाः मर्त्यलोके सर्वान् कामान्
न्दतः प्रार्थयस्व इमाः रामाः सरथाः सतूर्याः न+हि
दृशा लम्भनीयाः मनुष्यैः आभिः मत्प्रताभिः
रिचारयस्व नचिकेतः मरणम् मा अनुप्राक्षीः

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ये ये	= जो जो	मर्त्यलोके	= मनुष्यलोकमें
कामाः	= विषयभोग्य	दुर्लभाः	= दुर्लभ हैं

+ तान् = उन
सर्व्वान् = सब
कामान् = भोगोंको
छन्दतः = इच्छानुसार
प्रार्थयस्व = मांगलेतू
+ यथा = जैसी
इमाः = ये
रामाः = अप्सरायें
सरथाः = सहित रथों के
च = और
सतूर्याः = सहितबाजों के हैं
ईदृशाः = वैसीस्त्रियां
इह = इस मनुष्यलोकमें
मनुष्यैः = मनुष्यों करके

नलम्भनीया = नहीं होने हैं
आभिः = इन
मत्प्रत्ताभिः = मेरी अप्स
परिचारयस्व = अप सेवा वा
नचिकेतः = हेन ता
+ परन्तु = परंतु
मरणम् = मरण म्बन्ध
प्रश्नम् = प्रश्न
मानुप्राक्षीः = मत

मूल ॥

(२६) श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत स याणाञ्जरयन्ति तेजः अपि सर्वं जीवितम तवैव वाहास्तव नृत्यगीते ॥ २६ ॥

पदच्छेद

श्वोभावाः मर्त्यस्य यत् अन्तक एतत्

न्द्रियाणाम् जरयन्ति तेजः अपि सर्वम् जीवितम् अल्पम् एव तत्र एव वाहाः तव नृत्यगीते

अन्वय पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

अन्तक = हे यमराज हे नाशकरता
यत् = चूंकि
श्वोभावाः = ये संशय युक्त भाववाले पदार्थ
मर्त्यस्य = मनुष्य के
सर्वेन्द्रियाणाम् = सब इन्द्रियों के
तेजः = तेजको
जरयन्ति = क्षीण करतेहैं
अपि = और
एव = निश्चयकरके

अन्वय पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

एतत् = यह
सर्वम् = सम्पूर्ण
जीवितम् = आयु
अल्पम् = अल्पही है
+ तस्मात् = इसलिये
तव = आपके
वाहाः = रथादिक सवारियां
+ च = और
नृत्यगीते = नाचना गाना
तवएव = आपहीके पासरहैं

मूल ॥

(२७) न वित्तेन तर्पणीयोमनुष्यो लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा जीविष्यामो यावदीशिष्यसि त्वं वरस्तु मे वरणीयः स एव ॥ २७ ॥

पदच्छेद

न वित्तेन तर्पणीयः मनुष्यः लप्स्यामहे वि
अद्राक्ष्म चेत् त्वा जीविष्यामः यावत् ईशिष्य
त्वम् वरः तु मे वरणीयः सः एव

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थस सूक्ष्म भाव
मनुष्यः	= मनुष्य	जीविष्यामः	= जीतेरहें हम
वित्तेन	= धन करके	यावत्	= जबतक
नतर्पणीयः	= तृप्त होने योग्यनहींहै	ईशिष्यसि	= राजकरोगे तुम
वित्तम्	= धन को	तु	= परंतु
लप्स्यामहे	= पावेंगे हम	मे	= मेरे
चेत्	= जब कि	वरणीयः	= मांगनेयो
अद्राक्ष्म	= देखाहैहमने	वरः	= वर
त्वा = त्वां	= आपको	सःएव	= वहीहैम कसंबंधी
च	= और		

मूल ॥

(२८) अजीर्यताममृतानामुपेत्य जीर्यन्म
क्धः स्थः प्रजानन् अभिध्यायन् वर्णरति
दानतिदीर्घे जीविते को रमेत ॥ २८ ॥

पदच्छेद

अजीर्यताम् अमृतानाम् उपेत्य जीर्य्यन् मर्त्यः क्वधःस्थः प्रजानन् अभिध्यायन् वर्णरतिप्रमोदान् अति दीर्घे जीविते कः रमेत ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अजीर्य्यताम्	= जरारहित
अमृतानाम्	= देवतनके
उपेत्य	= प्राप्तहोकर
जीर्य्यन्	= जरामरणवान्
क्वधःस्थः	= पृथिवी में रहने वाला
कः	= कौन
प्रजानन्	= विवेकी
मर्त्यः	= पुरुष
वर्णरतिप्रमोदान्	= रुपप्रतिविषयानन्दकोयानीअप्सरादि विषयों को
अभिध्यायन	= बिचार करता हुआ
अतिदीर्घे	= अतिशय
जीविते	= जीवनेविषे
रमेत	= रमणकरैगा

मूल ॥

(२९) यस्मिन्निदं विचिकित्सन्ति मृत्यो यत्साम्पराये महति ब्रूहि नस्तत् योऽयं वरो गूढमनुप्रविष्टोनान्यन्तस्मान्नचिकेता वृणीते ॥ २९ ॥

पदच्छेद

यस्मिन् इदम् विचिकित्सन्ति मृत्यो यत् म्पराये महति ब्रूहि नः तत् यः अयम् गूढम् अनुप्रविष्टः न अन्यम् तस्मात् नचि ताः वृणीते ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यस्मिन्	= जिसमृत कविषे	यः	= जो
+ च	= और	अयम्	= यह
यस्मिन्महति	= जिसबड़ी	गूढम्	= कठिन
साम्पराये	= परलोक की गति बिषे	+ च	= और
यत्	= जो	अनुप्रविष्टः	= गुप्त
इदम्	= यह	वरः	= वर
विचिकित्सन्ति	= संशयक रते हैं	तस्मात्	= तिससे भि
तत्	= तिसको	अन्यम्	= और
नः	= मेरेलिये	+ वरम्	= वरको
ब्रूहि	= कहतू	नचिकेताः	= नचिकेता
		न	= नहीं
		वृणीते	= मांगता

इतिप्रथमाध्यायेप्रथमावल्लीसंपूर्णा ॥

मूल ॥

(१) ॐ अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयस्ते उभे
नार्थे पुरुषꣳसिनीतः तयोः श्रेयआददानस्य सा
भवति हीयतेऽर्थाद्यउ प्रेयोवृणीते १ ॥

पदच्छेद

अन्यत् श्रेयः अन्यत् उत एव प्रेयः ते उभे
नानार्थे पुरुषम् सिनीतः तयोः श्रेयः आददानस्य
धु भवति हीयते अर्थात् यः उ प्रेयः वृणीते ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
मराज उवाच	= यमराज बोलते भये कि	तयोः	= उन दोनों में से
श्रेयः	= श्रेय याने विद्या	श्रेयः	= विद्या
न्यत्	= और ही है	आददानस्य	= ग्रहण करनेवाले का
उत	= और	साधु	= कल्याण
प्रेयः	= प्रेययानेअविद्या	भवति	= होता है
न्यत् एव	= औरही है	उ	= और
		यः	= जो
ते	= वे	प्रेयः	= अविद्या को
उभे	= दोनों	वृणीते	= ग्रहण करता है
नार्थे	= भिन्न२प्रयोजन के वास्ते	+ सः	= वह
		अर्थात्	= पुरुषार्थसे
रुषम्	= पुरुषको	हीयते	= हीन होता है
नीतः	= बांधते हैं		

मूल ॥

(२) श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्प
विविनक्ति धीरः श्रेयो हि धीरोऽभिप्रेयसो वृणी
योमन्दो योगक्षेमाद्वृणीते ॥ २ ॥

पदच्छेद

श्रेयः च प्रेयः च मनुष्यम् एतः तौ सम्
विविनक्ति धीरः श्रेयः हि धीरः अभिप्रेयसः
ते प्रेयः मन्दः योगक्षेमात् वृणीते

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थ सूक्ष्म
श्रेयः	= श्रेय	श्रेयः	= श्रेयको
च	= और	हि	= ही
प्रेयः	= प्रेय	अभिप्रेयसः	= प्रेय से भि
मनुष्यम्	= मनुष्यको	वृणीते	= ग्रहण क
एतः	= प्राप्त होते हैं	च	= और
तौ	= उनदोनोंको	मन्दः	= मन्दबुद्धि पुरुष
सम्परीत्य	= देखकरके	प्रेयः	= प्रेयकोही
धीरः	= बुद्धिमान् पुरुष	योगक्षेमात्	= योगक्षेमक
विविनक्ति	= पृथक्२ करता है	वृणीते	= ग्रहण करत
धीरः	= धीरपुरुष		

मूल ॥

(३) सत्वं प्रियान् प्रियरूपांश्च कामानभि

न्नचिकेतोऽत्यस्राक्षीः नैताश्र्ंसृङ्कांवित्तमयीमवा
यस्यां मज्जन्ति बहवोमनुष्याः ३ ॥

पदच्छेद

सः त्वम् प्रियान् प्रियरूपान् च कामान् अभि-
ायन् नचिकेतः अत्यस्राक्षीः न एताम् सृङ्काम्
त्तमयीम् अवाप्तः यस्याम् मज्जन्ति बहवः मनुष्याः

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	सो
त्वम्	तू
चेकेतः	हे नचिकेता
प्रेयान्	प्रिय पुत्र कलत्र धनादिकों को
च	और
यरू-पान्	प्रियरूप
ामान्	भोगों को
भेध्या	विचारता हुआ
स्रा-	त्यागताभया
एताम्	इस
सृङ्काम्	बाहुल्यता
वित्तमयीम्	धनयुक्तकर्मगतिको
यस्याम्	जिसमें
बहवः	बहुत से
मनुष्याः	मनुष्य
मज्जन्ति	डूबते हैं
न	नहीं
अवाप्तः	प्राप्त होता भया तू

मूल ॥

(४) दूरमेते विपरीते विषूची अविद्या या च

विद्येति ज्ञाता विद्याभीप्सिनन्नचिकेतसंमन्ये
त्वाकामा बहवोलोलुपन्तः ॥ ४ ॥

पदच्छेद

दूरम् एते विपरीते विषूची अविद्या च या वि
इति ज्ञाता विद्याभीप्सिनम् नचिकेतसम् मन्ये
त्वा कामाः बहवः लोलुपन्तः

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थस सूक्ष्म भ
एते	= ये दोनों	त्वा	= तुझ
या	= जो		
विद्या	= विद्या	नचिकेतसम्	= नचि को
च	= और		
अविद्या	= अविद्या		
इति	= करके	विद्याभीप्सिनम्	= विद्याका इनेवाल
ज्ञाता	= प्रसिद्ध हैं		
ते	= वे	मन्ये	= मानता
दूरम्	= अत्यन्त	+ हि	= क्योंकि
विपरीते	= एकदूसरेसे विरुद्ध धर्मवाली	+ त्वाम्	= तुझको
		बहवः	= बहुत
च	= और	कामाः	= भोग भी
विषूची	= भिन्न भिन्न फल वाली हैं	न लोलुपन्तः	= नहीं लु भये

मूल ॥

(५) अविद्यायामन्तरे वर्त्तमानाः स्वयं धी

पण्डितम्मन्यमानाः दंद्रम्यमाणाः परियन्ति मूढा अंधेनैव नीयमाना यथान्धाः ॥ ५ ॥

पदच्छेद

अविद्यायाम् अन्तरे वर्त्तमानाः स्वयम् धीराः पण्डितम्मन्यमानाः दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढाः अन्धेन एव नीयमानाः यथा अन्धाः

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अविद्यायाम्	= अविद्याके
अन्तरे	= मध्य बिषे
वर्त्तमानाः	= वर्त्तते हुये
मूढाः	= मूढजन
स्वयम्	= अपने को
धीराः	= धीर
पण्डितम् मन्यमानाः	= पण्डित माननेवाले
दंद्रम्यमाणाः	= अनेक कुटिल भेष को धारणकरतेहुये
परियन्ति	= भ्रमते रहते हैं
यथा	= जैसे
अन्धः	= अंधापुरुष
अन्धेन एव	= अन्धे करके ही
नीयमानाः	= लेगयाहुआ भ्रमताहै तैसे

मूल ॥

(६) न साम्परायः प्रतिभाति बालम्प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढम् अयं लोको नास्ति पर इति मानी पुनः पुनर्वशमापद्यते मे ॥ ६ ॥

पदच्छेद

न साम्परायः प्रतिभाति बालम् प्रमाद्यन्तम्

वित्तमोहेन मूढम् अयम् लोकः न अस्ति पर
इति मानी पुनः पुनः वशम् आपद्यते मे

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
साम्परायः	शास्त्रोक्तकर्म
वित्तमोहेन	धन पुत्रादि मोह करके
मूढम्	मूढ
बालम्	अविवेकी
प्रमाद्यन्तम्	प्रमादीको
नप्रतिभाति	नहीं प्रकाशता है
अयम्	यही
लोकः	लोक है
परः	परलोक
नअस्ति	नहीं है
इति	ऐसा
मानी	मानने वाल पुरुष
पुनःपुनः	वारंवार
मे	मुझ यमरा के
वशम्	वशको
आपद्यते	प्राप्त होताहै

मूल ॥

(२) श्रवणायापिबहुभिर्योनलभ्यः शृण्वन्तो पिबहवोयन्न विद्युः आश्चर्य्योवक्ता कुशलोऽस्यल ब्धाऽऽश्चर्य्योज्ञाता कुशलानुशिष्टः ७॥

पदच्छेद

श्रवणाय अपि बहुभिः यः न लभ्यः शृण्वन्तः अपि बहवः यम् न विद्युः आश्चर्य्यः वक्ता कुशलः अस्य लब्धा आश्चर्य्यः ज्ञाता कुशलानुशिष्टः

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	= जो	आश्चर्यः	= आश्चर्यरूप है
बहुभिः	= बहुतों करके	च	= और
श्रवणाय	= सुननेके लिये	अस्य	= इस्का
अपि	= भी	लब्धा	= पानेवाला
नलभ्यः	= नहीं प्राप्तहोने योग्य है	कुशलः	= निपुण है
+च	= और	च	= और
यम्	= जिसको	अस्य	= इस्का
शृण्वन्तः	= सुनते हुवे	ज्ञाता	= जानने वाला
अपि	= भी	कुशलानुशिष्टः	= श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्टिआचार्यसे शिक्षितहुवा भी
बहवः	= बहुतेरे	आश्चर्यः	= आश्चर्यरूपहै
नविद्युः	= नहीं जानतेहैं		
इति	= ऐसे		
वक्ता	= आत्मा का कहने वाला		

मूल ॥

ननरेणावरेण प्रोक्तएष सुविज्ञेयोबहुधाचिन्त्यमानः अनन्यप्रोक्ते गतिरत्र नास्त्यणीयान् ह्यतर्यमणुप्रमाणात् ८ ॥

पदच्छेद

न नरेण अवरेण प्रोक्तः एषः सुविज्ञेयः बहुधा

चिन्त्यमानः अनन्यप्रोक्ते गतिः अत्र न अस्ति अणीयान् हि अतर्क्यम् अणुप्रमाणात्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अवरेण	= अश्रेष्ठतर्की	अत्र	= इस आत्मा बिषे
नरेण	= पुरुषकरके	गतिः	= कोई चित शंका
बहुधा	= बहुतप्रकारसे	नअस्ति	= नहीं है
प्रोक्तः	= कहाहुआऔर	हि	= क्योंकि
चिन्त्य मानः	= विचाराहुआ	एषःआत्मा	= यह आत
एषः	= यहआत्मा	अतर्क्यम्	= तर्करहित
नसुविज्ञेयः	= नहीं सम्यक् प्रकार जानने योग्य है	अणुप्रमाणात्	= सूक्ष्म प्र से भी
च	= और	अणीयान्	= सूक्ष्म है
अनन्य प्रोक्ते	= अद्वैत वादि आचार्यकर के कहे हुये		

मूल ॥

(९) नैषातर्केण मतिरापनेया प्रोक्तान्येन सुज्ञानाय प्रेष्ठयान्त्वमापः सत्यधृतिर्वतासि त्वादृङ्नो भूयान्नचिकेतःप्रष्टा (९)

पदच्छेद

न एषा तर्केण मतिः आपनेया प्रोक्ता अन्

एव सुज्ञानाय प्रेष्ठ याम् त्वम् आपः सत्यधृतिः वत असि त्वादृक् नः भूयात् नचिकेतः प्रष्टा

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एषा	= यह	तत्	= वह
मतिः	= ब्रह्मविषयणीबुद्धि	अन्येन	= आत्मवेत्ताकरके
तर्केण	= तर्ककरके	एव	= ही
न	= नहीं	प्रोक्ता	= उपदेशकीहुई
आपनेया	= प्राप्त होनेयोग है	सुज्ञानाय	= आत्मज्ञानार्थ
प्रेष्ठ	= हेप्रियदर्शन	+ भवति	= होती है
त्वम्	= तू	नचिकेतः	= हेनचिकेता
सत्यधृतिः	= सत्य धर्मालंबी	त्वादृक्	= तेरेसमान
वत असि	= श्रेष्ठ है	नः	= हमको
याम्	= जिसब्रह्मविषयणीबुद्धिको	+ अन्यः	= अन्य
आपः	= प्राप्तहुआहैतू	प्रष्टा	= प्रश्नकर्त्ता
		+ अपि	= भी
		भूयात्	= मिलै

मूल ॥

जानाम्यहथंशेवधिरित्यनित्यं न ह्यध्रुवैः प्राप्यहि ध्रुवन्तत् ततो मया नाचिकेतश्चितोऽग्निरनित्यैर्द्रव्यैः प्राप्तवानस्मि नित्यम् ॥ १० ॥

पदच्छेद

जानामि अहम् शेवधिः इति अनित्यम् न हि

अध्रुवैः प्राप्यते हि ध्रुवम् तत् ततः मया ना
केतः चितः अग्निः अनित्यैः द्रव्यैः प्राप्त
अस्मि नित्यम्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थ सूक्ष्म भा
शेवधिः	= स्वर्गादिकर्म फल	मया	= मुझकरके
अनित्यम्	= अनित्य है	नाचिकेतः	= नाचिके ज्ञक
इति	= ऐसा	अग्निः	= अग्नि
अहम्	= मैं	अनित्यैः	= अनित्य
जानामि	= जानता हूं	द्रव्यैः	= प[illegible] द्रव्यों क
हि	= क्योंकि	चितः	= सेवनकी
अध्रुवैः	= अनित्य यज्ञ अग्निहोत्रादि कर्म से	च	= और
		+तस्मात्	= इसकारण
हि	= निश्चयकरके	+ अहम्	= मैं
ध्रुवम्	= नित्य साक्षी आत्मा	नित्यम्	= नित्य यम वीको
न प्राप्यते	= नहींप्राप्तहोताहै	प्राप्तवान्	= प्राप्तहुआ
ततः	= इसलिये	अस्मि	= हूँ

नोट—यमराज भगवान् कहतेहैं कि मैंने ब्रह्मज्ञानके अन
नाचकेत नामक अग्नि के उपासना द्वारा यमराज पदवी
नित्यजान कर अपनेको प्राप्त कियाहै सोउसको तूत्यागता
इसलिये तू है नचकेता धन्यहै धन्यहै ॥

मूल ॥

(११) कामस्याप्तिञ्जगतः प्रतिष्ठां क्रतो-रानंत्यमभयस्यपारम् स्तोम महदुरुगायम्प्रतिष्ठां दृष्ट्वा धृत्या धीरो नचिकेतोऽत्यस्राक्षीः ॥ ११ ॥

पदच्छेद

कामस्य आप्तिम् जगतः प्रतिष्ठाम् क्रतोः आनन्त्य-म् अभयस्य पारम् स्तोम महत् उरुगायम् प्रतिष्ठाम् दृष्ट्वा धृत्या धीरः नचिकेतः अत्यस्राक्षीः

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
कामस्य	= कामनाकी	पारम्	= पार को अर्थात् स्वर्ग की प्राप्तिको
आप्तिम्	= प्राप्ति को	च	= और
+ च	= और	स्तोम महत्	= स्तुत्य ऐश्वर्य को
जगतः	= जगत् के	च	= और
प्रतिष्ठाम्	= आश्रय को	उरुगायम्	= भारीगतिको
+ च	= और	च	= और
क्रतोः	= यज्ञके	प्रतिष्ठाम्	= प्रतिष्ठाको
आनंत्यम्	= अनंतफलको		
च	= और		
अभयस्य	= अभय याने स्वर्गके		

दृष्ट्वा = देखकरके	नचिकेतः = हेनचिके[illegible]
धृत्या = धैर्यतासे	अत्यस्त्राक्षीः = त्यागकर[illegible] भया
धीरः = तूबुद्धिमान्	

मूल ॥

(१२) तं दुर्दर्शं गूढमनुप्रविष्टं गुहाहितङ्गह्वरेष्ठं पुराणम् अध्यात्मयोगाधिगमेन देवं मत्वा धी[illegible] हर्षशोकौ जहाति ॥ १२ ॥

पदच्छेद

तम् दुर्दर्शम् गूढम् अनुप्रविष्टम् गुहाहि[illegible] गह्वरेष्ठम् पुराणम् अध्यात्मयोगाधिगमेन देवम् [illegible]त्वा धीरः हर्षशोकौ जहाति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थस[illegible] सूक्ष्म भा[illegible]
तम्	= उस	पुराणम्	= सनातन
दुर्दर्शम्	= दुर्दर्श	देवम्	= आत्माकोप[illegible]
गूढम्	= सघन	अध्यात्मयोगाधिगमेन	= आत्मविद्[illegible] के योग से
अनुप्रविष्टम्	= छिपे हुये	मत्वा	= अनुभवकर[illegible]
गुहाहितम्	= बुद्धिमेंरखेहुये	धीरः	= धीरपुरुष
च	= और	हर्षशोकौ	= हर्षशोकको
गह्वरेष्ठम्	= अन्तःकरणरूपी गुहा में स्थितहुये	जहाति	= त्याग कर[illegible] है

मूल ॥

एतच्छ्रुत्वा सम्परिगृह्य मर्त्यः प्रवृह्य धर्म्यमणु-मेतमाप्य स मोदते मोदनीयꣳ हि लब्ध्वा विवृतꣳ हि सद्म नचिकेतसम्मन्ये ॥ १३ ॥

पदच्छेद

एतत् श्रुत्वा सम्परिगृह्य मर्त्यः प्रवृह्य धर्म्यम् अणुम् एतम् आप्य सः मोदते मोदनीयम् हि लब्ध्वा विवृतम् हि सद्म नचिकेतसम् मन्ये

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एतत्	इस
धर्म्यम्	धर्म्म करके प्राप्य आत्माको
श्रुत्वा	सुनकरके
सम्परिगृह्य	मननकरके
प्रवृह्य	पृथक् करके
च	और
एतम्	इस
अणुम्	अतिसूक्ष्म आत्माको
आप्य	प्राप्तहोकरके
च	और
मोदनीयम्	हर्षकरनेयोग्य आत्माको
लब्ध्वा	पाकरके
सः	आत्मवेत्ता
मर्त्यः	पुरुष
मोदते	प्रसन्न होताहै
हि	इस लिये
हि	निश्चयकरके
नचिकेतसम्	तुझ नचिकेता को
सद्म	ब्रह्मलोक के द्वार के
विवृतम्	सन्मुख
मन्ये	मानताहूं मैं

मूल ॥

अन्यत्रधर्मादन्यत्राधर्मादन्यत्रास्मात्कृताकृता
अन्यत्र भूताच्च भव्याच्च यत्तत्पश्यसि तद्वद ॥१

पदच्छेद

अन्यत्र धर्मात् अन्यत्र अधर्मात् अन्यत्र अस्मात् कृताकृतात् अन्यत्र भूतात् च भव्यात् यत् तत् पश्यसि तत् वद

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
धर्म्मात्	धर्म से
अन्यत्र	पृथक् है
+आत्मा	आत्मा
+च	और
अधर्मात्	अधर्म से
अन्यत्र	पृथक् है
+आत्मा	आत्मा
+च	और
अस्मात्	इस
कृताकृतात्	कार्य कारण से
+ अपि	भी
अन्यत्र	पृथक् है

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ आत्मा	आत्मा
च	और
भूतात्	भूतका
च	और
भव्यात्	भविष्य काल से
अन्यत्र	पृथक् है
यत्	जिस
तत्	वस्तुको
पश्यसि	जानते हो
तत्	उसको
वद	कहिये

नोट-नचिकेताके प्रश्न का उत्तर यमराज भगवान् अगले मंत्र में देते हैं ॥

मूल ॥

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपाꣳसि सर्वाणि च यद्वदन्ति यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य्यञ्चरन्ति तत्ते पदꣳ संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत् ॥ १५ ॥

पदच्छेद

सर्वे वेदाः यत् पदम् आमनन्ति तपांसि सर्वाणि च यत् वदन्ति यत् इच्छन्तः ब्रह्मचर्य्यम् चरन्ति तत् ते पदम् संग्रहेण ब्रवीमि ओम् इति एतत्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सर्वे	सब
वेदाः	वेद
यत्	जिस
पदम्	पदको
आमनन्ति	प्रतिपादन करते हैं
च	और
सर्वाणि	सब
तपांसि	तपस्या
यत्	जिसको
वदन्ति	प्रतिपादन करते हैं
च	और
यत्	जिसको
इच्छन्तः	इच्छा करते हुए
मुमुक्षवः	मुमुक्षुजन
ब्रह्मचर्य्यम्	ब्रह्मचर्य्यको
चरन्ति	करते हैं
तत्	उस
पदम्	पदको
ते	तेरे लिये
संग्रहेण	संक्षेप से
ब्रवीमि	कहताहूं मैं

एतत् = उसी पदको	इति = करके भी
ओम् = ओम्	वदन्ति = कहते हैं

मूल ॥

एतद्ध्येवाक्षरम्ब्रह्म एतदेवाक्षरम् परम् एतद्ध्ये-
क्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत् ॥ १६ ॥

पदच्छेद

एतत् हि एव अक्षरम् ब्रह्म एतत् एव
क्षरम् परम् एतत् हि एव अक्षरम् ज्ञात्
यत् इच्छति तस्य तत्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एतत्	यही	अक्षरम्	अक्षरको
एव हि	निश्चयकरके	ज्ञात्वा	जान कर
अक्षरम्	नाशरहित	+यः	जो
ब्रह्म	अपर ब्रह्म है	यत्	जिसको
+च	और	इच्छति	चाहता है
एतत्एव	यही	तस्य	उसी को
अक्षरम्	अविनाशी	तत्	वह
परम्	परब्रह्म है	भवति	प्राप्त होता
एतत्एव	इसही		

मूल ॥

(१७) एतदालम्बनश्रेष्ठमेतदालम्बनं

एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते ॥ १७ ॥

पदच्छेद

एतत् आलम्बनम् श्रेष्ठम् एतत् आलम्बनम् परम् एतत् आलम्बनम् ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एतत्	= यह ॐकार	+च	= और
आलम्बनम्	= आलम्बन	एतत्	= इस
श्रेष्ठम्	= श्रेष्ठहै	आलम्बनम्	= आलम्बन ओंकार को
+च	= और	ज्ञात्वा	= जानकरके
एतत्	= यह	ब्रह्मलोके	= ब्रह्मलोकमें
आलम्बनम्	= आलम्बन	महीयते	= पूज्यहोताहै
परम्	= उत्कृष्ट है		

मूल ॥

नजायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित् अजोनित्यः शाश्वतोयम्पुराणो नहन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ १८ ॥

पदच्छेद

न जायते म्रियते वा विपश्चित् न अयम् कुतश्चित् न बभूव कश्चित् अजः नित्यः शाश्वतः अयम् पुराणः न हन्यते हन्यमाने शरीरे

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ आत्मा	आत्मा
नजायते	नहीं उत्पन्न होताहै
वा	और
न	नहीं
म्रियते	मरता है
+ परन्तु	परन्तु
विपश्चित्	सर्वज्ञ है
अयम्	यह आत्मा
कुतश्चित्	किसीसे
कश्चित्	कभी
न बभूव	नहीं हुआ है
तस्मात् कारणात्	इसकारणसे

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अयम्	यहआत्मा
अजः	अज याने जन्मरहितहै
नित्यः	नित्य है
शाश्वतः	नाशरहित है
पुराणः	आदि है
अयम्	यह आत्मा
शरीरे	शरीर के
हन्यमाने	नाशहोनेपर भी
नहन्यते	नहीं नाश होता है

मूल ॥

(१९) हन्ता चेन्मन्यते हन्तुꣳहतश्चेन्मन्यते हतम् उभौ तौ न विजानीतो नायꣳहन्ति न हन्यते ॥ १९ ॥

पदच्छेद

हन्ता चेत् मन्यते हन्तुम् हतः चेत् मन्य

हतम् उभौ तौ न विजानीतः न अयम् हन्ति न हन्यते

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
चेत्	अगर	मन्यते	मानता है तो
हन्ता	मारने वाला पुरुष	तौ उभौ	वे दोनों
हन्तुम्	हननकरने को आत्मा	न विजानीतः	नहीं जानते हैं क्योंकि
मन्यते	मानता है	अयम्	यह आत्मा
च	और	न हन्ति	न तो मारता है
हतः	माराहुआपुरुष	च	और
हतम्	हनन क्रियाके कर्मको आत्मा	न हन्यते	न मरता है

मूल ॥

अणोरणीयान् महतो महीयानात्माऽस्य जन्तो र्निहितो गुहायाम् तमक्रतुः पश्यति वीतशोको धातुः प्रसादान् महिमानमात्मनः ॥ २० ॥

पदच्छेद

अणोः अणीयान् महतः महीयान् आत्मा अस्य जन्तोः निहितः गुहायाम् तम् अक्रतुः पश्यति वीतशोकः धातुः प्रसादात् महिमानम् आत्मनः

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अणोः	= छोटेसे	अक्रतुः	= निष्काम
अणीयान्	= अति छोटा	वीतशोकः	= शोकरहित पुरुष
महतः	= बड़े से	धातुःप्रसादात्	= मन के प्रसाद से
महीयान्	= अति बड़ा	तम्	= उस
आत्मा	= आत्माहै	आत्मनः	= अपने
अस्य	= इस	महिमानम्	= महिमा को अथवाअपने आत्मा को साथ
जन्तोः	= जीव के	पश्यति	= देखता है साथ
गुहायाम्	= हृदयरूपी गुहा बिषे		
+ सः	= वह		
निहितः	= स्थित है		
च	= और		

मूल ॥

(२१) आसीनोदूरं ब्रजति शयानोयाति सर्व
कस्तम्मदामदं देवं मदन्योज्ञातुमर्हति ॥ २१ ॥

पदच्छेद

आसीनः दूरम् ब्रजति शयानः याति सर्व
कः तम् मदामदम् देवम् मदन्यः ज्ञातुम् अर्हति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
आत्मा	= आत्मा	आसीनः	= स्थितहुआ हुआ

दूरम् = दूर	मदामदम् = शरीरादि उपाधिके संबंधवाले हर्ष शोकवान्
व्रजति = जाता है	देवम् = देव को
च = और	मदन्यः = मेरेसे अन्य
शयानः = सोयाहुआ	कः = कौन
सर्वतः = सब तरफ	ज्ञातुम् = जानने को
याति = फिरता है	अर्हति = समर्थहोसक्ताहै
तम् = तिस	

नोट—यह आत्मा अचल स्थित है परन्तु मनआदि उपाधि साथ मिलकर ब्रह्मलोकपर मन्तजाता है वैसेही सुपनमें इन्द्रियों के साथ मिलकर अनेक विषयों में रमण करता है ॥

मूल ॥

(२२) अशरीरꣳ शरीरेष्वनवस्थेष्ववस्थितम् महान्तम् विभुमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति २२॥

पदच्छेद

अशरीरम् शरीरेषु अनवस्थेषु अवस्थितम् महान्तम् विभुम् आत्मानम् मत्वा धीरः न शोचति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
शरीरेषु	= शरीरों विषे	अशरीरम्	= शरीररहित है

अनवस्थेषु = अनित्यों बिषे	आत्मानम् = आत्माको
अवस्थितम् = नित्य है	मत्वा = जानकरके
+ एवम् = ऐसे	धीरः = बुद्धिमान् रुष
महान्तम् = महान्	न शोचति = नहीं शोक
विभुम् = व्यापक	प्राप्त होत

मूल ॥

(२३) नायमात्मा प्रवचेनन लभ्यो न मे-
या न बहुना श्रुतेन यमेवैषवृणुते तेन लभ्यस्त
षआत्माविवृणुते तनुंस्वाम् ॥ २३ ॥

पदच्छेद

न अयम् आत्मा प्रवचनेन लभ्यः न मे
न बहुना श्रुतेन यम् एव एषः वृणुते तेन ल
तस्य एषः आत्मा विवृणुते तनुम् स्वाम्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थस सूक्ष्म भ
अयम् = यह		च = और	
आत्मा = आत्मा		मेधया = ग्रंथार्थ ध शक्ति से	
प्रवचनेन = बहुत वेदाध्य-यन करने से		न = नहीं	
नलभ्यः = नहीं प्राप्तहोने योग्य है		लभ्यः = प्राप्त होने योग्य है	

च = और
बहुना = बहुत
श्रुतेन = शास्त्रके श्रवण करने से
अपि = भी
न = नहीं
लभ्यः = प्राप्त होने योग्य है
यम् = जिसको
एव = निश्चयकरके
एषः = यह मुमुक्षु
वृणुते = इच्छा करताहै
तेन = तिसही करके
लभ्यः = पाने योग्य है
च = और
तस्य = उसी को
एषः = यह
आत्मा = आत्मा
स्वाम् = अपने
तनुम् = स्वरूप को
विवृणुते = प्रकाश करता है

मूल ॥

नाविरतोदुश्चरितान्नाशान्तोनासमाहितः ना
न्तमानसोवापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात् ॥ २४ ॥

पदच्छेद

न अविरतः दुश्चरितात् न अशान्तः न अ-
माहितः न अशान्तमानसः वा अपि प्रज्ञानेन
नम् आप्नुयात्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
दुश्चरितात्	दुष्कृतकर्मसे
अविरतः	नहीं निवृत्त भया है जो

अशान्तः = नहीं शान्त हुआ है जो

असमाहितः = नहीं एकाग्र कियाहै चित्तको जिसने

वा = और

अशान्तमानसः = नहीं हुआहै शान्त मन जिसका

एतैःपुरुषैः = ऐसे पुरुषों करके

आत्मा = आत्मा

नलभ्यः = प्राप्त ... योग्य ... है

प्रज्ञानेन = ज्ञानक...

अपि = ही

एनम् = इस आ... को

पुरुषः = पुरुष...

आप्नुयात् = प्राप्त...

मूल ॥

यस्य ब्रह्म च क्षत्रं च उभे भवत ओ...
मृत्युर्य्यस्योपसेचनं क इत्था वेद यत्र सः ॥ २...

द्वितीयवल्ली समाप्ता ॥

पदच्छेद

यस्य ब्रह्म च क्षत्रम् च उभे भवतः ओ...
मृत्युः यस्य उपसेचनम् कः इत्था वेद यत्र...

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ	अन्वय	पदार्थ... सूक्ष्म...
च	और	यस्य	जिसका

ब्रह्म = ब्राह्मण	उपसेचनम् = दाल सागहै
च = और	कः = यः = जो
क्षत्रम् = क्षत्रिय	इत्था = इस प्रकार
उभे = दोनों	यत्र = इस बिषे
ओदनम् = भात	वेद = जानता है
भवतः = होते हैं	सः = सोई
+ च = और	आत्मा = आत्मा
यस्य = जिसका	भवति = होता है
मृत्युः = मृत्यु	

इतिकठवल्लीउपनिषद्प्रथमाध्यायद्वितीयावल्ली भाषाटीकासमाप्ता ॥

मूल ॥

ॐऋतंपिवन्तौस्वकृतस्यलोकेगुहाम्प्रविष्टौपरमेपरार्द्धे छायातपौब्रह्मविदोवदन्ति पञ्चाग्नयोयेचत्रिणाचिकेताः ॥ १ ॥

पदच्छेद

ऋतम् पिवन्तौ स्वकृतस्य लोके गुहाम् प्रविष्टौ परमे परार्द्धे छायातपौ ब्रह्मविदः वदन्ति पञ्चाग्नयः ये च त्रिणाचिकेताः ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सुकृतस्य	= अपने किये हुये कर्मों के	ऋतम्	= सतरूप फलको

पिबन्तौ = पान किये हुये हैं जो
च = और
लोके = शरीर में
परमे = शुद्ध
परार्द्धे = हृदयाकाश बिषे
गुहाम् = बुद्धिरूपी गुहा को
प्रविष्टौ = जीवऔर साक्षीरूप होकर प्राप्तहै जो
तौ = उन दोनों को

ये = जो
ब्रह्मविदः = ब्रह्मवि- तु हैं
च = और
पञ्चाग्नयः = गृहस्थी
च = और
त्रिणाचिकेताः = नाचि- तना- क गिन्ने- पास-
ते = वे
छायातपौ = छाया धूपवत्
वदन्ति = कहते हैं

मूल ॥

यःसेतुरीजानानामक्षरम् ब्रह्मयत्परम् अभय- तितीर्षताम्पारं नाचिकेतꣳशकेमहि ॥ २ ॥

पदच्छेद

यः सेतुः ईजानानाम् अक्षरम् ब्रह्म यत् पर- अभयम् तितीर्षताम् पारम् नाचिकेतम् शकेमहि

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	= जो	तितीर्षताम्	= संसारसे तरनेवालोंके
परम्	= परम	अभयम्	= निर्भय
अक्षरम्	= अक्षर	पारम्	= पारहोने के लिये
ब्रह्म	= ब्रह्म है ॥	नाचिकेतम्	= नचिकेता नामकअग्नि है
तत्	= सो	तत्सेतुम्	= उसकोसेतु
ईजानानाम्	= यज्ञ करनेवालों को	शकेमहि	= जानतेहैं हम
सेतुः	= सेतु है		
च	= और		
यः	= जो		

मूल ॥

आत्मानꣳरथिनं विद्धि शरीरꣳरथमेव तु बुद्धिन्तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेवच ॥ ३ ॥

पदच्छेद

आत्मानम् रथिनम् विद्धि शरीरम् रथम् एव तु बुद्धिम् तु सारथिम् विद्धि मनः प्रग्रहम् एव च

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
आत्मानम्	= आत्माको	विद्धि	= जान तू
रथिनम्	= रथकास्वामी	+ च	= और

शरीरम् = शरीरको	विद्धि = जान तू
रथम् = रथ	च = और
एव = निश्चयकरके	मनः = मनको
विद्धि = जान तू	प्रग्रहम् = बाग
तु = और	एव = निश्चयक
बुद्धिम् = बुद्धिको	विद्धि = जान तू
सारथिम् = सारथी	

मूल ॥

इन्द्रियाणिहयानाहुर्विषयांस्तेषुगोचरान् ।
त्मेन्द्रियमनोयुक्तम् भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ॥ ४ ।

पदच्छेद

इन्द्रियाणि हयान् आहुः विषयान् तेषु गो
रान् आत्मेन्द्रियमनोयुक्तम् भोक्ता इति आहुः
नीषिणः

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहि सूक्ष्म भावा
इन्द्रियाणि	= इन्द्रियोंको	आत्मेन्द्रियमनोयुक्तम्	= शरीरइन्द्रियमनकेसहित
हयान्	= घोड़े	आत्मानम्	= आत्माको
आहुः	= कहते हैं	मनीषिणः	= विवेकीज
विषयान्	= विषयोंको	भोक्ताइति	= भोक्ताकर
तेषु	= उनके	आहुः	= कहतेहैं
गोचरान्	= मार्ग		
आहुः	= कहते हैं		

मूल ॥

यस्त्वविज्ञानवान् भवत्ययुक्तेन मनसा सदा तस्येन्द्रियाण्यवश्यानि दुष्टाश्वाइव सारथेः ॥ ५ ॥

पदच्छेद

यः तु विज्ञानवान् भवति अयुक्तेन मनसा सदा तस्य इन्द्रियाणि अवश्यानि दुष्टाश्वाः इव सारथेः

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तु	और
यः	जोपुरुष
अयुक्तेन	अयुक्त
मनसा	मनकरके
सदा	सदा
अविज्ञानवान्	अविवेकी
भवति	होताहै
तस्य	उसकी
इन्द्रियाणि	इन्द्रियां
सारथेः	सारथिके
दुष्टाश्वाः	दुष्टघोड़ोंके
इव	समान
अवश्यानि	बेवश
भवन्ति	होतीहैं

मूल ॥

यस्तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन मनसा सदा तस्येन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वाइव सारथेः ॥ ६ ॥

पदच्छेद

यः तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन मनसा सदा तस्य इन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वाः इव सारथेः

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तु	= और
यः	= जोपुरुष
युक्तेन	= युक्त
मनसा	= मनकरके
सदा	= सदैव
विज्ञानवान्	= विवेकी
भवति	= होताहै

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्य	= उसकी
इन्द्रियाणि	= इन्द्रियां
सारथेः	= सारथीके
सदश्वाःइव	= श्रेष्ठघोड़ों समान
वश्यानि	= वशीभूत
भवन्ति	= होतीहैं

मूल ॥

यस्त्वविज्ञानवान् भवत्यमनस्कः सदा शुचिः
सतत्पदमाप्नोति संसारंचाधिगच्छति ॥ ७ ॥

पदच्छेद ॥

यः तु अविज्ञानवान् भवति अमनस्कः
अशुचिः न सः तत् पदम् आप्नोति संसारम्
अधिगच्छति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
तु	= और
यः	= जो
अविज्ञानवान्	= विवेकरहित

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	= और
अमनस्कः	= मनकीए तासे रहि
सदा	= सदैव

अशुचिः = अपवित्र	आप्नोति = प्राप्तहोताहै
भवति = होताहै	च = परन्तु
सः = सो	संसारम् = संसारकोही
तत्पदम् = उसपदकोयानीमोक्षको	अधिगच्छति = प्राप्तहोताहै॥
न = नहीं	

मूल॥

यस्तु विज्ञानवान् भवति समनस्कः सदा शुचिः सतु तत्पदमाप्नोति यस्माद्भूयोनजायते ॥ ८ ॥

पदच्छेद

यः तु विज्ञानवान् भवति समनस्कः सदा शुचिः सः तु तत् पदम् आप्नोति यस्मात् भूयः न जायते

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तु	= और	तु	= निश्चय करके
यः	= जो	तत्	= उस
विज्ञानवान्	= विवेकी	पदम्	= पदको
समनस्कः	= एकाग्रचित्तवाला	आप्नोति	= प्राप्तहोताहै
सदा	= सदा	यस्मात्	= जिसकरके
शुचिः	= पवित्र	भूयः	= फिर
भवति	= होताहै	न	= नहीं
सः	= वह	जायते	= उत्पन्नहोताहै

मूल ॥

विज्ञानसारथिर्यस्तु मनः प्रग्रहवान्नरः सोऽध्व
पारमाप्नोति तद्विष्णोःपरमम्पदम् ॥ ९ ॥

पदच्छेद

विज्ञानसारथिः यः तु मनः प्रग्रहवान् नरः स
अध्वनः पारम् आप्नोति तत् विष्णोः परमम् पद

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहि सूक्ष्म भावा
यः	= जो	सः	= वह
विज्ञानसारथिः	= विज्ञानसारथी है	अध्वनः	= संसारमार्ग
तु	= और	पारम्	= पारको
मनः	= मनरूपी	आप्नोति	= प्राप्तहोता
प्रग्रहवान्	= बागकाग्रहणकरनेवाला	तत्	= सोई
नरः	= पुरुषहै	विष्णोः	= विष्णुका
		परमम्	= परम
		पदम्	= पद है

मूल ॥

इन्द्रियेभ्यः पराह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः
नसश्च परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः ॥ १० ॥

पदच्छेद

इन्द्रियेभ्यः पराः हि अर्थाः अर्थेभ्यः च परम् मनः मनसः च परा बुद्धिः बुद्धेः आत्मा महान् परः

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इंद्रियेभ्यः	इन्द्रियों से
पराः	परे
हि	निश्चयकरके
अर्थाः	विषयहैं क्योंकिइन्द्रियोंकी प्रवृत्ति विषयोंके आधीन है
अर्थेभ्यः	विषयोंसे
परम्	परे
मनः	मन है
च	और
मनसः	मनसे
परा	परेयानेसूक्ष्म
बुद्धिः	बुद्धि है
च	और
बुद्धेः	बुद्धिसे
परः	परे
महान्	महान्
आत्मा	हिरण्यगर्भहै

मूल ॥

हतः परमव्यक्तमव्यक्तात् पुरुषः परः पुरुषान्न परं किञ्चित्सा काष्ठा सा परा गतिः ॥ ११ ॥

पदच्छेद

महतः परम् अव्यक्तम् अव्यक्तात् पुरुषः परः रुषात् न परम् किंचित् सा काष्ठा सा परा गतिः

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
महतः	हिरण्यगर्भसे
परम्	परे
अव्यक्तम्	अव्याकृत है
अव्यक्तात्	अव्याकृतया नेमायासे
परः	परे
पुरुषः	आत्मा है
पुरुषात्	आत्मासे
परम्	परे
नकिञ्चित्	कुछ नहीं है

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सा	सोई
काष्ठा	अवधि है यानी प[र] आश्रय है
च	और
सा	सोई
परा	सर्वोत्तम
गतिः	गतिहै अ[थ] प्राप्तहोने[यो]ग्यहै

मूल ॥

एषसर्वेषु भूतेषु गूढात्मा नप्रकाशते दृश्यते[त्व]ग्रया बुद्धया सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः ॥ १२ ॥

पदच्छेद

एषः सर्वेषु भूतेषु गूढात्मा न प्रकाशते दृ[श्यते] तु अग्रया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एषः	यह
गूढात्मा	गूढात्मा

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सर्वेषु	सब
भूतेषु	भूतों वि[षे]

न = नहीं	बुद्ध्या = बुद्धिद्वारा
प्रकाशते = { प्रकाशताहै यानीसबको नहीं देखाई देताहै	सूक्ष्मदर्शिभिः = सूक्ष्मदर्शी ज्ञानियोंकरके
तु = परन्तु	दृश्यते = देखा जाता है याने अनुभवकिया जाता है
अग्रया = एकाग्र	
सूक्ष्मया = सूक्ष्म	

मूल ॥

यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञानआत्मनि ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि ॥ १३ ॥

पदच्छेद

यच्छेत् वाङ्मनसी प्राज्ञः तत् यच्छेत् ज्ञाने आत्मनि ज्ञानम् आत्मनि महति नियच्छेत् तत् यच्छेत् शान्ते आत्मनि

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
प्राज्ञः	बुद्धिमान्पुरुष	तत्	उसमनको
वाक्	वाणीको	ज्ञाने	ज्ञानरूपी
मनसी	मनविषे	आत्मनि	{ आत्मा याने बुद्धिमें
यच्छेत्	लयकरै	यच्छेत्	लयकरै
च	और		

च = और	तत् = {तिस म… नात्मा हि… ण्यगर्भ…
ज्ञानम् = {ज्ञानयानेबु- द्धिको	शान्ते = शान्त
महति = महान्	आत्मनि = {अधिष्ठान… आत्मा…
आत्मनि = हिरण्यगर्भमें	यच्छेत् = लयकरै
नियच्छेत् = लयकरै	
+ च = और	

मूल ॥

उत्तिष्ठतजाग्रतप्राप्यवरान्निबोधत क्षुरस्यधारानि शितादुरत्यया दुर्गम्पथस्तत्कवयोवदन्ति ॥ १४

पदच्छेद

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत क्षु… स्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गम् पथः तत् कव… वदन्ति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहि… सूक्ष्म भाव…
+ हे जन्तवः	= हेमनुष्यो	वरान्	= {श्रोत्रिय… ज्ञानेष्ठि… चार्य्य…
+ यूयम्	= तुम	प्राप्य	= प्राप्तहो…
उत्तिष्ठत	= उठो	+ आत्मानम्	= आत्मा…
जाग्रत	= जागो		
च	= और		

निबोधत = जानो
ज्ञानम् = ज्ञान
क्षुरस्य = छुरीकी
निशिता = तीक्ष्ण
धारा = धारकीत रह
दुरत्यया = कठिन है

च = और
तत् = उसीको
कवयः = विद्वान् लोक
दुर्गम् पथः = दुर्गममार्ग
वदन्ति = कहते हैं

मूल ॥

अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं तथाऽरसन्नित्यमगन्धवच्च यत् अनाद्यनन्तम्महतः परन्ध्रुवं निचाय्य तन्मृत्युमुखात्प्रमुच्यते ॥ १५ ॥

पदच्छेद

अशब्दं अस्पर्शम् अरूपम् अव्ययम् तथा अरसम् नित्यम् अगन्धवत् च यत् अनादि अनंतम् महतः परम् ध्रुवम् निचाय्य तत् मृत्युमुखात् प्रमुच्यते

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	जो
अशब्दम्	शब्दरहित है
अस्पर्शम्	स्पर्शरहितहै

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अरूपम्	रूपरहितहै
अव्ययम्	अविनाशी है
तथा	और

अरसम् = रसरहितहै	परम् = परे है
नित्यम् = नित्यहै	ध्रुवम् = अचल है
अगन्धवत् = गन्धरहितहै	तत् = तिसको
च = और	निचाय्य = जानकर
अनादि = आदिरहितहै	पुरुषः = पुरुष
अनन्तम् = अंतरहित है	मृत्युमुखात् = मृत्युकेमु से
महतः = महत्तत्त्वसे	प्रमुच्यते = छूटजाता

मूल ॥

नाचिकेतमुपाख्यानं मृत्युप्रोक्तं सनातनम् उ
श्रुत्वा च मेधावी ब्रह्मलोके महीयते ॥ १६ ॥

पदच्छेद

नाचिकेतम् उपाख्यानम् मृत्युप्रोक्तम् सनात
म् उक्त्वा श्रुत्वा च मेधावी ब्रह्मलोके महीयते

अन्वय　पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय　पदार्थसहि सूक्ष्म भाव
मृत्युप्रोक्तम् = मृत्युकरके कहीहुई	उक्त्वा = कथनकरके
	च = और
सनातनम् = सनातन	श्रुत्वा = श्रवणकरके
नाचिकेतम् = नचिकेता सम्बन्धी	मेधावी = बुद्धिमान् पु
	ब्रह्मलोके = ब्रह्मलोक में
उपाख्यानम् = आख्यायिको	महीयते = महिमा प्राप्त होता

मूल ॥

यइमं परमं गुह्यं श्रावयेद् ब्रह्मसंसदि प्रयतः श्राद्ध काले वा तदानन्त्याय कल्पते तदानन्त्या यकल्पतेइति॥ १७॥ तृतीयावल्ली ३॥

पदच्छेद

यः इमम् परमम् गुह्यम् श्रावयेत् ब्रह्मसंसदि प्रयतः श्राद्धकाले वा तत् आनन्त्याय कल्पते तत् 'आनन्त्याय' कल्पते इति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	= जो
इमम्	= इस
परमम्	= परम
गुह्यम्	= गोप्यनीय विद्याको
ब्रह्मसंसदि	= ब्राह्मणों की सभामें
वा	= अथवा
प्रयतः	= पवित्रहोकर
श्राद्धकाले	= श्राद्धकेसमय विषे
श्रावयेत्	= सुनावै तो
तत्	= वह सुनाना
आनन्त्याय	= अनन्त फल के अर्थ
कल्पते	= मानाजाताहै
आनन्त्याय	= अनन्त फल के अर्थ
कल्पते	= मानाजाताहै

इतिप्रथमाध्यायेतृतीयावल्ली॥

इतिप्रथमोऽध्यायःसमाप्तः॥

मूल ॥

ॐ पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वयम्भूस्तस्मा
त्पराङ् पश्यति नान्तरात्मन् कश्चिद्धीरः प्रत्यग
त्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन् ॥ १ ॥

पदच्छेद

पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वयम्भूः तस्मात्
राक् पश्यति न अन्तरात्मन् कश्चित् धीरः प्रत्य
आत्मानम् ऐक्षत् आवृत्तचक्षुः अमृतत्वम् इच्छ

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
स्वयम्भूः	= परमेश्वर
खानि	= इन्द्रियोंको
पराञ्चि	= बाह्यविषयोंकीओर जानेवाली
व्यतृणत्	= रचताभया
तस्मात्	= तिसीकारणवे
पराङ्	= विषयोंकोही
पश्यति	= देखती हैं
अन्तरात्मन्	= अन्तरात्माको
न	= नहींदेखतीहैं
कश्चित्	= कोई बिरल
धीरः	= धीरपुरुष
अमृतत्वम्	= अमरभाव की
इच्छन्	= इच्छाकरता हुवा
आवृत्त चक्षुः	= चक्षुइन्द्रियोंको विषयों से ह कर
प्रत्यक्	= अंतर
आत्मानम्	= आत्माको
ऐक्षत	= देखता है

मूल ॥

पराचः कामाननुयन्ति बालास्ते मृत्योर्यन्ति विततस्य पाशम् अथ धीराअमृतत्वं विदित्वा ध्रुवमध्रुवेष्विह न प्रार्थयन्ते ॥ २॥

पदच्छेद

पराचः कामान् अनुयन्ति बालाः ते मृत्योः यन्ति विततस्य पाशम् अथ धीराः अमृतत्वम् विदित्वा ध्रुवम् अध्रुवेषु इह न प्रार्थयन्ते ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
पराचः	= बाह्य	धीराः	= विवेकी पुरुष
कामान्	= विषयों को	ध्रुवम्	= नित्य
बालाः	= अज्ञानीपुरुष	अमृतत्वम्	= अमररूप आत्माको
अनुयन्ति	= प्राप्तहोते हैं	विदित्वा	= जानकरके
च	= और	इह	= इससंसार बिषे
ते	= वेही	अध्रुवेषु	= अनित्यभो-गों को
मृत्योः	= मृत्यु के	नप्रार्थयन्ते	= नहींचाहते हैं
विततस्य	= फैलेहुये		
पाशम्	= रस्साको		
यन्ति	= प्राप्तहोते हैं		
अथ	= और		

मूल ॥

येनरूपंरसंगन्धं शब्दान् स्पर्शांश्च मैथु-

नान् एतेनैवविजानाति किमत्रपरिशिष्यते एतद्वै तत् ॥ ३ ॥

पदच्छेद

येन रूपम् रसम् गन्धम् शब्दान् स्पर्शान् च मैथुनान् एतेन एव विजानाति किम् अत्र परिशिष्यते एतत् वै तत्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
येन	जिससाक्षि आत्मा करके
रूपम्	रूपको
रसम्	रसको
गन्धम्	गन्धको
शब्दान्	शब्दोंको
स्पर्शान्	स्पर्शोंको
च	और
मैथुनान्	मैथुनोंको
एव	ठीक ठीक
+पुरुषः	पुरुष
विजानाति	अच्छे प्रकार जानता है
तत्	सोई
वै	निश्चयक[illegible] के
एतत्	यहब्रह्महै
च	और
एतेन	इसआत्मा[illegible] और
किम्	क्या
अत्र	यहां
परिशिष्यते	जाननेकोशे[illegible] परहताहै य[illegible] ने जानने[illegible] ग कुछभी[illegible] कीनहीं रह[illegible] है ॥

सूल ॥

स्वप्नांतंजागरितान्तञ्चोभौ येनानुपश्यति महान्तं विभुमात्मानं मत्वाधीरोनशोचति ॥ ४ ॥

पदच्छेद

स्वप्नान्तम् जागरितान्तम् च उभौ येन अनुपश्यति महान्तम् विभुम् आत्मानम् मत्वा धीरः न शोचति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
उभौ	दोनों यानी
स्वप्नांतम्	स्वप्नकालके पदार्थोंको
च	और
जागरितान्तम्	जाग्रतकाल केपदार्थोंको
येन	जिस साक्षि चेतनकरके
+ पुरुषः	पुरुष
अनुपश्यति	स्पष्टदेखता है
एतत्	वही
वै	निश्चय करके
तत्	यह ब्रह्महै
+ च	और
महान्तम्	महान्
विभुम्	व्यापक
आत्मानम्	आत्माको
मत्वा	जानकरके
धीरः	धीर पुरुष
नशोचति	नहीं शोचको प्राप्तहोता है

सूल

यइमंमध्वदंवेद आत्मानंजीवमन्तिकात् ईशान

स्भूतभव्यस्य नततोविजिगुप्सते एतत् वै तत ॥

पदच्छेद

यः इमम् मध्वदम् वेद आत्मानम् जीवम् ... न्तिकात् ईशानम् भूतभव्यस्य न ततः विजुगु... ते एतत् वै तत्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	जो कोई	वेद	जानताहै
इमम्	इस	सः	वह
मध्वदम्	कर्मफलका भोक्ता	ततः	फिर
अन्तिकात्	समीपवर्ती	नविजुगुप्सते	अपनेआप... रक्षाकी इ... नहीं करता
भूतभव्यस्य	कालत्रयका	तत्	सोई आत्मा
ईशानम्	नियामक	वै	निश्चयकरके
जीवम्	जीवरूप	एतत्	यह ब्रह्महै
आत्मानम्	आत्माको		

मूल ॥

यःपूर्वन्तपसोजातमद्भ्यःपूर्वमजायत गुहांप्र-
श्यतिष्ठन्तं योभूतेभिर्व्यपश्यत एतद्वैतत् ॥ ६ ॥

पदच्छेद

य पूर्वम् तपसः जातम् अद्भ्यः पूर्वम् अ...

त गुहाम् प्रविश्य तिष्ठन्तम् यः भूतेभिः व्यपश्यत एतत् वै तत्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	= जो
पूर्वम्	= पहले
तपसः	= ब्रह्मसे
जातम्	= उत्पन्नहुआ है
च	= और
अद्भ्यः	= जलादि पंच तत्त्वोंसे
पूर्वम्	= पूर्व
अजायत	= उत्पन्न हुआ है
च	= और
यः	= जो
भूतेभिः	= कार्यकारण संघातके सहित
गुहाम्	= हृदयाकाश रूप गुहाविषे
प्रविश्य	= प्रवेशकरके
तिष्ठन्तम्	= स्थितहै
+ तद्धिरण्यम्	= तिस हिरण्यगर्भको
यः	= जो पुरुष
व्यपश्यत	= देखता है
तत्	= सोई
वै	= निश्चयकरके
एतत्	= यह ब्रह्महै

मूल ॥

याप्राणेनसम्भवत्यदितिर्देवतामयी गुहांप्रविश्यतिष्ठन्तीं याभूतेभिर्व्यजायत एतद्वैतत् ॥ ७ ॥

पदच्छेद

या प्राणेन सम्भवति अदितिः देवतामयी गुहाम् प्रविश्य तिष्ठन्तीम् या भूतेभिः व्यजायत एतत् वै तत्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
या	= जो
देवतामयी	= देवतारूप
प्राणेन	= प्राणकरके
सम्भवति	= उत्पन्नहोताहै
+ सा	= सोई
अदितिः	= अदितिरूपहै
च या	= और जो
भूतेभिः	= सबभूतों के साथतादात्म्यताको प्राप्तहोकर के

अन्वय	पदार्थस सूक्ष्म भा
व्यजायत	= उत्पन्नहु
च	= और
गुहाम्	= हृदयाका विषे
प्रविश्य	= प्रवेश क
तिष्ठन्तीम्	= स्थित है
तत्	= सोई
वै	= निश्चय के
एतत्	= यह ब्रह्म

मूल ॥

अरण्योर्निहितोजातवेदागर्भइवसुभृतो ग णीभिः दिवेदिवईड्योजागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनु भिरग्निः ॥ ८ ॥

पदच्छेद

अरण्योः निहितः जातवेदाः गर्भः इव सु गर्भिणीभिः दिवे दिवे ईड्यः जागृवद्भिः हविष्म मनुष्येभिः अग्निः एततू वै तत्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अरण्योः	दोनों अरणियों विषे
जातवेदाः	वैश्वानर अग्नि
निहितः	स्थित है
इव	जैसे
गर्भिणीभिः	गर्भवती स्त्री करके
सुभृतः	धारणकिया हुआ
गर्भः	गर्भ
+ निहितः	स्थित है
च	और
+ यः	जो
अग्निः	अग्नि

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
जागृवद्भिः	जाग्रत्स्वभाववाले याने प्राणायामके करनेवाले
च	और
हविष्मद्भिः	हवनके करनेवाले
मनुष्येभिः	मनुष्योंकरके
दिवेदिवे	प्रतिदिन
ईड्यः	स्तुति करने योग्य है
तत्	वही
वै	निश्चयकरके
एतत्	यह ब्रह्म है

मूल ॥

यतश्चोदेतिसूर्य्योऽस्तं यत्रचगच्छति तन्देवाः सर्वेऽर्पितास्तदुनात्येतिकश्चन एतद्वैतत् ॥ ९ ॥

पदच्छेद

यतः च उदेति सूर्य्यः अस्तम् यत्र च गच्छति

तम् देवाः सर्वे अर्पिताः तत् उ न अत्येति कश्
न एतत् वै तत्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	और	देवाः	देवता
यतः	जिस प्राणवायु अधिदैव करके	अर्पिताः	अर्पित हैं
सूर्य्यः	सूर्य	उ	और
उदेति	उदय होता है	तत्	उसको
च	और	कश्चन	कोई भी
यत्र	जिस बिषे	न	नहीं
अस्तम्	अस्त को	अत्येति	उल्लंघन क सक्ता है
गच्छति	प्राप्त होता है	तत्	सोई
तम्	तिसी में	वै	निश्चयक
सर्वे	सब	एतत्	यह ब्रह्म

मूल ॥

यदेवेहतदमुत्रयदमुत्रतदन्विह मृत्योःस माप्नोति यइहनानेव पश्यति॥ १० ॥

पदच्छेद

यत् एव इह तत् अमुत्र यत् अमुत्र
अनु इह मृत्योः सः मृत्युम् आप्नोति य
नाना इव पश्यति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
यत्	जो
एव	निश्चय करके
इह	यहां है
तत्	सोई
अमुत्र	वहां है
यत्	जो
अमुत्र	वहां है
तत्	सोई
अन्विह	यहां है
यः	जो

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
इह	इस अद्वैत चेतन बिषे
नाना	नानात्व यानी भेदभाव
इव	सा
पश्यति	देखता
सः	सो
मृत्योः	मृत्यु से भी
मृत्युम्	मृत्युको
आप्नोति	प्राप्त होता है

मूल ॥

मनसैवेदमाप्तव्यन्नेहनानास्ति किञ्चन मृत्योः
समृत्युङ्गच्छति यइहनानेव पश्यति ॥ ११ ॥

पदच्छेद

मनसा एव इदम् आप्तव्यम् न इह नाना अस्ति किंचन मृत्योः सः मृत्युम् गच्छति यः इह नाना इव पश्यति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
मनसा	मनकरके
एव	ही
इदम्	यह

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
आप्तव्यम्	प्राप्तहोने योग है
इह	इसब्रह्म बिषे

किञ्चन = किंचित्‌मात्र भी	नानाइव = नानात्वको
नाना = नानात्व याने भेद	पश्यति = देखता है
न = नहीं	सः = वह
अस्ति = है	मृत्योः = मृत्युसे भी
यः = जो	मृत्युम् = मृत्युको ... नी पुनः पु... जन्ममरण...
इह = इसब्रह्म विषे	गच्छति = प्राप्तहोता है

मूल ॥

अंगुष्ठमात्रःपुरुषोमध्यआत्मनि तिष्ठति ईशानोभूतभव्यस्य नततोविजुगुप्सते एतद्वैतत् ॥ १२

पदच्छेद

अंगुष्ठमात्रः पुरुषः मध्ये आत्मनि तिष्ठति ईशानः भूतभव्यस्य न ततः विजुगुप्सते एतत् वै तत्

अन्वय पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अंगुष्ठमात्रः = अंगुष्ठमात्र	तिष्ठति = स्थित है
पुरुषः = पुरुष	च = और
आत्मनि = शरीर के	भूतभव्यस्य = कालत्रय
मध्ये = मध्यविषेया नेहृदया काश में	ईशानः = प्रेरक है
	ततः = इस ...
	+ सः = वह

विजुगुप्सते = रक्षा करने की इच्छा	तत् = सोई
न = नहींकरताहै	वै = निश्चयकरके
	एतत् = यह ब्रह्महै

मूल ॥

अंगुष्ठमात्रःपुरुषोज्योतिरिवाधूमकः ईशानो भूतभव्यस्यसएवाद्यसउश्वःएतद्वैतत् ॥ १३ ॥

पदच्छेद

अंगुष्ठमात्रः पुरुषः ज्योतिः इव अधूमकः ईशानः भूतभव्यस्य सः एव अद्य सः उ श्वः एतत् वै तत्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अंगुष्ठमात्रः	= अंगुष्ठमात्र	सःएव	= सोई निश्चय करके
पुरुषः	= पुरुष	अद्य	= आज वर्त्तमान हैं
अधूमकः	= धूमरहित	उ	= और
ज्योतिः	= अग्नि की	सः	= सोई
इव	= तरह प्रकाशमान है	श्वः	= कल याने भविष्यत् है
च	= और जो	ततः	= ताते
भूतभव्यस्य	= तीनोंकाल का	तत्	= वही
ईशानः	= नियामक ईश्वर है	वै	= निश्चय करके
		एतत्	= यह ब्रह्म है

मूल ॥

यथोदकन्दुर्गे वृष्टं पर्वतेषुविधावति एवंधर्मा पृथक्पश्यँस्तानेवानुविधावति ॥ १४ ॥

पदच्छेद

यथा उदकम् दुर्गे वृष्टम् पर्वतेषु विधावति एवम् धर्मान् पृथक् पश्यन् तान् एव अनुविधावति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यथा	= जैसे	धर्मान्	= धर्मोंको
उदकम्	= जल	पृथक्	= भिन्नभिन्न
दुर्गे	= कठिन	प्रतिशरीरम्	= प्रति शरीरमें
पर्वतेषु	= पर्वतपर	+ पुरुषः	= जीवात्मा
वृष्टम्	= बरसाहुवा	पश्यन्	= देखताहुवा
विधावति	= निम्न देशमें फैलकर नष्ट हो-जाता है	तान्एव	= तिनहीं शरीरोंको
एवम्	= इसीप्रकार	अनुविधावति	= वारंवारम्रत होताहै

मूल ॥

यथोदकंशुद्धेशुद्धमासिक्तन्तादृगेव भवति एवं मुनेर्विजानतआत्माभवति गौतम ॥ १५ ॥

पदच्छेद

यथा उदकम् शुद्धे शुद्धम् आसिक्तम् तादृक् एव भवति एवम् मुनेः विजानतः आत्मा भवति गौतम

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
गौतम	= हेनचिकेता	भवति	= बना रहता है
यथा	= जैसे	एवम्	= इसी प्रकार
उदकम्	= जल	विजानतः	= ज्ञानी
शुद्धे	= शुद्धस्थानमें	मुनेः	= मुनि का
आसिक्तम्	= गिराहुआया-मी वर्षाहुआ	आत्मा	= आत्मा
तादृक्एव	= वैसाही	+ सदा	= सदा
शुद्धम्	= शुद्ध	शुद्धम्	= शुद्ध
		भवति	= रहता है

द्वितीयाऽध्यायस्यचतुर्थीवल्लीसमाप्ता ४॥

मूल ॥

पुरमेकादशद्वारमजस्यावक्रचेतसः अनुष्ठाय नशोचतिविमुक्तश्चविमुच्यते एतद्वैतत् ॥ १ ॥

पदच्छेद

पुरम् एकादशद्वारम् अजस्य अवक्रचेतसः अनुष्ठाय न शोचति विमुक्तः च विमुच्यते एतत् वै तत्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अजस्य	जन्मरहित
अवक्रचेतसः	अकुटिल विज्ञानरूप चेतनआत्माका
+ इदम्	यह
एकादशद्वारम्	ग्यारह दरवाजे वाला
पुरम्	पुररूपीशरीरहै
+ यः	जो
तम्	उस पुरके स्वामी को
अनुष्ठाय	ध्यान करे
नशोचति	शोक नहीं करता है
सः	वह
विमुक्तः	मुक्त हुआ
च	भी
विमुच्यते	मुक्त होता
तत्	सोई
वै	निश्चय क
एतत्	यह ब्रह्म

मूल ॥

हछंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदति दुरोणसत् नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जागोजा जाअद्रिजाऋतम्बृहत् ॥ २ ॥

पदच्छेद

हंसः शुचिषत् वसुः अन्तरिक्षसत् होता वेदि अतिथिः दुरोणसत् नृषत् वरसत् ऋतसत् मसत् अब्जाः गोजाः ऋतुजाः अद्रिजाः ऋ बृहत्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+अयम् आत्मा	= यह आत्मा
हंसः	= हंस है
शुचिषत्	= पवित्र आकाश में स्थित है
वसुः	= वायुरूप होकर सबको अपने बिषे बसावने वाला है
अन्तरिक्षसत्	= अन्तरिक्षमें चलनेवाला है
होता	= अग्निरूपहै
वेदिषत्	= पृथिवी में स्थित है
अतिथिः	= जलरूप होकर
दुरोणसत्	= कलश बिषे स्थित है

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
नृसत्	= मनुष्यों में स्थित है
वरसत्	= देवतावों में स्थित है
ऋतसत्	= यज्ञमें स्थित है
व्योमसत्	= आकाश में स्थित है
अब्जाः	= जलसेउत्पन्न हुवा है
गोजाः	= पृथिवीसे उत्पन्न हुवा है
ऋतुजाः	= यज्ञसे उत्पन्न हुवा है
अद्रिजाः	= पर्वतसेउत्पन्न भया है
ऋतम्	= सत्य है
बृहत्	= सबसे बड़ाहै

मूल ॥

ऊर्द्ध्वम्प्राणमुन्नयत्यपानंप्रत्यगस्यतिमध्ये वा
नमासीनंविश्वेदेवाउपासते ॥ ३ ॥

पदच्छेद

ऊर्द्ध्वम् प्राणम् उन्नयति अपानम् प्रत्यक्
स्यति मध्ये वामनम् आसीनम् विश्वे
उपासते

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	= जो	वामनम्	= अंगुष्ठमा शिव
प्राणम्	= प्राणवायुको	मध्ये	= हृदयाका बिषे
ऊर्द्ध्वम्	= ऊपरकी ओर	आसीनम्	= स्थित
उन्नयति	= लेजाता है	विश्वे	= सब
च	= और	देवाः	= चक्षुरादि वता
अपानम्	= अपानवायु को	उपासते	= उपासना रते हैं
प्रत्यक्	= नीचेकी ओर		
अस्यति	= फेंकता है		
तम्	= उस		

मूल ॥

अस्यविस्रंसमानस्य शरीरस्थस्यदेहिनः
द्विमुच्यमानस्यकिमत्रपरिशिष्यतएतद्वैतत् ॥

पदच्छेद

अस्य विस्रंसमानस्य शरीरस्थस्य देहिनः देहात् विमुच्यमानस्य किम् अत्र परिशिष्यते एतत् वै तत्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
विस्रंसमानस्य	बाहर निकलनेवाले
+ च	और
विमुच्यमानस्य	देहको त्यागने वाले
अस्य	इस
शरीरस्थस्य	शरीर बिषे स्थित
देहिनः	जीवआत्मा के
देहात्	देहसेपृथक् होनेपर
किम्	क्या
अत्र	उसत्यागेहुयेशरीरबिषे
परिशिष्यते	अवशेषरहताहै अर्थात् कुछभी शेष रहता नहीं
+ तस्मात्	इसलिये
एतत्	यही
वै	निश्चय करके
तत्	वह ब्रह्म है

मूल ॥

नप्राणेननापानेनमर्त्योजीवतिकश्चन इतरेणतु जीवन्तियस्मिन्नेतावुपाश्रितौ ॥ ५ ॥

पदच्छेद

न प्राणेन न अपानेन मर्त्यः जीवति कश्
इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन् एतौ उपाश्रितौ

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थस सूक्ष्म भा
कश्चन	= कोई भी	जीवन्ति	= जीवते हैं
मर्त्यः	= मनुष्य	यस्मिन्	= जिस में
नप्राणेन	= नप्राणोंकरके	एतौ	= वेदोनें प्रा पान
च	= और	उपाश्रितौ	= आश्रित रहे हैं
नअपानेन	= नअपान करके	+ तत् एवब्रह्म	= सोई ब्रह्म
जीवति	= जीता है		
+ परन्तु	= परन्तु		
इतरेणतु	= औरही करके		

मूल ॥

हन्ततइदम्प्रवक्ष्यामिगुह्यम्ब्रह्मसनातनम्
चमरणंप्राप्यआत्माभवतिगौतम ॥ ६ ॥

पदच्छेद

हन्त ते इदम् प्रवक्ष्यामि गुह्यम् ब्रह्म
तनम् यथा च मरणम् प्राप्य आत्मा
गौतम

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
हन्त	= अब	यथा	= जिस प्रकार
ते	= तुझ से	आत्मा	= अज्ञानीपुरुष का आत्मा
इदम्	= इस	मरणम्	= मरण को
सनातनम्	= पुरातन	प्राप्य	= प्राप्त होके
गुह्यम्	= गोप्य	संसारम्	= संसार को
ब्रह्म	= ब्रह्म को	भवति	= पावता है
प्रवक्ष्यामि	= कहताहूं	तम्	= तिस्को
च	= और	शृणु	= श्रवण कर
गौतम	= हेनचिकेता		

मूल ॥

योनिमन्येप्रपद्यन्तेशरीरत्वायदेहिनः स्थाणु
मन्येऽनुसंयन्तियथाकर्मयथाश्रुतम् ॥ ७ ॥

पदच्छेद

योनिम् अन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः स्थाणुम् अन्ये अनुसंयन्ति यथा कर्म यथा श्रुतम्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अन्ये	= ज्ञानवान् से अन्य	देहिनः	= देहाभिमानी अज्ञानी

शरीरत्वाय = शरीरकेअर्थ
योनिम् = अनेकयोनिको
यथाकर्म = कर्मके अनुसार
च = और
यथाश्रुतम् = प्रवृत्तिशास्त्र श्रवणानुसार
प्रपद्यन्ते = प्राप्तहोते हैं
अन्ये = सकाम कर्म करने वालों से भीअन्य अत्यन्त मूढ़ पुरुष

स्थाणुम् = जङ्गमभ... को यानी ... क्षपाषाण... आदि के...
यथाकर्म = कर्मानुसार
च = और
यथाश्रुतम् = कपोलक... लिपतशा... श्रवणानु... सार
अनुसंयन्ति = प्राप्त होते...

मूल ॥

यएषसुप्तेषुजागर्तिकामंकामंपुरुषो निर्मिमा... तदेवशुक्रंतद्ब्रह्मतदेवामृतमुच्यतेतस्मिँल्लोकाः ... ताःसर्वेतदुनात्येतिकश्चनएतद्वैतत् ॥ ८ ॥

पदच्छेद

यः एषः सुप्तेषु जागर्ति कामम् कामम् ... रुषः निर्म्मिमाणः तत् एव शुक्रम् तत् ... तत् एव अमृतम् उच्यते तस्मिन् ... श्रिताः सर्वे तत् उ न अत्येति कश्चन ... तत् वै तत्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	= जो	उच्यते	= कहाजाताहै
एषः	= यह	तस्मिन्	= तिसहीबिषे
पुरुषः	= पुरुष	सर्वे	= सब
सुप्तेषु	= स्वप्नबिषे	लोकाः	= लोक
कामंकामम्	= वांछितविष-योंको	श्रिताः	= आश्रित हैं
निर्मिमाणः	= रचताहुआ	+ च	= और
जागर्ति	= जागता है	तत्	= उस्को
तत् एव	= सोई	कश्चन	= कोई भी
तत्	= वह	न	= नहीं
शुक्रम्	= शुद्ध	अत्येति	= उल्लंघन कर-ताहै
ब्रह्म	= ब्रह्म है	+अस्मात् कारणात्	= इसी कारण से
च	= और	एतत् वै	= यही
तत् एव	= सोई	तत्	= वहब्रह्म है
अमृतम्	= अविनाशी		

मूल ॥

अग्निर्यथैकोभुवनंप्रविष्टोरूपंरूपंप्रतिरूपोबभूव एकस्तथासर्वभूतान्तरात्मारूपंरूपंप्रतिरूपोबहिश्च ॥ ९ ॥

पदच्छेद

अग्निः यथा एकः भुवनम् प्रविष्टः रूपम् रू-

पम् प्रतिरूपः बभूव एकः तथा सर्वभूतान्तरा
रूपम् रूपम् प्रतिरूपः बहिः च

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यथा	= जैसे
एकः	= एक
अग्निः	= अग्नि
भुवनम्	= भुवनविषे
प्रविष्टः	= प्रवेशकरता हुआ
रूपम् रूपम्	= रूपरूपसे याने अनेक रूपसे
प्रतिरूपः	= हरएकउपाधि के साथ तद्रूप
बभूव	= होता भया
तथा	= वैसेही
सर्वभूतान्तरात्मा	= सब भूतों के अन्तर का आत्मा भी

अन्वय	पदार्थस सूक्ष्म भा
एकः	= एक होता हुआ
रूपम्रूपम्	= देह देहे प्रति
प्रतिरूपः	= तादात्म्या ध्यास क
बभूव	= तद्रूपहीहो भया
च	= और
बहिः	= आकाश वत् सब बाहर भ स्थित ह ता भया

मूल ॥

वायुर्यथैकोभुवनंप्रविष्टोरूपंरूपंप्रतिरूपोबभू
एकस्तथासर्वभूतान्तरात्मा रूपंरूपंप्रतिरूपो
हिश्च ॥ १० ॥

पदच्छेद

वायुः यथा एकः भुवनम् प्रविष्टः रूपम् रूपम् प्रतिरूपः बभूव एकः तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपम् रूपम् प्रतिरूपः बहिः च

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यथा	= जैसे
एकः	= एक
वायुः	= वायु
भुवनम्	= चतुर्दश लोक में
प्रविष्टः	= प्रवेश करता हुआ
रूपम्रूपम्	= शरीर शरीर प्रति
प्रतिरूपः	= तद्रूप
बभूव	= होता भया
तथा	= वैसेही
सर्वभूतान्तरात्मा	= सब भूतों का अन्तरात्मा
एकः	= एक होता हुआ
रूपम्रूपम्	= देहदेह प्रति
प्रतिरूपः	= तादात्म्य रूप
बभूव	= होता भया
च	= और
बहिः	= बाहर भी आकाशवत् व्याप्त होताभया

मूल ॥

सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्यदोषैः एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः ॥ ११ ॥

पदच्छेद

सूर्य्यः यथा सर्वलोकस्य चक्षुः न लिप्
चाक्षुषैः बाह्यदोषैः एकः तथा सर्वभूतान्तरा
न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यथा	जैसे	तथा	वैसेही
सूर्य्यः	सूर्य	एकः	एक
सर्वलोकस्य	सबलोकोंका	सर्वभूतान्तरात्मा	सबभूतों अंतरात्मा
चक्षुः	नेत्रभूतहोताहुआ	बाह्यः	पृथक्होत हुआ
चाक्षुषैः	लोकोंकेचक्षुओंके	लोकदुःखेन	लोकोंकेदु खसे
बाह्यदोषैः	बाह्यदोषोंकरके	नलिप्यते	नहींलिपा मानहोता
नलिप्यते	नहींलिपायमानहोताहै		

मूल ॥

एकोवशीसर्वभूतान्तरात्मा एकंरूपंबहुधा
करोति तमात्मस्थंयेऽनुपश्यन्तिधीरास्तेषां
शाश्वतन्नेतरेषाम् ॥ १२ ॥

पदच्छेद

एकः वशी सर्वभूतान्तरात्मा एकम् रूपम्

हुधा यः करोति तम् आत्मस्थम् ये अनुपश्यन्ति धीराः तेषाम् सुखम् शाश्वतम् न इतरेषाम्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सर्वभूतान्तरात्मा	सबभूतोंका अन्तरआत्मा	ये	जो
एकः	एकहै	धीराः	विवेकीपुरुष
वशी	सबकोवश करनेवालाहै	अनुपश्यन्ति	अनुभवकरतेहैं
एकम्रूपम्	अपनेएकही रूपको	तेषाम्	तिनकोही
बहुधा	उपाधीकरके बहुतप्रकारका	शाश्वतम्	नित्य
यः	जो	सुखम्	सुखहोताहै
करोति	करलेताहै	इतरेषाम्	इतरपुरुषोंको
तम्	तिस	न	नहींहोताहै
आत्मस्थम्	शरीरमेंस्थित आत्माको		

मूल ॥

नित्योनित्यानाञ्चेतनश्चेतनानामेकोबहूनां योविदधातिकामान् तमात्मस्थंयेऽनुपश्यन्तिधीरास्तेषांशान्तिः शाश्वतीनेतरेषाम् ॥ १३ ॥

पदच्छेद

नित्यः अनित्यानाम् चेतनः चेतनानाम् ए बहूनाम् यः विदधाति कामान् तम् आत्मस्थ म् ये अनुपश्यन्ति धीराः तेषाम् शान्तिः श्वती न इतरेषाम्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहि सूक्ष्म भाव
यः	= जो व्यापक आत्मा	कामान्	= कर्मों अ सारभोगों को
अनित्यानाम्	= अनित्यजगत्आदिकों का	विदधाति	= देताहै
		तम्	= तिस
नित्यः	= अधिष्ठान कारणरूप नितहै	आत्मस्थम्	= बुद्धिमें त आत्मा
		ये	= जो
च	= और	धीराः	= विवेकी रुष
चेतनानाम्	= चेतनका भी	अनुपश्यन्ति	= अनुभव रतेहैं
चेतनः	= चेतन है		
सः	= सोई	तेषाम्	= उनको
एकः	= एकहुवाहुवा	शाश्वती	= नित्य
		शान्तिः	= शान्ति पमोक्ष प्त है
बहूनाम्	= अनंत जीवों प्रति		

इतरेषाम् = औरों को | न = नहीं

मूल ॥

तदेतदितिमन्यन्तेऽनिर्देश्यम्परमंसुखम् कथ
न्नुतद्विजानीयांकिमुभातिविभातिवा ॥ १४ ॥

पदच्छेद

तत् एतत् इति मन्यन्ते अनिर्देश्यम् परमम् सुखम् कथम् नु तत् विजानीयाम् किमु भाति विभाति वा

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	= जो	भगवन्	= हे भगवन्
परमम्	= उत्कृष्ट	तत्	= उस परमात्माको
सुखम्	= सुख	कथम् नु	= कैसे
अनिर्देश्यम्	= कहनेमेंआवैनहीं	विजानीयाम्	= जानूं मैं
तत्	= सोई	तत्	= वह
एतत्	= यहआत्मा ज्ञानस्वरूप है	किमु	= कैसे
इति	= ऐसा	भाति	= प्रकाशताहै
ब्रह्मविदः	= ब्रह्मवेत्ता	वा	= और
मन्यन्ते	= मानते हैं	किमु	= कैसे
		विभाति	= स्पष्टभासता है

नोट—नचिकेता यमराज भगवान्से कहताहै कि हे भगव
सुखरूप आत्मा ब्रह्मवेत्ताओं को प्राप्त है उसको मैं कैसे जा

मूल ॥

नतत्रसूर्योभातिनचन्द्रतारकन्नेमाविद्युतो
न्तिकुतोऽयमग्निः तमेवभान्तमनुसर्वन्तस
सासर्वमिदंविभाति ॥ १५ ॥

पदच्छेद

न तत्र सूर्यः भाति न चन्द्रतारकम् न
विद्युतः भान्ति कुतः अयम् अग्निः तम् एव
न्तम् अनुभाति सर्वम् तस्य भासा सर्वम्
विभाति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्र	तिस को
सूर्य्यः	सूर्य
नभाति	नहींप्रकाश करसक्ता है
च	और
चन्द्रतारकम्	चंद्रमा सहिततारोंके
नभाति	नहीं प्रकाशकरसक्ता है
च	और

अन्वय	पदार्थस
इमाः	ये
विद्युतः	बिजुलि भी
नभान्ति	नहींप्रका रसक्तीहैं
+ तर्हि	तब
कुतः	कैसे
तम्	उसको
अयम्	यह
अग्निः	लौकि ग्नि

प्रकाश-यिष्यति = प्रकाशकरैगी किन्तु नहीं करैगी	च = और
तम् एव = तिसही	तस्य = तिसही के
भान्तम् = प्रकाशमान के पीछे	भासा = प्रकाशकरके
सर्वम् = सब जगत्	इदंसर्वम् = यह सम्पूर्ण सूर्यादि
अनुभाति = प्रकाशमान होता है	विभाति = प्रकाशमान होता है

इतिद्वितीयाध्याये पञ्चमवल्लीसमाप्ता ॥ ५ ॥

मूल ॥

ऊर्ध्वमूलोऽवाक्शाखएषोऽश्वत्थःसनातनः तदेवशुक्रंतद्ब्रह्मतदेवामृतमुच्यते तस्मिंल्लोकाःश्रिताः सर्वेतदुनात्येतिकश्चनएतद्वैतत् ॥ १ ॥

पदच्छेद

ऊर्ध्वमूलः अवाक्शाखः एषः अश्वत्थः सनातनः तत् एव शुक्रम् तत् ब्रह्म तत् एव अमृतम् उच्यते तस्मिन् लोकाः श्रिताः सर्वे तत् उ न अत्येति कश्चन एतत् वै तत्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एषः	यह संसार
ऊर्द्ध्वमूलः	ऊर्द्ध्वमूल
अवाक् शाखः	नीचे शाखा वाला
सनातनः	अनादि काल का
अश्वत्थः	पीपल का वृक्ष है
ततएव	तिस संसार-रूपी वृक्ष का मूल
शुक्रम्	शुद्ध
ब्रह्म	ब्रह्म है
च	और
तत् एव	वही

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अमृतम्	अविनाशी
उच्यते	कहा जाताहै
तस्मिन्	उस बिषे
सर्वे	सब
लोकाः	लोक
श्रिताः	आश्रयको प्राप्त हैं
उ	और
तत्	उस को
कश्चन	कोई भी
नअत्येति	नहीं उल्लंघन कर सक्ताहै
एतत्	यही
वै	निश्चय करके
तत्	वह ब्रह्म है

मूल ॥

यदिदंकिञ्चजगत्सर्वं प्राणएजतिनिःसृतम् । महद्भयम् वज्रमुद्यतं यएतद्विदुरमृतास्तेभवंति॥ २

पदच्छेद

यत् इदम् किञ्च जगत् सर्वम् प्राणे एजति

निःसृतम् महद्भयम् वज्रम् उद्यतम् ये एतत् विदुः अमृताः ते भवन्ति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	जो	ततः	तिसी से
किञ्च	कुछ	निःसृतम्	निकसा भया है
इदम्	यह	महद्भयम्	वह ब्रह्म बड़ा भयवाला है
सर्वम्	सब	वज्रम्	वज्रको
जगत्	जगत् है	उद्यतम्	उठाये हुये है
तत्	सो	ये	जो विवेकीजन
प्राणे	प्राणरूपी ब्रह्म बिषे	एतत्	इसको
एजति	चलता है यानी उसीके आश्रय है	विदुः	जानते हैं
च	और	ते	वे
		अमृताः	अमर
		भवन्ति	होते हैं

मूल ॥

भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपतिसूर्य्यः भयादिन्द्रश्चवायुश्चमृत्युर्धावतिपञ्चमः ॥ ३ ॥

पदच्छेद

भयात् अस्य अग्निः तपति भयात् तपति सूर्यः भयात् इन्द्रः च वायुः च मृत्युः धावति पञ्चमः

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अस्य	इसपरमात्माके
भयात्	भयसे
अग्निः	अग्नि
तपति	तपता है
च	और
सूर्य्यः	सूर्यभी
अस्य	इसी के
भयात्	भयसे
तपति	तपता है
च	और
इन्द्रः	इन्द्र
अस्य	इसके

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
भयात्	भयसे
धावति	दौड़ता है यानी वर्षा करता है
च	और
वायुः	वायु
अस्य	इसी के
भयात्	भयसे
धावति	चलता है
च	और
पञ्चमः	पांचवां
मृत्युः	मृत्यु
धावति	दौड़ता है

मूल ॥

इहचेदशकद्बोद्धुम्प्राक्शरीरस्यविस्रसः त

सर्गेषुलोकेषुशरीरत्वायकल्पते ॥ ४ ॥

पदच्छेद

इह चेत् अशकत् बोद्धुम् प्राक् शरीरस्य वि

स्रसः ततः सर्गेषु लोकेषु शरीरत्वाय कल्पते

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इह	इसी जन्ममें
शरीरस्य	शरीर के
विस्रसः	पात होने से
प्राक्	पहले
चेत्	यदि
बोद्धुम्	जानने को
अशकत्	समर्थ भया
तदा	तो
+संसार बंधनात्	संसारके बंधन से
+विमुच्यते	छूटजाता है
+ नचेत्	औरअगरनहीं
+बोद्धुम्	जानने को
अशकत्	समर्थ भया
ततः	तो
सर्गेषु	पृथिवी आदि
लोकेषु	लोकों बिषे
शरीरत्वाय	शरीरधारणार्थ
कल्पते	समर्थहोताहै यानी अनेक योनियों को प्राप्त होताहै

मूल ॥

यथाऽऽदर्शे तथाऽऽत्मनि यथास्वप्ने तथापितृलोकेयथाऽप्सुपरीवददृशे तथागन्धर्वलोकेछायातपयोरिवब्रह्मलोके ॥ ५ ॥

पदच्छेद

यथा आदर्शे तथा आत्मनि यथा स्वप्ने तथा पितृलोके यथा अप्सु परि इव ददृशे तथा गंधर्वलोके छायातपयोः इव ब्रह्मलोके

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यथा	जैसे
आदर्शे	दर्पण बिषे अपना प्रतिबिंब
तथा	तैसे
आत्मनि	बुद्धिबिषे चिदाभास
ददृशे	दिखाई पड़ता है
च	और
यथा	जैसे
स्वप्ने	स्वप्न बिषे
तथा	वैसेही
पितृलोके	पितृलोकबिषे
ददृशे	दिखलाई देता है
च	और
यथा	जैसे

अन्वय	पदार्थसहि[त] सूक्ष्म भाव[ार्थ]
परि इव	चारोंतरफ भरेहुये
अप्सु	जल बिषे प्रतिबिंब
ददृशे	दिखलाई देता है
तथा	तैसेही
गन्धर्वलोके	गन्धर्व लोक बिषे
च	और
छायातपयोः	छाया धूपकी
इव	तरह
अयम् आत्मा	यह आत्मा
ब्रह्मलोके	ब्रह्मलोक बि[षे]
ददृशे	दिखलाई देता है

मूल ॥

इन्द्रियाणाम्पृथक्भावमुदयास्तमयौचयत् पृथ-
गुत्पद्यमानानांमत्वाधीरोनशोचति ॥ ६ ॥

पदच्छेद

इन्द्रियाणाम् पृथक् भावम् उदयास्तमयौ च यत् पृथक् उत्पद्यमानानाम् मत्वा धीरः न शोचति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	= और	तत्	= उसको
पृथक्	= भिन्न	उदयास्तमयौ	= उत्पत्तिप्रलयरूपअथवा जाग्रत्सुषुप्ति रूप
उत्पद्यमानानाम्	= उत्पन्नभये	मत्वा	= जानकरके
इन्द्रियाणाम्	= इन्द्रियोंके	धीरः	= धीरपुरुष
यत्	= जो	नशोचति	= शोकको नहीं प्राप्त होताहै
पृथक्भावम्	= भिन्नभावहैं		

मूल ॥

इन्द्रियेभ्यःपरंमनोमनसः सत्त्वमुत्तमम् सत्त्वा दधिमहानात्मामहतोऽव्यक्तमुत्तमम् ॥ ७ ॥

पदच्छेद

इन्द्रियेभ्यः परम् मनः मनसः सत्त्वम् उत्तमम् सत्त्वात् अधि महान् आत्मा महतः अव्यक्तम् उत्तमम्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इन्द्रियेभ्यः	इन्द्रियोंसे
परम्	परेयानेश्रेष्ठ
मनः	मनहै
मनसः	मनसे
सत्त्वम्	बुद्धि
उत्तमम्	श्रेष्ठहै
सत्त्वात्	बुद्धिसेभी
महानात्मा	महत्तत्त्व
अधि	श्रेष्ठहै
च	और
महतः	महत्तत्त्व
अव्यक्तम्	अव्यक्त
उत्तमम्	श्रेष्ठहै

मूल ॥

अव्यक्तात्तुपरः पुरुषोव्यापकोऽलिंगएवच ।
तज्ज्ञात्वामुच्यतेजन्तुरमृतत्वञ्चगच्छति ॥ ८ ॥

पदच्छेद

अव्यक्तात् तु परः पुरुषः व्यापकः अलिंगः च यत् ज्ञात्वा मुच्यते जन्तुः अमृतत्वम् च गच्छति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तु	और
यत्	जिसको
ज्ञात्वा	जानकरके
जन्तुः	मनुष्य
मुच्यते	मुक्तहोजाता है
च	और
अमृतत्वम्	अमरभाव
गच्छति	प्राप्तहोता
सः	वह
पुरुषः	पुरुष
अव्यक्तात्	अव्यक्तसे

परः = परेहै	एव = निश्चयकरके
व्यापकः = व्यापकहै	अलिंगः = चिह्नरहितहै
च = और	

मूल ॥

नसन्दृशेतिष्ठतिरूपमस्यनचक्षुषापश्यतिकश्च-
नैनम् हृदामनीषामनसाभिक्लृप्तोयएतद्विदुरमृता-
स्तेभवन्ति ॥ ९ ॥

पदच्छेद

न सन्दृशे तिष्ठति रूपम् अस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चन एनम् हृदा मनीषा मनसा अभिक्लृप्तः ये एतत् विदुः अमृताः ते भवन्ति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अस्य	= इसप्रत्यगात्माका	चक्षुषा	= चक्षुकरके
रूपम्	= रूप	नपश्यति	= नहींदेखताहै
सन्दृशे	= दर्शनबिषे	हृदा	= हृदयमेंस्थित
नतिष्ठति	= नहींस्थित होताहै	मनीषा	= बुद्धिकरके
च	= और	च	= और
कश्चन	= कोईभी	मनसा	= मनकरके
एनम्	= इसको	अभिक्लृप्तः	= प्रकाशित हुवा
		एतत्	= यहब्रह्महै

एवम् = इसप्रकार इसको	ते = वे
ये = जो	अमृताः = अमर
विदुः = जानते हैं	भवन्ति = होते हैं

मूल ॥

यदापञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानिमनसासह बुद्धिश्च नविचेष्टते तामाहुःपरमाङ्गतिम् ॥ १० ॥

पदच्छेद

यदा पञ्च अवतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह बुद्धिः च न विचेष्टते ताम् आहुः परमाम् गतिम्

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यदा	= जिसकाल बिषे	बुद्धिः	= बुद्धिभी
पञ्च	= पांचो	नविचेष्टते	= नहींचेष्टाक-रतीहै
ज्ञानानि	= ज्ञानेन्द्रियां	ताम्	= उसअव-स्थाको
सह	= सहित	परमाम्	= परम
मनसा	= मनके	गतिम्	= गति
अवतिष्ठन्ते	= आत्मामेंस्थि-रहोजातीहैं	आहुः	= कहतेहैं
च	= और +		

मूल ॥

तांयोगमितिमन्यन्ते स्थिरामिन्द्रियधारणाम् अप्रमत्तस्तदा भवति योगोहिप्रभवाप्ययौ॥ ११

पदच्छेद

ताम् योगम् इति मन्यन्ते स्थिराम् इन्द्रिय-धारणाम् अप्रमत्तः तदा भवति योगः हि प्रभवाप्ययौ

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
मुमुक्षुः	मुमुक्षु
यदा	जब
इन्द्रिय-धारणाम्	इन्द्रियोंके स्वभाव
स्थिराम्	स्थिर
कर्तुम्	करने को
अप्रमत्तः	प्रमादरहित होताहै
तदा	तब
योगः	योग
भवति	होताहै
हि	क्योंकि
योगः	योग
प्रभवाप्ययौ	उत्पत्तिऔर लयरूप है
च	और
ताम्	उस अवस्था को
योगम्	योग
इति	करके
मन्यन्ते	मानते हैं

मूल ॥

नैववाचानमनसाप्राप्तुंशक्योनचक्षुषा अस्तीति ब्रुवतोऽन्यत्रकथंतदुपलभ्यते ॥ १२ ॥

पदच्छेद

न एव वाचा न मनसा प्राप्तुम् शक्यः न चक्षुषा अस्ति इति ब्रुवतः अन्यत्र कथम् तत् उपलभ्यते

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्	= वहब्रह्म
एव	= निश्चय करके
नवाचा	= न वाणी से
नमनसा	= न मनसे
नचक्षुषा	= न चक्षुसे
प्राप्तुम्	= पानेको
शक्यम्	= शक्यहै
अन्यत्र	= सिवाय
अस्ति	= अस्तिपद

अन्वय	पदार्थस[हित] सूक्ष्म भाव[ार्थ]
इति	= करके
कथम्	= औरकिस प्रकार
ब्रुवतः	= श्रद्धावान् अस्तित्ववा[दियों]करके
तत्	= वह
उपलभ्यते	= प्राप्तकिया जाताहै

मूल ॥

अस्तीत्येवोपलब्धव्यस्तत्त्वभावेनचोभयोः अस्तीत्येवोपलब्धस्यतत्त्वभावः प्रसीदति ॥ १३ ॥

पदच्छेद

अस्ति इति एव उपलब्धव्यः तत्त्वभावेन [च] उभयोः अस्ति इति एव उपलब्धस्य त[त्त्व]भावः प्रसीदति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अस्ति	= है
इति एव	= ऐसेही
तत्त्वभावेन	= तत्त्वभाव करके

अन्वय	पदार्थस[हित] सूक्ष्म भाव[ार्थ]
तत्	= वहआत्म[ा]
उपलब्धव्यः	= प्राप्तहोने[यो]ग्यहै
च	= और

उपलब्धस्य = प्राप्त होने योग्य	इसका
उभयोः = उनदोनोंका याने सोपाधिक निरुपाधिक आ-	तत्त्वभावः = एकत्वभाव
	अस्ति = है
	इति = इसकरकेही
	प्रसीदति = प्रतीतहोता है ॥

मूल ॥

यदासर्वेप्रमुच्यन्तेकामायेऽस्यहृदिश्रिताः अथ मर्त्योऽमृतोभवत्यत्रब्रह्मसमश्नुते ॥ १४ ॥

पदच्छेद

यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामाः ये अस्य हृदिश्रिताः अथ मर्त्यः अमृतः भवति अत्र ब्रह्म समश्नुते ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अस्य	= इस विद्वान् पुरुष के	प्रमुच्यन्ते	= छूट जाते हैं
हृदि	= हृदयविषे	अथ	= तब
ये	= जो	मर्त्यः	= मनुष्य
कामाः	= कामना	अमृतः	= अमर
श्रिताः	= स्थित हैं	भवति	= होता है
ते	= वे	+ च	= और
सर्वे	= सब	अत्र	= इसी जन्म में
यदा	= जब	ब्रह्म	= ब्रह्मको
		अश्नुते	= प्राप्तहोता है ॥

मूल ॥

यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते हृदयस्येह ग्रन्थयः अथ मर्त्त्योऽमृतोभवत्येतावदनुशासनम् ॥ १५ ॥

पदच्छेद

यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते हृदयस्य इह ग्रन्थयः अथ मर्त्यः अमृतः भवति एतावत् अनुशासनम् ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यदा	= जब	मर्त्यः	= मनुष्य
हृदयस्य	= हृदय की	अमृतः	= मरणरहित
सर्वे	= सम्पूर्ण	भवति	= होताहै
ग्रन्थयः	= ग्रन्थियां	एतावत्	= इतनाही
इह	= इसीजन्ममें	अनुशासनम्	= उपदेश है ॥
प्रभिद्यन्ते	= टूटजाती हैं		
अथ	= तब		

मूल ॥

शतञ्चैका च हृदयस्य नाड्यस्तासाम्मूर्द्धानमभिनिःसृतैकातयोर्ध्वमायन्नममृतत्वमेति विष्वङ्ङन्या उत्क्रमणे भवन्ति ॥ १६ ॥

पदच्छेद

शतम् च एका च हृदयस्य नाड्यः ता

मूर्द्धानम् अभिनिःसृता एका तया ऊर्ध्वम् आयन् अमृतत्वम् एति विष्वक् अन्याः उत्क्रमणे भवन्ति ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	= और		पुरुष
शतं एका	= एकसौ एक	अमृतत्वम्	= अमरभाव को
हृदयस्य	= हृदय की	एति	= प्राप्तहोताहै
नाड्यः	= नाडियांहैं	च	= और
तासाम्	= तिनमेंसे	अन्याः	= इतरनाडियां
मूर्द्धानम्	= मस्तक को	विष्वक्	= सर्व ओरसे
अभिनिःसृता	= भेद करके निकसीभई	उत्क्रमणे	= मरणबिषे याने नाना योनियों की प्राप्ति बिषे
एका	= एक नाडीहै	भवन्ति	= निमित्त कारणहोतीहैं ॥
तया	= उसी नाड़ी द्वारा		
ऊर्ध्वम्	= ऊपर को		
आयन्	= जाता हुआ		
+जीवः	= जीव		

मूल ॥

अंगुष्ठमात्रःपुरुषोऽन्तरात्मा सदाजनानांहृदये सन्निविष्टः तंस्वाच्छरीरात्प्रवृहेन्मुञ्जादिवेषीकां धैर्येण तं विद्याच्छुक्रममृतं विद्याच्छुक्रमम्तामिति ॥ १७ ॥

पदच्छेद

अंगुष्ठमात्रः पुरुषः अन्तरात्मा सदा जनानाम् हृदये सन्निविष्टः तम् स्वात् शरीरात् प्रवृहेत् मु[illegible] ञ्जात् इव इषीकाम् धैर्य्येण तम् विद्यात् शुक्रम् अमृतम् तम् विद्यात् शुक्रम् अमृतम् इति ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अंगुष्ठमात्रः	= अंगुष्ठमात्र
पुरुषः	= पुरुष
अन्तरात्मा	= प्रत्यक्आत्मा
सदा	= सर्वदा
जनानाम्	= मनुष्योंके
हृदये	= हृदयबिषे
सन्निविष्टः	= स्थितहै
तम्	= तिसको
स्वात्	= अपने
शरीरात्	= शरीरसे
प्रवृहेत्	= पृथक्करै
इव	= जैसे
मुञ्जात्	= मूंजसे
इषीकाम्	= सरकंडेको
पृथक्	= पृथक्
कुर्वन्ति	= करतेहैं
धैर्य्येण	= धैर्यकरके
तम्	= तिसको
शुक्रम्	= शुद्ध
अमृतम्	= अमृतरूप
इति	= ऐसा
तम्	= तिसको
शुक्रम्	= शुद्ध
अमृतमूइति	= अमृतरूप ऐसा
विद्यात्	= जानै ॥

मूल ॥

मृत्युप्रोक्तान्नचिकेतोऽथलब्ध्वाविद्यामेतां योग[illegible] विधिञ्चकृत्स्नम् ब्रह्मप्राप्तोविरजोऽभूद्विमृत्युरन्य[illegible] प्येवंयोविदध्यात्ममेव ॥ १८ ॥

पदच्छेद

मृत्युप्रोक्ताम् नचिकेतः अथ लब्ध्वा विद्याम् एताम् योगविधिम् च कृत्स्नम् ब्रह्मप्राप्तः विरजः अभूत् विमृत्युः अन्यः अपि एवम् यः वित् अध्यात्मम् एव ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथ	= तदन्तर	विमृत्युः	= मृत्युरहित
मृत्युप्रोक्ताम्	= मृत्युकरके कहीहुई	अभूत्	= होताभया
एताम्	= इस	अन्याःअपि	= औरभी
विद्याम्	= विद्याको	एवम्	= इसप्रकार
च	= और	यः	= जो
कृत्स्नम्	= संपूर्ण	मुमुक्षुः	= मुमुक्षुपुरुष
योगविधिम्	= योगविधिको	अध्यात्मम्	= अध्यात्मविद्या को
नचिकेतः	= नचिकेत	वित्	= जाननेवाला है
लब्ध्वा	= पाकरके	सः	= वह
ब्रह्मप्राप्तः	= ब्रह्मको प्राप्त होताहुआ	अपि	= भी
विरजः	= धर्म अधर्मसे रहित	ब्रह्म	= ब्रह्मको
		आप्नोति	= प्राप्तहोताहै॥

मूल ॥

ॐ सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तुमाविद्विषावहै ॥ १९ ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

इति कठोपनिषद्समाप्तिमगात्शुभम् ॥

पदच्छेद

सह नौ अवतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्य्यम् करवावहै
तेजस्वि नौ अधीतम् अस्तु मा विद्विषावहै ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
सः	= वह परमात्मा	वीर्य्यम्	= सामर्थ्य को
नौ	= हमगुरुशिष्य दोनों को	करवावहै	= प्राप्तहोवैं
सह	= साथही	नौ	= हमदोनोंका
अवतु	= रक्षाकरै	अधीतम्	= पढ़ाहुआ
च	= और	तेजस्वि	= तेजवान्
नौ	= हमदोनों को	अस्तु	= होवै
सह	= साथही	आवाम्	= हमदोनोंपर स्पर
भुनक्तु	= पालनकरै	मा	= न
च	= और	विद्विषावहै	= द्वेषको प्राप्त होवैं ॥
आवामसह	= हमदोनोंसा-थही		

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

इति कठोपनिषद्भाषाटीकासमाप्ता ॥

कठवल्ली उपनिषद्

शुद्धिपत्रिका

अशुद्धिः	शुद्धिः	वल्ली	पृष्ठ	मंत्र न	पंक्ति
जन्मरण	जन्ममरण	१	१६	अन्वय १७	१४
तभी	तूभी	१	२६	भावार्थ २३	३
वहीही	वहीहै	१	३०	भावार्थ २७	१४
प्रमाणु	परमाणु	२	४८	भावार्थ ८भावार्थ	१३
रानंत्य	रनन्त्य	२	४३	मू.११	२
मनुसर्वन्तस्य	मनुभातिसर्व्व-न्तस्य	५	१००	१५ मू.	४
त्मका	त्माक	६	१३३	१३भा.	१



आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम्। यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यर्वाक् तीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः। षट्चक्रादिविचार-सारकुशला नन्दन्ति योगीश्वराः तंवन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् २ ॥

दो० करौं वन्दना ब्रह्मको। जो अनन्त निजरूप ॥
जेहिजानेजगभ्रमसकल। मिटै अन्ध तमकूप ॥
नाम रूप जामें नहीं। नहीं जाति अरु भेद ॥
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं। रहितत्रिविधपरिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद्। ताका करूं विचार ॥
भाषामें तिस अर्थको। लखै सकल संसार ॥
सन्त संग से जो लख्यो। सो मैं करूं बखान ॥
परमानन्द सहाय ते। जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट। अकबर पुरहै गांव ॥
जन्मभूमि मम जान तू। जालिम सिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है इसके पार होनेके लिये उपनिषत् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौकाहै जिसमें बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागरके पार होगये हैं और होते जाते हैं और भविष्यत्कालमें होंगे जो मुमुक्षुजन हैं उनके हितार्थ यह भाषा टीका रचीगई है।

इसटीका में पहिले मूलमन्त्र है फिर पदच्छेद है फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दिया है और दक्षिण हस्तकी ओर पदार्थसहित भाषार्थ लिखा है यदि वाम तरफका लिखा हुआ ऊपर से नीचेतक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा और यदि दक्षिण हस्तके तरफवाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्यदेशीय भाषा में मिलेगा और यदि बायेंतरफ से दहिने तरफको पढ़ाजावे तो हर एक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलैगा जहांतक होसकाहै प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्तिके अनुसार लिखागया है इस टीका के पढ़ने से संस्कृत विद्याका भी अभ्यास होगा इस टीका में मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पायाहै और मन्त्रका पूरा २ अर्थ उसी के शब्दोंहीं से सिद्ध कियागयाहै अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगई है हां कहीं कहीं ऊपरसे संस्कृत पद मन्त्रके अर्थ स्पष्ट करने के लिये रखागया है और उसपदके प्रथम यह + चिह्न लगा दिया गयाहै ताकि पाठक जनोंको विदित होजावै कि यह पद मूलका नहीं है । इस टीकाको बाबू ज्ञालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फैज़ाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गंगादत्त ज्योतिर्विद् निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद् निवासी अल्मोड़ाख्य नगरके रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान् पुरुषों के चरणकमल में अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धताहो उससे टीकाकर्ता को सूचनाकरैं ताकि अशुद्धता दूर होजावै ॥

अथ प्रश्नोपनिषद् ॥

मूलम् ॥

ॐ सुकेशाच भारद्वाजः शैब्यश्चसत्यकामःसौर्य्याणीचगार्ग्यः कौशल्यश्चाश्वलायनो भार्गवो वैदर्भिः कबंधी कात्यायनस्तेहैतेब्रह्मपराब्रह्मनिष्ठाः परंब्रह्मान्वेषमाणाएषहवैतत्सर्वं वक्षयतीतितेहसमित्पाणयो भगवन्तं पिप्पलादमुपसन्नाः १ ॥

पदच्छेदः ॥

सुकेशाः च भारद्वाजः शैब्यः च सत्यकामः सौर्य्याणी च गार्ग्यः कौशल्यः च आश्वलायनः भार्गवः वैदर्भिः कबन्धी कात्यायनः ते ह एते ब्रह्मपराः ब्रह्मनिष्ठाः परम् ब्रह्म अन्वेषमाणाः एष ह वै तत् सर्वम् वक्ष्यति इति ते ह समित् पाणयः भगवन्तम् पिप्पलादम् उपसन्नाः १ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
च	= निश्चयकरके
भारद्वाजः	= भरद्वाज ऋषिका पुत्र
सुकेशाः	= सुकेशा १
च	= और
शैब्यः	= शिविकापुत्र
सत्यकामः	= सत्यकाम २
च	= और

गार्ग्यः = गर्गकापुत्र
सौर्य्यायणी = सौर्यायणि ३
च = और
अश्वलायनः = { अश्वलाय- नका पुत्र }
कौशल्यः = कौशल्य ४
+ च = और
भार्गवः = भृगुकापुत्र
वैदर्भिः = वैदर्भि ५
+ च = और
कात्यायनः = कत्यकापुत्र
कबन्धी = कबन्धी ६
ह = प्रसिद्ध
एतेते = { ये यानी पूर्वो- क्त छयों ऋषि }
ब्रह्मपराः = { अपरब्रह्मको याने अपरा- विद्याकोजान तेहुये }
+ च = और
ब्रह्मनिष्टाः = { अपरा विद्या के उपासक होते हुये }
+ च = और

परम्ब्रह्म = { परब्रह्मको या- नेपराविद्याके }
अन्वेषमाणाः = खोजतेहुये
समित्पाणयः = { समिधा फल और पुष्प आदि हाथमें लि- येहुये }
ह = प्रसिद्ध
भगवन्तम् = पूज्य
पिप्पलादम् = { पिप्पलाद नामक आ- चार्य्य के }
उपसन्नाः = समीप
+ बभूवुः = प्राप्तहोतेभये
इति = ऐसा
ह = सोचकरके कि
एषः = यह
+ पिप्पलादः = { पिप्पलाद आचार्य }
वै = निश्चय करके
सर्वम् = संपूर्ण
तत् = उसपरब्रह्मको
वक्ष्यति = कहैगा १ ॥

मूलम् ॥

तान्हसऋषिरुवाच भूयएवतपसा ब्रह्मचर्य्येण श्रद्धया संवत्सरं संवत्स्यथ यथाकामंप्रश्नान् पृच्छथ यदि विज्ञास्यामः सर्वंहवोवक्ष्याम इति २ ॥

पदच्छेदः ॥

तान् ह सः ऋषिः उवाच भूयः एव तपसा ब्रह्मचर्य्येण श्रद्धया संवत्सरम् संवत्स्यथ यथाकामम् प्रश्नान् पृच्छथ यदि विज्ञास्यामः सर्वम् ह वः वक्ष्यामः इति २ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	= वह	एव	= अवश्य
ऋषिः	= पिप्पलादऋषि	तपसा	= तपस्याकरके
तान्	= उनसे	ब्रह्मचर्य्येण	= ब्रह्मचर्य्यकरके
ह	= निश्चयकरके	च	= और
इति	= ऐसा	श्रद्धया	= आस्तिकबुद्धि करके
उवाच	= कहताभयाकि	संवत्सरम्	= एकवर्षतक
+यद्यपि यूयंतपस्विनः	= यद्यपि तुम सबतपआदिकरके युक्त हो	संवत्स्यथ	= मेरेसमीपनिवासकरोगे
		+ततः	= तत्पश्चात्
+तथापि	= तौभी	यथाकामम्	= इच्छानुसार
भूयः	= फिर	प्रश्नान्	= प्रश्नोंको

पृच्छथ = पूछोगे	तदा = तब
+तदा = तब	ह = अवश्य
यदि = अगर	वः = तुहम्हारेप्रति
वयम् = हम	सर्वम् = संपूर्ण
विज्ञास्यामः = प्रश्नों के उत्तरों को जानेतेहोंगे	वक्ष्यामः = कहेंगे २॥

मूलम् ॥

अथ कबन्धीकात्यायन उपेत्य पप्रच्छभगवन् कुतोहवाइमाः प्रजाःप्रजायन्त इति ३ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ कबन्धी कात्यायनः उपेत्य पप्रच्छ भगवन् कुतः ह वै इमाः प्रजाः प्रजायन्ते इति ३॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथ	= एकवर्षकेपीछे	पप्रच्छ	= पूछताभया
कात्यायनः	= कत्यकापुत्र	भगवन्	= हे भगवन्
कबन्धी	= कबन्धी	इमाः	= ये
उपेत्य	= पिप्पलादमुनिकेसमीपआकर	प्रजाः	= ब्राह्मणादि प्रजा
इति	= ऐसा	कुतः	= कहांसे

हवै = निश्चयकरके | प्रजायन्ते = उत्पन्नहोती हैं ३ ॥

मूलम् ॥

तस्मैसहोवाच प्रजाकामो वै प्रजापतिः सतपोऽतप्यत सतपस्तप्त्वा समिथुनमुत्पादयतेरयिंचप्राणंचेत्येतौमेवहुधाप्रजाःकरिष्यत इति ४ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः ह उवाच प्रजाकामः वै प्रजापतिः सः तपः अतप्यत सः तपः तप्त्वा सः मिथुनम् उत्पादयते रयिम् च प्राणम् च इति एतौ मे बहुधा प्रजाः करिष्यतः इति ४ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ह	= प्रसिद्ध	प्रजापतिः	= स्थावर जंगमप्रजाका स्वामी
सः	= वह पिप्पलादाचार्य्य	प्रजाकामः	= प्रजाकीउत्पत्तिकीकामना कर्त्ताहुआ
तस्मै	= उसकात्यायनकबंधी से	सः	= वहप्रजापति
इति	= ऐसा	तपः	= सृष्टिविषयक विचारको
उवाच	= कहताभयाकि		
वै पुरा	= सृष्टि के आदि में		

अतप्यत = विचारताभया
+ ततः = उस्केपश्चात्
सः = वह
तपः = सृष्टिविषयक कार्य को
तप्त्वा = { अण्डोत्पत्ति आकाशादि सृष्टि कर्म से सृजके }
रयिम् = अन्नरूप च-न्द्रमा
च = और
प्राणम् = { अन्नकाभो-क्ता अग्नि रूप सूर्य }
इति = इन

मिथुनम् = दोनों को
उत्पादयते = उत्पन्न करता भया
च = और
सः = वह
इति = ऐसा
+अविचा-रयत् = { सोचताभ-या कि }
एतौ = ये दोनों
मे = मेरी
प्रजाः = प्रजाओं को
च = अवश्य
वहुधा = बहुत
करिष्यतः = { करैंगे याने वृद्धिको प्राप्त करैंगे ४ ॥ }

मूलम् ॥

आदित्योहवैप्राणोरयिरेवचन्द्रमारयिर्वाएतत्स-
र्वं यन्मूर्त्तंचामूर्त्तंचतस्मान्मूर्त्तिरेवरयिः ५ ॥

पदच्छेदः ॥

आदित्यः ह वै प्राणः रयिः एव चन्द्रमाः रयिः

वै एतत् सर्व्वम् यत् मूर्त्तम् च अमूर्त्तम् च तस्मात् मूर्त्तिः एव रयिः ५ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ह	निश्चय करके
आदित्यः	सूर्य्य
वै	ही
प्राणः	प्राणरूप भोक्तारूप अग्नि है
+च	और
चन्द्रमाः	चन्द्रमा
एव	ही
रयिः	अन्न है याने भोग है
च	और सूर्य चंद्र की अभेद दृष्टि से
यत्	जो
मूर्त्तम्	स्थूल
च	और
अमूर्त्तम्	सूक्ष्म
सर्वम्	सब है
एतत्	यह
रयिः	रयि याने भोग्य रूप
+ वै	ही
+अस्ति	है
+ परंतु	परंतु
तस्मात्	भेद दृष्टि से
+ तु	तो
मूर्त्तिः	स्थूल
एव	ही
रयिः	रयि याने भोग रूप
अस्ति	है ५ ॥

मूलम् ॥

अथादित्यउदयन् यत्प्राचीं दिशं प्रविशतितेन

प्राच्यान्प्राणान् रश्मिषुसन्निधत्ते यद्दक्षिणां यत्प्रतीचीं यदुदीचीं यदधोयदूर्ध्वंयदन्तरादिशो यत्सर्वं प्रकाशयति तेनसर्वान् प्राणान् रश्मिषुसन्निधत्ते ६ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ आदित्यः उदयन् यत् प्राचीम् दिशम् प्रविशति तेन प्राच्यान् प्राणान् रश्मिषु सन्निधत्ते यत् दक्षिणाम् यत् प्रतीचीम् उदीचीम् यत् अधः यत् ऊर्द्ध्वम् यत् अन्तराः दिशः यत् सर्व्वम् प्रकाशयति तेन सर्वान् प्राणान् रश्मिषु सन्निधत्ते ६ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथ =	और
यत् =	जिसकारण
उदयन् =	उदयहोता हुआ
आदित्यः =	सूर्य
प्राचीम् =	पूर्व्व
दिशम् =	दिशाको
प्रविशति =	अपने किरणोंसे व्याप्त करता है

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तेन =	तिसी कारण
प्राच्याम् =	पूर्व्वदिशा सम्बन्धी
प्राणान् =	प्राणियों को
रश्मिषु =	अपने किरणों विषे
सन्निधत्ते =	अंतर्गत करता है
एवम् =	इसीप्रकार
यत् =	जिसकारण

दक्षिणाम्=दक्षिणदिशाको
यत् = जिसकारण
प्राचीम्=पश्चिमदिशाको
यत् = जिसकारण
उदीचीम् = उत्तर दिशाको
यत् = जिसकारण
अधः = अधोलोकको
यत् = जिसकारण
ऊर्ध्वम् = ऊर्ध्वलोकको
यत् = जिसकारण
अन्तराः = कोण
दिशः = दिशाओं को
च = और

यत् = जिसकारण
सर्वम् = संपूर्णलोकोंको
सः = वह
प्रकाशयति = प्रकाश करताहै
तेन = इसीकारण
सर्वान् = सबलोकस्थ
प्राणान् = प्राणियों को
रश्मिषु=अपनीकिरणोंबिषे
सन्निधत्ते= अंतर्गत करताहै यानेसर्व व्यापकरूप आत्माहै

मूलम्॥

सएषवैश्वानरो विश्वरूपःप्राणोऽग्निरुदयते तदेतदृचाभ्युक्तम्॥ ७॥

पदच्छेदः॥

सः एषः वैश्वानरः विश्वरूपः प्राणः अग्निः उदयते तत् एतत् ऋचा अभ्युक्तम्॥ ७॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	सो
एषः	यह
प्राणः	प्राणभूत
विश्वरूपः	बहुरूप

वैश्वानरः = सर्वात्मा	च = और
अग्निः = अग्नि	तत् = ऐसाही
उदयते = सूर्यरूपहोकर उदयको प्राप्त होताहै	एतत् = यह
	ऋचा = मंत्रकरके भी
	अभ्युक्तम् = कहागयाहै

मूलम् ॥

विश्वरूपं हरिणं जातवेदसं परायणं ज्योतिरेकं तपन्तं सहस्ररश्मिः शतधावर्तमानः प्राणः प्रजानामुदयत्येषसूर्य्यः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

विश्वरूपम् हरिणम् जातवेदसम् परायणम् ज्योतिः एकम् तपन्तम् सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः प्राणः प्रजानाम् उदयति एषः सूर्य्यः ८ ॥ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सहस्ररश्मिः	= असंख्यहैं किरण जिसके	एषः	= यह
शतधा वर्तमानः	= अनेकरूप हैं जिसके	+ सूर्यः	= सूर्य
प्रजानाम्	= चराचर प्रजावोंका	उदयति	= उदयकोप्राप्त होताहै
प्राणः	= प्राणभूतहै जो ऐसा	एनम्	= इसीको
		सूरयः	= बुद्धिमान्लोक
		विश्वरूपम्	= सर्वरूप

हरिणम् = किरणवाला	ज्योतिः = सब प्राणियों का चक्षुभूत
जातवेदसम् = उत्पन्नहुआ है ज्ञानजिसको यानेज्ञानस्वरूप	एकम् = अद्वितीय
	तपन्तम् = तपानेवाला
	वदन्ति = कहते हैं
परायणम् = सर्वाधिष्ठान	

मूलम् ॥

संवत्सरो वै प्रजापतिस्तस्यायने दक्षिणंचोत्तरं च तद्येहवैतदिष्टापूर्त्ते कृतमित्युपासते चान्द्रमसमेवलोकमभिजयन्ते त एव पुनरावर्तन्ते तस्मादेत ऋषयः प्रजाकामादक्षिणंप्रतिपद्यन्ते एषहवैरयिर्यः पितृयाणः ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

संवत्सरः वै प्रजापतिः तस्य अयने दक्षिणम् च उत्तरम् च तत् ये ह वै तत् इष्टापूर्त्ते कृतम् इति उपासते ते चान्द्रमसम् एव लोकम् अभिजयन्ते ते एव पुनः आवर्तन्ते तस्मात् एते ऋषयः प्रजाकामाः दक्षिणम् प्रतिपद्यन्ते एषः ह वै रयिः यः पितृयाणः

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
संवत्सरः = काल		वै = ही	

प्रजापतिः = प्रजापति है
दक्षिणम् = दक्षिण
च = और
उत्तरम् = उत्तर
तस्य = उसके
च = निश्चयकरके
अयने = दो मार्ग हैं
इष्टापूर्त्ते = यज्ञदानआदि
हवै = निश्चयकरके
तत्कृतम् = मुख्यकर्म हैं
इति = ऐसा
+ ज्ञात्वा = जानकर
+ ये = जोब्राह्मणादि
तत्=तम् = उससंवत्सर प्रजापतिकी
उपासते = उपासनाकरतेहैं
ते = वे
चान्द्रमसम् = चन्द्रमा सम्बन्धी
लोकम् = लोकों को
एव = निःसन्देह
अभिजयन्ते = जीतते हैं याने पहुँचते हैं
च = और

ते = वे
एव = अवश्य
पुनरावर्त्तते = कर्मक्षयहोनेपरजन्ममरणभावको प्राप्त होते हैं
तस्मात् = इसीकारण
प्रजाकामाः = संतानकी इच्छा करनेवालेगृहस्थीपुरुष
+च = और
ऋषयः = स्वर्गकी कामनावालेऋषि
एते = ये सब
दक्षिणम् = पुनरावृत्ति मार्ग को
प्रतिपद्यन्ते = प्राप्तहोतेहैं
+ च = और
यः = जो
हवै = निश्चयकरके
एषः = यह
पितृयाणः = दक्षिणमार्गहै

+ सःएव = सोई	रयिः = रयिचन्द्ररूप है

मूलम् ॥

अथोत्तरेणतपसा ब्रह्मचर्य्येण श्रद्धयाविद्ययाऽऽत्मानमन्विष्यादित्यमभिजायन्ते एतद्वैप्राणाना-मायतनमेतदमृतमभयमेतत् परायणमेतस्मान्न पुनरावर्त्तन्त इत्येषनिरोधस्तदेषश्लोकः ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

अथ उत्तरेण तपसा ब्रह्मचर्य्येण श्रद्धया आत्मा-नम् अन्विष्य आदित्यम् अभिजायन्ते एतत् वै प्राणानाम् आयतनम् एतत् अमृतम् अभयम् एतत् परायणम् एतस्मात् न पुनः आवर्त्तन्ते इति एषः निरोधःतत् एषः श्लोकः १० ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथ =	पक्षांतरबिषे यानेदूसरेपक्ष उत्तरमार्गबिषे	श्रद्धया =	आस्तिक्य बुद्धि करके
ये =	जोउपासक	आत्मानम् =	आत्माको
तपसा =	तपकरके	अन्विष्य =	अन्वेषणकरके
ब्रह्मचर्य्येण =	ब्रह्मचर्यक-रके	आदित्यम् =	आदित्यलो-क को
		अभिजायन्ते =	प्राप्तहोते हैं

ते = वे
पुनः = फिर
नआवर्त्तन्ते = { जन्म मरण भावकोनहीं पाते हैं
हि = क्योंकि
एतत् वै = यह आदित्यही
प्राणानाम् = सबप्राणियों का
आयतनम् = आश्रय है
एतत् = यह
एव = ही
अमृतम् = मोक्षपदार्थ है
एतत्एव = यह ही

अभयम् = निर्भय स्वरूप है
एतएव = यहही
परायणम् = परमआश्रय है
इतिएषः = ऐसायहउत्तरमार्ग
कर्मिणाम् = कर्मियों को
निरोधः = प्राप्य है
तत्=तत्र = { इस संवत्सरप्रजापति विषे
एषः = यहअगला
श्लोकः = मंत्र भी प्रमाण है

मूलम् ॥

पंचपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परेऽर्द्धे पुरीषिणम् अथेमे अन्य उ परे विचक्षणं सप्तचक्रे षडर आहुरर्पितमिति ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ॥

पञ्चपादम् पितरम् द्वादशाकृतिम् दिवः आहुः परे अर्द्धे पुरीषिणम् अथ इमे अन्ये उ प

विचक्षणम् सप्तचक्रे षडरे आहुः अर्पितम् इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
पञ्चपादम् =	हेमन्त और शिशिरको एक समझके पांच ऋतुरूपी चरण हैं जिसके
पितरम् =	सबका जनक याने उत्पन्न करने वाला है जो
द्वादशाकृतिम् =	द्वादश अवयव हैं जिसके
दिवः =	अन्तरिक्षके
परेअर्द्धे =	उत्तरार्द्ध बिषे
पुरीषिणम् =	जलवान स्थित है जो
तम् =	उसको
+सूर्यम्संवत्सरम् =	सूर्यरूप संवत्सर
इति =	ऐसा

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+कालवेत्तारः =	कालके वेत्ता लोक
आहुः =	कहते हैं
अथ उ =	और
यः =	जो
परे =	उत्कृष्ट
षडरे =	षट् ऋतुरूपी अरवाले
सप्तचक्रे =	सप्ताश्वरथ चक्रबिषे
अर्पितम् =	अर्पित है
तम् =	उसको
विचक्षणम् =	ज्ञानात्मक
सूर्यम् =	सूर्यरूपी संवत्सर
इति =	ऐसा
इमेअन्ये =	और लोक
आहुः =	कहते हैं

मूलम् ॥

मासोवै प्रजापतिस्तस्य कृष्णपक्षएवरयिः

शुक्लः प्राणस्तस्मादेत ऋषयः शुक्ल इष्टं कुर्वन्ति
इतर इतरस्मिन् ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ॥

मासः वै प्रजापतिः तस्य कृष्णपक्षः एव रयिः
शुक्लः प्राणः तस्मात् एते ऋषयः शुक्ले इष्टिम् कु-
र्वन्ति इतरे इतरस्मिन् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
मासः	मास
वै	ही
प्रजापतिः	प्रजापति है
तस्य	तिसमास का
कृष्णपक्षः	कृष्णपक्ष
एव	ही
रयिः	चन्द्र है
+ च	और
शुक्लः	शुक्लपक्ष
प्राणः	सूर्य है
तस्मात्	इसीलिये
एते	ये

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ऋषयः	उत्तर मार्ग[illegible] उपासक ऋषि
शुक्ले	शुक्लपक्ष वि[illegible]
इष्टिम्	यज्ञको
कुर्वन्ति	करते हैं
च	और
इतरे	दक्षिणमा[illegible] के उपास[illegible]
इतरस्मिन्	कृष्णपक्ष बिषे य[illegible] करते हैं

मूलम् ॥

अहोरात्रो वै प्रजापतिस्तस्याहरेव प्राणो[illegible]

त्रिरेवरयिः प्राणंवाएते प्रस्कन्दन्ति ये दिवा रत्या संयुज्यन्ते ब्रह्मचर्यमेव तद्यद्रात्रौ रत्या संयुज्यंते ॥ १३ ॥

पदच्छेदः ॥

अहोरात्रः वै प्रजापतिः तस्य अहः एव प्राणः रात्रिः एव रयिः प्राणम् वै एते प्रस्कन्दन्ति ये दिवा रत्या संयुज्यन्ते ब्रह्मचर्यम् एव तत् यत् रात्रौ रत्या संयुज्यन्ते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अहोरात्रः	दिन और रात
वै	निश्चयकरके
प्रजापतिः	प्रजापति है
तस्य	उस प्रजापतिका
अहः	दिन
एव	ही
प्राणः	सूर्य है
च	और
रात्रिः	रात
एव	ही
रयिः	चन्द्रमा है

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वै	इसलिये
ये	जो लोक
दिवा	दिनमें
रत्या	स्त्रीसे
संयुज्यन्ते	संयुक्त होते हैं याने भोगकरते हैं
एते	वे मूर्ख
वै	निश्चयकरके
प्राणम्	तेजरूप अपने प्राणको
स्कन्दन्ति	त्यागते हैं

च = और	संयुज्यन्ते = संयुक्तहोते
यत् = जो	तेषाम् = उनको
रात्रौ = रात्रीविषे	तत् = यह कर्म
रत्या = भोगकेवास्ते स्त्रीसे	एव = निश्चयकरके
	ब्रह्मचर्यम् = ब्रह्मचर्य है

मूलम् ॥

अन्नंवैप्रजापतिस्ततो हवै तद्रेतस्तस्मादिमाः प्रजाः प्रजायन्त इति ॥ १४ ॥

पदच्छेदः ॥

अन्नम् वै प्रजापतिः ततः ह वै तत् रेतः तस्मात् इमाः प्रजाः प्रजायन्ते इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अन्नम्	अन्न	रेतः	वीर्य्य
वै	ही	जायते	उत्पन्न होता है
प्रजापतिः	प्रजापति है	तस्मात्	उसी वीर्यसे
ततः	उस अन्नरूप प्रजापतिसे	इति	दृश्यमान
हवै	निश्चयकरके	इमाः प्रजाः	येसम्पूर्ण प्रजा
तत्	वह प्रजोत्पादनसमर्थ	जायन्ते	उत्पन्न होती हैं

मूलम् ॥

तद्येहवै तत्प्रजापतिव्रतं चरन्ति तेमिथुनमुत्पादयन्ते तेषामेवैष ब्रह्मलोकोयेषां तपो ब्रह्मचर्य्यंयेषु सत्यंप्रतिष्ठितं ॥ १५ ॥

पदच्छेदः ॥

तत् ये ह वै तत् वै प्रजापतिव्रतम् चरन्ति ते मिथुनम् उत्पादयन्ते तेषाम् एव एषः ब्रह्मलोकः येषाम् तपः ब्रह्मचर्य्यम् येषु सत्यम् प्रतिष्ठितम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्	इसलिये
ये	जो गृहस्थीलोक
हवै	निश्चय करके
तत्प्रजापतिव्रतम्	ऋतुकाल बिषे भार्यागमनरूप व्रतको
चरन्ति	करते हैं
ते	वे
मिथुनम्	पुत्र पुत्री रूपमिथुन याने जोड़े को
उत्पादयन्ते	उत्पन्न करतेहैं

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+तेषाम्एतत् दृष्टफलम्	उनका यह दृष्ट फल है
च	और
येषाम्	जिनका
तपः	स्नातकव्रत आदितपहै
च	और
ब्रह्मचर्यम्	ऋतुकाल बिषेभार्या गमनादि नियम
यथोक्तमस्ति	विधिपूर्वकहै

च = और	ब्रह्मलोकः= दक्षिण मार्ग-रूप चंद्रलोक
येषु = जिनके विषे	भवति = कर्मफलभोग पर्यंत होताहै
सत्यम् = सत्य	तेषाम् एतत् अदृष्टफलम् = उनका यह अदृष्टफलहै
प्रतिष्ठितम्=सदास्थितहै	
तेषाम् एव = उन्हींका	
एषः = यह पूर्वोक्त	

मूलम् ॥

तेषामसौविरजोब्रह्मलोकोनयेषु जिह्ममनृतंन मायाचेति ॥ १६ ॥

पदच्छेदः ॥

तेषाम् असौ विरजः ब्रह्मलोकः न येषु जिह्मम् अनृतम् न माया च इति १६ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	= और	असौ	= यह पूर्वोक्त
येषु	= जिनपुरुषों विषे	विरजः	= रोगादि दोषों से रहित
जिह्मम्	= कुटिलता	ब्रह्मलोकः	= उत्तरायणमार्गरूपी सूर्यलोक
न	= नहीं है	+भवति	= प्राप्त होताहै
च	= और	इति	= प्रथम प्रश्नकी समाप्तिहै
अनृतम्	= असत्यता		
न	= नहीं है		
तेषाम्	= उनपुरुषों को		

मूलम् ॥

अथहैनंभार्गवोवैदर्भिःपप्रच्छभगवन्कत्येवदेवाःप्रजांविधारयन्ते कतरएतत्प्रकाशयन्तेकःपुनरेषांवरिष्ठइति १ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ ह एनम् भार्गवः वैदर्भिः पप्रच्छ भगवन् कति एव देवाः प्रजाम् विधारयन्ते कतरे एतत् प्रकाशयन्ते कः पुनः एषाम् वरिष्ठः इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथह	= इसकेपीछे	देवाः	= देवतायानेआकाशादि पंच महाभूत चक्षुरादि पंचज्ञानेन्द्रिय वागादि पांचकर्मेन्द्रिय मन औरप्राण जो देवता करके प्रसिद्ध हैं उनमें से कितने देवता
वैदर्भिः	= विदर्भ देशका रहनेवाला		
भार्गवः	= भार्गवऋषि		
एनम्	= उसपिप्पलाद मुनि से		
इति	= ऐसा		
पप्रच्छ	= पूछताभया कि		
भगवन्	= हेभगवन्		
कति	= कितने		

एनाम् = इस	प्रकाशयन्ते = प्रकाश करते हैं
प्रजाम् = शरीरको	पुनः = और
विधारयन्ते = धारण करते हैं	एषाम् = इनमें से
+ च = और	कः = कौन
कतरे = कौनसे देवता	वरिष्ठः = श्रेष्ठ
एतत् = इस शरीरको	+ अस्ति = है

मूलम् ॥

तस्मैसहोवाचाकाशोहवाएष देवोवायुरग्निरापः पृथिवीवाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रंचतेप्रकाश्याभिवदन्तिवयमेतद्बाणमवष्टभ्यविधारयामः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः ह उवाच आकाशः ह वा एषः देवः वायुः अग्निः आपः पृथिवी वाक् मनः चक्षुः श्रोत्रम् च ते प्रकाश्य अभिवदन्ति वयम् एतत् बाणम् अवष्टभ्य विधारयामः ॥ २ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्मै	उस भार्गव मुनि से	उवाच	कहता भया कि
सः	वह पिप्पलाद	एषः	यह
ह	स्पष्ट	आकाशः	आकाश

हवा = प्रसिद्ध
देवः = देवताहै
वायुः = वायु
+ देवः = देवताहै
अग्निः = अग्नि
+ देवः = देवताहै
पृथिवी = पृथिवी
+ देव = देवताहै
वाक् = वाक
+ देवता = देवताहै
मनः = मन
देवता = देवताहै
चक्षुः = चक्षु
देवता = देवताहै
श्रोत्रम् = श्रोत्र
+ देवता = देवताहै

+ तेषाम् = उनमेंसे
ते = वेयानेपांच कर्मेन्द्रियां और पांच ज्ञानेन्द्रियां
+स्वमाहात्म्यम्=अपने माहात्म्यको
प्रकाश्य = प्रकाशकरके
अभिवदन्ति=परस्पर कहतेभये कि
वयम् = हम
एतत् = इस
बाणम् = शरीरको
अवष्टभ्य = स्थितकरके
विधारयामः = धारण करते हैं

नोट–वाक् उपलक्षण करके पांच कर्मेन्द्रिय देवताहैं मन उपलक्षणकरके वृत्तिचतुष्टय अन्तःकरण देवताहैं चक्षु और श्रोत्र उपलक्षण करके पांच ज्ञानेन्द्रिय देवताहैं ॥

मूलम् ॥

तान्वरिष्ठःप्राण उवाच मामोहमापद्यथाऽहमेवैतत् पंचधात्मानं प्रविभज्यैतद्बाणमवष्टभ्य विधारयामीति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

तान् वरिष्ठः प्राणः उवाच मा मोहम् आपद्यथ अहम् एव एतत् पञ्चधा आत्मानम् प्रविभज्य एतत् बाणम् अवष्टभ्य विधारयामि इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तान्	उन सबसे	पञ्चधा	पांच प्रकारसे
वरिष्ठः	श्रेष्ठ	प्रविभज्य	विभागकर-के याने अ-पानादि भेद से पांच प्र-कार का हो-कर
प्राणः	प्राणदेवता		
उवाच	कहताभया कि		
+ यूयम्	तुम सब		
मा	मत		
मोहम्	अज्ञान को		
आपद्यथ	प्राप्तहो	एतत्	इस
अहमेव	मैंही	बाणम्	शरीर को
एतत्	इस	अवष्टभ्य	स्थिर करके
आत्मानम्	अपने आपको	विधारयामि	भलीप्रकारधा-रण करता हूं

मूलम् ॥

तेऽश्रद्दधाना बभूवुः सोऽभिमानादूर्ध्वमुत्क्रा... इव तस्मिन्नुत्क्रामत्यथेतरे सर्व एवोत्क्राम-न्ते तस्मिंश्चप्रतिष्ठमाने सर्व एव प्रतिष्ठन्ते तद्य-

था मक्षिकामधुकरराजानमुत्क्रामन्तं सर्वा एवो त्क्रामन्ते तस्मिꣳश्च प्रतिष्ठमाने सर्वा एव प्रतिष्ठन्त एवं वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रं च ते प्रीताः प्राणꣳस्तुन्वन्ति ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

ते अश्रद्दधानाः बभूवुः सः अभिमानात् ऊर्ध्वम् उत्क्रामते इव तस्मिन् उत्क्रामति अथ इतरे सर्वे एव उत्क्रामन्ते तस्मिन् च प्रतिष्ठमाने सर्वे एव प्रतिष्ठन्ते तत् यथा मक्षिकाः मधुकरराजानम् उत्क्रामन्तम् सर्वाः एव उत्क्रामन्ते तस्मिन् च प्रतिष्ठमाने सर्वाः एव प्रतिष्ठन्ते एवम् वाक् मनः चक्षुः श्रोत्रम् च ते प्रीताः प्राणम् स्तुवन्ति ॥ ४ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ तस्मिन्	इस कहनेपर	अभिमानात्	अहंकारसे उनको त्याग करके
ते	वेमनआदि	ऊर्ध्वम्	ऊर्ध्वको
अश्रद्दधानाः	अविश्वासमान	उत्क्रामते इव	उत्क्रमणसा करताभया
बभूवुः	होतेभये	तस्मिन्	उसप्राणके
+ तदा	तब	उत्क्रामति	उत्क्रमणकरने पर
सः	वहप्राण उनके अविश्वासको जानके		

इतरे = चक्षुरादि
सर्वे = सब
एव = ही
उत्क्रामन्ते = उत्क्रमण करते भये
च = और
तस्मिन् = उस प्राणके
प्रतिष्ठमाने = स्थित होनेपर
सर्वे = सब
एव = ही चक्षुरादि देवता
प्रतिष्ठन्ते = सम्यक्प्रकार स्थित होते भये
तद्यथा = जैसे
उत्क्रामन्तम् = उड़ते हुये
मधुकर राजानम् = मधुकरों के राजाके साथ
सर्वाः = सब
एव = ही
मक्षिकाः = मधुकरमाक्षिका
उत्क्रामन्ते = उड़जाती हैं
च = और
तस्मिन् = मधुकरराजाके

प्रतिष्ठमाने = स्थित होनेपर
सर्वाः = सब
एव = ही
मक्षिकाः = मधुकरमक्षिका
प्रतिष्ठन्ते = स्थित होजाती हैं
एवम् = ऐसेही
वाक = वाणी
मनः = मन
चक्षुः = चक्षु
च = और
श्रोत्रम् = श्रोत्रादि सबहीं
ते = ये प्राणके महात्मको जानकर और अपने अविश्वासको छोड़कर
प्रीताः = प्रसन्न होते हुये
प्राणम् = प्राणको
स्तुवन्ति = स्तुति करते भये

नोट-जब सब इन्द्रियां प्राणकी श्रेष्ठताको जानतीभई तब आपुसमें एक दूसरे से प्राणके माहात्म्यको अगले दोमन्त्रों में कहकर उसके सम्मुख होकर उसकी स्तुतिकरनेलगीं ॥

मूलम्

एषोऽग्निस्तपत्येष सूर्य्य एष पर्जन्यो मघवानेष वायुरेष पृथिवी रयिर्देवः सदसच्चामृतंचयत् ॥५॥

पदच्छेदः

एषः अग्निः तपति एषः सूर्य्यः एषः पर्जन्यः मघवान् एषः वायुः एषः पृथिवी रयिः देवः सत् असत् च अमृतं च यत् ॥ ५ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एषः	= यही प्राण
अग्निः	= अग्निहोके
तपति	= तपताहै
एषः	= यहीप्राण
सूर्यः	= सूर्यहोकेप्रकाश करताहै
एषः	= यही प्राण
पर्जन्यः	= मेघहोके वर्षा करता है

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एषः	= यही प्राण
मघवान्	= इन्द्रहोकेप्रजाकापालन करता है और राक्षसोंको मरताहै
एषः	= यही प्राण

वायुः = आवहप्रवहादि रूपहोके ब्रह्मांडकोधारण करताहै
+ एषः = यही प्राण
पृथिवी = पृथिवीरूप होके अन्नादि औषधी से प्राणीयों का पालन करताहै
+ एषः = यहीप्राण
रयिः = चन्द्रमा
देवः = देवहोके विश्वकापोषण करताहै
+ एषः = यहीप्राण
सत् = स्थूल
+ च = और
असत् = सूक्ष्मरूपसब जगत् है
च = और
+ एषः = यहीप्राण
अमृतंच = अमृतरूपभीहै

नोट—आवह वह वायुहै जिस करके मेघ चलते हैं और बरसते हैं ॥ प्रवह वह वायुहै जिसकरके सूर्य चन्द्र आदि नक्षत्र तारागण चलते हैं ऐसेही पांच प्रकार के और वायु ब्रह्मांड के धारण करने वाले हैं ॥

मूलम्

अराइवरथनाभौप्राणेसर्वंप्रतिष्ठितं ऋचोयजूंषिसामानियज्ञःक्षत्रं ब्रह्मच ६ ॥

पदच्छेदः

अराः इव रथनाभौ प्राणे सर्वम् प्रतिष्ठितम् ऋचः यजूंषि सामानि यज्ञः क्षत्रम् ब्रह्म च ॥ ६ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इव	जैसे
रथनाभौ	रथचक्रपिंड-का विषे
अराः	अरस्थित हैं
+तथा	तैसेही
प्राणे	प्राणविषे
सर्वम्	श्रद्धादि नामपर्यंतसर्व शरीर षोडश कलावाला जिस्का व्याख्यान षष्ठप्रश्न चतुर्थमंत्र विषे है

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
प्रतिष्ठितम्	स्थितहै
च	और
ऋचः	ऋक
यजूंषि	यजु
सामानि	साम ये तीन प्रकारके वेद
+च	और
यज्ञः	इन वेदों से प्रतिपाद्यज्ञ
+च	और
क्षत्रम्	क्षत्रियजाति
ब्रह्म	ब्राह्मणजाति ये सब प्राण विषे स्थितहैं

नोट—सब इन्द्रियां अलग आपुसमें ऊपर कहे प्रकार बिचारकर प्राण के संमुख हो उसकी स्तुति करती हैं ॥

मूलम्

प्रजापतिश्चरसिगर्भेत्वमेवप्रतिजायसे तुभ्यंप्राणःप्रजास्त्विमाबलिंहरन्तियः प्राणैःप्रतिष्ठसि॥७॥

पदच्छेदः

प्रजापतिः चरसि गर्भे त्वम् एव प्रतिजायसे तु भ्यम् प्राण प्रजाः तु इमाः बलिम् हरन्ति यः प्राणैः प्रतितिष्ठसि ॥ ७ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
प्राण =	हे प्राण
त्वम् =	तू
प्रजापतिः =	विराट्रूपहुवा
गर्भे =	प्राणियों के गर्भ विषे
चरसि =	व्याप्त है
त्वम्एव =	तूही
प्रतिजायसे =	प्रतिशरीर विषे मातृ पितृ आदि रूपसेउत्पन्न होताहै

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तु =	और
यः =	जोतू
प्राणैः =	चक्षुरादि प्राणों के साथ
प्रतिष्ठसि =	सम्यक प्रकार स्थितहै
+एतदर्थम् =	इसलिये
इमाःप्रजाः =	ये चक्षुरादि सबप्रजा
तुभ्यम् =	तेरे अर्थ
बलिम् =	भागको
हरन्ति =	प्राप्त करते हैं

मूलम्

देवानामसिवह्नितमः पितॄणांप्रथमास्वधा णांचरतंसत्यमथर्वाङ्गिरसामसि ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

देवानाम् असि वह्नितमः पितृणाम् प्रथमा स्व

ऋषिणाम् चरितम् सत्यम् अथर्वाङ्गिरसाम् असि

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+त्वम्	= तूही	स्वधा	= भागप्राप्तकर नेवालानांदी श्राद्धविषे है
देवानाम्	= इन्द्रादि देवओं का	असि	= है
वह्नितमः	= श्रेष्ठ अग्नि रूपयानेयज्ञ भागका सम्यक्प्रकार प्राप्त करने वाला	च	= और
असि	= है	+ त्वम्	= तूही
च	= और	अथर्वाङ्गिरसाम्	= देहधारणकनेवाले
+त्वम्	= तूही	ऋषीणाम्	= चक्षुरादि देवतों का
पितृणाम्	= पितरों का	सत्यम्	= सत्य
प्रथमा	= प्रथम	चरितम्	= चैतन्य
		असि	= है

नोट–स्वाहा शब्द देवतों के निमित्त यज्ञ भागका प्राप्त करने वाला है याने स्वाहा शब्द करके हवनादि कियेजाते हैं अर्थात् हवनादिकों विषे स्वाहा शब्द उचारण करके देवतों के निमित्त आहुति दी जाती है ॥ स्वधायज्ञ या श्राद्धविषे पितरों के निमित्त जो भाग दिया जाताहै सो स्वधा शब्द करके दिया जाताहै

अथर्वांगिरसाम् = अथर्वा=प्राण ।। आंगिरसाम्=अंगविषे रसरूप है जो ।। याने शरीर विषे मुख्यतत्त्वहै जो सोई है प्राण ।।

मूलम्

इन्द्रस्त्वंप्राणतेजसा रुद्रोऽसि परिरक्षिता त्वमन्तरिक्षेचरासि सूर्य्यस्त्वं ज्योतिषांपतिः ।। ९ ।।

पदच्छेदः

इन्द्रः त्वम् प्राण तेजसा रुद्रः असि परिरक्षिता त्वम् अन्तरिक्षे चरसि सूर्य्यः त्वम् ज्योतिषाम्पतिः ९ ।।

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
प्राण	हे प्राण	+च	और
त्वम्	तूही	+त्वम्	तूही
इन्द्रः	परमेश्वर	सूर्यः	सूर्यरूपहोके
असि	है	अन्तरिक्षे	आकाशविषे
तेजसा	पराक्रमकरके	चरसि	निरंतर चलताहै
रुद्रः	जगत्संहारकारक रुद्ररूप	+च	और
त्वम्असि	तूही है	+त्वम्	तूही
+च	और	ज्योतिषाम्पतिः	अग्निआदि देवताओंका भी ईश्वर है
त्वम्	तूही		
परिरक्षिता	सबप्रकार रक्षकहै		

मूलम्

यदात्वमभिवर्षस्यथेमाः प्राणतेप्रजाः आनन्द-रूपास्तिष्ठन्ति कामायान्नंभविष्यतीति ॥ १० ॥

पदच्छेदः

यदा त्वम् अभिवर्षसि अथ इमाः प्राणते प्रजाः आनन्दरूपाः तिष्ठन्ति कामाय अन्नम् भविष्यति इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यदा	= जब
त्वम्	= तू
अभिवर्षसि	= मेघहोके वर्षा करता है
अथ	= तब
इमाः	= ये
प्रजाः	= प्रजा
प्राणते	= प्राणों की चेष्टाको करती हैं
+ च	= और
कामाय	= आगे को प्रशस्त
अन्नम्	= अन्न
भविष्यति	= होगा
इति	= ऐसा विचारकर
आनन्दरूपाः	= आनंदरूप होतीहुई
तिष्ठन्ति	= स्थित होती हैं

मूलम्

व्रात्यस्त्वंप्राणैक ऋषिरत्ता विश्वस्यसत्पतिः व-

यमाद्यस्यदातारः पितात्वंमातरिश्वनः ॥ ११ ॥

पदच्छेदः

व्रात्यः त्वम् प्राण एकः ऋषिः अत्ता विश्वस्य सत्पतिः वयम् आद्यस्य दातारः पिता त्वम् मातरिश्वनः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
प्राण	= हे प्राण	विश्वस्यसत्पतिः	= सब विद्यमान जगत्का उत्तम पति है
त्वम्	= तू	च	= और
व्रात्यः	= संस्कार विना स्वभाव सेहीशुद्ध है क्योंकि प्रथम होनेसे तेरा पिता कोईनहीं है	वयम्	= हमसब इन्द्रियां
+त्वम्	= तूही	आद्यस्य	= तेरे अर्थ भोग्यवस्तुको
एकर्षिः	= एकर्षिनामक मुख्यअग्निहै	दातारः	= प्राप्त करने वाले हैं
त्वम्	= तूही	त्वम्	= तू
अत्ता	= सबहविर्द्रव्यों का भोक्ताहै	मातरिश्वनः	= हमारा
+त्वम्	= तूही	पिता	= पिताहै

मूलम्

यातेतनूर्वाचिप्रतिष्ठितायाश्रोत्रेयाचचक्षुषिया
चमनसिसंतताशिवांतांकुरुमोत्क्रमीः ॥ १२ ॥

पदच्छेदः

या ते तनूः वाचि प्रतिष्ठिता या श्रोत्रे या च चक्षुषि या च मनसि सन्तता शिवाम् ताम् कुरु मा उत्क्रमीः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
या	जो	चक्षुषि	नेत्रविषे स्थित है
ते	तेरी	च	और
तनूः	मूर्त्ति	या	जो मूर्त्ति
वाचि	वाणी विषे	मनसि	मनविषे
प्रतिष्ठिता	स्थितहै	सन्तता	व्याप्तहै
च	और	ताम्	तिस
या	जो	शिवाम्	कल्याणकर्ती मूर्त्तिको
मूर्त्तिः	मूर्त्ति	कुरु	धारणकर
श्रोत्रे	करण विषे स्थितहै	मा उत्क्रमीः	उत्क्रमण मत कर
च	और		
या	जो		
मूर्त्तिः	मूर्त्ति		

मूलम् ॥

प्राणस्येदंवशेसर्वं त्रिदिवेयत्प्रतिष्ठितं मातेव पुत्रान्रक्षस्वश्रीश्चप्रज्ञांचविधेहिन इति ॥ १३ ॥

इति द्वितीयः प्रश्नः ॥

पदच्छेदः

प्राणस्य इदम् वशे सर्वम् त्रिदिवे यत् प्रतिष्ठितम् माता इव पुत्रान् रक्षस्व श्रीः च प्रज्ञाम् च विधेहि नः इति ॥ १३ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इदम्	= यह दृश्यमान
सर्वम्	= सब उपभोग
+तव	= तुम्हा
प्राणस्य	= प्राणके
वशे	= वशमें है
च	= और
त्रिदिवे	= स्वर्गविषे
यत्प्रतिष्ठितम्	= जो देवभोग्यहै
तदपितवशे	= सो भी तेरे वश में है
अतः	= इसलिये
पुत्रान्	= हम पुत्रों को
माताइव	= माताके समान
रक्षस्व	= तू रक्षाकर
च	= और
श्रीः	= ब्रह्मक्षात्रियों को
च	= और
प्रज्ञाम्	= अपने प्रजापतित्व ज्ञानयोग्य बुद्धिको

नः = हमारे लिये विधेहि = विधानकर	इति = { ऐसा प्राण की स्तुति करके मन आदि इंद्रियांतूष्णीं होतींभईं

इति द्वितीयःप्रश्नः॥

मूलम्

अथहैनंकौशल्यश्चाश्वलायनः पप्रच्छभगवन् कुतएषप्राणोजायते कथमायात्यस्मिञ्छरीरे आत्मानंवाप्रविभज्यकथंप्रातिष्ठते केनोत्क्रमते कथं बाह्यमभिधत्तेकथमध्यात्ममिति १॥

पदच्छेदः

अथ ह एनम् कौशल्यः च आश्वलायनः पप्रच्छ भगवन् कुतः एषः प्राणः जायते कथम् आयाति अस्मिन् शरीरे आत्मानम् वा प्रविभज्य कथम् प्रातिष्ठते केन उत्क्रमते कथम् बाह्यम् अभिधत्ते॥ कथम् अध्यात्मम् इति॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथहच	= तदनंतर	आश्वलायनः	= अश्वलायन मुनिका पुत्र
एनम्	= इस पिप्पलाद आचार्य्य से		

कौशल्यः = कौशल्यनामक ऋषि
इति = ऐसा
पप्रच्छ = पूछताभया कि
भगवन् = हे भगवन्
एषः = यह
प्राणः = प्राण
कुतः = किस कारण करके
जायते = उत्पन्न होताहै
कथम् = किसप्रकार
+अस्मिन्=इस
+शरीरे = देहविषे
आयाति = आगमन करताहै
वा = पुनः
कथम् = किस प्रकार
अस्मिन् = इस
शरीरे = शरीर में
आत्मानम्=अपने आपको
प्रविभज्य=अपानादिपांच विभाग करके
प्रतिष्ठते = स्थित रहताहै
केन = किसवृत्तिविशेष करके
उत्क्रमते = { उत्क्रमणइस शरीर से करता है }
कथम् = कैसे
बाह्यम् = अधिभूत अधिदैवको
च = और
कथम् = कैसे
अध्यात्मम् अध्यात्मको
अभिधत्ते = धारण करताहै

मूलम्

तस्मैसहोवाचातिप्रश्नान्पृच्छसिब्रह्मिष्ठोऽसि इतितस्मात्तेऽहम् ब्रवीमि ॥ २ ॥

पदच्छेदः

तस्मै सः ह उवाच अतिप्रश्नान् पृच्छसि

ब्रह्मिष्ठः असि इति तस्मात् ते अहम् ब्रवीमि ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्मै =	तिसकौशल्यऋषिकेप्रति
ह =	निश्चय करके
सः =	वह पिप्पलादमुनि
उवाच =	कहता भया कि
त्वम् =	तू
अतिप्रश्नान् =	अतिप्रश्नों को
पृच्छसि =	पूछताहै
+परंतु =	परंतु
+त्वम् =	तू
ब्रह्मिष्ठः =	ब्रह्मविषे श्रद्धावान्
असि =	है
तस्मात् =	इसलिये
इति =	ऐसाजानकर
अहम् =	मैं
ते =	तेरेप्रति
ब्रवीमि =	कहताहूं

मूलम्

आत्मनएवप्राणोजायते यथैषापुरुषेछायैतस्मि न्नेतदाततम्मनो कृतेनायात्यस्मिञ्छरीरे ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

आत्मनः एव प्राणः जायते यथा एषा पुरुषे छाया एतस्मिन् एतत् आततम् मनोकृतेन आयाति अस्मिन् शरीरे ॥ ३ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
आत्मनः	परमात्मासे
एव	ही
प्राणः	प्राण
जायते	उत्पन्न होताहै
यथा	जैसे
पुरुषे	पुरुष बिषे
एषा	यह दृश्यमान
छाया	प्रतिबिंबहै
+तथा	तैसे
एतस्मिन्	इसपरमात्मा बिषे

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एतत्	यह प्राणतत्त्व
आततम्	समर्पितहै
च	और
अस्मिन्	इस
शरीरे	शरीरबिषे
प्राणः	प्राण
मनोकृतेन	मनके संक- ल्पकृत कर्म के वशसे
आयाति	प्रवेशकरताहै

मूलम् ॥

यथा सम्राडेवाधिकृतान् विनियुंक्ते एतान् ग्रामानेतान्ग्रामानधितिष्ठस्वेति एवमेवैषः प्राण इतरान् प्राणान् पृथक् पृथगेवसन्निधत्ते ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

यथा सम्राट् एव अधिकृतान् विनियुंक्ते एतान् ग्रामान् एतान् ग्रामान् अधितिष्ठस्व इति एवमेव एषः प्राणः इतरान् प्राणान् पृथक् पृथक् एव स- न्निधत्ते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यथा	जैसे
सम्राट्	राजा
अधिकृतान्	अधिकारी लोकों को याने अपने नौकरों को
इति	ऐसा
विनियुंक्ते	आज्ञा देताहै कि
+ त्वम्	तुम
एतान्	इन
ग्रामान्	ग्रामों में
एतान् ग्रामान्	इनग्रामों में
अधितिष्ठस्व	स्थितहोकरस्वकार्यमें तत्पररहो

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एवम्एव	वैसेही
एषः	यह
प्राणः	प्राण
इतरान्	अपने से पृथक्
प्राणान्	चक्षुरादिइंद्रियोंकोऔर अपानादि वायुको
पृथक्	अलग
पृथक्	अलग
एव	निश्चय करके
सन्निधत्ते	कर्मविषे नियोगयानेप्रेरणा करता है

मूलम् ॥

पायूपस्थेऽपानम् चक्षुः श्रोत्रेमुखनासिकाभ्याम् प्राणः स्वयम् प्रातिष्ठते मध्येतु समानः एषो ह्येतत् हुतमन्नम् समन्नयति तस्मादेताः सप्तार्चिषः भवन्ति ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

पायूपस्थे अपानम् चक्षुः श्रोत्रे मुखनासिकाभ्याम् प्राणः स्वयम् प्रातिष्ठते मध्ये तु समानः एषः हि एतत् हुतम् अन्नम् समन्नयति तस्मात् एताः सप्तार्चिषः भवन्ति ॥ ५ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
पायूपस्थे	= पुरीषमूत्र मोचनस्थानविषे
अपानम्	= अपानवायुको
+स्थापयति	= स्थापित करता है
चक्षुःश्रोत्रे	= नेत्र और करणविषे
मुखनासिकाभ्याम्	= मुख और नासिका विषे
प्राणः	= प्राण
स्वयम्	= आपही
प्रातिष्ठते	= स्थितहोताहै
तु	= और
मध्ये	= प्राण अपानके मध्यनाभिविषे

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
समानः	= समान वायु रूपसे स्थित होताहै
हि	= प्रसिद्ध
एषः	= यह समानवायु
हुतम्	= भुक्त
अन्नम्	= अन्नपानको
समन्नयति	= यथायोग्यस्थानों में प्राप्त करताहै
तस्मात्	= इसीकारण उदर अग्निसे प्राणद्वारा
एताः	= ये चक्षुरादि

सप्तार्चिषः =	सात ज्योतिः-स्वरूपमस्तकगतज्ञानेंद्रियां	भवन्ति =	रूपादि के ग्रहणकरनेमेंसमर्थ होती हैं

नोट—मुखनासिकाभ्याम् चतुर्थी विभक्तिहै परन्तु अर्थ सप्तमी विभक्तिका इस मन्त्र बिषे देताहै ॥

मूलम् ॥

हृदि ह्येषआत्माऽत्रैतदेकशतं नाडीनांतासां शतंशतमेकैकस्यां द्वासप्ततिर्द्वासप्ततिः प्रतिशाखानाडीसहस्राणिभवन्त्यासुव्यानश्चरति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

हृदि हि एषः आत्मा अत्र एतत् एकशतम् नाडीनाम् तासाम् शतम् शतम् एकैकस्याम् द्वासप्तिर्द्वासप्ततिः प्रतिशाखानाडीसहस्राणि भवन्ति आसु व्यानः चरति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एषः	यह प्रसिद्ध	अत्र	तिस हृदय बिषे
आत्मा	जीवात्मा	एतत्	यह
हि	निश्चयकरके	एकशतम्	एकसौ एक प्रधान नाड़ी हैं
हृदि	हृदयाकाशबिषे स्थितहै	तासाम्	उन

नाडीनाम् = नाड़ियों में से	प्रतिशाखा नाडीसहस्राणि = प्रतिशाखा नाड़ियां
एकैकस्याम्=एक एक नाड़ी बिषे	भवन्ति = होती हैं
शतंशतम्=सौ सौ नाड़ीके विस्तार से	आसु=इननाड़ियोंबिषे
द्वासप्ततिर्द्वासप्ततिः = बहत्तर बहत्तर हज़ार	व्यानः = व्यानवायु
	चरति = संचारकरताहै

नोट-प्रथम हृदयाकाश बिषे १०१ मुख नाड़ी हैं तिन नाड़ियों में से हरएक नाड़ी से सौ सौ नाड़ी निकली हैं इसलिये एकसौ एकको सौके साथ गुणा करने से दशहजार एकसौ १०१०० नाड़ीहुई फिर तिन एकहजार एकसौ नाड़ियों में से हरएक नाड़ी में से ७२००० बहत्तर-बहत्तर हजार नाड़ी निकली हैं तिन बहत्तर हजार को दशहजार एकसौ के साथ गुणा करने से ७२७२०००००० बहत्तरकरोड़ बहत्तरलाख नाड़ीहुई तिन में १०१ और १०१०० जोड़ने से कुल ७२७२१०२०१ नाड़ी हुई॥

मूलम् ॥

अथैकयोर्ध्व उदानः पुण्येन पुण्यं लोकंनयति पापेन पापमुभाभ्यामेव मनुष्यलोकम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ एकया ऊर्ध्वः उदानः पुण्येन पुण्यम् लोकम् नयति पापेन पापम् उभाभ्याम् एव मनुष्यलोकम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथ	= अब पिप्पलाद मुनिकहते हैं कि
एकया	= एक सुषुम्णा नाड़ीद्वारा
ऊर्ध्वः	= ऊर्ध्वको उत्क्रान्तहुवा
उदानः	= उदानवायु
+देहिनम्	=जीवको
पुण्येन	= पुण्यकर्म से
पुण्यम् लोकम्	= पुण्यलोकको

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+च	= और
पापेन	= पापकर्म से
पापम्	= नरकादिलोकको
+च	= और
उभाभ्याम्	= पुण्य पाप मिश्रितकर्म से
मनुष्यलोकम्	= मनुष्यलोकको
नयति	= प्राप्त करताहै

मूलम् ॥

आदित्योहवैबाह्यः प्राणउदयत्येष ह्येनं चाक्षुषं प्राणमनुगृह्णानः पृथिव्यां या देवता सैषा पुरुषस्यापानमवष्टभ्यान्तरा यदाकाशः ससमानो वायुर्व्यानः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

आदित्यः ह वै बाह्यः प्राणः उदयति एषः हि एनम् चाक्षुषम् प्राणम् अनुगृह्णानः पृथिव्याम् या देवता सा एषा पुरुषस्य अपानम् अवष्टभ्य अन्तरा यत् आकाशः सः समानः वायुः व्यानः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ यः	जो
हवै	प्रसिद्ध
आदित्यः	सूर्य
हि	निश्चयकरके
एनम्	इस
चाक्षुषम्	चक्षु विषे स्थित
प्राणम्	प्राणको
अनुगृह्णानः	अनुगृहीत करताहुआ अर्थात् रूप के ग्रहण करनेमें समर्थ करताहुआ
उदयति	उदयकोप्राप्तहोताहै
सः	सोई
एषः	यह
बाह्यः	बाह्य
प्राणः	प्राणहै
तथा	तैसेही

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
पृथिव्याम्	पृथिवी विषे अभिमानी
या	जो
देवता	अग्निरूप प्राणहै
सा	सोई
एषा	यह
पुरुषस्य	पुरुष के
अपानम्	अपानवायुकोनीचे के तर्फ
अवष्टभ्य	आकर्षणकरके
+ स्थिता	स्थितहै
च	और
यत्	जो
अन्तरा	मध्य विषे
आकाशः	आकाशरूप
समानः	समान
वायुः	वायुहै
सः	सोई

व्यानः = { व्यान वायु पर अनुग्रह करता हुआ स्थित है

नोट—जो सूयरूप समष्टि प्राणवायु है सोई व्यष्टिरूप होकर प्राणियोंके चक्षुविषे स्थितहै जो अग्निरूप समष्टि प्राणवायु पृथिवी विषे स्थित है सोई व्यष्टिरूप अपान वायु होकर प्राणियों के नीचे के भाग विषे स्थित है जो समष्टि प्राणवायु अन्तरिक्षलोक विषे याने स्वर्ग और पृथिवी के मध्यभाग विषे जो आकाश है तिस विषे जो समष्टिरूप से प्राणवायु स्थितहै सोई व्यष्टिरूप होकर प्राणियों के मध्यभाग विषे स्थितहै और जो समष्टि व्यानवायु बाहर ब्रह्मलोक से लेकर पाताललोकपर्यन्त व्याप्त है सोई व्यष्टिरूप व्यानवायु होकर सम्पूर्ण प्राणियों के अन्तर नखशिखपर्यन्त स्थित है इसीलिये समष्टि प्राणवायुके सहायता विना व्यष्टि प्राण वायु जो प्राणियों के शरीर विषे स्थितहै नहीं रहसक्ताहै ॥

मूलम्॥

तेजोहवैउदानस्तस्मादुपशान्ततेजाः पुनर्भव मिन्द्रियैर्मनसिसंपद्यमानैः ॥ ९ ॥

पदच्छेदः॥

तेजः ह वै उदानः तस्मात् उपशान्ततेजाः पुनर्भवम् इन्द्रियैः मनसि सम्पद्यमानैः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ह्वै	उत्क्रान्तिधर्म वाला
उदानः	उदानवायु
तेजः	तेजस्वरूपहै
तस्मात्	इसलिये
+तस्य उत्क्रान्तौ	उसके निकलने पर
उपशान्त तेजाः	मरण निकट को प्राप्तहुवा पुरुष

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
मनसि	मनकी भावना विषे
सम्पद्य मानैः	प्रवेश करते हुये
इन्द्रियैः	इन्द्रियों के संग
पुनर्भवम्	शरीरान्तरको प्राप्तहोताहै

मूलम् ॥

यच्चित्तस्तेनैषप्राणमायाति प्राणस्तेजसायुक्तः सहात्मनायथासंकल्पितंलोकंनयति ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

यच्चित्तः तेन एषः प्राणम् आयाति प्राणः तेजसा युक्तः सह आत्मना यथा सङ्कल्पितम् लोकम् नयति ॥ १० ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यच्चित्तः =	मरण समय पुरुषकाजैसा चित्तहोताहै
तेन =	उसचित्त करके
एषः =	यह जीव
प्राणम् =	प्राणको
आयाति =	प्राप्त होताहै
+ च =	और
प्राणः =	प्राण
तेजसा =	उदान वायुसे
युक्तः =	युक्तहोताहुवा
आत्मना सह =	अपने साथ
+ जीवम् =	जीवको
यथासंकल्पितम् =	उसके संकल्प के अनुसार
लोकम् =	योनी को
नयति =	प्राप्तकरता है

मूलम्॥

यएवंविद्वान् प्राणंवेदनहास्य प्रजाहीयतेऽमृतो भवतितदेषश्लोकः॥११॥

पदच्छेदः

यः एवम् विद्वान् प्राणम् वेद न ह अस्य प्रजा हीयते अमृतः भवति तत् एषः श्लोकः॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
यः =	जो
एवम् =	इसप्रकार

विद्वान् = बुद्धिमान्पुरुष	हीयते = हीनहोतीहै
प्राणम् = प्राणको	+च = और
वेद = जानताहै	+सः = वह
अस्य = { उस प्राणउपासककी	अमृतः = अमर
	भवति = होताहै
प्रजा = संतति	तत् = इसविषे
इह = इसलोक विषे	एषः = यह आगेवाला
न = नहीं	श्लोकः = मंत्रप्रमाणहै

मूलम् ॥

उत्पत्तिमायतिं स्थानं विभुत्वंचैव पञ्चधा अध्यात्मंचैव प्राणस्य विज्ञायामृतमश्नुते विज्ञायामृतमश्नुत इति १२प्रश्नः ३ ॥

पदच्छेदः

उत्पत्तिम् आयतिम् स्थानम् विभुत्वम् च एव पञ्चधा अध्यात्मम् च एव प्राणस्य विज्ञाय अमृतम् अश्नुते विज्ञाय अमृतम् अश्नुते इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इति	= ऐसा	प्राणस्य	= प्राणके
+प्राणोपासकः	= प्राणकाउपासक	उत्पत्तिम्	= उत्पत्तिको
		+च	= और

आयतिम् = शरीरविषेउ-स्केआगमनको
+ च = और
स्थानम् = शरीरविषेउ-स्केस्थानको
+ च = और
पञ्चधा = उसकेपांच प्रकारके
विभुत्वंएव = व्यापकत्वको
च = और
अध्यात्मम् = अध्यात्मको
एव = भी
विज्ञाय = भलीप्रकार जानके
अमृतम् = मोक्षको
अश्नुते = प्राप्तहोताहै
विज्ञाय = भलीप्रकार जानके
अमृतम् = मोक्षको
अश्नुते = प्राप्तहोताहै

इति तृतीयःप्रश्नः ॥

मूलम् ॥

अथहैनंसौर्य्यायणीगार्ग्यःपप्रच्छ भगवन्नेतस्मिन्पुरुषे कानिस्वपन्ति कान्यस्मिन् जाग्रति कतर एषदेवः स्वप्नान्पश्यति कस्यैतत सुखंभवति कस्मिन्नु सर्वे संप्रतिष्ठिताभवन्तीति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

अथ ह एनम् सौर्यायणः गार्ग्यः पप्रच्छ भगवन् एतस्मिन् पुरुषे कानि स्वपन्ति कानि अस्मिन् जाग्रति कतरः एषः देवः स्वप्नान् पश्यति कस्य एतत् सुखम् भवति कस्मिन् नु सर्वे सम्प्रतिष्ठिताः भवन्ति इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथ	तृतीयप्रश्नके पश्चात्
ह	प्रसिद्ध
एनम्	पिप्पलाद मुनि से
गार्ग्यः	गर्ग का पुत्र
सौर्यायणः	सौर्यायणनामकऋषि
इति	ऐसा
पप्रच्छ	प्रश्न करता भया कि
भगवन्	हे भगवन्
एतस्मिन्	इस
पुरुषे	पुरुष बिषे
कानि	कौन इन्द्रियां
स्वपन्ति	सोतीहैं अर्थात् स्वकार्य से रहित हो विश्राम करती हैं

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	और
अस्मिन्	इस सुप्तपुरुष बिषे
कानि	कौनसी इन्द्रियां
जाग्रति	जागती हैं याने व्यापारको करती हैं
कतरः	कौन
एषः	यह
देवः	देव
स्वप्नान्	स्वप्नों को अर्थात् स्वप्नावस्था बिषे जाग्रत्वत् स्वप्न के व्यापारों को
पश्यति	देखता है
कस्य	किसपुरुषको

एतत् = इस सुषुप्ति अवस्थाविषे प्रसिद्ध			
सुखम् = सुख		सम्प्रतिष्ठिताः =	जाग्रत् और स्वप्नअवस्था से विलक्षण आनंदित व्यापाररहित हो आनंद से
भवति = होताहै			
नु = और			
कस्मिन् = किस विषे		भवन्ति =	प्रवेश करती हैं
सर्वे = सबइन्द्रियां			

मूलम् ॥

तस्मै सहोवाच यथा गार्ग्यमरीचयोऽर्कस्याऽस्तङ्गच्छतः सर्वा एतस्मिंस्तेजोमण्डलएकीभवन्ति ताः पुनःपुनरुदयतः प्रचरन्त्येवं ह वैतत्सर्वम्परेदेवे मनस्येकीभवंति तेन तर्ह्येषपुरुषो न शृणोति न पश्यति न जिघ्रति न रसयते न स्पृशते नाभिवदते नादत्ते नानन्दयते न विसृज्यते नेयायते स्वपितीत्याचक्षते ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः ह उवाच यथा गार्ग्य मरीचयः अर्कस्य अस्तम् गच्छतः सर्वाः एतस्मिन् तेजोमण्डले एकीभवन्ति ताः पुनः पुनः उदयतः प्रचरन्ति एवम् ह वा एतत् सर्वम् परे देवे मनसि एकीभवन्ति तेन तर्हि एषः पुरुषः न शृणोति न पश्यति न जिघ्रति न रसयते न स्पृशते न अ-

भिवदते न आदत्ते न आनन्दयते न विसृज्यते न इ-
यायते स्वपिति इति आचक्षते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्मै	तिसगार्ग्य के प्रति
सः	वह पिप्पलादमुनि
ह	निश्चय करके
उवाच	कहतेभयेकि
गार्ग्य	हे गार्ग्य
यथा	जैसे
अस्तम्	अस्त को
गच्छतः	प्राप्तहोतेहुये
अर्कस्य	सूर्य के
सर्वाः	सब
मरीचयः	किरण
एतस्मिन्	उस सूर्यरूप
तेजोमंडले	तेजोमंडल बिषे
एकीभवन्ति	एकताकोप्राप्त होजातेहैं
च	और

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
उदयतः	उदय होते हुये सूर्य के
ताः	वे किरण
पुनःपुनः	फिर
प्रचरन्ति	फैलजाते हैं
एवम्एव	ऐसेही
यदा	जब
एतत्	यह
सर्वम्	सबविषयइन्द्रिय
परेदेवे	चक्षुरादि देवों का परमदेव
मनसि	मन बिषे
एकीभवन्ति	एकताकोप्राप्त होजातीहैं
तर्हि	तब
तेन	तिसकारण
एषः	यह
पुरुषः	पुरुष
नशृणोति	न सुनता है
नपश्यति	न देखता है

नजिघ्रति = न सूंघता है	नविसृजते = न मलमूत्रको त्यागता है
नरसयते = न रसलेताहै	नइयायते = न गमन करता है
नस्पृशते = न स्पर्श करता है	+ परन्तु = परंतु
नअभिवदते = न बोलता है	स्वपितिइति = सोताहै ऐसा
नआदत्ते = न ग्रहण करता है	आचक्षते = कहते हैं लोकबिषे
नआनंदयते = न आनंदित होता है	

मूलम् ॥

प्राणाग्नयएवैतस्मिन्पुरेजाग्रति गार्हपत्योहवा एषोऽपानोव्यानोऽन्वाहार्यपचनो यद्गार्हपत्यात्प्रणीयते प्रणयनादाहवनीयःप्राणः ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

प्राणाग्नयः एव एतस्मिन् पुरे जाग्रति गार्हपत्यः ह वा एषः अपानः व्यानः अन्वाहार्यपचनः यत् गार्हपत्यात् प्रणीयते प्रणयनात् आहवनीयः प्राणः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एतस्मिन्	= इसनव द्वार वाले	पुरे	= देहबिषेचक्षुरादि करण के सुषुप्ति समय

प्राणाग्नयः = प्राणादिपांच वायुअग्निरूप	यत् = जो अग्नि
एव = हि	प्रणयनात् = प्रणयन योग्य याने लेआने योग्य
जाग्रति = जागतेरहते हैं	गार्हपत्यात् = गार्हपत्यअग्निसे
इव = उनपांचो बिषे	प्रणीयते = लायाजाता है
एषः = प्रसिद्ध यह	सः = वह
अपानः = अपान वायु	प्राणः = प्राण
गार्हपत्यः = गार्हपत्याग्नि है	आहवनीयः = आहवनीय नामकअग्नि है
+ च = और	
व्यानः = व्यान वायु	
अन्वाहार्यपचनः = दाक्षिणाग्नि नामा अग्निहै	

नोट–गार्हपत्याग्नि=दाक्षिणाग्नि=आहवनीयाग्नि=येतीनप्रकारके अग्नि यज्ञ आदिबिषे प्रसिद्ध हैं गार्हपत्याग्नि यजमान के वाम कुण्डका अग्नि है १ और दाक्षिणाग्नि यजमान के दहने कुण्ड का अग्नि है २ और आहवनीयाग्नि वह अग्नि है जो गार्हपत्यअग्नि से निकालकर मध्य अग्निकुण्ड बिषे स्थापन कियाजाताहै ॥

मूलम् ॥

यदुच्छ्वासनिःश्वासावेतावाहुती समंनयतीति ससमानः मनोहवावयजमानइष्टफलमेवोदानः सएनंयजमानमहरहर्ब्रह्मगमयति ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

यत् उच्छ्वासनिःश्वासौ एतौ आहुती समम् नयति इति सः समानः मनः ह वाव यजमानः इष्टफलम् एव उदानः सः एनम् यजमानम् अहरहः ब्रह्म गमयति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	जो
एतौ	इनप्रसिद्ध
उच्छ्वास निश्वासौ	ऊर्ध्वश्वास अधःश्वास रूप
आहुती	आहुतियों को
इति	इसप्रकार
समम्	समानताको
नयति	प्राप्तकरता है
सःसमानः	सो समान वायु है
ह वा व	इसअग्निहोत्रकुंडरूपी शरीर विषे

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
मनः	मन
यजमानः	यज्ञकाकर्त्ता है
उदानः	उदानवायु
एव	ही
तस्य	उसका
इष्टफलम्	इच्छितफल है
सः	सो उदानवायु
एनम्	इसमनरूपी
यजमानम्	यजमानको
अहरहः	प्रतिदिनसुषुप्तिकालविषे
ब्रह्म	ब्रह्मको
गमयति	प्राप्तकरताहै

मूलम् ॥

अत्रैषदेवःस्वप्नेमहिमानमनुभवति यद्दृष्टंदृष्ट मनुपश्यति श्रुतंश्रुतमेवार्थमनुशृणोति देशदिगंत रैश्चप्रत्यनुभूतं पुनःपुनः प्रत्यनुभवति दृष्टंचादृष्टं च श्रुतंचाश्रुतंचानुभूतंचाननुभूतंच सच्चासच्चसर्वं पश्यति सर्वःपश्यति ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

अत्र एषः देवः स्वप्ने महिमानम् अनुभवति यत् दृष्टम् दृष्टम् अनुपश्यति श्रुतम् श्रुतम् एव अर्थम् अनुशृणोति देशदिगन्तरैः च प्रत्यनुभूतम् पुनः पुनः प्रत्यनुभवति दृष्टम् च अदृष्टम् च श्रुतम् च अश्रुतम् च अनुभूतम् च अननुभूतम् च सत् च असत् च सर्वम् पश्यति सर्वः पश्यति ॥ ५ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अत्र	सुषुप्तिअवस्था से प्रथम	अनुभवति	अनुभव करता है
स्वप्ने	स्वप्नअवस्था बिषे	च	और
एषः	यह	यत्	जिस पुत्र मित्र आदिकों को
देवः	मनरूपी देव	दृष्टंदृष्टम्	पुनःपुनःदेखाहै उसीको
महिमानं	विभूतिकोअर्थात्विषयरूपीअनेकभावों को	अनुभवति	देखता है

श्रुतम् } = पुनःपुनःश्रवण
श्रुतम् } कियेहुये
एव = ही
अर्थम् = अर्थ को
अनुशृ } = फिर श्रवणकर
णोति } ता है
च = और
देशदि } = देशांतरऔरदि
गंतरैः } गंतरों केसहित
प्रत्यनु } = वहांवहांअनु-
भूतम् } भवकियेवस्तुको
पुनःपुनः = फिरफिर
प्रत्यनु } = अनुभव करता
भवति } है
च = और
दृष्टम् = इसजन्म में दे-
खेहुये को
च = और
अदृष्टम् = जन्मांतरविषे
देखेहुये को
च = और
श्रुतम् = इसजन्म विषे
सुनेहुये को
च = और
अश्रुतम् = जन्मांतर विषे
सुनेहुयेको
च = और
अनुभूतम् = अनुभव किये
हुये को
च = और
अननु } = न अनुभवकि-
भूतम् } ये हुये
सर्वम् = सब को
पश्यति = देखता है
एवम् = इसप्रकार
सर्वः = सब इन्द्रियों
कास्वामी
मन
पश्यति = स्वप्नों को
देखता है

मूलम् ॥

सयदातेजसाऽभिभूतोभवति अत्रैषदेवःस्वप्ना न्नपश्यत्यथतदैतस्मिञ्छरीरेएतत्सुखंभवति॥ ६ ॥

पदच्छेदः

सः यदा तेजसा अभिभूतः भवति अत्र एषः देवः स्वप्नान् न पश्यति अथ तदा एतस्मिन् शरीरे एतत् सुखम् भवति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यदा	= जबसुषुप्तिकाल बिषे	स्वप्नान्	= स्वप्नों को
सः	= वहमनरूपीदेव	न	= नहीं
तेजसा	= चैतन्यात्मा के तेजसे	पश्यति	= देखता है
अभिभूतः	= तिरस्कृतअर्था-त्वासनारहित	अथतदा	= और तबहीं
भवति	= होता है	एतस्मिन्	= इस
अत्र	= तब	शरीरे	= शरीरबिषे
एषः	= यह	एतत्	= यह सुषुप्ति आनन्द
देवः	= मनरूपी देव	सुखम्	= सुख
		तस्यमनसः	= उस मन को
		भवति	= होता है

मूलम् ॥

सयथासौम्यवयांसि वासोवृक्षंसंप्रतिष्ठन्तेएवंह वैतत्सर्वंपरआत्मनिसंप्रतिष्ठते ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

सः यथा सौम्य वयांसि वासोवृक्षम् सम्प्रति-

ष्ठन्ते एवम् ह वा एतत् सर्वम् परे आत्मनि सम्प्रतिष्ठते ७॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सौम्य	= हे सौम्य हे गार्ग्य
सः	= सोदृष्टांत ऐसा है कि
यथा	= जैसे
वयांसि	= पक्षी
वासोवृक्षम्	= सायंकाल बिषे निवास वृक्षप्रति
सम्प्रतिष्ठन्ते	= अन्य कार्य्य को त्यागके प्रस्थान करते हैं
एवमूहवा	= ऐसेही अगले मंत्रबिषे कहाहुआ
एतत्	= यह
सर्वम्	= पृथिवी आदि सब
परे	= परम
आत्मनि	= आत्मा बिषे
सम्प्रतिष्ठन्ते	= प्रस्थान करते हैं याने लीन होते हैं

मूलम्॥

पृथिवीच पृथिवीमात्रा चापश्चापोमात्राच तेजश्चतेजोमात्राच वायुश्चवायुमात्राचाकाशश्चाकाशमात्राच चक्षुश्च द्रष्टव्यंच श्रोत्रंच श्रोतव्यंच घ्राणंच घ्रातव्यंच रसश्च रसयितव्यंच त्वक्च स्पर्शयितव्यंच वाक्च वक्तव्यंच हस्तौचादातव्यंचोपस्थश्चानन्दयितव्यंच पायुश्च विसर्जयितव्यंच

पादौच गंतव्यंच मनश्च मंतव्यंच बुद्धिश्च बोद्धव्यंचाहंकारश्चाहंकर्त्तव्यंच चित्तंच चेतयितव्यंच तेजश्च विद्योतयितव्यंच प्राणश्च विधारयितव्यं च ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

पृथिवी च पृथिवीमात्रा च आपः च आपोमात्रा च तेजः च तेजोमात्रा च वायुः च वायुमात्रा च आकाशः च आकाशमात्रा च चक्षुः च द्रष्टव्यम् च श्रोत्रम् च श्रोतव्यम् च घ्राणम् च घ्रातव्यम् च रसः च रसयितव्यम् च त्वक् च स्पर्शयितव्यम् च वाक् च वक्तव्यम् च हस्तौ च आदातव्यम् च उपस्थः च आनन्दयितव्यम् च पायुः च विसर्जयितव्यम् च पादौ च गन्तव्यम् च मनः च मन्तव्यम् च बुद्धिः च बोद्धव्यम् च अहंकारः च अहङ्कर्त्तव्यम् च चित्तम् च चेतयितव्यम् च तेजः च विद्योतयितव्यम् च प्राणः च विधारयितव्यम् च ॥ ८ ॥

	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
१	पृथिवी	= स्थूल पृथिवी
	च	= और
	पृथिवीमात्रा	= सूक्ष्मपृथिवी
२	च	= ऐसेही
	आपः	= जल
	च	= और
	आपोमात्रा	= सूक्ष्मजल
	च	= ऐसेही

३ तेजः = तेज
च = और
तेजोमात्रा = सूक्ष्मतेज
च = ऐसेही

४ वायुः = वायु
च = और
वायुमात्रा = सूक्ष्मवायु
च = ऐसेही

५ आकाशः = आकाश
च = और
आकश मात्रा = आकाशमात्रा

एतानिपंचमहाभूतानि = येपांचमहाभूतहैं

च = ऐसेही

वाक् = वाणी
१ च = और
वक्तव्यम् = वाक्इन्द्रियकाविषय
च = ऐसेही

२ हस्तौ = दोनोंहाथ
च = और
आदातव्यम् = हाथों का विषय

३ च = ऐसेही
उपस्थः = उपस्थइन्द्रिय
च = और
अनन्दयितव्यम् = उपस्थइन्द्रिय का विषय

च = ऐसेही

४ पायु = गुदाइन्द्रिय
च = और
विसर्जयितव्यम् = गुदाइन्द्रियकाविषय

५ च = वैसेही
पादौ = दोनोंचरण
च = और
गन्तव्यम् = चरणइन्द्रियका विषय

एतानिपञ्चकर्मेन्द्रियाणि = ये पांचकर्मेन्द्रियांहैं

च = ऐसेही

१ { चक्षुः = नेत्रइन्द्रिय
च = और
द्रष्टव्यम् = नेत्रइन्द्रिय का विषय
च = ऐसेही }

२ { श्रोत्रम् = श्रवणइन्द्रिय
च = और
श्रोतव्यम् = श्रोत्रइन्द्रियका विषय
च = ऐसेही }

३ { घ्राणम् = नासिका इन्द्रिय
च = और
घ्रातव्यम् = घ्राणकाविषय
च = ऐसेही }

४ { रसः = रसनाइन्द्रिय
च = और
रसयितव्यम् = रसनाइन्द्रिय का विषय
च = ऐसेही }

५ { त्वक् = त्वक् इन्द्रिय
च = और
स्पर्शयितव्यम् = त्वक् इन्द्रिय विषय }

+ एतानि पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि = ये पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं

१ { च = ऐसेही
मनः = मन
च = और
मन्तव्यम् = मन इन्द्रिय का विषय }

२ { च = ऐसेही
बुद्धिः = बुद्धि
च = और
बोद्धव्यम् = बुद्धीन्द्रियका विषय }

३ { च = ऐसेही
अहङ्कारः = अहंकार
च = और
अहङ्कर्तव्यम् = अहंकारका विषय }

४ { च = ऐसेही
चित्तम् = चित्त
च = और
चेतयितव्यम् = चित्तका विषय }

च = ऐसेही

तेजः = तेज
च = और
विद्योतयितव्यम् = तेजका विषय
च = ऐसेही
प्राणः = प्राण
च = और

विधारयितव्यम् = प्राण सूत्रात्माकरकेधारणकरनेयोग्यनामरूपात्मकसबजगत्
+एतानिसर्वाणिआत्मनिलीनानिभवन्ति = ये सबपिछले मंत्रमें कहेहुयेआत्मा बिषेलीनहोते हैं

मूलम् ॥

एषहि द्रष्टास्प्रष्टाश्रोताघ्राता रसयितामंता बोद्धाकर्त्ताविज्ञानात्मापुरुषः सपरेऽक्षरेआत्मनिसम्प्रतिष्ठते ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

एषः हि द्रष्टा स्प्रष्टा श्रोता घ्राता रसयिता मन्ता बोद्धा कर्त्ता विज्ञानात्मा पुरुषः सः परे अक्षरे आत्मनि सम्प्रतिष्ठते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
द्रष्टा	देखनेवाला
स्प्रष्टा	स्पर्शकरनेवाला
श्रोता	श्रवणकरनेवाला
घ्राता	सूंघनेवाला

रसयिता = रसलेनेवाला	+ यः = जो
मन्ता = मननकरने वाला	विज्ञानात्मा = सबकाज्ञाता
	पुरुषः = पुरुषहै
बोद्धा = जाननेवाला	सः = सो
कर्त्ता = प्राणादिकोंका कर्त्ता	अक्षरे = अविनाशी
	परे = परम
एषः = जलबिषे सूर्य की छायावत् शरीरोंमें प्रविष्टहुआ यह	आत्मनि = आत्मा बिषे
	हि = निश्चयकरके
	सम्प्रतिष्ठते = लीनहोजाता है

मूलम् ॥

परमेवाक्षरंप्रतिपद्यतेसयोहवैतदच्छायमशरीरमलोहितं शुभ्रमक्षरंवेदयते यस्तुसौम्यससर्वज्ञः सर्वोभवतितदेषश्लोकः ॥

पदच्छेदः ॥

परम् एव अक्षरम् प्रतिपद्यते सः यः ह वा एतत् अच्छायम् अशरीरम् अलोहितम् शुभ्रम् अक्षरम् वेदयते यः तु सौम्य सः सर्वज्ञः सर्वः भवति तत् एषः श्लोकः १० ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सौम्य	हे सौम्य	हवा	ईषणारहित
यः	जो पुरुष	एतत्	इस

अच्छायम् = अज्ञान-
रहित
अशरीरम् = निराकार
अलोहितम् = निर्गुण
शुभ्रम् = शुद्ध
अक्षरम् = नाशसे रहित सत्य ज्ञानानन्द रूप परमात्मा को
वेदयते = जानता है
सःएव = सोई
परम् = परम
अक्षरम् = ब्रह्मको

प्रतिपद्यते = स्वयं प्राप्त
होता है
तु = और
यः = जो
सर्वज्ञः = सबकाज्ञाताहै
सः = सोई
सर्वः = सबका आत्म-
रूप
भवति = होता है
तत् = इस बिषे
एषः = यह आगे वा-
ला
श्लोकः = मन्त्रप्रमाण
+ अस्ति = है ॥

मूलम् ॥

विज्ञानात्मासहदेवैश्चसर्वैः प्राणाभूतानिसंप्रतिष्ठन्ति यत्र तदक्षरंवेदयतेयस्तुसौम्यससर्वज्ञःसर्वमेवाविवेशेति ११ चतुर्थःप्रश्नः ॥

पदच्छेदः ॥

विज्ञानात्मा सह देवैः च सर्वैः प्राणाः भूतानि सम्प्रतिष्ठन्ति यत्र तत् अक्षरम् वेदयते यः तु सौम्य सः सर्वज्ञः सर्वम् एव आविवेश इति ॥

सौम्य = हे सौम्य	सः = सोई
यत्र = जिस सत्यादि स्वरूप बिषे	विज्ञानात्मा = विज्ञानस्वरूप है
	च = और
प्राणाः = सब प्राण चक्षुरादि	तत् = सोई
	अक्षरम् = अविनाशी है
च = और	+ च = और
भूतानि = सब भूत पृथिवी आदि	यस्तु = जो
	+ तत् = उस अमरको
सर्वैः = सम्पूर्ण	इति = इस प्रकार
देवैःसह = अग्निआदि देवतावों के साथ	वेदयते = जानता है
	सः = सोई
सम्प्रतिष्ठन्ति = सम्यक्प्रकार स्थित होते हैं याने लीन होते हैं	सर्वज्ञः = सबका ज्ञाता हुआ
	सर्वम् = सब बिषे
	आविवेश = प्रवेशकरताहै

इति चतुर्थःप्रश्नः४ ॥

मूलम् ॥

अथहैनंशैब्यःसत्यकामःपप्रच्छ सयोहवैतद्भगवन्मनुष्येषुप्रयाणान्तमोंकारमभिध्यायीत कतमंवावसतेनलोकंजयतीति ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ ह एनम् शैब्यः सत्यकामः पप्रच्छ सः यः ह वा एतत् भगवन् मनुष्येषु प्रयाणान्तम् ओंकारम् अभिध्यायीत् कतमम् वाव सः तेन लोकम् जयति इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथ	= अब	मनुष्येषु	= मनुष्योंविषे
ह	= प्रसिद्ध	एतत्	= इस
शैब्यः	= शिबिका पुत्र	ओंकारम्	= प्रणवको
सत्यकामः	= सत्यकाम नामक ऋषि	प्रयाणान्तम्	= परलोकयात्रापर्यंत
एनम्	= पिप्पलादाचार्यसे	अभिध्यायीत्	= उपासना करै
इति	= ऐसा	वाव	= तौ
पप्रच्छ	= पूछताभया कि	तेन	= उस उपासना से
भगवन्	= हे भगवन्	सः	= वह उपासक
सः	= वह	कतमम्	= किस
यः	= जो कोई	लोकम्	= लोक को
हवा	= निश्चय करके	जयति	= जीतता है अर्थात् प्राप्त होता है ॥

मूलम् ॥

तस्मैसहोवाच एतद्वैसत्यकामपरंचापरंचब्रह्मय-दोंकारस्तस्माद्विद्वानेतेनैवायतनेनैकतरमन्वेति२॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः ह उवाच एतत् वै सत्यकाम परम् च अपरम् च ब्रह्म यत् ओंकारः तस्मात् विद्वान् एतेन एव आयतनेन एकतरम् अन्वेति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्मै	उससत्यकाम ऋषि से	परम् च	पर और
सः	वह पिप्पलाद मुनि	अपरम्	अपर
उवाच	कहता भया कि	ब्रह्म	ब्रह्महै
सत्यकाम	हे सत्यकाम	तस्मात्	इसलिये
वै	प्रसिद्ध	एतेनएव	इस प्रणव के ही
यत्	जो	आयतनेन	आश्रयकरके
एतत्	यह	विद्वान्	उपासक
ॐकारः	प्रणव है	एकतरम्	पर या अपर ब्रह्मको
सःएव	सोई	अन्वेति	प्राप्त होताहै॥

मूलम् ॥

स यद्येकमात्रमभिध्यायीत सतेनैवसंवेदितस्तू-

र्णमेवजगत्यामभिसम्पद्यते तमृचोमनुष्यलोकमुपनयन्ते स तत्र तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया सम्पन्नोमहिमानमनुभवति॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

सः यदि एकमात्रम् अभिध्यायीत् सः तेन एव संवेदितः तूर्णम् एव जगत्याम् अभिसम्पद्यते तम् ऋचः मनुष्यलोकम् उपनयन्ते सः तत्र तपसा ब्रह्मचर्य्येण श्रद्धया सम्पन्नः महिमानम् अनुभवति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	वह उपासक
यदि	अगर
एकमात्रम्	एकमात्रावाले प्रणव को याने अकार मात्रको
अभिध्यायीत्	उपासना करै
+ तु	तो
सः	वह
तेन	उस उपासना के बल से
एव	निश्चयकरके

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
संवेदितः	सम्यक्प्रकार बोधवान्हुवा
तूर्णम्	शीघ्र
एव	ही
जगत्याम्	पृथिवी बिषे
अभिसंपद्यते	जन्मको प्राप्त होता है
च	और
तम्	उस को
+ पुनः	फिर
ऋचः	ऋग्वेद के मन्त्र

मनुष्यलोकम्	= मनुष्य शरीर को	ब्रह्मचर्येण	= ब्रह्मचर्य्यकरके
उपनयन्ते	= प्राप्तकरते हैं	श्रद्धया	= श्रद्धा करके
चपुनः	= और फिर	सम्पन्नः	= युक्त होता हुआ
तत्र	= तिसमनुष्य देहबिषे	महिमानम्	= ऐश्वर्य्य को
सः	= वह उपासक	अनुभवति	= प्राप्त होताहै
तपसा	= तप करके		

मूलम् ॥

अथ यदि द्विमात्रेण मनसि सम्पद्यते सोऽन्तरिक्षं यजुर्भिरुन्नीयते सः सोमलोकंससोमलोके विभूतिमनुभूय पुनरावर्तते ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ यदि द्विमात्रेण मनसि सम्पद्यते सः अन्तरिक्षम् यजुर्भिः उन्नीयते सः सोमलोकम् सः सोमलोके विभूतिम् अनुभूय पुनरावर्त्तते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथ	= और	द्विमात्रेण	= द्विमात्र प्रणवसे याने अकार उकार मात्रा से
यदि	= अगर		
सः	= वह उपासक		

मनसि = मन बिषे	सोमलोकम् = चंद्रलोकको
संपद्यते = ध्यान करताहै अर्थात्उपासना करता है	उन्नीयते = प्राप्त किया जाता है
तु = तो	सः = वह
सः = वह	सोमलोके = चंद्रलोकबिषे
यजुर्भिः = यजुर्वेदके मंत्रों करके	विभूतिम् = महिमा को
अन्तरिक्षम् = अन्तरिक्षबिषे	अनुभूय = भोग करके
	पुनरावर्त्तते = फिरइसलोकबिषे जन्मलेता है

मूलम् ॥

यः पुनरेतत् त्रिमात्रेणैवोमित्येतेनैवाक्षरेण परम्पुरुषमभिध्यायीत सतेजसिसूर्य्येसम्पन्नोयथापादोदरस्त्वचाविनिर्मुच्यत एवं हवैसपाप्मनाविनिर्मुक्तःससामभिरुन्नीयते ब्रह्मलोकं स एतस्माज्जीवघनात्परात्परम्पुरिशयं पुरुषमीक्षते तदेतौश्लोकौभवतः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

यः पुनः एतत् त्रिमात्रेण एव ॐ इति एतेन एव अक्षरेण परम् पुरुषम् अभिध्यायीत् सः तेजसि सूर्य्ये सम्पन्नः यथा पादोदरः त्वचा विनिर्मुच्यते एवम् ह वै सः पाप्मना वि-

निर्मुक्तः सः सामभिः उन्नीयते ब्रह्मलोकम् सः एतस्मात् जीवघनात् परात्परम् पुरिशयम् पुरुषम् ईक्षते तत् एतौ श्लोकौ भवतः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
पुनः	और
यः	जो उपासक
त्रिमात्रेण	तीन मात्रा याने अकार उकार मकार करके युक्त
एतेन	इस
अक्षरेण	पूर्णअक्षर
ओम्इति	ओम्करके
एतत्एव	उसी
परंपुरुषम्	परमपुरुषको
एव	निश्चयपूर्वक
अभिध्यायीत्	उपासनाकरै
एव	तो
सः	वह उपासक
तेजसिसूर्ये	तेजरूप सूर्य विषे

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
संपन्नः	संयुक्तहोता है
च	और
यथा	जैसे
पादोदरः	सर्प
त्वचा	प्राचीनत्वचा से
विनिर्मुच्यते	मुक्त होताहै
एवम्हवै	ऐसेही
सः	वह उपासक
पाप्मना	पाप से
विनिर्मुक्तः	छूटाहुआ
सामभिः	सामवेदकेमंत्रों करके
ब्रह्मलोकम्	हिरण्यगर्भलोकको
उन्नीयते	प्राप्त किया जाता है
च	और

सः = फिर वह उपासक
एतस्मात् = इस
परात् = उत्कृष्ट
जीवघनात् = हिरण्यगर्भसेभी
परम् = सर्वोत्कृष्ट
पुरिशयम् = नवद्वारआदि पुरबिषे शयन करने वाले
पुरुषम् = परमपुरुष को
ईक्षते = देखता है
तत् = तिस बिषे
एतौ = ये दोनों
श्लोकौ = मन्त्र
भवतः = प्रमाण हैं

मूलम् ॥

तिस्रोमात्रामृत्युमत्यःप्रयुक्ता अन्योऽन्यसक्ता अनुविप्रयुक्ताःक्रियासुबाह्याभ्यंतरमध्यमासुसम्यक्प्रयुक्तासुनकंपतेज्ञः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

तिस्रः मात्राः मृत्युमत्यः प्रयुक्ताः अन्योन्यसक्ताः अनुविप्रयुक्ताः क्रियासु बाह्याभ्यंतरमध्यमासु सम्यक् प्रयुक्तासु न कम्पते ज्ञः ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ॐकारस्य = प्रणव की
तिस्रः = अकार उकार मकाररूपतीन
मात्राः = मात्रा
अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
प्रयुक्ताः = केवल वरण ध्यानबिषे उपासना कीहुई

मृत्युमत्यः = मृत्युविषय- कहें अर्थात् अपरब्रह्मको प्राप्त करने वालीहैं याने आवागमन मेंही फसाने वाली हैं

+परंतु = परन्तु

सम्यक् यथायोग्य

प्रयुक्तासु = विचार करने पर

बाह्याभ्यंतरमध्यमासुक्रियासु = जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्थावों विषे

अनुविप्रयुक्ताः = विश्वतैजस प्राज्ञरूपसे युक्त हुई

च = और

अन्योन्यसक्ताः = परस्परएकता को प्राप्त हुई

प्रयुक्ताः = ऐसी उपासना इनतीनमात्रावों से की हुई

ज्ञः = उपासक

नकम्पते = भयको नहीं प्राप्त होताहै याने ब्रह्मको ही प्राप्त होताहै

नोट-प्रयुक्ताः प्रथमा विभक्ति है परन्तु अर्थ तृतीया का देता है ऐसेही अनुविप्रयुक्ताः अन्योन्यसक्ताः प्रथमा है परन्तु अर्थ तृतीया का देते हैं ॥

मूलम् ॥

ऋग्भिरेतंयजुर्भिरन्तरिक्षंससामभिर्यत्तत्कवयो वेदयन्ते तमोंकारेणैवायतनेनान्वेति विद्वान्यत्तच्छान्तमजरममृतमभयंपरंचेति ॥ ७ ॥

इति पञ्चमः प्रश्नः ॥

पदच्छेदः॥

ऋग्भिः एतम् यजुर्भिः अन्तरिक्षम् सः सामभिः यत् तत् कवयः वेदयन्ते तम् ॐकारेण एव आयतनेन अन्वेति विद्वान् यत् तत् शान्तम् अजरम् अमृतम् अभयम् परम् च इति॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इति	= इसप्रकार
सः	= वहउपासक
ऋग्भिः	= प्रथममात्रा अकार के अधिष्ठाता ऋग्वेदके मंत्रोंकरके
एतम्	= इसमनुष्यलोक को
नीयते	= प्राप्तकिया जाताहै
यजुर्भिः	= द्वितीयमात्रा उकार केअधिष्ठातायजुर्वेद केमंत्रोंकरके
अंतरिक्षम्	= अंतरिक्ष बिषे चंद्रलोकको
नीयते	= प्राप्तकिया जाता है
सामभिः	= तृतीय मात्रा मकारके अधिष्ठाता सामवेदके मंत्रों करके
यत्तत्	= जिस को
कवयः	= त्रिकालदर्शी लोक
वेदयन्ते	= जानते हैं और बताते हैं
तम्	= उस को याने सत्यलोक को

नीयते = प्राप्तकिया जाताहै
विद्वान् = त्रिमात्रप्रणवकीउपासनाकापूर्णज्ञानी
ॐकारेण = प्रणवके
एव = ही
आयतनेन = द्वारा
यत् = जो
अजरम् = जराकरकेरहित
अमृतम् = मरणकरके रहित
अभयम् = भयकरकेरहित
शान्तम् = शान्त
च = और
परम् = सर्वोत्तमपुरुष
तत् = उसको
अन्वेति = प्राप्तहोताहै
इतिपञ्चमःप्रश्नः ।

मूलम् ॥

अथहैनंसुकेशाभारद्वाजः पप्रच्छ भगवन् हिरण्यनाभः कौशल्योराजपुत्रोमामुपेत्यैतंप्रश्नमपृच्छत् षोडशकलं भारद्वाजपुरुषंवेत्थ तमहंकुमारमब्रुवंनाहमिमंवेदयद्यहमिममवेदिषं कथंतेनावक्ष्यमिति समूलोवाएषपरिशुष्यतियोऽनृतमभिवदाति तस्मान्नार्हाम्यनृतंवक्तुम् सतूष्णींरथमारुह्य प्रवव्राजतंत्वापृच्छामिक्वासौपुरुषइति ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ ह एनम् सुकेशाः भारद्वाजः पप्रच्छ भग-

वन् हिरण्यनाभः कौशल्यः राजपुत्रः माम् उपेत्य एतम् प्रश्नम् अपृच्छत् षोडशकलम् भारद्वाज पुरुषम् वेत्थ तम् अहम् कुमारम् अब्रुवम् न अहम् इमम् वेद यदि अहम् इमम् अवेदिषम् कथम् तेन अवक्ष्यम् इति समूलः वै एषः परिशुष्यति यः अनृतम् अभिवदति तस्मात् न अर्हामि अनृतम् वक्तुम् सः तूष्णीम् रथम् आरुह्य प्रवव्राज तम् त्वा पृच्छामि क्व असौ पुरुषः इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथ	= अब
ह	= प्रसिद्ध
एनम्	= इस पिप्पलादमुनिसे
भारद्वाजः	= भरद्वाजका पुत्र
सुकेशाः	= सुकेशनामक ऋषि
पप्रच्छ	= कहताभया कि
भगवन्	= हे भगवन्
कौशल्यः	= अयोध्यानिवासी

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
हिरण्यनाभः	= हिरण्यनाभ नामा
राजपुत्रः	= क्षत्रिय
माम्	= मेरे समीप
उपेत्य	= आयके
एतम्प्रश्नम्	= इसप्रश्नको
अपृच्छत	= पूछताभया कि
भारद्वाज	= हे भरद्वाज मुनि
षोडशकलम्	= सोलहकला वाले
पुरुषम्	= पुरुषको

वेत्थ = तू जानताहै
तम् = उस
कुमारम् = राजपुत्र से
अहम् = मैं
इति = ऐसा
अब्रुवम् = कहताभया कि
हे राजपुत्र = हेराजकुमार
अहम् = मैं
इमम् = इसषोडशकला वाले पुरुषको
नवेद = नहीं जानता हूं
यदि अहम् = अगर मैं
इमम् = उसपुरुषको
अवेदिषम् = जानता तो
कथम् ते = कैसेतेरेअर्थ
न अवक्ष्यम् = न कहताकिन्तु अवश्य कहता
यः = जो
अनृतम् = मिथ्या को
अभिवदाति = कहता है
एषः = वह
वै = अवश्य
समूलः = मूलसहित
परिशुष्यति = दग्धहोजाताहैअर्थात् पापिष्ठहोता है
तस्मात् = इस लिये
अनृतम् = मिथ्या
वक्तुम् = कहने को
न = नहीं
अर्हामि = योग्यहूं मैं
एवंश्रुत्वा = ऐसा सुनके
सः = वहराजपुत्र
तूष्णीम् = चुपचाप
रथम् = रथमें
आरुथाय = बैठके
प्रवव्राज = चलाजाता भया
+इदानीं = अब
अहम् = मैं
तम् = उसपुरुषको
त्वा = आपसे
इति = ऐसा

पृच्छामि = पूछताहूं कि	पुरुषः = पुरुष
असौ = वह	क्क = कहां है

मूलम् ॥

तस्मैसहोवाच इहैवांतःशरीरेसौम्यसपुरुषोयस्मिन्नेताःषोडशकलाःप्रभवन्तीति ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः ह उवाच इह एव अन्तःशरीरे सौम्य सः पुरुषः यस्मिन् एताः षोडशकलाः प्रभवन्ति इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्मै	= तिस भारद्वाजके प्रति	षोडशकलाः	= नाम पर्यंत षोडशकला
ह	= प्रसिद्ध	प्रभवन्ति	= उत्पन्न होतीहैं और लय भी होती हैं
सः	= वह पिप्पलाद मुनि	सः	= सो
इति	= ऐसा	पुरुषः	= पुरुष
उवाच	= कहता भया कि	इहएव	= इसही
सौम्य	= हे सौम्य	अन्तःशरीरे	= हृत्पुण्डरीकाकाशविषे
यस्मिन्	= जिस बिषे	+ अस्ति	= वर्तमान है
एताः	= ये प्राणादि		

मूलम् ॥

सईक्षांचक्रेकस्मिन्नहमुत्क्रान्तउत्क्रान्तोभवि

ष्यामि कस्मिन्वाप्रतिष्ठिते प्रतिष्ठास्यामीति ३॥

पदच्छेदः ॥

सः ईक्षाम् चक्रे कस्मिन् अहम् उत्क्रान्ते उत्क्रान्तः भविष्यामि कस्मिन् वा प्रतिष्ठिते प्रतिष्ठास्यामि इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	वहपुरुष
सृष्टिविषये	सृष्टिकी रचना बिषे
इति	ऐसा
ईक्षाम्	अवलोकन
चक्रे	करताभया कि
अहम्	मैं
कस्मिन्	किसके
उत्क्रान्ते	निर्गमनमें याने निकलनेपर
उत्क्रान्तः	निकसाहुआ
भविष्यामि	होऊंगा
वा	और
कस्मिन्	किसके
प्रतिष्ठिते	स्थिति में
प्रतिष्ठास्यामि	स्थित रहूंगा

मूलम् ॥

स प्राणमसृजत प्राणाच्छ्रद्धां खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवीन्द्रियम् मनोऽन्नमन्नाद्वीर्य्यं तपोमन्त्राःकर्म्मलोकालोकेषुचनामच ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

सः प्राणम् असृजत प्राणात् श्रद्धाम् खम् वायुः ज्योतिः आपः पृथिवी इन्द्रियम् मनः अन्नम् अन्नात् वीर्यम् तपः मन्त्राः कर्मलोकाः लोकेषु च नाम च ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	= वहपुरुष
प्राणम्	= सब अधिकारियों में मुख्य प्राण को
असृजत	= सृजताभया
प्राणात्	= प्राणसे
श्रद्धाम्	= आस्तिक्य बुद्धिको
खम्	= आकाश को
वायुः	= वायु को
ज्योतिः	= तेज को
आपः	= जल को
पृथिवी	= पृथिवी को
इन्द्रियम्	= दशोंइंद्रियोंको
मनः	= मन को
अन्नम्	= अन्न को
च	= और
अन्नात्	= अन्न परिपाक से

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वीर्य्यम्	= सब कर्मों के साधक बलकोतथाप्रजा उत्पादनसामर्थ्य को
तपः	= तप को
मन्त्राः	= मन्त्रोंको याने ऋक्यजुः साम अथर्व्व वेदों को
कर्म	= अग्निहोत्रआदिक कर्म को
लोकाः	= कर्मोंकेफलोंको
च	= और
लोकेषु	= लोकों बिषे
नाम	= देवदत्तयज्ञदत्तादिनामों को
असृजत	= रचताभया ॥

नोट–वायुः आपः पृथिवी मन्त्राः लोकाः ये प्रथमा विभक्तिके रूपहैं परन्तु इसमन्त्रमें अर्थद्वितीयाविभक्ति का देते हैं ॥

मूलम् ॥

स यथेमानद्यः स्यन्दमानाः समुद्रायणाः समुद्रम्प्राप्यास्तं गच्छन्ति भिद्येते तासां नामरूपे समुद्र इत्येवं प्रोच्यते एवमेवास्य परिद्रष्टुरिमाः षोडशकलास्तं गच्छन्ति भिद्येते तासां नामरूपे पुरुष इत्येवम्प्रोच्यते स एषोऽकलोऽमृतो भवति तदेष श्लोकः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

सः यथा इमा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रायणाः समुद्रम् प्राप्य अस्तम् गच्छन्ति भिद्येते तासाम् नामरूपे समुद्रः इति एवम् प्रोच्यते एवम् एव अस्य परिद्रष्टुः इमा षोडशकलाः पुरुषायणाः पुरुषम् प्राप्य अस्तम् गच्छन्ति भिद्येते तासाम् नामरूपे पुरुषः इति एवम् प्रोच्यते सः एषः अकलः अमृतः भवति तत् एषः श्लोकः ॥ ५ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	वह दृष्टान्त है इस बारमें कि
यथा	जैसे
स्यन्दमानाः	चलती हुईं
समुद्रायणाः	समुद्रविषे गमन करने वाली
इमाः	ये
नद्यः	नदियां
समुद्रम्	समुद्र को
यदा	जब
प्राप्य	प्राप्त होकर
अस्तम्	अभावको
गच्छन्ति	प्राप्त होती हैं

च = और
तासाम् = उन नदियों के
नामरूपे = नाम और रूप दोनों नष्ट होजाते हैं
तदा = तब
केवलम् = केवल
समुद्रः = समुद्र नाम
इति = करके
एवम् = ही
प्रोच्यते = कहाजाता है
एवम्एव = ऐसेही
यदा = जब
अस्यपरिद्रष्टुः = इस साक्षी पुरुषके
इमाः = ये
पुरुषायणाः = पुरुषमें गमन करने वाली
षोडशकलाः = प्राणादि षोडश कला
पुरुषम् = पुरुष को
प्राप्य = प्राप्त होकर
अस्तम् = अभाव को
गच्छन्ति = प्राप्तहोतीहैं
च = और
तासाम् = उन के
नामरूपे = नाम और रूप दोनों
भिद्येते = नष्ट होजाते हैं
तदा = तब
पुरुषः = पुरुष
इति = करके
एवम् = ही
प्रोच्यते = कहाजाता है
+यःएवं विद्वान् = जो उपासक उस पुरुष को इस प्रकार जानता है
सः = सो
एषः = वह उपासक
अकलः = कला रहित
च = और
अमृतः = मरणरहित
भवति = होता है
तत् = इस विषे

एषः = यह आगे वाला | श्लोकः = मंत्रप्रमाण है ॥

मूलम् ॥

अराइवरथनाभौकलायस्मिन्प्रतिष्ठिताः तंवे द्यंपुरुषंवेदयथामावोमृत्युःपरिव्यथाइति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

अराः इव रथनाभौ कलाः यस्मिन् प्रतिष्ठिताः तम् वेद्यम् पुरुषम् वेद यथा मा वः मृत्युः परिव्यथाः इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इव	= जैसे	पुरुषम्	= पुरुषको
रथनाभौ	= रथचक्रनाभि विषे	यूयम्	= तुमसब
अराः	= अराहैउसी प्रकार	इति	=उक्तप्रकारसे
यस्मिन्	=जिसपुरुषविषे	वेद	= जानो
कलाः	= प्राणादिकला	यथा	= जिसकेजानने से
प्रतिष्ठिताः	= स्थित हैं	वः	= तुमको
तम्	= तिस	मृत्युः	= मृत्यु
वेद्यम्	=जाननेयोग्य	मा	= न
		परिव्यथाः	= पीड़ादेवैगी

मूलम् ॥

तानहोवाचैतावदेवाहमेतत्परंब्रह्मवेदनातः परमस्तीति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

तान् ह उवाच एतावत् एव अहम् एतत् परम् ब्रह्म वेद न अतः परम् अस्ति इति ७ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सःपिप्पलादः	वहपिप्पलादआचार्य्य
इति	ऐसा शिक्षा करके
ह	पुनः
तान्	उनशिष्योंसे
उवाच	कहताभया कि
अहम्	मैं
एतत्	इस

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
परम्	पर
ब्रह्म	ब्रह्मको
एतावत्	इतना
एव	ही
वेद	जानताहूं
अतः	इससे
परम्	आगे
कश्चित्	कुछ
न	नहीं
अस्ति	है

मूलम् ॥

तेतमर्चयंतस्त्वंहिनःपितायोऽस्माकमविद्यायाःपारंपारंतारयसीतिनमः परमऋषिभ्योनमःपरमऋषिभ्यः॥ ८ ॥

इति प्रश्नोपनिषद्षष्ठःप्रश्नःसमाप्तोयम् ॥

पदच्छेदः ॥

ते तम् अर्चयन्तः त्वम् हि नः पिता यः अस्माकम् अविद्यायाः परम् पारम् तारयसि इति नमः परमऋषिभ्यः नमः परमऋषिभ्यः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इति	पिप्पलादमुनिकेऐसेउपदेशकोसुनकर
ते	वेकबंधीकात्यायनआदिछओंशिष्य
तम्	उसपिप्पलादगुरु को
अर्चयन्तः	पूजन करते हुये
+इति ऊचुः	ऐसाकहते भये कि
+गुरो	हे गुरो हे भगवन्
हि	निश्चयकरके
त्वम्	आप
नः	हमलोकोंके
पिता	पिता
+असि	हो
यः	जो आप
अस्माकम्	हमको
अविद्यायाः	अविद्यारूप अन्धकारके
परम्	परले
पारम्	किनारे को
तारयसि	पारकरतेभये
अतः	इसउपकार के कारण
परमऋषिभ्यः	विद्यासंप्रदायचलानेवालेतुमसरीकेपरमऋषियोंके अर्थ
नमः	नमस्कार है
परमऋषिभ्यः	परमऋषियोंके अर्थ
नमः	नमस्कार है

इति षष्ठःप्रश्नः

इतिप्रश्नोपनिषत् संपूर्णम्

अशुद्धिः	शुद्धिः	मं.	मू. व भा.	पृष्ठ	
सएकोदेवगन्ध र्वाणामानंदःश्रोत्रि यस्यचाकामहत स्यतेयेसतंदेवगं र्वाणामानन्दः	इतनाकाट देना	३२	मू.	७६ ७७	
श्रोत्रियस्यचाका महतस्यतेयेशतं पितॄणाचिरलो कानामानन्दः	”	”	”	७७	४,५ डंडीर
एकअजानां शतमजानं	एकआजानां शतमाजान	”	”	”	६डंडीर
यएवमवेदमत तिष्ठति	इतनाकाटदेना	३९	भा.	१०३	५,६ डंडीर
एतद्वाअन्नतो	एतद्वाअन्ततो	४४	मू.	११२	
एकदशैकादन	एकादशैकाद शन	५०	मू.	११३	
त्रविंश्शांति	त्रविंश्शति	”	”	”	
वहेंश्शांतिः	वहैॐशांतिः	”	”	”	

प्रश्नोपनिषद्

शुद्धिपत्रिका

अशुद्धिः	शुद्धिः	मू. मं.	पृष्ठ
सौर्य्यांणी	सौर्य्यायणी	१	१
यत्सूर्त्तंचा	यन्मूर्त्तश्चा	५	६
पासते चान्द्र	पासतेतेचान्द्र	९	११
अरवाले	अरावाले	११ भा.	१५
रयिः	रयि	१२ मू.	१५
तस्मादेत	तस्मादेते	१२ मू.	१६
श्रोत्रंच	श्रोत्रञ्च	४	२५
स्तुवन्ति	स्तुन्वन्ति	४	२५
मरताहै	मारताहै	५ भा.	२७
अरास्थितहैं	आरास्थितहैं	६ भा.	२९
ऋषि	ऋषी	८ मू.	३०
श्राद्धविषेहैं	श्राद्धविषे	८ भा.	३१
देहधारणकने	देहधारणकरने	८ भा.	३१
च्छरीरे	च्छरीर	१ मू.	३७
हि	ही	३	५६
—	१० अंकरहगया	१० मू.	६१
मोकार	मोंकार	१ मू.	६८
कलास्तंगच्छंति	कलाःपुरुषायणाः पुरुषं प्राप्यास्तं गच्छन्ति	५ मू.	८४
इसबारमें	इसबारेमें	५ भा.	८४

आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

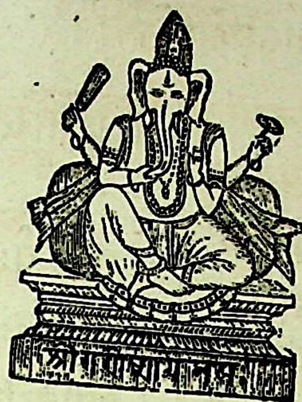
श्रीगणेशायनमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम्। यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यवांक् तीर्थंजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः। षट्चक्रादिविचार सारकुशला नन्दन्ति योगीश्वराः तंवन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् ॥ २ ॥

दो० करों वन्दना ब्रह्मको। जो अनन्त निजरूप ॥
जेहिजानेजगभ्रमसकल। मिटै अन्धतम कूप ॥
नाम रूप जामें नहीं। नहीं जाति अरु भेद ॥
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं। रहित त्रिविध परिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद। ताका करूं विचार ॥
भाषामें तिस अर्थको। लखै सकल संसार ॥
सन्त संगसे जो लख्यो। सो मैं करूं बखान ॥
परमानन्द सहाय ते। जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट। अकबर पुरहै गांव ॥
जन्मभूमि मम जान तू। जालिम सिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है इसके पार होने के लिये उपनिषत् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौकाहै जिसमें बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागरके पार होगये हैं और होते जाते हैं और भविष्यत्काल में होंगे जो मुमुक्षुजनहैं उनके हितार्थ यह भाषा टीका रचीगई है।

इस टीकामें पहिले मूलमन्त्रहै फिर पदच्छेद है फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दियाहै और दक्षिण हस्तकी ओर पदार्थसहित भाषार्थ लिखाहै यदि वाम तरफका लिखा हुआ ऊपर से नीचेतक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा और यदि दक्षिण हस्तके तरफवाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्यदेशिय भाषामें मिलेगा और यदि बायेंतरफ से दहिने तरफ को पढ़ाजावे तो हरएक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलैगा जहांतक होसकाहै प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्तिके अनुसार लिखागयाहै इस टीकाके पढ़ने से संस्कृत विद्याका भी अभ्यास होगा इस टीका में मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पायाहै और मन्त्रका पूरा २ अर्थ उसीके शब्दोंहीसे सिद्ध कियागयाहै अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगई है हां कहीं कहीं ऊपरसे संस्कृत पद मन्त्रके अर्थ स्पष्ट करने के लिये रखागयाहै और उस पदके प्रथम यह+चिह्न लगा दिया गयाहै ताकि पाठक जनोंको विदित होजावै कि यह पद मूलका नहीं है। इस टीकाको बाबू ज़ालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फैजाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गंगादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अल्मोड़ाख्य नगर के रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान् पुरुषों के चरणकमलमें अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धता हो उससे टीकाकर्त्ताको सूचनाकरें ताकि अशुद्धता दूर होजावै॥



अथ मुण्डकोपनिषदि आरम्भ
शान्तिपाठः ॥

मूलम् ॥

ॐ स्वस्तिनाऽइन्द्रोवृद्धश्रवाःस्वस्तिनःपूषाविश्ववेदाःस्वस्तिनस्ताक्ष्योंऽअरिष्टनेमिःस्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

स्वस्ति नः इन्द्रः वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नः ताक्ष्यः अरिष्टनेमिः स्वस्ति नः बृहस्पतिः दधातु ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वृद्धश्रवाः	= बड़ीहैकीर्त्ति जिसकी
इन्द्रः	= ऐसा इन्द्र देवराज

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
नः	= हमारे लिये
स्वस्ति	= अविनाशी सुखको
दधातु	= देवै

+ च = और

विश्ववेदाः = विश्वका जाननेवा-ला याने विश्वका प्रकाशक

पूषा = सूर्य देवता
नः = हमारे अर्थ
स्वस्ति = कल्याण को
+दधातु = देवै
+च = और

अरिष्टनेमिः = कल्याणों से परिपूर्ण
तार्क्ष्यः = गरुड़
नः = हमारे लिये
स्वस्ति = कल्याण को
+दधातु = देवै
+च = और
बृहस्पतिः = बृहस्पति देव-गुरू
नः = हमारे लिये
स्वस्ति = कल्याण को
+दधातु = देवै

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः=हमारे तापत्रयों की शान्ति होवै ॥

अथ अथर्वेदीय मुण्डकोपनिषत् ॥

मूलम् ॥

ब्रह्मा देवानांप्रथमः संबभूवविश्वस्यकर्ता भुवनस्यगोप्ता सब्रह्मविद्यांसर्वविद्याप्रतिष्ठामथर्वा-यज्येष्ठपुत्रायप्राह ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

ब्रह्मा देवानाम् प्रथमः संबभूव विश्वस्य कर्ता भुवनस्य गोप्ता सः ब्रह्मविद्याम् सर्वविद्याप्रतिष्ठाम् अथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
विश्वस्य	सब सृष्टि का
कर्त्ता	कर्त्ता
भुवनस्य	जगत् का
गोप्ता	रक्षक
देवानाम्	इन्द्रादि देवतों में
प्रथमः	प्रधान
ब्रह्मा	धर्मज्ञान वैराग्य ऐश्वर्यकरके संपन्न हिरण्यगर्भ ब्रह्मा

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
संबभूव	उत्पन्न होता भया
सः	सोई
सर्वविद्याप्रतिष्ठाम्	सबविद्याओं में उत्तम
ब्रह्मविद्याम्	आत्मविद्या को
ज्येष्ठपुत्राय	अपने ज्येष्ठ पुत्र
अथर्वाय	अथर्वनामक ऋषि से
प्राह	भलीप्रकारकहता भया

मूलम् ॥

अथर्वणेयांप्रवदेतब्रह्माऽथर्वातां पुरोवाचाङ्गिरे ब्रह्मविद्याम् सभारद्वाजाय सत्यवाहायप्राहभारद्वाजोंऽगिरसेपरावराम् ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

अथर्वणे याम् प्रवदेत ब्रह्मा अथर्वा ताम् पुरा उवाच अङ्गिरे ब्रह्मविद्याम् सः भारद्वाजाय सत्यवाहाय प्राह भारद्वाजः अङ्गिरसे परावराम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
याम्	= जिस आत्मविद्याको
ब्रह्मा	= ब्रह्मा
अथर्वणे	= अथर्वा नामक ऋषिसे
पुरा	= पहिले
प्रवदेत	= कहताभया
ताम्	= उसी
ब्रह्मविद्याम्	= ब्रह्मविद्या को
अथर्वा	= अथर्वाऋषि
अंगिरे	= अंगिरमुनिसे
उवाच	= कहता भया
+च	= और
सः	= वह अंगिरमुनि

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
भारद्वाजाय	= भरद्वाजगोत्र बिषे उत्पन्नहुये
सत्यवाहाय	= सत्यवाह नामक ऋषिसे
प्राह	= कहताभया
इति	= इसप्रकार
परावराम्	= ब्रह्माआदिकोंसे चली आई हुई आत्मविद्याको
भारद्वाजः	= भरद्वाज गोत्र बिषेउत्पन्नहुआ सत्यवाहनामक ऋषि
अंगिरसे	= अंगिरामुनिसे
प्राह	= कहताभया

मूलम् ॥

शौनकोहवैमहाशालोऽगिरसंविधिवदुपसन्नः पप्रच्छकस्मिन्नुभगवोविज्ञाते सर्वमिदंविज्ञातंभवतीति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

शौनकः ह वै महाशालः अंगिरसम् विधिवत् उ-

पसन्नः पप्रच्छ कस्मिन् नु भगवः विज्ञाते सर्वम् इदम् विज्ञातम् भवति इति ३ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
हवै	प्रसिद्ध	उपसन्नः	समीपजाकर
महाशालः	धन कुल विद्यादिसंपन्नश्रेष्ठगृहस्थाश्रम का धारणकरने वाला	इति	ऐसा
शौनकः	शुनकऋषि का पुत्र शौनक	नुपप्रच्छ	पूछताभया कि
विधिवत्	यथाविधि याने गुरुशिष्यभाव से	भगवः	हेभगवन्
अङ्गिरसम्	अंगिरामुनि के	कस्मिन्	किसएकके
		विज्ञाते	विशेषकरके जाननेपर
		इदम्	सबकार्यकारणकाविवेक
		विज्ञातम्	भलीप्रकार जाना हुआ
		भवति	होताहै

मूलम् ॥

तस्मैसहोवाचद्वेविद्येवेदितव्य इतिहस्मयद्ब्रह्मविदोवदन्तिपराचैवापराच ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः ह उवाच द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म यत् ब्रह्मविदः वदन्ति परा च एव अपरा च ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्मै	= उसशौनकमुनिसे
ह	= विचारकरके
सः	= वहअंगिराऋषि
उवाच	= कहताभयाकि
ह	= हेसौम्य
यत्	= जो
परा	= पराविद्याहै

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	= और
+ यत्	= जो
अपरा चएव	= अपराविद्याहै
द्वेविद्ये	= येदोनों विद्या
वेदितव्ये	= जाननेयोग्यहैं
इति	= ऐसा
ब्रह्म	= ब्रह्मवेत्तालोक
वदन्तिस्म	= कहतेभये

मूलम् ॥

तत्रापराऋग्वेदो यजुर्वेदःसामवेदाऽथर्ववेदः शिक्षाकल्पोव्याकरणं निरुक्तंछन्दोज्योतिषमिति अथपरायययातदक्षरमधिगम्यते ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

तत्र अपरा ऋग्वेदः यजुर्वेदः सामवेदः अथर्ववेदः शिक्षा कल्पः व्याकरणम् निरुक्तम् छन्दः ज्योतिषम् इति अथ परा यया तत् अक्षरम् अधिगम्यते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्र	= पूर्वोक्तदोनों विद्यावोंमेंसे

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ऋग्वेदः	= ऋग्वेद
यजुर्वेदः	= यजुर्वेद

सामवेदः = सामवेद
अथर्ववेदः = अथर्ववेद

शिक्षा = { शिक्षा(इस मेंअक्षरोंकी उत्पत्ति के स्थान और स्वर आदि कोंके उच्चारणकाविवेकहैकर्त्ताइस्केपाणिनि मुनि हैं)

व्याकरणम् = { व्याकरण(इस में धातु प्रत्यय आदि शब्दोंका विवेक है कर्त्ता इस्के पाणिनि मुनि हैं)

निरुक्तम् = { निरुक्त(इस मेंवैदिकऔरलौकिकशब्दोंका और लिंगोंकाविवेक है कर्त्ताइसकेयास्कमुनि हैं

कल्पः = { विधिसूत्र (इस में गर्भाधान आदि संस्कारों की और अग्नि होत्रादि कर्मों की कर्त्तव्यता है कर्त्ता इसके कात्यायन मुनि हैं

छन्दः = { छंद इस में गायत्रीआदिछन्दों का विवेक है कर्त्ताइसके शेषनाग हैं

ज्योतिषम् = ज्योतिष इसमें सूर्यचन्द्रमाआदि ज्योतिश्चक्रगतिद्वाराकालका ज्ञान है कर्ताइसकेसूर्यभगवान् औरगर्गमुनि हैं

इति = यहसब

अपरा = अपराविद्याहै

अथ = और

यया = जिसविद्याद्वारा

तत् = वहवेदांतप्रतिपाद्य

अक्षरम् = अविनाशी परब्रह्म(जिसकाव्याख्यानअगलेमंत्र विषे है)

अधिगम्यते = पायाजाताहै

+ सा = वह

परा = पराविद्याहै

मूलम् ॥

यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षुः श्रोत्रंतदपाणिपादम् । नित्यंविभुंसर्वगतंसुसूक्ष्मंतदव्ययंयद्भूतयोनिंपरिपश्यन्तिधीराः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

यत् तत् अद्रेश्यम् अग्राह्यम् अगोत्रम् अवर्णम् अचक्षुः श्रोत्रम् तत् अपाणिपादम् नित्यम् विभुम् सर्वगतम् सुसूक्ष्मम् तत् अव्ययम् यत् भूतयोनिम् परिपश्यन्ति धीराः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	जो
तत्	वह
अद्रेश्यम्	ज्ञानेन्द्रियोंकाअविषयहै
अग्राह्यम्	कर्मेन्द्रियोंकरकेअगृहीतहै
अगोत्रम्	मूलकारणरहितहै
अवर्णम्	नीलपीतादि वर्णरहित अथवाब्राह्मणादि जाति रहित है
अचक्षुःश्रोत्रम्	चक्षुश्रोत्रादि ज्ञानइन्द्रियरहित है
अपाणिपादम्	हस्तपादादिकर्मेन्द्रिय रहित है

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
नित्यम्	अविनाशीहै
विभुम्	ब्रह्मासेस्थावरपर्यंतसर्वव्यापी है
च	और
सुसूक्ष्मम्	आकाशवत् अतिसूक्ष्महै
सर्वगतम्	सबमें अनुगत है
अतः	इसलिये
तत्	वह
अव्ययम्	सदाएकरूप नाशरहित है
यत्	जिसको
धीराः	विवेकीपुरुष
भूतयोनिम्	भूतादिकोंकाकारण
ज्ञात्वा	जानकरके
परिपश्यन्ति	सर्वओर सेदेखते हैं

मूलम् ॥

यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्यामोषधयः संभवन्ति यथा सतः पुरुषात्केशलोमानि तथाऽक्षरात्संभवतीह विश्वम् ७ ॥

पदच्छेदः ॥

यथा ऊर्णनाभिः सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्याम् ओषधयः सम्भवन्ति यथा सतः पुरुषात् केशलोमानि तथा अक्षरात् सम्भवति इह विश्वम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यथा	= जैसे
ऊर्णनाभिः	= मकड़ी
सृजते	= अपनी इच्छा सेनाभिस्थित सूत्रजालको बाहर निकालकर विस्तारकरतीहै
च	= औरफिर
गृह्णते	= स्वइच्छासे ग्रहणकरतीहै यानी उदरगत करलेतीहै
च	= और

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यथा	= जैसे
पृथिव्याम्	= पृथिवीविषे
ओषधयः	= अन्नादिसब औषधियां
सम्भवन्ति	= उत्पन्नहोती हैंऔर पुनः उसीमेंलीन होजाती हैं
च	= और
यथा	= जैसे
सतः पुरुषात्	= जीवितपुरुष से
केशलोमानि	= केश और लोम

सम्भवन्ति = उत्पन्न होते हैं
तथा = वैसे ही
इह = इस संसारमंडल बिषे
विश्वम् = समस्त जगत्
अक्षरात् = पूर्वोक्त अविनाशी परमात्मा से
संभवति = ऊपर कहे हुये दृष्टान्तों के अनुसार उत्पन्न होता है और उसी आत्मा में फिर लय होता है

मूलम् ॥

तपसा चीयते ब्रह्म ततोऽन्नमभिजायते अन्नात्प्राणो मनः सत्यं लोकाः कर्मसु चामृतम् ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

तपसा चीयते ब्रह्म ततः अन्नम् अभिजायते अन्नात् प्राणः मनः सत्यम् लोकाः कर्मसु च अमृतम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

\+ यदा = जब
\+ पूर्वम् = प्रथम
ब्रह्म = परब्रह्म
तपसा = सृष्टिविषयक ज्ञानशक्ति करके

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

चीयते = स्थूलता को प्राप्त होता है याने बीजवत् अंकुरित होने को गर्भित होता है
\+ तदा = तब

ततः = उसब्रह्मसे
अन्नम् = अव्याकृतयाने प्रकृति
अभिजायते = उत्पन्नहोतीहै
अन्नात् = अव्याकृतसे
प्राणः = सूत्रात्माहिरण्य- गर्भ
अभिजायते = उत्पन्नहोताहै
प्राणात् = सूत्रात्माहिरण्य गर्भसे
मनः = संकल्पविकल्प रूपमन
अभिजायते = उत्पन्नहोताहै
मनसः = मनसे
सत्यम् = अंडसृष्टिपूर्वक आकाशादिपञ्चक
अभिजायते = उत्पन्नहोताहै

सत्यात् = आकाशादिपञ्च- कसे
लोकाः = भूरादिसप्त लोक
अभिजायन्ते = उत्पन्न हो- ते हैं
लोकेषु = लोकों के बिषे
कर्माणि = वर्णाश्रमों के कर्म
अभिजायन्ते = उत्पन्न हो- ते हैं
च = और
कर्म्मसु = कर्मों के बिषे
अमृतम् = अविनाश कर्मफल
अभिजायते = उत्पन्न हो- ता है

मूलम् ॥

यःसर्वज्ञःसर्वविद्यस्यज्ञानमयंतपःतस्मादेतद्ब्रह्म नामरूपमन्नंचजायते ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

यः सर्वज्ञः सर्ववित् यस्य ज्ञानमयम् तपः त-स्मात् एतत् ब्रह्म नाम रूपम् अन्नम् च जायते ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

यः = जो पूर्वोक्त लक्षण वाला परमात्मा
सर्वज्ञः = सामान्यतासे सबका जानने वाला है
+ च = और
सर्ववित् = विशेषता से सबकाज्ञाताहै
च = और
यस्य = जिसका
ज्ञानमयम् = ज्ञान से परिपूर्ण

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

तपः = सृष्टिविषयक विचार है
तस्मात् = उस से
एतत् = यह सृष्टिका उपादानकारण
ब्रह्म = हिरण्यगर्भ
च = और
नाम = नाम
रूपम् = रूप
च = और
अन्नम् = भोग्यवस्तु
जायते = सब उत्पन्न होता है

इति प्रथममुण्डके प्रथमः खण्डः ॥

मूलम् ॥

तदेतत्सत्यंमंत्रेषुकर्माणि कवयोयान्यपश्यं-स्तानित्रेतायांबहुधासंततानितान्याचरथनियतंस-त्यकामाएषवःपन्थाःस्वकृतस्यलोके ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

तत् एतत् सत्यम् मन्त्रेषु कर्म्माणि कवयः यानि अपश्यन् तानि त्रेतायाम् बहुधा सन्ततानि तानि आचरथ नियतं सत्यकामाः एषः वः पन्थाः स्वकृतस्य लोके ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
हेशिष्याः	हे शिष्यो
कवयः	वसिष्ठादि ऋषीश्वर
मन्त्रेषु	अपर विद्याके मन्त्रों बिषे
यानि	जिन
कर्माणि	अग्निहोत्रादि कर्मों को
अपश्यन्	देखतेभये याने अनुष्ठान करते भये
तत्	वह
एतत्	यह अग्निहोत्रादि कर्मों का अनुष्ठान
सत्यम्	स्वर्गफलका साधनहै
च	और
तानि	वेअग्निहोत्र आदिकर्म
त्रेतायाम्	वेदत्रयबिषे
बहुधा	अनेकप्रकार से
सन्ततानि	प्रवृत्तहैं
+ यूयम्	तुमलोक
सत्यकामाः	यथायोग्य फलकीकामनावाले
तानि	उनकर्मोंको
नियतम्	नित्य
आचरथ	अनुष्ठानकरो
+हि	क्योंकि
स्वकृतस्य	अपनेकिये हुयेकर्मके

लोके = फलकी प्राप्ति बिषे	एषः = यही
वः = तुम्हारे लिये	पन्थाः = मार्ग
	+अस्ति = है

मूलम् ॥

यदालेलायतेह्यर्चिः समिद्धेहव्यवाहनेतदाऽज्यभागावंतरेणाहुतीःप्रतिपादयच्छ्रद्धयाहुतम् ॥

पदच्छेदः ॥

यदा लेलायते हि अर्चिः समिद्धे हव्यवाहने तदा आज्यभागौ अन्तरेण आहुतीः प्रतिपादयेत् श्रद्धया हुतम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यदा	= जब	+ दत्त्वा	= देकर
समिद्धे	= सम्यक्प्रज्वलित	अन्तरेण	= अग्निकुण्ड केमध्यबिषे
हव्यवाहने	= अग्निबिषे	श्रद्धया	= श्रद्धापूर्वक
अर्चिः	= ज्वाला	आहुतीः	= आहुतियों को
लेलायते	= भलीप्रकार उठरहीहै	प्रतिपादयेत्	= प्रतिपादन करै यानेदेवे
तदा	= तब	तत्	= ऐसा होम
आज्य भागौ	= अग्निकेदक्षिण और वाम पार्श्व में याने बगल में आज्यभागों को	हुतम्	= श्रेष्ठहोमहोताहै

नोट–आज्यभागौ आघारभाग और आज्यभाग दोशब्दहैं आघारभागवहहै जो होमके प्रथम अग्नि के दक्षिण पार्श्वमें आहुती दीजाय और आज्यभाग वहहै जो अग्निकुण्डके वामपार्श्वमेंहोमदियाजाय पीछे इनके प्रधान होमउद्देश्यनिमित्तमध्य कुण्ड में दियाजाय ॥

मूलम् ॥

यस्याग्निहोत्रमदर्शमपौर्णमासचतुर्मास्यमनाग्रयणमतिथिवर्जितञ्च अहुतमवैश्वदेवमविधिनाहुतमासप्तमांस्तस्यलोकान् हिनस्ति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

यस्य अग्निहोत्रम् अदर्शनम् अपौर्णमासम् अचतुर्मास्यम् अनाग्रपणम् अतिथिवर्जितम् च अहुतम् अवैश्वदेवम् अविधिना हुतम् आसप्तमान् तस्य लोकान् हिनस्ति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यस्य	जिस अग्निहोत्रीका		विशेषविधि कर के रहित है
अग्निहोत्रम्	अग्निहोत्रकर्म	अपौर्णमासम्	पूर्णमासीकोविशेषविधिसे रहित है
अदर्शम्	अमावास्याको		

अचातुर्मास्यम् = चातुर्मास्यइष्टिसेरहित है अर्थात् श्रावणादि चारमहीनोंमें विशेष होमविधानसे रहितहै

अनाग्रहम् = शरत् वसन्त ऋतुविशेष नवान्न इष्टि करके रहित है

अतिथिवर्जितम् = अतिथिकीसेवासेवर्जितहै

च = और

अहुतम् = सायंप्रातःहोम करके रहित है

अवैश्वदेवम् = नित्यबलिवैश्वदेवसे वर्जितहै

अथवा = अथवा

अविधिनाहुतम् = विधि करके विरुद्धहोम कियागया है

तस्य = ऐसे अग्निहोत्रीका अग्निहोत्रकर्म

आसप्तमान् = भूरादिसत्यलोकपर्यन्त

लोकान् = लोकों को

हिनस्ति = नष्ट करता है

मूलम् ॥

कालीकरालीच मनोजवाच सुलोहितायाच सुधूम्रवर्णा स्फुलिङ्गिनी विश्वरूपीचदेवी लेलायमानाइतिसप्तजिह्वाः ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा स्फुलिंगिनी विश्वरूपी च देवी लेलायमानाः इति सप्तजिह्वाः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
या	जो
काली	काली
च	और
कराली	कराली
च	और
मनोजवा	मनोजवा
च	और
सुलोहिता	सुलोहिता
च	और
सुधूम्रवर्णा	सुधूम्रवर्णा
+ च	और
स्फुलिंगिनी	स्फुलिंगिनी
+ च	और

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
देवीविश्वरूपी	देवी विश्वरूपी
इति	ऐसे नामोंकरके प्रसिद्ध हैं
ताः	सोई
अग्नेः	अग्निकी
सप्त	सात
लेलायमानाः	होमद्रव्यके ग्रहण करनेको लय लय करनेवाली
जिह्वाः	जिह्वा हैं

मूलम् ॥

एतेषुयश्चरतेभ्राजमानेषु यथाकालंचाहुतयो ह्याददायन्तंनयंत्येताः सूर्यस्यरश्मयोयत्रदेवानां पतिरेकोऽधिवासः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

एतेषु यः चरते भ्राजमानेषु यथा कालम् च आहु-

तयः हि आददायन् तम् नयन्ति एताः सूर्यस्य रश्मयः यत्र देवानाम् पतिः एकः अधिवासः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च यः	= और जो हवनकर्त्ता	रश्मयः	= किरणरूप
भ्राजमानेषु	= प्रज्वलित	भूत्वा	= होकर
एतेषु	= अग्निकी इनसातजिह्वाओं बिषे	तम्	= उसअग्निहोत्रीको
यथाकालम्	= समयअनुकूल और विधिवत्	आददायन्	= लेकर
चरते	= होमकरताहै	तत्र	= उसलोकबिषे
हि	= निश्चयकरके	नयन्ति	= प्राप्तकरतीहैं
एताः	= वे	यत्र	= जिस लोक बिषे
आहुतयः	= आहुतियां	देवानाम्	= देवतों का
सूर्यस्य	= सूर्यके	एकः	= मुख्य
		पतिः	= स्वामि इन्द्र
		अधिवासः	= निवासकरताहै

मूलम्॥

एह्येहीतितमाहुतयःसुवर्चसःसूर्यस्यरश्मिभिर्यजमानंवहन्ति प्रियांवाचमभिवदन्त्योऽर्चयंत्यएषवःपुण्यःसुकृतोब्रह्मलोकः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

एहि एहि इति तम् आहुतयः सुवर्चसः सूर्यस्य रश्मिभिः यजमानम् वहन्ति प्रियाम् वाचम् अभिवदन्त्यः अर्चयन्त्यः एषः वः पुण्यः सुकृतः ब्रह्मलोकः ६ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सुवर्चसः	प्रकाशमान हैं तेज जिन के ऐसी
आहुतयः	आहुतियां
एहिएहिइति	आवो आवो इसप्रकार
आह्वयन्त्यः	बुलाती हैं
च	और
अर्चयन्त्यः	आदरकरती हैं कि
वः	तुम्हारे
पुण्यः=पुण्यै	पुण्योंकरके
सुकृतः	साधन कियाहुआ यानीभली प्रकारप्राप्त कियाहुआ
एषः	यह
ब्रह्मलोकः	स्वर्गलोकहै
इति	ऐसी
प्रियाम्	प्रिय
वाचम्	वाणीको
अभिवदन्त्यः	कहतीहुईं
सूर्यस्य	सूर्यके
रश्मिभिः	किरणोंद्वारा
तम्	उस
यजमानम्	यजमानको यानेयज्ञकर्ताको
+मृतेः पश्चात्	मरनेपीछे
वहन्ति	स्वर्गादिलोकोंविषेप्राप्त करती हैं

मूलम् ॥

प्लवाह्येतेअदृढायज्ञरूपाअष्टादशोक्तमवरंयेषु कर्मएतच्छ्रेयोयेऽभिनन्दंतिमूढा जरामृत्युंतेपुनरेवापियन्ति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

प्लवाः हि एते अदृढाः यज्ञरूपाः अष्टादश उक्तम् अवरम् येषु कर्म एतत् श्रेयः ये अभिनन्दन्ति मूढाः जरामृत्युम् ते पुनः एव अपियन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
येषु	= जिनयज्ञआदिकर्मोंकेविषे	अदृढाः	= नाशवान्
अवरम	= अश्रेष्ठ	प्लवाः	= नौकाहैं
कर्म	= कर्म	एतत्	= यह कर्ममार्ग
उक्तम्	= अपराविद्या करकेकहागयाहै	श्रेयः	= कल्याणकारकहै
तेषु	= उनबिषे	इति	= ऐसा
हि	= निश्चयकरके	+ज्ञात्वा	= जानकर
एते	= ये	ये	= जो
अष्टादश	= अठारहअर्थात् १६ ऋत्विक् १यजमान १ उस्कीपत्नी	मूढाः	= मूर्ख
यज्ञरूपः	= यज्ञकेसाधक	अभिनन्दन्ति	= हर्षितहोतेहैं
		ते	= वे
		पुनःएव	= फिरफिर
		जरामृत्युम्	= जरामरणभावको
		अपियन्ति	= प्राप्तहोतेहैं

मूलम् ॥

अविद्यायामन्तरेवर्तमानाः स्वयंधीराःपंडितम्मन्यमानाः जंघन्यमानाःपरियन्तिमूढाअंधेनेव नीयमानायथाऽन्धाः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

अविद्यायाम् अन्तरे वर्त्तमानाः स्वयम् धीराः पंडितम्मन्यमानाः जङ्घन्यमानाः परियन्ति मूढ़ाः अन्धेन इव नीयमानाः यथा अन्धाः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ये	जो लोक
अविद्यायाम्	अविद्याके
अन्तरे	बिषे
वर्त्तमानाः	विद्यमान हैं
च	और
यथास्वयम्	हमहीं
धीराः	बुद्धिमान
पण्डितम्मन्यमानाः	पण्डित हैं ऐसाअपनेकोमाननेवालेहैं

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ते	वे
मूढाः	मूर्ख
जंघन्यमानाः	जन्म जरा व्याधिआदि दुःखोंसे पीड़ित होते हुये
परियन्ति	जन्ममरण भावमें ऐसे भ्रमते हैं
इव	जैसे
अन्धाः	अंधे लोक
अंधेन	अंधेपुरुषकरके

नीयमानाः = लेजाये जाते हुये	+गर्तादिषु = गढ़े आदिकोंमें
	+पतन्ति = गिरतेहैं और क्लेश उठाते हैं

मूलम् ॥

अविद्यायांबहुधावर्तमानावयंकृतार्था इत्यभिमन्यंतिबालाःयत्कर्मिणोन प्रवेदयन्तिरागात्तेनातुराःक्षीणलोकाश्च्यवन्ते ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

अविद्यायाम् बहुधा वर्त्तमानाः वयम् कृतार्थाः इति अभिमन्यन्ति बालाः यत् कर्मिणः न प्रवेदयन्ति रागात् तेन आतुराः क्षीणलोकाः च्यवन्ते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	= जो	वयम्	= हमहीं
कर्मिणः	= कर्मीलोक	कृतार्थाः	= कृतकृत्य हैं
बहुधा	= अनेक प्रकारके	इति	= ऐसा
अविद्यायाम्	= अविद्या के बिषे	अभिमन्यन्ति	= अभिमान करतेहैं
वर्तमानाः	= वर्तमान हैं	च	= और
+च	= और	रागात्	= कर्मफल की प्रीतिकेकारण

न प्रवेदयन्ति = कर्मफल के भोगके अंत्य विषे अपने पतन को नहीं जानते हैं
तेन = ऐसे अज्ञानकरके
आतुराः = पीड़ित होतेहुये
क्षीणलोकाः = कर्मफल की समाप्तिहोने से क्षीणहुये हैं लोक जिनके ऐसे
+ ते = वे
बालाः = मूढ़
च्यवन्ते = स्वर्गादि लोक से च्युत होते हैंयानेमनुष्य लोकादि अधोलोक को प्राप्तहोतेहैं

मूलम् ॥

इष्टापूर्त्तंमन्यमानावरिष्ठंनान्यच्छ्रेयोवेदयन्तेप्रमूढाः नाकस्यपृष्ठेतेसुकृतेनुभूत्वेमंलोकंहीनतरञ्चाविशन्ति ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

इष्टापूर्तम् मन्यमानाः वरिष्ठम् न अन्यत् श्रेयः वेदयन्ते प्रमूढाः नाकस्य पृष्ठे ते सुकृते अनुभूत्वा इमम् लोकम् हीनतरम् च आविशन्ति ॥

+ये = जोकर्मीलोक
इष्टम् = यज्ञअग्निहोत्रादिश्रौतकर्मको
+च = और
पूर्तम् = वापीकूपतडागादिस्मार्तकर्मकोही
वरिष्ठम् = श्रेष्ठ
मन्यमानाः = माननेवालेहैं
+च = और
अन्यत् = आत्मज्ञान
श्रेयः = श्रेयकासाधनहै
+इति = ऐसा
न = नहीं
वेदयन्ते = जानते हैं
ते = वे
प्रमूढाः = अतिमूर्ख
नाकस्य = स्वर्गके
पृष्ठे = मध्यविषे
सुकृते = सुकृतम् = कर्मफलको
अनुभूत्वा = भोगकरके
+कर्मफलक्षये = कर्मफलकेक्षयहोनेपर
इमम् = इस
लोकम् = मनुष्यलोकको
च = या
हीनतरम् = पशुयोनिनरकआदिहीनलोकको
आविशन्ति = प्राप्तहोतेहैं॥

मूलम्॥

तपःश्रद्धेयेह्युपवसन्त्यरण्येशान्ताविद्वांसोभैक्ष्यचर्यांचरन्तःसूर्यद्वारेणतेविरजाः प्रयान्तियत्रामृतःसपुरुषोह्यव्ययात्मा॥ ११॥

पदच्छेदः॥

तपः श्रद्धे ये हि उपवसन्ति अरण्ये शान्ताः विद्वांसः भैक्ष्यचर्याम् चरन्तः सूर्यद्वारेण ते विरजाः

प्रयान्ति यत्र अमृतः सः पुरुषः हि अव्ययात्मा॥११॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
हि	= निश्चयकरके
शान्ताः	= ज्ञानहैप्रधान जिनको ऐसे
ये	= जो अपराविद्याकेउपासक
विद्वांसः	= विद्वान्गृहस्थी हैं
+च	= और
+ये	= जो
भैक्ष्यचर्याम्	= भिक्षाचारको
चरन्तः	= धारणकरतेहुये
अरण्ये	= वानप्रस्थाश्रमविषे
तपःश्रद्धे	= तप नाम शास्त्रोक्त स्वाश्रमधर्म्मऔरश्रद्धानामहिरण्यगर्भकीउपासनाको

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
उपवसन्ति	= अनुष्ठानकरते हैं
ते	= वे
विरजाः = विरजसः	= शुद्धकर्म्मकेआचरणसे निर्म्मलहोतेहुये
सूर्यद्वारेण	= उत्तरायणमार्गद्वारा
तत्र	= उससत्यलोकविषे
प्रयान्ति	= प्राप्त होते हैं
यत्र	= जिस लोकविषे
अमृतः	= अमृतस्वरूपप्रथमउत्पन्नहुवा
अव्ययात्मा	= अविनाशीस्वभाव

वाला सः = वह	पुरुषः = हिरण्यगर्भ पुरुषस्थित है

मूलम् ॥

परीक्ष्यलोकान्कर्मचितान्ब्राह्मणोनिर्वेदमाया
न्नास्त्यकृतःकृतेन तद्विज्ञानार्थंसगुरुमेवाभिगच्छे
त्समित्पाणिःश्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठम् १२ ॥

पदच्छेदः ॥

परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणः निर्वेदम्
आयात् न अस्ति अकृतः कृतेन तद्विज्ञानार्थम्
सः गुरुम् एव अभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियम्
ब्रह्मनिष्ठम् १२ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एवम् =	इसप्रकार	+ येपरिणामेनश्वराःजन्मजरामरणदाः	जो परिणाममें नाशमान और जन्म जरामरण के देनेवाले हैं
कर्मचितान् =	कर्मोंकरके प्राप्त	+ तान् =	उनको
लोकान् =	दक्षिणायनऔरउत्तरायणमार्गसे पानेयोग्य स्वर्गादि लोकों को	परीक्ष्य =	भली प्रकार से विचार करके

ब्राह्मणः = मुमुक्षुपुरुष
निर्वेदम् = वैराग्यको
आयात् = दृढ़तासेप्राप्तकरै
+ यतः = जिस कारण
अकृतः = कर्मरहितनित्य रूपपरमात्मा
कृतेन = कर्मकरके
नअस्ति = प्राप्त होनेयोग्य नहीं है
+ अतः = इसीकारण
सः = वह विचारवान् मुमुक्षु पुरुष
तद्विज्ञानार्थम् = उसपरमात्मा के जाननेके अर्थ
समित्पाणिः = गुरुपूजाकी सामग्रीकोहाथमेंलेकर
श्रोत्रियम् = वेदवेदान्तों का पारंगत
+ च = और
ब्रह्मनिष्ठम् = आत्मज्ञान बिषे निपुण
गुरुम्एव = गुरुकेही
अभिगच्छेत = शरणमें जावे

मूलम् ॥

तस्मै सविद्वानुपसन्नायसम्यक् प्रशान्तचित्ताय शमान्विताययेनाक्षरं पुरुषंवेदसत्यंप्रोवाचतांतत्त्वतोब्रह्मविद्याम् १३ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः विद्वान् उपसन्नाय सम्यक् प्रशान्तचित्ताय शमान्विताय येन अक्षरम् पुरुषम् वेद सत्यम् प्रोवाच ताम् तत्त्वतः ब्रह्मविद्याम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सम्यक्प्रशान्तचित्ताय	= दृढ़वैराग्य करकेविरक्तहै चित्त जिसका	येन = यया	= जिस विद्या करके
+ च	= और	सत्यम्	= सत्य
शमान्विताय	= बाह्याभ्यंतरकामनाओं से विरक्तहै जो ऐसे	अक्षरम्	= अविनाशी
उपसन्नाय	= शरण में आये हुये	पुरुषम्	= परमात्मा को
तस्मै	= उस शिष्य के अर्थ	तत्त्वतः	= यथार्थ
		वेद = विद्यात्	= यहजानसकै
		तांब्रह्मविद्याम्	= उस ब्रह्मविद्या को
		सः	= वह
		विद्वान्	= श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरु
		प्रोवाच = ब्रूयाद्	= उपदेशकरै

इति प्रथममुण्डके द्वितीयःखंडः॥

इति प्रथममुंडक भाषा टीका समाप्ता॥

मूलम्॥

तदेतत्सत्यंयथासुदीप्तात् पावकाद्विस्फुलिंगाः सहस्रशःप्रभवन्तेसरूपाःतथाऽक्षराद्विविधाःसौम्य भावाःप्रजायन्तेतत्रचैवापियन्ति॥ १॥

पदच्छेदः ॥

तत् एतत् सत्यम् यथा सुदीप्तात् पावकात् विस्फुलिङ्गाः सहस्रशः प्रभवन्ते सरूपाः तथा अक्षरात् विविधाः सौम्य भावाः प्रजायन्ते तत्र च एव अपि यन्ति ॥ १ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सौम्य	हे सौम्य शौनक	सहस्रशः	अनेक प्रकारकी
तत्	वह	विस्फुलिंगाः	चिनगारियां
एतत्	यह अक्षर और अक्षरसे अतीत पुरुष	प्रभवन्ते	उत्पन्न होती हैं
सत्यम्	परमार्थ करके सत्य है	तथा	तैसे ही
यथा	जैसे	अक्षरा	मायोपाधिपुरुष याने ईश्वरसे
सुदीप्तात्	भली प्रकार प्रज्वलित	विविधाः	अनेक देहोपाधि
पावकात्	अग्नि से	भावाः	जीव
सरूपाः	अग्निके समान	प्रजायन्ते	उत्पन्न होते हैं
		च	और
		तत्र एव	उसी ईश्वर में
		अपियन्ति	लीन होजाते हैं

मूलम् ॥

दिव्योह्यमूर्तः पुरुषः सबाह्याभ्यन्तरोह्यजः

अप्राणोह्यमनाः शुभ्रो ह्यक्षरात्परतःपरः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

दिव्यः हि अमूर्त्तः पुरुषः स बाह्याभ्यन्तरः अ-जः अप्राणः हि अमनाः शुभ्रः हि अक्षरात् प-रतः परः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः =	वहपरमपुरुष
हिहिहि =	अत्यन्त नि-श्चय करके
दिव्यः =	अलौकिक और स्वयं प्रकाशहै
अमूर्त्तः =	रूपरहितहै
पुरुषः =	परिपूर्णऔर सब शरीरों बिषे शयन करनेवालाहै
सबाह्याभ्य-न्तरः =	चराचर ज-गत्के बाह्या भ्यन्तर बिषे व्याप्तहै
अजः =	अजन्माहै
अप्राणः =	चलनात्मक प्राणवायु-रहित है अ-र्थात् कर्मे-न्द्रियों से र-हित है
अमनाः =	संकल्पविक-ल्पात्मकमन से रहित है यानी ज्ञान इन्द्रियों से रहितहै
शुभ्रः =	सर्वउपाधि-यों से रहित होनेकेकारण शुद्धहै

अतः = इसीकारण	+ च = और
अक्षरात् = नामरूप उपाधिका बीजभूत हिरण्यगर्भ से	परतः = मायोपाधि ईश्वरसे भी
	परः = परे है

मूलम् ॥

एतस्माज्जायते प्राणोमनः सर्वेन्द्रियाणि च खंवायुर्ज्योतिरापः पृथिवीविश्वस्यधारिणी ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

एतस्मात् जायते प्राणः मनः सर्वेन्द्रियाणि च खम् वायुः ज्योतिः आपः पृथिवी विश्वस्य धारिणी ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एतस्मात् = उसीसविशेष पुरुषसे	ज्योतिः = तेज
प्राणः = प्राण	आपः = जल
मनः = मन	च = और
सर्वेन्द्रियाणि = दशोंइन्द्रियां	विश्वस्य = सबको
खम् = आकाश	धारिणी = धारण करने वाली
वायुः = वायु	पृथिवी = पृथिवी
	जायते = उत्पन्न होतीहैं

नोट = जायते क्रियाका सम्बन्ध हरएक शब्द प्राणादि से है जैसे प्राणः जायते ॥

मूलम् ॥

अग्निर्मूर्द्धाचक्षुषी चन्द्रसूर्यौ दिशःश्रोत्रेवाग्वि वृताश्चवेदाःवायुः प्राणो हृदयंविश्वमस्यपद्भ्यां पृथिवीह्येषसर्वभूतान्तरात्मा ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

अग्निः मूर्द्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ दिशः श्रोत्रे वाग्विवृताः च वेदाः वायुः प्राणः हृदयम् विश्वम् अस्य पद्भ्याम् पृथिवी हि एषः सर्वभूतान्तरात्मा ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अस्य	= इसविराट्पुरुषका	च	= और
अग्निः	= स्वर्गलोक	यस्य	= जिसका
मूर्द्धा	= मस्तकहै	वायुः	= वायु
चन्द्रसूर्यौ	= चन्द्रमा और सूर्य	प्राणः	= प्राण है
चक्षुषी	= दोनोंनेत्र हैं	विश्वम्	= समस्त विश्व
दिशः	= दशोंदिशा	हृदयम्	= अन्तःकरणहै
श्रोत्रे	= दोनोंकरण हैं	पृथिवी	= पृथिवी
च	= और	यस्य	= जिसके
वेदाः	= सब वेद	पद्भ्याम्	= चरणों से
वाग्विवृताः	= उसकी विस्तृत वाणी है	जाता	= उत्पन्नहुई है
		एषः	= वही सविशेष पुरुष

हि = निश्चय करके | सर्वभूतान्तरात्मा = { संपूर्णभूतोंका अंतरात्मा है

मूलम् ॥

तस्मादग्निःसमिधोयस्यसूर्यः सोमात्पर्जन्य ओषधयःपृथिव्याम् पुमान्रेतःसिंचतियोषितायां बह्वीःप्रजाः पुरुषात्सम्प्रसूताः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मात् अग्निः समिधः यस्य सूर्यः सोमात् पर्जन्यः ओषधयः पृथिव्याम् पुमान् रेतःसिञ्चति योषितायाम् बह्वीः प्रजाः पुरुषात् सम्प्रसूताः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यस्य	= जिसके
सूर्यः	= सूर्य
च	= और
सोमात् सोमः	= चन्द्र
समिधः	= समिध हैं ऐसा
अग्निः	= स्वर्गरूपप्रथम अग्नि
तस्मात्	= उस
पुरुषात्	= परमपुरुषसे

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+सम्प्रसूतः	= उत्पन्नहोता है
च	= और
ततः	= { उसस्वर्गरूपप्रथम अग्निसे
पर्जन्यः	= मेघरूप द्वितीय अग्नि
प्रसूयते	= उत्पन्न होताहै

ततः = तिस मेघरूप द्वितीय अग्नि से	रेतः = वीर्यको
पृथिव्याम् = पृथिवीरूप तृतीय अग्निविषे	योषितायाम् = स्त्रीरूपपंचम अग्निविषे
ओषधयः = अन्नादि ओषधिमान्	सिञ्चति = सिंचन करता है
+ च = और	+ एवं क्रमेण = इस क्रमसे
ततः = ओषधियों के परिणाम से	बह्वीः = बह्व्यः = बहुत याने असंख्य
पुमान् = पुरुषरूप चतुर्थअग्नि	प्रजाः = ब्राह्मणादि सब प्रजा
सूयन्ते = उत्पन्नहोती है	सम्प्रसूताः = सम्यक्प्रकार उत्पन्न होती हैं

मूलम् ॥

तस्मादृचः सामयजूंषिदीक्षायज्ञाश्चसर्वेक्रतवो दक्षिणाश्चसंवत्सरश्चयजमानश्चलोका सोमोय त्रपवतेसूर्य्यः ६ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मात् ऋचः सामयजूंषि दीक्षाः यज्ञाः च सर्वे क्रतवः दक्षिणाः च संवत्सरम् च यजमानः च लोकाः सोमः यत्र पवते यत्र सूर्य्यः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्मात्	उसीपुरुषसे
ऋचः	ऋग्वेदके मन्त्र
साम	सामवेदकेमन्त्र
यजूंषि	यजुर्वेदकेमन्त्र
दीक्षाः	यज्ञकर्ता के नियम
सर्वेयज्ञाः	अग्निहोत्रआदि सबयज्ञसुवर्णखदिरादिस्तम्भरहित
च	और
क्रतवः	अश्वमेध आदियज्ञ स्वर्णखदिरआदि स्तम्भ सहित
दक्षिणाः	एकगोदानसे लेकरसर्वस्वदानतकदक्षिणा
च	और
संवत्सरम्	दिनरात आदिकालरूपसंवत्सरजिसकरकेयज्ञादिकर्मोंकेकालकाज्ञान होताहै
च	और
यजमानः	यज्ञादिकर्मोंकाकर्तायजमान
जायन्ते	उत्पन्न होते हैं
च	और
यत्र	जिस लोकमें
सोमः	चन्द्रमा
पवते	रहता है याने जो लोक दक्षिणायनमार्गकरकेप्राप्त होने योग्य है
च	और
यत्र	जिस लोकविषे
सूर्यः	सूर्य

+ तपति= { तपताहैयाने जोलोकउत्त रायण मार्ग करके प्राप्त होनेयोग्यहैं } | + ते = वे
लोकाः = सबलोक
+ तस्मात् = उसी
+ पुरुषात्=पुरुष से
+ जायन्ते=उत्पन्नहोते हैं

मूलम् ॥

तस्माच्चदेवाबहुधासंप्रसूताः साध्यामनुष्याःपशवोवयांसि प्राणापानौ ब्रीहियवौतपश्चश्रद्धासत्यंब्रह्मचर्यंविधिश्च ७ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मात् च देवाः बहुधा संप्रसूताः साध्याःमनुष्याः पशवः वयांसि प्राणापानौ ब्रीहियवौ तपः च श्रद्धा सत्यम् ब्रह्मचर्यम् विधिः च ७॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ | अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

च = और
तस्मात् = उसीपुरुषसे
देवाः = { यज्ञादिकर्मोंके अंगभूतऔर यज्ञभागकोग्रहणकरकेफल दानदेनेमेंसमर्थऐसे देवता }

बहुधा = { इन्द्र वसुरुद्र आदि अनेक प्रकारके }
सम्प्रसूताः } =उत्पन्न होते हैं
साध्याः = साध्य नामक देवता

मनुष्याः = कर्मद्वारादेवतों को भागदेनेवाले मनुष्य
पशवः = यज्ञोंके अंगभूत पशुमात्र
वयांसि = सबजातिकेपक्षी
प्राणापानौ = सब प्राणियों के जीवनभूत प्राण और अपान वायु
व्रीहियवौ = यज्ञोंबिषेहविर्द्रव्यके अर्थधान्य और यव
तपः = यज्ञआदिकर्मकेअंगभूतऔर पुरुषोंकेशरीरशोधक स्वाश्रमधर्म्म का आचरण

श्रद्धा = पुरुषार्थसाधकयज्ञादिकर्म बिषे आस्तिक्य बुद्धि
सत्यम् = सत्यवचन और सत्याचरण
ब्रह्मचर्यम् = ब्रह्मचर्य
च = और
विधिः = सब कर्म्मों का विधान
+एतत्सर्वम् = यह सब
+तस्मात् पुरुषात् = उसी पुरुष से
सम्प्रसूयन्ते = सम्यक्प्रकार उत्पन्न होताहै

मूलम् ॥

सप्तप्राणाः प्रभवन्तितस्मात्सप्तार्चिषः सप्तसमिधःसप्तहोमाःसप्तइमेलोकायेषुचरन्तिप्राणागुहाशयानिहिताःसप्तसप्त ८ ॥

पदच्छेदः ॥

सप्त प्राणाः प्रभवन्ति तस्मात् सप्त अर्चिषः
समिधः सप्त होमाः सप्त इमे लोकाः येषु च
प्राणाः गुहाशयाः निहिताः सप्त सप्त ८ ॥

न्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सप्त	सात
णाः	मस्तकगतप्राण याने चक्षुरादि ज्ञानइन्द्रियां
+ च	और
सप्त	सात
र्चिषः	ज्योतियांयानेस्वस्वविषयज्ञान
+ च	और
सप्त	सात
मिधः	विषय
+ च	और
सप्त	सात
मा:	होमयाने विषय भोग
+ च	और
सप्त	सात

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
लोकाः	इन्द्रियों के स्थान
येषु	जिनके बिषे
गुहाशयाः	स्वप्नावस्थामें हृदयाकाश-मध्येशयन करनेवाले
प्राणाः	प्राण
+ यान्	जिनको
सप्तसप्त	सातसातप्रकारसेप्रतिदेह
निहिताः	स्थापितकिया है स्रष्टाने
चरन्ति	विचरते हैं
+ ते	सो
इमे	ये सब
तस्मात्	उसीपुरुष से
प्रभवन्ति	उत्पन्न होते हैं

मूलम् ॥

अतःसमुद्रागिरयश्चसर्वेऽस्मात्स्यन्दन्ते सिंध
वः सर्वरूपाःअतश्च सर्वाओषधयोरसश्चयेनैषभू
तैस्तिष्ठतेह्यन्तरात्मा ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

अतः समुद्राः गिरयः च सर्वे अस्मात् स्यन्दन्ते
सिन्धवः सर्वरूपाः अतः च सर्वाः ओषधयः रसः
च येन एषः भूतैः तिष्ठते अन्तरात्मा ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अतः	उसीपुरुष से	सर्वरूपाः	गंगायमुना आदिअनेक प्रकारकी
सर्वे	सब क्षारादि-सात	सिन्धवः	नदियां
समुद्राः	समुद्र	स्यन्दन्ते	निकलती हैं
च	और	च	और
सर्वे	सबसुवर्णाच लहिमाचलादि	अतः	उसीपुरुषसे
गिरयः	पर्वत	सर्वाः	सबव्रीहीय-वादि
+प्रभवन्ति	उत्पन्न होतेहैं	ओषधयः	ओषधियां
च	और	सम्भवन्ति	उत्पन्नहोतीहैं
अस्मात्	उसीपुरुषसे		

च = और
अस्मात् = इसीपुरुषसे
रसः = मधुरआदि छै प्रकारकारस
येन = जिसकरके
एषः = यह
अन्तरात्मा = { यह अन्तर आत्मायानी लिंग शरीर }
हि = निःसन्देह

भूतैः = { स्थूल पंच महाभूतों करके परिवेष्टित }
तिष्ठते = { सबके मध्य बिषे स्थित होकर वर्द्धमानहै }
उत्पद्यते=उत्पन्न होताहै

मूलम् ॥

पुरुषएवेदंविश्वं कर्मतपो ब्रह्मपरामृतम् एतद्यो वेद निहितं गुहायां सोऽविद्याग्रन्थिंविकिरतीह सौम्य ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

पुरुषः एव इदम् विश्वम् कर्म तपः ब्रह्म परामृतम् एतत् यः वेद निहितम् गुहायाम् सः अविद्याग्रन्थिम् विकिरति इह सौम्य ॥

इति द्वितीयमुण्डके प्रथमःखण्डः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सौम्य	हे सौम्य
इदम्	यह दृश्यमान
विश्वम्	सब जगत्
पुरुषः	बाह्याभ्यंतर सत्यात्मक पुरुषरूप
एव	ही
+ अस्ति	है
+ अन्यत् नामरूपात्मकंमिथ्या	औरनामरूप सब मिथ्याहै
कर्म	निष्काम कर्म करके प्राप्य
च	और
तपः	तपरूप ज्ञान करके प्राप्य
+ यत्	जो
परामृतम्	परमअमृत
ब्रह्म	ब्रह्महै

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	सोई
एतत्	यह ब्रह्म
गुहायाम्	सब प्राणियों के हृदय बिषे
निहितम्	स्थितहै
इति	ऐसा
यः	जो पुरुष
वेद	अभेद से जानताहै
सः	वह
इह	इसी शरीर बिषे
अविद्याग्रन्थिम्	चिदजड़ ग्रन्थिको याने वासनाको
विकिरति	नाशकरता है अर्थात् जीवन्मुक्त होताहै

इति द्वितीयमुण्डके प्रथमःखण्डः ॥

मूलम् ॥

आविः सन्निहितं गुहाचरन्नाम महत्पदमत्रैत

समर्पितम् एजत्प्राणन्निमिषच्चयदेतज्जानथ स
सद्वरेण्यं परंविज्ञानाद्यद्वरिष्ठं प्रजानाम् ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

आविः सन्निहितम् गुहाचरन् नाम महत्पदम् त्र एतत् समर्पितम् एजत् प्राणत् निमिषत् च त् एतत् जानथ सदसत् वरेण्यम् परम् विज्ञा-ात् यत् वरिष्ठम् प्रजानाम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
शिष्य	= अहोशिष्य	+ तत्	= वह ब्रह्म
यत्	= जो कुछ	महत्पदम्	= सब विश्वकानिधानहै
एतत्	= यह	आविः	= बाह्याभ्यन्तरप्रकाशमान है
एजत्	= चलायमान	च	= और
प्राणत्	= प्राणवान्	सन्निहितम्	= हृदयाकाश बिषेसम्यक्प्रकारस्थितहै और
निमिषत्	= क्रियावान्	गुहाचरन्नाम	= गुहाबिषे विचरनेवालाप्रसिद्ध है
दसत्	= मूर्त और अमूर्त पदार्थ है	च	= और
सर्वम्	= सो सब	यत्	= जो कुछ
अत्र	= उसउक्तपरब्रह्म बिषे	प्रजानाम्	= मनुष्योंके
मर्पितम्	= सम्यक्प्रकार स्थितहै		
अतः	= इसी कारण		

विज्ञानात्=ज्ञानसे

परम् = { परे है याने दिव्यज्ञानकरके ही जाननेयोग्य है }

एतत् = उसको

+यूयम् = तुम सब

वरिष्ठम् = श्रेष्ठ

वरेण्यम् = नित्यजाननेयोग्यब्रह्म

जानथ = जानो

मूलम् ॥

यदर्चिमद्यदणुभ्योऽणु चयस्मिँल्लोकानिहिता लोकिनश्च तदेतदक्षरंब्रह्मसप्राणस्तदुवाङ्मनः तदेतत्सत्यंतदमृतंतद्वेद्धव्यंसौम्यविद्धि २ ॥

पदच्छेदः ॥

यत् अर्चिमत् यत् अणुभ्यः अणु यस्मिन् लोकाः निहिताः लोकिनः च तत् एतत् अक्षरम् ब्रह्म सः प्राणः तत् उ वाङ्मनः तत् एतत् सत्यम् तत् अमृतम् तत् वेद्धव्यम् सौम्य विद्धि २ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
सौम्य	= हे सौम्य
यत्	= जो
अर्चिमत्	= स्वयंप्रकाशहै
च	= और
यत्	= जो
अणुभ्यः	= परमाणुवों से भी
अणु	= अतिही सूक्ष्म है कि
यस्मिन्	= जिसबिषे

लोकाः = चतुर्दशलोक
च = और
लोकिनः = लोकनिवासी
निहिताः = स्थितहैं
तत् = सोई
एतत् = यह
ब्रह्म = ब्रह्म
अक्षरम् = अविनाशी है
सः = सोई
प्राणः = सूत्रात्माप्राणहै
उ = और
तत् = सोई
वाङ्मनः = वाणी और मनहै

तत् = सोई
एतत् = यह
सत्यम् = सत्यस्वरूप है
तत् = सोई
अमृतम् = अमृतहै
तत् = सोई
वेद्धव्यम् = भेदने याने चित्तसे भावना करने योग्यहै
+ इति = ऐसा
+ त्वम् = तू
विद्धि = जान

मूलम् ॥

धनुर्गृहीत्वौपनिषदंमहास्त्रं शरंह्युपासानिशितं सन्धयीत आयम्यतद्भावगतेनचेतसा लक्ष्यंतदेवाक्षरंसौम्यविद्धि ३ ॥

पदच्छेदः ॥

धनुः गृहीत्वा औपनिषदम् महास्त्रम् शरम् हि उपासानिशितम् सन्धयीत आयम्य तद्भावगतेन चे-

तसा लक्ष्यम् तत् एव अक्षरम् सौम्य विद्धि ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
सौम्य	हे सौम्य	सन्धीयत=सन्धय	रखकर
त्वम्	तू	तत्	उस
औपनिषदम्	उपनिषदों केविचारसे उत्पन्नहुये	अक्षरम्	अक्षरपरब्रह्म को
महास्त्रम्	अस्त्रों बिषे श्रेष्ठ ऐसे	लक्ष्यम्	लक्ष्य
धनुः	धनुषको	+कृत्वा	करके
गृहीत्वा	ग्रहण करके	+ च	और
हि	और	तद्भावगतेन	उस्की भावना करके तन्मय हुये
उपासानिशितम्	तीव्रउपासनासे उत्पन्न हुये तीक्ष्ण	चेतसा	एकाग्रचित्त से
शरम्	बाणको	एव	भलीप्रकार
+ तत्र	उसधनुष में	आयम्य	खैंचके
		+ तस्य	उस्का
		विद्धि	वेधनकर

मूलम् ॥

प्रणवोधनुःशरोह्यात्माब्रह्मतल्लक्ष्यमुच्यते अप्रमत्तेनवेद्धव्यं शरवत्तन्मयोभवेत् ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

प्रणवः धनुः शरः हि आत्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यम्

च्यते अप्रमत्तेन वेद्धव्यम् शरवत् तन्मयः भवेत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
हि	इस लक्ष्यरूपक बिषे निश्चय करके
प्रणवः	प्रणव याने ओंकार
धनुः	धनुष है
आत्मा	बुद्धिविशिष्ट चैतन्य
शरः	बाण है
लक्ष्यम्	उन दोनोंका लक्ष्य
ब्रह्म	ब्रह्म

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
उच्यते	कहाजाता है
+ तत्	वह लक्ष्य
अप्रमत्तेन	प्रमादरहित पुरुषकरके
वेद्धव्यम्	वेधनेयोग्य है
+ एवंवेद्धा	ऐसा वेधनेवाला मुमुक्षु
शरवत्	बाणवत्
तन्मयाः	तन्मय याने तदाकार
भवेत्	होजाता है

मूलम् ॥

यस्मिन्द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षमोतंमनः स
प्राणैश्चसर्वैः तमेवैकंजानथ आत्मानमन्यावा
विमुंचथ अमृतस्यैषसेतुः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

यस्मिन् द्यौः पृथिवी च अन्तरिक्षम् ओतम्
: सह प्राणैः च सर्वैः तम् एव एकम् जा-

नथ आत्मानम् अन्याः वाचः विमुञ्चथ अमृतस्य एषः सेतुः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+हेशिष्याः	अहोशिष्यो
यस्मिन्	जिसविषे
द्यौः	स्वर्ग
पृथिवी	पृथिवी
च	और
अन्तरिक्षम्	आकाश
च	और
सर्वैः	सब
प्राणैः	प्राणों
सह	सहित
मनः	मन
ओतम्	समर्पितहै याने ओतप्रोतहै
तम्	उस
एव	ही
आत्मानं	अक्षरआत्मा को
+ यूयम्	तुमसब

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एकम्	अद्वितीयब्रह्म
जानथ	जानो
यतः	क्योंकि
एषः	यह पराविद्या की उपासना
अमृतस्य	मोक्षकी प्राप्ति बिषे
सेतुः	भवसागर से पारकरने वाली सेतुहै
अन्याः	और
वाचः	अपराविद्य विषयक वा णीको यान कर्मकाण्ड को
विमुञ्चथ	त्यागो

मूलम् ॥

अराइवरथनाभौ संहतायत्रनाड्यः सएषोऽन्त

रते बहुधा जायमानः ॐमित्येवंध्यायथ आ-
ानं स्वस्तिवः पारायतमसःपरस्तात् ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

अराः इव रथनाभौ संहृताः यत्र नाड्यः सः
षः अन्तः चरते बहुधा जायमानः ॐम् इति
वम् ध्यायथ आत्मानम् स्वस्ति वः पाराय तम-
ः परस्तात् ॥

न्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

शिष्याः = अहोशिष्यो
थनाभौ = रथचक्रनाभि पिण्डिकामध्ये
अराः = अरा
इव = वत्
यत्र = जिस हृदय विषे
नाड्यः = सबदेहकी नाड़ियां
निहिताः = समर्पित हैं
+ तत्र = उस हृदयके
अन्तः = मध्यभाग विषे

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

सः = वह पूर्वोक्त
एषः = यह अविनाशीपरमात्मा
बहुधा = हर्ष दीनता-आदिअनेक उपाधियों के साथ अनेक प्रकारका
जायमानः = होताहुवा
चरते = विचरताहै
एवम् = इसप्रकार
+ यूयम् = तुम
+ तम् = उस

आत्मानम् = अविनाशी परमात्माको
ॐम् = प्रणव
इति = करके
ध्यायथ = ध्यानकरो
+ममआशीः= मेराआशीर्वाद है कि

वः = तुमसबको
तमसः = अविद्याके
परस्तात् = पक्षे
पाराय = पारजाने के लिये
स्वस्ति = निर्विघ्न क-
= ल्याणहोवै

मूलम् ॥

यःसर्वज्ञःसर्वविद्यस्यैषमहिमाभुविदिव्येब्रह्मपुरे ह्येषव्योम्न्यात्मा प्रतिष्ठितःमनोमयःप्राणशरीरनेताप्रतिष्ठितोऽन्नेहृदयंसन्निधायतद्विज्ञानेनपरिपश्यंति धीराआनन्दरूपममृतंयद्विभाति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

यः सर्वज्ञः सर्ववित् यस्य एषः महिमा भुवि दिव्ये ब्रह्मपुरे हि एषः व्योम्नि आत्मा प्रतिष्ठितः मनोमयः प्राणशरीरनेता प्रतिष्ठितः अन्ने हृदयम् सन्निधाय तत् विज्ञानेन परिपश्यन्ति धीराः आनन्दरूपम् अमृतम् यत् विभाति ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

यः = जो
आत्मा = परमात्मा

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

सर्वज्ञः = सर्वज्ञहै
सर्ववित् = सर्ववेत्ताहै

च = और
यस्य = जिसका
एषः = यह पूर्वोक्त
महिमा = ऐश्वर्य
भुवि = लोकबिषे
विख्यातः = प्रख्यातहै
+ चयः = और जो
मनोमयः = मनोमयहै
प्राणशरीरनेता = प्राणऔरशरीरकाप्रेरक है
+ च यः = और जो
हृदयम् = बुद्धिको
सन्निधाय = हृदयकमल बिषेस्थापित करके
अन्ने = भुक्तअन्न के परिणामरूपवीर्यबिषे
+ स्थितः = स्थितहोकर
प्रतिष्ठितः = स्थूलदेहसे सूक्ष्मदेह में जाने को प्रस्थानाकिये हुवे हैं
+ च = और
यत् = जो
आनन्दरूपम् = आनंदरूप
अमृतम् = अमृतरूप
विभाति = प्रकाशमान है
एषः = वह
दिव्ये = सूक्ष्मचैतन्यविशिष्ट बुद्धिकरके प्रकाशमान
ब्रह्मपुरे व्योम्नि = हृदयपुण्डरीक के आकाशबिषे
हि = निश्चय करके
प्रतिष्ठितः = स्थित है
तत् = उसको
धीराः = विवेकी पुरुष
विज्ञानेन = अनुभवसिद्ध ज्ञानद्वारा
परिपश्यन्ति = सम्यक्प्रकार देखते हैं

मूलम् ॥

भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः क्षीयन्ते चास्यकर्म्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

भिद्यते हृदयग्रन्थिः छिद्यन्ते सर्वसंशयाः क्षीयन्ते च अस्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
परावरे	= कारणकार्य रूप
तस्मिन् दृष्टे	= उसब्रह्मके अनुभवसिद्धज्ञान द्वारा साक्षात्कार होनेपर
अस्य	= इसज्ञानी के
हृदयग्रन्थिः	= अविद्यासे उत्पन्नहुये कामरूपहृदयग्रन्थि
भिद्यते	= नाशकोप्राप्त होती है
+च	= और

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+तत्नाशे	= उसके नाश होने पर
सर्वसंशयाः	= अज्ञानविषयक सब संशय
छिद्यन्ते	= नष्ट होते हैं
च	= और
+तत्नाशे	= उस संशयके नाश होनेपर
कर्माणि	= आदिसे लेकर ज्ञानोत्पत्तिपर्यंत सब कर्म
क्षीयन्ते	= क्षयको प्राप्त होते हैं

मूलम् ॥

हिरण्मयेपरेकोशेविरजंब्रह्मनिष्कलं तच्छुभ्रं ज्योतिषांज्योतिस्तद्यदात्मविदोविदुः ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

हिरण्मये परे कोशे विरजम् ब्रह्म निष्कलम् तत् शुभ्रम् ज्योतिषाम् ज्योतिः तत् यत् आत्मविदः विदुः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	जोचैतन्य
हिरण्मये	बुद्धिकरके प्रकाशमान
कोशे	हृदयकमल बिषेस्थितहै
विरजम्	अविद्यामल से रहितहै
निष्कलम्	प्राणादिसबकलावोंसे पृथक्है
तत्	वही
शुभ्रम्	शुद्धहै
+ च तत्	और वही
ज्योतिषाम्	अग्नि सूर्यादिज्योतियोंका
ज्योतिः	प्रकाशकहै
तत्	उस
ब्रह्म	ब्रह्मको
ये	जो
विदुः	जानते हैं
ते	वे
आत्मविदः	आत्मवेत्ताहैं

मूलम् ॥

नतत्रसूर्योभातिनचन्द्रतारकंनेमाविद्युतोभान्ति कुतोयमग्निः तमेवभांतमनुभातिसर्वंतस्यभासा सर्वमिदंविभाति १० ॥

पदच्छेदः ॥

न तत्र सूर्य्यः भाति न चन्द्रतारकम् न इमाः विद्युतः भान्ति कुतः अयम् अग्निः तम् एव भान्तम् अनुभाति सर्वम् तस्य भासा सर्वम् इदम् विभाति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्र	= जिसपरब्रह्म बिषे
सूर्यः	= सूर्य
न	= नहीं
भाति	= प्रकाशकरसक्ताहै
च	= और
चन्द्रतारकम्	= तारोंकेसहित चन्द्रमा
नभाति	= प्रकाशनहीं करसक्ताहै
च	= और

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इमाः	= येआकाश में चमकतीहुईं
विद्युतः	= बिजलियां
नभान्ति	= नहींप्रकाश करसक्ती हैं
तत्र	= उसबिषे
अयम्	= यहदृश्यमान
अग्निः	= अग्नि
कुतः	= कैसे
+भास्वति	= प्रकाशकरसकेगा
+यतः	= जिसकारण

इदम् = यहसूर्यच-न्द्रमाआदि	+ अतः = इसीलिये
सर्वम् = सब	इदम् = यह
तम् = उस	सर्वम् = सबजगत्
भान्तम् = प्रकाशमान के	तस्य = उसब्रह्म के
अनु = पीछे	भासा = प्रकाशकरके
भाति = प्रकाशतेहैं	एव = ही
	विभाति = प्रकाशितहोताहै

मूलम् ॥

ब्रह्मैवेदममृतंपुरस्ताद्ब्रह्मपश्चाद्ब्रह्मदक्षिणतश्चो
त्तरेणअधश्चोर्द्ध्वंचप्रसृतं ब्रह्मैवेदंविश्वमिदंवरिष्ठम्
११ द्वितीयमुण्डकेद्वितीयखंडः ॥

पदच्छेदः ॥

ब्रह्म एव इदम् अमृतम् पुरस्तात् ब्रह्म पश्चात् ब्रह्म दक्षिणतः च उत्तरेण अधः च ऊर्ध्वम् च प्रसृतम् ब्रह्म एव इदम् विश्वम् इदम् वरिष्ठम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यतः = जिसकारण	ब्रह्म = ब्रह्म
इदम् = यह	अमृतम् = अमृतरूप है

च = और
इदम् = यह ब्रह्म
प्रसृतम् = सर्वगत है
च = और
वरिष्ठम् = सबसे श्रेष्ठ है
अतः = इसीलिये
पुरस्तात् = आगे
ब्रह्म = ब्रह्म है
पश्चात् = पीछे
ब्रह्म = ब्रह्म है
दक्षिणतः = दहिने
ब्रह्म = ब्रह्म है
उत्तरेण = बायें
+ ब्रह्म = ब्रह्म है
अधः = नीचे
+ ब्रह्म = ब्रह्म है
ऊर्ध्वं = ऊपर
+ ब्रह्म = ब्रह्म है
इदम् = यह
विश्वम् = साराजगत्
ब्रह्मएव = ब्रह्मरूपही
अस्ति = है
+इतिवेदानुशासनं = { यहवेदका उपदेश है

इति द्वितीयमुण्डके द्वितीयःखंडः
इति द्वितीयमुण्डकं समाप्तम् ॥

मूलम् ॥

द्वासुपर्णासयुजासखायासमानं वृक्षंपरिषस्वजाते तयोरन्यःपिप्पलंस्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्योऽभिचाकशीति १ ॥

पदच्छेदः ॥

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानम् वृक्षम् परिषस्वजाते तयोः अन्यः पिप्पलम् स्वादु अत्ति अनश्नन् अन्यः अभिचाकशीति ॥

न्वयः	पदार्थ सहित सूक्ष्म भावार्थ
खाया = सखायौ =	परस्परमित्र
युजा=सयुजौ=	एक स्थान में मिलकर रहनेवाले
र्णा=सुपर्णौ=	शोभायमान हैं पक्ष जिनके ऐसे
= द्वौ =	दोपक्षी यानी एकलिंगोपाधि क्षेत्रज्ञ आत्मा दूसरा ईश्वर
ानम् =	एकही
वृक्षम् =	शरीररूपी वृक्षविषे
षस्वजाते =	स्थित हैं
तयोः =	उनमेंसे

अन्वयः	पदार्थ सहित सूक्ष्म भावार्थ
अन्यः =	एक तो क्षेत्रज्ञात्मा
स्वादु =	कामनोंकर के स्वादिष्ट
पिप्पलम् =	कर्मफलको
अति =	अज्ञानता से भोक्ताहै
+ च =	और
अन्यः =	दूसरा ज्ञानसंयुक्त ईश्वर
अनश्नन् =	कर्मफलकोन भोक्ता हुआ
अभिचाकशीति =	भोग्य और भोक्ता दोनों काप्रेरकहोके केवल साक्षी रूप से देखताहै

मूलम् ॥

समानेवृक्षेपुरुषोनिमग्नोऽनीशयाशोचतिमुह्यमानः जुष्टंयदापश्यत्यन्यमीशमस्यमहिमानमितिवीतशोकः २ ॥

पदच्छेदः ॥

समाने वृक्षे पुरुषः निमग्नः अनीशया शोचति मुह्यमानः जुष्टम्यदा पश्यति अन्यम् ईशस्य महिमानम् इति वीतशोकः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
समाने	= पूर्वोक्त एकही	शोचति	= शोक करताहै
वृक्षे	= शरीर रूपी वृक्ष विषे	परन्तु	= परन्तु
		यदा	= जब
निमग्नः	= विषयस्वादमें डूबाहुआ	ईशस्य	= ईश्वरके
		महिमानम्	= योगऐश्वर्यको
पुरुषः	= अविद्या आधीन जीव आत्मा	यत्	= जो कि
		जुष्टम्	= योगियों करके सेवत किया गया है
मुह्यमानः	= अविवेकसे मोहको प्राप्त होता हुआ	अन्यम्	= विलक्षण
		पश्यति	= देखता है
अनीशया	= इष्टानिष्टफल की प्राप्तिविषे अपनी असमर्थतासे	इति	= तब
		वीतशोकः	= शोकरहित
		+भवति	= होता है

नोट—ईश्वर विलक्षण है याने अकर्ता और अभोक्ता हुआ भी कर्ता और भोक्ता उपाधि के सम्बन्ध से प्रतीत होता है—

मूलम् ॥

यदापश्यतेरुक्मवर्णंकर्त्तारमीशंपुरुषंब्रह्मयोनि तदाविद्वान्पुण्यपापेविधूयनिरंजनः परमंसाम्यमुपैति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्णम् कर्तारम् ईशम् पुरुषम् ब्रह्मयोनिम् तदा विद्वान् पुण्यपापे विधूय निरञ्जनः परमम् साम्यम् उपैति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यदा	जब
पश्यः	पूर्वोक्तप्रकार ईश्वरके ऐश्वर्यको देखनेवालायहजीवात्मा
कर्तारम्	सबकाकर्ता
ईशम्	सबकाईश्वर
ब्रह्मयोनिम्	हिरण्यगर्भकाभी उत्पत्तिस्थान
रुक्मवर्णम्	स्वयंप्रकाश
पुरुषम्	परमपुरुषको

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
पश्यते	पश्यति = देखताहै
तदा	तब
+सः	वह
विद्वान्	ज्ञानीपुरुष
पुण्यपापे	पुण्यऔरपाप दोनोंकर्मोंको
विधूय	दग्धकरके
निरञ्जनः	मायामलसेनिर्मलहोताहुआ
परमम्	उत्कृष्ट
साम्यम्	अद्वैतरूपसमताको
उपैति	प्राप्तहोताहै

मूलम् ॥

प्राणोह्येषयःसर्वभूतैर्विभातिविजानन्विद्वान्भवतेनातिवादीआत्मक्रीडआत्मरतिः क्रियावानेष ब्रह्मविदांवरिष्ठः ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

प्राणः हि एषः यः सर्वभूतैः विभाति विजानन् विद्वान् भवते न अतिवादी आत्मक्रीडः आत्मरतिः क्रियावान् एषः ब्रह्मविदाम् वरिष्ठः ॥

अन्वयः	पदार्थ सहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः =	जोपरमईश्वर	ईदृशंई श्वरम् =	ऐसेईश्वरको
हि =	निश्चयकरके	विजानन् =	"अहंब्रह्मास्मि" इसभावसे जानताहुआ
प्राणः =	प्राणकाभीप्राणहै	सः =	वह
एषः =	वही	विद्वान् =	विद्वान् कि
सर्वभूतैः =	ब्रह्मासेलेकरतृणपर्यंत सबभूतोंके वाह्याभ्यंतर व्याप्यव्यापकभावकरके	आत्मक्रीडा =	आत्मामें हीहै क्रीड़ा जिसकी
विभाति =	अनेकप्रकार सेभासमान होरहाहै	आत्मरतिः =	आत्माही विषैहै प्रीतिजिसकी
		+च =	और

क्रियावान् = { ज्ञान ध्यान वैराग्यादि कोंसेसंपन्न है जो	+किन्तु = किंतु
अतिवादि = द्वैतवादि	एषः = वह
न = नहीं	ब्रह्मविदाम् = ब्रह्मवेत्तों के मध्य विषे
भवते = भवति = होता है	वरिष्ठः = श्रेष्ठ
	भवति = होता है

मूलम्॥

सत्येनलभ्यस्तपसाह्येषआत्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्य्येणनित्यम् अंतःशरीरेज्योतिर्मयोहिशुभ्रोयंपश्यन्तियतयःक्षीणदोषाः॥ ५॥

पदच्छेदः॥

सत्येन लभ्यः तपसा हि एषः आत्मा सम्यक् ज्ञानेन ब्रह्मचर्य्येण नित्यम् अन्तःशरीरे ज्योतिर्मयः हि शुभ्रः अयम् पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
नित्यम् =	नित्य	तपसाहि =	{ इन्द्रियऔर मनकीएका-ग्रतारूपी तपकरके
सत्येन =	{ सत्यवचन औरसत्य आचरणक-रके		

सम्यक्ज्ञानेन = यथार्थपरिपूर्ण ज्ञान करके
ब्रह्मचर्य्येण = नित्यब्रह्मचर्य करके
एषः = यह पूर्वोक्त
आत्मा = परमात्मा
लभ्यः = प्राप्तहोने योग्यहै
+च = और
हि = निश्चयकरके
अयम् = यहपरमात्मा
शुभ्रः = शुद्ध
ज्योतिर्मयः = स्वयंप्रकाशमान
अन्त शरीरे = हृदयाकाश विषे
वर्तते = वर्तमान है
तम् = उस परमात्मा को
क्षीणदोषाः = दोषरहित
यतयः = तीक्ष्ण व्रत धारणकरने वाले यति लोक
पश्यन्ति = आत्मभावसे देखते हैं

मूलम् ॥

सत्यमेवजयतिनानृतं सत्येनपंथाविततोदेवयानः येनाक्रमन्त्यृषयोह्याप्तकामा यत्रतत्सत्यस्यपरमं निधानम् ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

सत्यम् एव जयते न अनृतम् सत्येन पन्थाः विततः देवयानः येन आक्रमति ऋषयः हि आप्तकामाः यत्र तत् सत्यस्य परमम् निधानम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
देवयानः	= स्वर्गआदि लोकोंका
पन्थाः	= मार्ग
सत्येन	= सत्यही करके
विततः	= व्याप्तहै
येन	= जिस मार्ग्ग द्वारा
आप्तकामाः	= तृष्णारहित
ऋषयः	= सत्यदर्शी ऋषीश्वरआदि
तम्	= उसलोकको
आक्रमन्ति	= प्राप्तहोते हैं
+ च	= और
यत्र	= जहां

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सत्यस्य	= सत्यका
निधानम्	= निधानहै
तत्	= वही
परम्	= परब्रह्महै
+ अस्मात्	= इस वेद प्रमाणसे
सत्यम्	= सत्यपुरुष
जयते	= जयति = जयको पाताहै
अनृतम्	= मायावीपुरुष
हि	= कभी
न	= नहीं
+ जयति	= जयको प्राप्त होताहै

मूलम् ॥

बृहच्चतत् दिव्यमचिंत्यरूपं सूक्ष्माच्चतत् सूक्ष्मतरंविभाति दूरात्सुदूरे तदिहान्तिकेच पश्यत्स्विहैवनिहितंगुहायाम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

बृहत् च तत् दिव्यम् अचिन्त्यरूपम् सूक्ष्मात्

च तत् सूक्ष्मतरम् विभाति दूरात् सुदूरे तत् इह अन्तिके च पश्यत्सु इह एव निहितम् गुहायाम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	और	विभाति	सूर्य्य चन्द्र आदिरूपसे अनेकप्रकारका भासताहै
तत्	वह ब्रह्म	च	और
बृहत्	सर्वव्यापी होनेके कारण सबसे बड़ाहै	तत्	वह
दिव्यम्	स्वयंप्रकाश है	दूरात्सुदूरे	अविद्वानों कोदूरसेभी दूर है
अचिंत्य रूपं	मनबुद्धिकरके भी अचिंत्य है	+ च	और
च तत्	और वह	पश्यत्सु	विद्वानोंको
सूक्ष्मात्	आकाशआदि सूक्ष्म से भी	इह	इसी देहके
		अन्तिके	समीप
		एव	ही
सूक्ष्मतरम्	अतिसूक्ष्म है	गुहायाम्	बुद्धिरूपीगुहा विषे
इह	इसजगत् विषे	निहितम्	स्थित है

मूलम् ॥

नचक्षुषागृह्यतेनापिवाचानान्यैर्देवैस्तपसाकर्मणा।

ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तुतं पश्यतेनि
ष्कलंध्यायमानः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

न चक्षुषा गृह्यते न अपि वाचा न अन्यैः
देवैः तपसा कर्मणा वा ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वः
ततः तु तम् पश्यते निष्कलम् ध्यायमानः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	= वहईश्वर
चक्षुषा	= चक्षुकरके
न	= नहीं
गृह्यते	= ग्रहणकिया जासक्ताहै
वाचा	= वाणीकरके
न	= नहीं
गृह्यते	= ग्रहणकिया जासक्ताहै
च	= और
अन्यैः	= अन्य
देवैः	= इन्द्रियोंकरके
न	= नहीं
गृह्यते	= ग्रहणकिया जासक्ताहै
तपसा	= तपकरके
च	= और
कर्मणा	= अग्निहोत्रादिकर्मकरके
अपि	= भी
न	= नहीं
गृह्यते	= ग्रहणकिया जासक्ताहै
वा	= परन्तु
ज्ञानप्रसादेन	= ज्ञानके प्रसाद से
विशुद्धसत्त्वः	= अतिशुद्धहुआ है अन्तःकरण जिसकाऐसा पुरुष

ध्यायमानः = मननकरता हुआ	निष्कलं = प्राणादिक-लारहितप-रमात्माको
ततः = तदनन्तर	तु = अवश्य
तम् = उस	पश्यते=पश्यंति=देखताहै

मूलम् ॥

एषोऽणुरात्माचेतसावेदितव्योयस्मिन्प्राणःपंचधासंविवेश प्राणैश्चित्तंसर्वमोतंप्रजानां यस्मिन्विशुद्धेविभवत्येषआत्मा ९ ॥

पदच्छेदः ॥

एषः अणुः आत्मा चेतसा वेदितव्यः यस्मिन् प्राणः पंचधा संविवेश प्राणैः चित्तम् सर्वम् ओतम् प्रजानाम् यस्मिन् विशुद्धे विभवति एषः आत्मा ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यस्मिन् = जिसशरीर बिषे	संविवेश = दुग्धबिषे घृतवत् और काष्ठबिषे अग्निवत् सम्यक् प्रकार प्रविष्ट है
प्राणः = प्राण	
पञ्चधा = पांचप्रकार का होकर	

+ च = और
+ यस्मिन् = जिसशरीर विषे
प्राणैः = प्राण और इन्द्रियोंके साथ
प्रजानाम् = लोकों का
सर्वम् = संपूर्ण
चित्तम् = अंतःकरण
ओतम् = व्याप्त है
च = और
यस्मिन् = जिस
विशुद्धे = निर्मलअंतः-करण विषे

एषः = यह पूर्वोक्त
आत्मा = ईश्वर
विभवति = प्रकाशमान है
एषः = वही
अणुः = सूक्ष्म से भी सूक्ष्मऔर प्राणकाभीप्राण
आत्मा = चैतन्यरूप आत्मा
चेतसा = चित्तद्वारा
वेदितव्यः = जानने यो-ग्यहै

मूलम् ॥

यंयंलोकंमनसासंविभातिविशुद्धसत्त्वःकामय
यांश्चकामान् तंतंलोकंजायते तांश्चकामान्स्त
मादात्मज्ञंह्यर्चयेद्भूतिकामः ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

यम् यम् लोकम् मनसा संविभाति विशुद्धसत्त्वः
कामयते यान् च कामान् तम् तम् लोकम् जायते
तान् च कामान् तस्मात् आत्मज्ञम् हि अर्चयेत्
भूतिकामः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
विशुद्धसत्त्वः =	पूर्वोक्तप्रकारसे निर्मल अंतःकरण द्वाराआत्मज्ञानीपुरुष	कामयते =	इच्छाकरता है
मनसा =	चित्त करके	तम्तम् =	उस उस
यम् =	जिस	लोकम् =	लोकको
यम् =	जिस	च तान् =	औरउनउन
लोकम् =	स्वर्गादिलोक को	कामान् =	कामनाओं को
संविभाति =	अपने निमित्त या दूसरे के निमित्त संकल्पकरताहै	जायते =	प्राप्तहोताहै
च =	और	तस्मात् =	इसलिये
यान् =	जिन	भूतिकामः =	आत्मश्रेय चाहनेवाला पुरुष
कामान् =	कामनाओंको	आत्मज्ञं =	आत्मज्ञानीको
		हि =	निश्चयकरके
		अर्चयेत् =	सत्यकारशुश्रूषा नमस्कारआदि से पूजाकरे

इति तृतीयमुण्डकेप्रथमःखण्डः ॥

मूलम् ॥

सवेदैतत्परमंब्रह्म धामयत्रविश्वं निहितंभाति

शुभ्रम् उपासते पुरुषं ह्यकामास्ते शुक्रमेतदति वर्ततिधीराः ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

सः वेद एतत् परमम् ब्रह्म धाम यत्र विश्व म् निहितम् भाति शुभ्रम् उपासते पुरुषम् ये हि अकामाः ते शुक्रम् एतत् अतिवर्तन्ति धीराः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्र	जिसब्रह्मबिषे
विश्वम्	समस्त जगत्
निहितम्	ओतप्रोतहै
च	और
यत्	जो
ब्रह्म	ब्रह्म
परमम्	सर्वोत्कृष्ट
धाम	सबका आश्रयस्थान
शुभ्रम्	शुद्ध
च	और
भाति	स्वयंप्रकाश है
एतत्	उसको
सः	वह पूर्वोक्त शुद्धअन्तःकरणवाला आत्मज्ञानी पुरुष
वेद	जानता है और उसी के तद्रूप होताहै
ये	जो
धीराः	विवेकीजन
ईदृशम्	ऐसे
पुरुषम्	ज्ञानी पुरुष को

अकामाः=निष्काम होतेहुये
उपासते=उपासना करते हैं
ते = वे
एतत् = इस प्रसिद्ध
शुक्रम् = वीर्यको जो कि शरीरान्तरकाउपादानकारणहै
अतिवर्तन्ति= उल्लंघनकर जातेहैं याने वीर्य्यद्वारा फिर गर्भवास बिषे नहीं प्राप्त होते हैं

मूलम् ॥

कामान् यः कामयते मन्यमानः सकामभिर्जायतेतत्रतत्र पर्याप्तकामस्यकृतात्मनस्तु इहैवसर्वे प्रविलीयन्तिकामाः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

कामान् यः कामयते मन्यमानः सः कामभिः जायते तत्र तत्र पर्याप्तकामस्य कृतात्मनः तु इह एव सर्वे प्रविलीयन्ति कामाः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	= जो मुमुक्षु	मन्यमानः	= स्मरणकरता हुआ
कामान्	= दृष्ट अदृष्ट विषयोंकेकामनाओंको	कामयते	= भोगकरनेको इच्छाकरताहै

स: = वह

कामभिः = { अपनीकामनोंकीवासना करके

तत्रतत्र = { अनेकलोकों या योनियों बिषे

जायते = { प्राप्त होताहै यानी जन्म मरण भाव से मुक्तनहीं होताहै

च = और

तु = इसकेविपरीत

कृतात्मनः = { कृतकृत्यहुआहै आत्मा जिसका याने अपना

आत्माही परमात्माभास रहाहै जिस को ऐसे

पर्याप्तकामस्य = { परिपूर्णकाम को प्राप्तहुये निष्काम मुमुक्षुके

सर्वे = सम्पूर्ण

कामाः = कामना

इह = इसीशरीरबिषे

एव = ही

प्रविलीयन्ते = { लीनहोजाते हैं यानी वह जीवन्मुक्त होकर क्लेशों से रहितहोजाताहै

मूलम् ॥

नायमात्माप्रवचनेनलभ्योनमेधयानबहुनाश्रुतेन यमेवैषवृणुते तेनलभ्यस्तस्यैषआत्मा विवृणुतेतनूंस्वाम् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

न अयम् आत्मा प्रवचनेन लभ्यः न मेधया न

बहुना श्रुतेन यम् एव एषः वृणुते तेन लभ्यः तस्य एषः आत्मा वृणुते तनुम् स्वाम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अयम्	यह
आत्मा	परमात्मा
न	न
प्रवचनेन	वेद और शास्त्र के अध्ययनसे
न	न
मेधया	ग्रन्थधारणसमर्थ बुद्धिसे
न	न
बहुना	बहुत
श्रुतेन	श्रवणकरनेसे
लभ्यः	प्राप्तहोने योग्यहै
+ यदा	जब
एषः	यह विद्वान् मुमुक्षु
यम्	जिस परमात्माको
वृणुते	अभेद दृष्टि करके प्राप्त होनेकी इच्छाकरताहै
एषः	वह
आत्मा	परमात्मा
अपि	भी
तस्य	उस विद्वान्के निमित्त
स्वाम्	अपने
तनूम्	शरीरको
वृणुते	प्रकाश करता है
+ तदा	तब
तेन	उसअभेदपररूपर संबंध से
सः	यह परमात्मा
एव	निश्चय करके
लभ्यः	प्राप्त होनेयोग्यहै

मूलम् ॥

नायमात्माबलहीनेनलभ्योनचप्रमादात्तपसो

प्यलिंगात् एतैरुपायैर्यततेयस्तु विद्वांस्तस्यैष
त्माविशतेब्रह्मधाम ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

न अयम् आत्मा बलहीनेन लभ्यः न च प्रमादात्
पसः वा अपि अलिंगात् एतैः उपायैः यतते यः तु
द्वान् तस्य एषः आत्मा विशते ब्रह्म धाम ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
न	= न	लभ्यः	= प्राप्तहोनेयोग्य है
लहीनेन	= ब्रह्मविषेनिष्ठारूपी बलहीनपुरुषसे	तु	= परन्तु
		यः	= जो
च	= और	विद्वान्	= ब्रह्मनिष्ठ
न	= न	एतैः	= इन
मादात्	= विषयसंग के प्रमादसे	+चतुर्भिः	= चारों
वा	= और	उपायैः	= उपायोंसे याने बल अप्रमाद त्याग और ज्ञान से
न	= न		
लिंगात्	= संन्यासरहित		
तपसः	= ज्ञानसे	यतते	= उसकी प्राप्ति के साधनों में यत्न करता है
अयम्	= यह		
आत्मा	= परमात्मा		
अपि	= कभी	तस्य	= उसका

एषः = यह आत्मा = जीवात्मा धाम = सर्वका आश्रय ब्रह्म = ब्रह्म बिषे	विशते =	प्रवेशकरताहैया ने उसकाआत्मा परमात्माकेसाथ तन्मयहोजाताहै

मूलम् ॥

संप्राप्यैनमृषयोज्ञानतृप्ताः कृतात्मानोवीतरागाः प्रशान्ताः तेसर्वगंसर्वतः प्राप्यधीरायुक्तात्मानः सर्वमेवाविशंति ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

सम्प्राप्य एनम् ऋषयः ज्ञानतृप्ताः कृतात्मानः वीतरागाः प्रशान्ताः ते सर्वगम् सर्वतः प्राप्य धीराः युक्तात्मानः सर्वम् एव आविशन्ति ।

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
युक्तात्मानः =	योग बिषे आरूढ़ है चित्त जिनका	कृतात्मानः =	कृतार्थ कि[illegible] या है यानी अपने आत्माको परमात्मा समझाहैजिन्होंने
धीराः =	अत्यन्तहै विवेक जिनको		

तरागाः = दूर होगया है विषयोंमें राग जिन का

ान्तात्मा = शान्तहुये हैं मनआदिइन्द्रियांजिनके

ानतृप्ताः = आत्मज्ञान से परिपूर्ण हैं जे

ते = वे

एनम् = उस

सर्वगम् = सर्व व्यापी परमात्माको

सर्वतः = सबओर से

सम्प्राप्य = सम्यक् प्रकार प्राप्तहोके

च = और

+देहावसानम् = देहावसान को

प्राप्य = पाकर

सर्वम् = समस्त विश्व विषे

एव = निश्चय पूर्वक

अविशान्ति = सर्वात्मभावसेप्रविष्ट होते हैं

मूलम् ॥

वेदांतविज्ञानसुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगाद्यत-
ः शुद्धसत्त्वाःतेब्रह्मलोकेषुपरातकालेपरामृताःपरि
मुच्यंतिसर्वे ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

वेदांतविज्ञानसुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगात् यतयः
शुद्धसत्त्वाः ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृताः प-
रिमुच्यन्ति सर्वे ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
संन्यासयोगात्	सबकर्मों के त्यागरूपी योगसे
शुद्धसत्वाः	शुद्धहुआ है अन्तःकरण जिनका
च	और
वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः	वेदान्तके विचारसेउत्पन्नहुये आत्मज्ञान विषेहैनिश्चय जिनकोऐसे
ते	वे
सर्वे	सब
परामृताः	जीवन्मुक्त होते हुये
यतयः	यती लोक
परान्तकाले	देहके त्यागनेपर
ब्रह्मलोकेषु	ब्रह्मविषे
परिमुच्यन्ति	मुक्त होजातेहैं

मूलम् ॥

गताःकलाःपंचदशप्रतिष्ठा देवाश्चसर्वेप्रतिदेवतासुकर्माणि विज्ञानमयश्च आत्मापरेऽव्ययेसर्व एकीभवन्ति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

गताः कलाः पञ्चदश प्रतिष्ठाः देवाः च सर्वे प्रतिदेवतासु कर्माणि विज्ञानमयः च आत्मा परे अव्यये सर्वे एकीभवन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
मोक्षकाले	मोक्षकाल विषे
पञ्चदश	देहकी उत्पत्तिकेकारण प्राणादिपंद्रह
कलाः	कला
प्रतिष्ठा	अपने अपने कारणोंको
गताः	प्राप्तहोते हुये
च	और
सर्वे	चक्षुरादिइन्द्रियों विषे स्थित हुये सब
देवाः	देवता
प्रतिदेवतासु	अपने कारणआदित्यादि देवताओंविषे
गताः	प्राप्तहोते हुये
च	और
कर्माणि	संपूर्ण कर्म और उनके संस्कार
च	और
विज्ञानमय	चिदाभास विशिष्ट
आत्मा	बुद्धि
एते	ये
सर्वे	सब
अव्यये	अविनाशी
परे	परमात्मा विषे
एकीभवन्ति	एकताकोप्राप्त होते हैं

मूलम् ॥

यथानद्यःस्यन्दमानाःसमुद्रेऽस्तंगच्छन्तिनामरूपेविहायतथाविद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैतिदिव्यम् ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रे अस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय तथा विद्वान् नामरूपात् विमुक्तः परात्परम् पुरुषम् उपैति दिव्यम् ॥

अन्वयः	पदार्थ सहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थ सहित सूक्ष्म भावार्थ
यथा	= जैसे	विद्वान्	= ज्ञानीविद्वान्
स्यन्दमानः	= बहती हुई	नामरूपात्	= नाम और रूप दोनों से
नद्यः	= नदियां	विमुक्तः	= रहित होता हुआ
समुद्रे	= समुद्र विषे	दिव्यम्	= प्रकाशमान
नामरूपे	= नाम और रूप दोनोंको	परात्परम्	= अविनाशी
विहाय	= त्याग के	पुरुषम्	= पुरुष यानी ब्रह्मको
अस्तम्	= अभाव को	उपैति	= प्राप्त होता है
गच्छन्ति	= प्राप्त होतीहैं		
तथा	= तैसेही		

मूलम् ॥

सयोहवैतत्परमं ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति नास्याब्रह्म वित्कुलेभवति तरतिशोकंतरतिपाप्मानंगुहाग्रंथि भ्योविमुक्तोऽमृतोभवति ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

सः यः ह वै तत् परमम् ब्रह्म वेद ब्रह्म एव भवति न अस्य अब्रह्मवित् कुले भवति तरति

शोकम् तरति पाप्मानम् गुहा ग्रन्थिभ्यः विमुक्तः अमृतः भवति ॥

अन्वयः	पदार्थ सहित सूक्ष्म भावार्थ
हवै	निश्चयकर के
यः	जो कोई
तत्	उस
परमम्	परम
ब्रह्म	ब्रह्मको
वेद	अहंब्रह्माऽस्मिभावसे जानता है
सः	वह
ब्रह्म	ब्रह्म
एव	ही
भवति	होता है
च	और
शोकम्	शोक याने मनके संताप से
तरति	उत्तीर्णहोता है
पाप्मानम्	धर्म और अधर्म दोनोंसे
तरति	छूटजाता है
च	और
गुहाग्रन्थिभ्यः	हृदयके संशयरूपग्रन्थियों से
विमुक्तः	छूटा हुआ
अमृतः	मरण धर्म रहित
भवति	होता है
अस्य	उस विद्वान् के
कुले	कुल विषे
अब्रह्मवित्	ब्रह्मका न जानने वाला कोई
न	नहीं
भवति	होता है

मूलम् ॥

तदेतदृचाऽभ्युक्तंक्रियावन्तःश्रोत्रियाब्रह्मनिष्ठाः स्वयंजुह्वतेएकर्षिंश्रद्धयंतस्तेषामेवैतांब्रह्म विद्यांवदेतशिरोव्रतंविधिवद्यैस्तुचीर्णम् ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

तत् एतत् ऋचा अभ्युक्तम् क्रियावन्तः श्रोत्रियाः ब्रह्मनिष्ठाः स्वयम् जुह्वते एकर्षिम् श्रद्धयन्तः तेषाम् एव एताम् ब्रह्मविद्याम् वदेत शिरोव्रतम् विधिवत् यैः तु चीर्णम् ॥

अन्वयः	पदार्थ सहित सूक्ष्म भावार्थ
+ ये	जो
क्रियावंतः	यथोक्तकर्म के अनुष्ठान करने वालेहैं
श्रोत्रियाः	वेदवेदांग पारंगत हैं
ब्रह्मनिष्ठाः	परब्रह्मकेज्ञान में तत्पर हैं
श्रद्धयन्तः	श्रद्धावान् हैं
च	और
स्वयम्	अपने विषे
एकर्षिम्	एकर्षि नामक

अन्वयः	पदार्थ सहित सूक्ष्म भावार्थ
	अग्नि को
जुह्वते	जुह्वति=उपासते हैं
तु	और
यैः	जिनो करके
शिरोव्रतम्	शिरोव्रत
विधिवत्	यथा विधान
चीर्णम्	धारण किया गया है
तेषाम्	ऐसे मुमुक्षुवों के अर्थ

एताम् = इस	एतत् = इसब्रह्मविद्या केसंप्रदायका विधान
ब्रह्मवि द्याम् } = ब्रह्मविद्याको	ऋचा = मन्त्र करके
+गुरुः = गुरु	अभ्युक्तम् = प्रकाशित कियागया है॥
एव = अवश्य	
वदेत् = उपदेश करै	
तत् = इस प्रकार	

नोट—शिरोव्रत एक व्रत है जिसकी उपासनाके बलसे अथर्व वेदवाले अपने शरीराग्निको मस्तकगत करलेते हैं ॥

मूलम् ॥

तदेतत्सत्यमृषिरंगिराः पुरोवाच नैतदचीर्णव्रतोऽधीते नमः परमऋषिभ्योनमः परमऋषिभ्यः ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ॥

तत् एतत् सत्यम् ऋषिः अङ्गिराः पुरा उवाच न एतत् अचीर्णव्रतः अधीते नमः परमऋषिभ्यः नमः परमऋषिभ्यः ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत् = इस प्रकार	सत्यम् = सत्य अविनाशी पुरुष को
एतत् = इस	

अङ्गिराः = अंगिरानामक	न अधीते = अध्ययन करनेके योग्य नहीं है
ऋषिः = ऋषि	
पुरा = पहले	
उवाच = शौनकऋषि के अर्थ कहता भया	नमः परमऋषिभ्यः = विद्यासंप्रदाय के चलानेवाले जो ब्रह्मा आदि ऋषीश्वर हैं उनके अर्थ नमस्कार है
एतत् = इस सत्यबोधकशास्त्रको	
अचीर्णव्रतः = व्रत रहित पुरुष	नमः परमऋषिभ्यः = परमऋषियों के अर्थ नमस्कार है

नोट = द्वितीयवारनमस्कारअत्यन्त आदरकेअर्थ और उपनिषत् के समाप्तिके अर्थ है ॥

इतितृतीयमुण्डकेद्वितीयःखण्डःसमाप्तः।मुण्डकोपनिषत्ॐहरिःॐम्

मुण्डकोपनिषद्

शुद्धिपत्रिका

अशुद्धिः	शुद्धिः	मं.मू.भा.	पृष्ठ
अथर्व	अथर्वा	१ भा.	३
चांगिरे	चाङ्गिरे	२ मू.	३
लोका	लोकाः	६ मू.	३५
यदापश्यते	यदापश्यः पश्यते	३ मू.	५६
विद्यान्	विद्वान्	३ मू.	५६
द्वैतवादि	द्वैतवादी	४ भा.	६१
सत्यकार	सत्कार	१० भा.	६८
परात	परान्त	६ भा.	७५



आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम्। यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यर्वाक् तीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः। षट्चक्रादिविचार-सारकुशला नन्दन्ति योगीश्वरा तंवन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वे-श्वरं ज्ञानदम् २ ॥

दो० करौं वन्दना ब्रह्मको। जो अनन्त निजरूप ॥
जेहि जाने जगभ्रमसकल। मिटै अन्ध तमकूप ॥
नाम रूप जामें नहीं। नहीं जाति अरु भेद ॥
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं। रहित त्रिविध परिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद। ताका करूं विचार ॥
भाषामें तिस अर्थको। लखै सकल संसार ॥
सन्त संग से जो लख्यो। सो मैं करूं बखान ॥
परमानन्द सहाय ते। जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट। अकबर पुरहै गांव ॥
जन्मभूमि मम जान तू। जालिम सिंहहि नाव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है इसके पार होनेके लिये उपनिषत् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौकाहै जिसमें बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागर के पार होगये हैं और होते जाते हैं और भविष्यत्कालमें होंगे जो मुमुक्षुजन हैं उनके हितार्थ यह भाषा टीका रचीगई है। इसटीका में पहिले मूल मन्त्र है फिर पदच्छेदहै फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दिया है और दक्षिण हस्तकी ओर प-

दार्थसहित भाषार्थ लिखा है यदि वाम तरफ़का लिखा हुआ ऊपर से नीचेतक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा और यदि दक्षिण हस्तके तरफ़वाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्य-देशिय भाषामें मिलेगा और यदि बायेंतरफ़ से दहिने तरफ़ को पढ़ाजावे तो हर एक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलैगा जहां-तक होसका है प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्तिके अनुसार लिखागया है इस टीका के पढ़ने से संस्कृत विद्याका भी अभ्यास होगा इस टीका में मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पाया है और मन्त्रका पूरा२ अर्थ उसी के शब्दोंहीं से सिद्धकियागयाहै अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगई है हां कहीं कहीं ऊपरसे संस्कृत पद म-न्त्रके अर्थ स्पष्ट करने के लिये रक्खागया है और उसपदके प्रथम यह + चिह्न लगा दिया गयाहै ताकि पाठक जनोंको विदित हो जावे कि यह पद मूलका नहीं है। इस टीका को बाबू ज़ालिम सिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फैजाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गंगादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अल्मोड़ाख्य नगरके रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान् पुरुषों के चरणकमल में अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धताहो उससे टीकाकर्ताको सूचनाकरें ताकि अशुद्धता दूर होजावे॥

अथ माण्डूक्योपनिषद् ॥

मूल ॥

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंयदायुः १ ॥

पदच्छेद

भद्रम् कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रम् पश्येम अक्षभिः यजत्राः स्थिरैः अङ्गैः तुष्टुवांसः तनूभिः व्यशेमहि देवहितम् यत् आयुः

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
यजत्राः	= हे पूजन करनेवाले की रक्षा करने वाले	कर्णेभिः	= कानोंद्वारा
		भद्रम्	= कल्याणको
		शृणुयाम	= सुनैं हम
		च	= और
देवाः	= देवताओ	अक्षभिः	= नेत्रोंद्वारा
+ भवत्प्रसादात्	= तुम्हारे प्रसादसे	भद्रम्	= कल्याण को
		पश्येम	= देखैं हम

च = और
स्थिरैः = स्थिर याने दृढ़
अङ्गैः = अंगों करके
च = और
+स्थिराभिः = { स्थिरयाने दृढ़
तनूभिः = शरीरों करके
+युष्माकम् = आपकी
तुष्टुवांसः = सदा स्तुति करते हुवे
वयम् = हम
आयुः = आयु को
यत् = जोकि
देवहितम्- { देवतोंके लिये हित है याने यज्ञदानादिकों से देवतों का हितकरने वाला है
व्यशेमहि = प्राप्त होवैं
ॐशान्तिः शान्तिः शान्तिः = { हमारे तापत्रय याने आध्यात्मिक आधिदैवक आधिभौतिक की शांति होवै

अथ अथर्ववेदीय मांडूक्योपनिषदारम्भः ॥

मूल ॥

ॐमित्येतदक्षरमिदछं सर्वं तस्योपव्याख्यानं भूतं भवद्भविष्यदिति सर्वमोंकारएव यच्चान्यत्त्रिकालातीतं तदप्योंकारएव॥ १ ॥

पदच्छेद

ॐ इति एतत् अक्षरम् इदम् सर्वम् तस्य उप-

व्याख्यानम् भूतम् भवत् भविष्यत् इति सर्वम् ओं कारः एव यत् च अन्यत् त्रिकालातीतम् तत् अपि ओंकारः एव ॥ १ ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+यत्	= जो	भवत्	= वर्त्तमान
इदम्	= यहवाच्य वाचक अथवा शब्द शब्दार्थ	इति	= करके है
सर्वम्	= सब है	तत्	= सो
एतत्	= वह	सर्वम्	= सब
ओं	= ओंकार	ओंकारः	= प्रणवरूप
अक्षरम्	= अक्षर	एव	= ही
इति	= करके है	+अस्ति	= है
तस्य	= उसीप्रणव के	च	= और
उपव्याख्यानम्	= विशेषज्ञान द्वारा परब्रह्म के प्राप्ति का कथन	यत्	= जो
+ क्रियते	= कियाजाताहै	त्रिकालातीतम्	= कालत्रयसे पृथक्
यत्	= जो	अन्यत्	= अव्याकृतादि है
भूतम्	= भूत	तत्	= वह
भविष्यत्	= भविष्यत	अपि	= भी
		ओंकारः	= प्रणवरूप
		एव	= ही
		अस्ति	= है

मूल ॥

सर्वंह्येतद्ब्रह्मायमात्मा ब्रह्म सोयमात्मा चतु
ष्पात् ॥ २ ॥

पदच्छेद

सर्वम् हि एतत् ब्रह्म अयम् आत्मा ब्रह्म सः अयम् आत्मा चतुष्पात् ॥ २ ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एतत्	= यह
सर्वम्	= सब
ब्रह्म	= ॐकाररूप ब्रह्म है
+ तत्	= वही
अयम्	= यह
ब्रह्म	= ब्रह्म
आत्मा	= प्रसिद्ध आत्मा हृदयाकाशविशेष स्थितहै
च	= और
सः	= वह
हि	= ही
अयम्	= यह
आत्मा	= आत्मा
चतुष्पात्	= विश्व तैजस प्राज्ञ और तुरीय के भेद से चार पाद वालाहै

मूल ॥

जागरितस्थानोबहिःप्रज्ञः सप्तांगएकोनविंशति-
मुखः स्थूलभुग्वैश्वानरः प्रथमः पादः॥ ३ ॥

पदच्छेद

जागरितस्थानः बहिः प्रज्ञः सप्ताङ्गः एकोनविंशतिमुखः स्थूलभुक् वैश्वानरः प्रथमः पादः ३

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
जागरितस्थानः =	जाग्रत्अवस्था है स्थानजिसका	एकोनविंशतिमुखः =	उन्नीस हैं मुखजिसके
बहिःप्रज्ञः =	बाह्य विषयोंविषेहै बुद्धि जिसकी	स्थूलभुक् =	शब्दादि स्थूलविषयों का भोक्ता है जो
सप्ताङ्गः =	सातहैं अंग जिसके	+ तत् =	सो
		प्रथमः =	प्रथम
		पादः =	पाद
		वैश्वानरः =	वैश्वानर है

नोट—सप्ताङ्गः (१) मस्तक स्थानी स्वर्गलोक (२) नेत्रस्थानी सूर्य (३) प्राणस्थानी वायु (४) मध्य देहस्थानी आकाश (५) मूत्रस्थानी जल (६) पादस्थानी पृथिवी (७) मुखस्थानी अग्नि

एकोनविंशतिमुखः ५ कर्मेन्द्रिय ५ ज्ञानेन्द्रिय ५ प्राण मन बुद्धि चित्त और अहंकार ॥

मूल ॥

स्वप्नस्थानोऽन्तःप्रज्ञःसप्तांगएकोनविंशतिमुखः प्रविविक्तभुक्तैजसोद्वितीयःपादः ॥ ४ ॥

पदच्छेद

स्वप्नस्थानः अन्तःप्रज्ञः सप्ताङ्गः एकोनविंशति मुखः प्रविविक्तभुक् तैजसः द्वितीयः पादः

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
स्वप्नस्थानः	= स्वप्न अवस्थाहै स्थान जिसका
अन्तः प्रज्ञः	= अन्तर्मुख है प्रज्ञा जिस की
सप्ताङ्गः	= पूर्वोक्त सात हैं अंग जिसके
एकोनविंशतिमुखः	= पूर्वोक्त उन्नैस हैं मुख जिसके
प्रविविक्तभुक्	= अंतःकरणकी वृत्ति द्वारा वासनामय सूक्ष्म [illegible]गों का भो[illegible]क्ता है जो
तत्	= सो
द्वितीयः	= दूसरा
पादः	= पाद
तैजसः	= तैजस नाम वाला है

नोट ॥ तैजसः—अग्नि अथवा सूर्य की अपेक्षा न करके अपने प्रकाशरूप तेज से सूक्ष्म भोगों का भोक्ता स्वप्न अवस्था विषे है जो सो कहिये तैजस—

मूल ॥

यत्रसुप्तोन कंचन कामं कामयते न कंचनस्वप्नं

पश्यति तत्सुषुप्तम् सुषुप्तस्थानएकीभूतः प्रज्ञानघन एवानंदमयोह्यानन्दभुक् चेतोमुखः प्राज्ञस्तृतीयःपादः ५ ॥

पदच्छेद

यत्र सुप्तः न कञ्चन वेद कामम् कामयते न कञ्चन स्वप्नम् पश्यति तत् सुषुप्तम् सुषुप्तस्थानः एकीभूतः प्रज्ञानघनः एव आनन्दमयः हि आनन्दभुक् चेतोमुखः प्राज्ञः तृतीयः पादः ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्र	जिस कालविषे
सुप्तः	सोयाहुवा पुरुष
नकञ्चन	न किसी स्थूल या सूक्ष्म भोग को
वेद	जानता है
+ च	और
नकञ्चन	न किसी
कामम्	कामना को
कामयते	चाहता है
नकञ्चन	न किसी
स्वप्नम्	स्वप्नको
पश्यति	देखता है
तत्	वह
सुषुप्तम्	सुषुप्ति अवस्था का लक्षण है
सुषुप्तः स्थानः	सुषुप्तिहै स्थान जिसका
एकीभूतः	एक रसहै जो
प्रज्ञान घनः	अविद्या करके आच्छादित है प्रज्ञा जिसकी
आनन्द मयः	आनन्दमय हुआ
एवहि	अवश्य

आनन्द भुक् =	आनन्द का भोक्ता है जो	तत् = सो
		तृतीयः = तीसरा
चेतो मुखः =	बोद्धस्वरूप है जो	पादः = पाद
		प्राज्ञः = प्राज्ञनाम वाला है

मूल

एष सर्वेश्वर एष सर्वज्ञ एषोऽन्तर्याम्येष योनिः सर्वस्य प्रभवाप्ययौ हि भूतानाम् ॥ ६ ॥

पदच्छेद

एषः सर्वेश्वरः एषः सर्वज्ञः एषः अन्तर्यामी एषः योनिः सर्वस्य प्रभवाप्ययौ हि भूतानाम् ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
एषः =	यही प्राज्ञ जब उपाधि माया कोत्यागके अपने चैतन्य स्वरूप विषे स्थित होता है	एषः =	यही
		सर्वज्ञः =	सर्वज्ञ है
		एषः =	यही
		अन्तर्यामी =	अन्तर्यामी है
		एषः =	यही
+ तदा =	तब	सर्वस्य =	सब का
सर्वेश्वरः =	सब का ईश्वर है	योनिः =	आदिकारण है

एषः हि = यही		प्रभवा प्ययौ =	उत्पत्ति और लयका स्थानहै
भूतानाम् = संपूर्ण भूतोंके			

मूल

नान्तःप्रज्ञंनबहिःप्रज्ञं नोभयतःप्रज्ञं न प्रज्ञानघनं नप्रज्ञंनाप्रज्ञं अदृष्टमव्यवहार्य्यमग्राह्यमलक्षणमचिंत्यमव्यपदेश्यमेकात्म्यप्रत्ययसारं प्रपंचोपशमं शान्तंशिवमद्वैतंचतुर्थंमन्यंतेसआत्मासविज्ञेयः७॥

पदच्छेद

न अन्तःप्रज्ञम् न बहिः प्रज्ञम् न उभयतःप्रज्ञम् न प्रज्ञानघनम् न प्रज्ञम् न अप्रज्ञम् अदृष्टम् अव्यवहार्यम् अग्राह्यम् अलक्षणम् अचिंत्यम् अव्यपदेश्यम् एकात्म्यप्रत्ययसारम् प्रपञ्चोपशमम् शान्तम् शिवम् अद्वैतम् चतुर्थम् मन्यन्ते सः आत्मा सः विज्ञेयः ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ यम् =	जिस	अन्तः प्रज्ञम् =	तैजससंज्ञक
चतुर्थम् =	चतुर्थ पाद तुरीयको	न =	न
न =	न	उभयतः प्रज्ञम् =	जाग्रत् स्वप्न दोनों के मध्य अवस्थावाला
बहिः प्रज्ञम् =	विश्वसंज्ञक	न =	न
न =	न		

प्रज्ञानघनम् = प्राज्ञसंज्ञक
न = न
प्रज्ञम् = ज्ञानस्वरूप
न = न
अप्रज्ञम् = अज्ञानस्वरूप
अदृष्टम् = नदेखनेयोग्य
अव्यवहार्यम् = न व्यवहार के योग्य
अग्राह्यम् = नकर्मेन्द्रियों करके ग्रहण करने योग्य
अलक्षणम्=नलिंगरूप
अचिंत्यम् = न चिन्ता करने योग्य
अव्यपदेश्यम् = न शब्द करके कहने योग्य
प्रपंचोपशमम् = सृष्टि से पृथक्
शान्तम् = राग द्वेषादि रहित
शिवम् = कल्याणरूप
अद्वैतम् = द्वैतरहित
एकात्म्यप्रत्ययसारम् = जाग्रत् आदि चारों अवस्था बिषे एक
मन्यंते = मानते हैं
सः सः आत्मा = वही आत्मा
विज्ञेयः = जाननेयोग्य है

मूल ॥

सोऽयमात्मा अध्यक्षरमोंकारोऽधिमात्रं पादामात्रामात्राश्च पादाअकारउकारोमकार इति ८॥

पदच्छेद

सः अयम् आत्मा अध्यक्षरम् ॐकारः अधिमात्रम् पादाः मात्राः मात्राः च पादाः अकारः उकारः मकारः इति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ यः	जो
आत्मा	चतुष्पादवाला आत्माहै
सः	सोई
अयम्	यह
ॐकारः	ॐकार
अध्यक्षरम्	अक्षर बिषे स्थितहै
स ॐकारः	वही ॐकार
अधिमात्रम्	मात्रा बिषे स्थितहै
+ ताःमात्राः	वेमात्रा

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अकारः	अकार
उकारः	उकार
मकारः	मकार
इति	करके
+स्थिताः	स्थितहैं
अतः	इसीकारण
मात्राः	मात्राही
पादाः	पादहैं
च	और
पादाः	पादही
मात्राः	मात्राहैं

मूल ॥

जागरितस्थानो वैश्वानरोऽकारः प्रथमामात्राऽऽप्तेरादिमत्वाद्वाऽऽप्नोति हवै सर्वान्कामानादिश्चभवति य एवं वेद ॥ ९ ॥

पदच्छेद

जागरितस्थानः वैश्वानरः अकारः प्रथमा मात्रा आप्तेः आदिमत्वात् वा आप्नोति हवै सर्वान् कामान् आदिः च भवति यः एवम् वेद ॥ ९ ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
आप्तेः	व्याप्ति के कारण
+ च	और
आदिमत्त्वात्	प्रथमहोने के कारण
जागरितस्थानः	जाग्रतवाला
वैश्वानरः	वैश्वानर
वा	ही
अकारः	अकाररूप
प्रथमा	प्रथम
मात्रा	मात्राहै
यः	जो प्रथम मात्रा का उपासक
हवै	निश्चयकरके
एवम्	इसप्रकार अकार और वैश्वानर के अभेद को
वेद	जानताहै
सः	वह
सर्वान्	सम्पूर्ण
कामान्	कामनाओं को
आप्नोति	प्राप्त होताहै
च	और
आदिः	ज्येष्ठ श्रेष्ठों के मध्य प्रतिष्ठा वाला
भवति	होताहै

मूल ॥

स्वप्नस्थानस्तैजस उकारोद्वितीयामात्रोत्कर्षा-दुभयत्वाद्वोत्कर्षति हवैज्ञानसन्ततिं समानश्चभ-वति नास्याऽब्रह्मवित्कुलेभवति यएवंवेद ॥ १० ॥

पदच्छेद

स्वप्नस्थानः तैजसः उकारः द्वितीया मात्रा उत्क-

र्षात् उभयत्वात् वा उत्कर्ष[ति] ह वै ज्ञानसन्तान्तिम् स-मानः च भवति न अस्य अब्रह्मवित् कुले भवति यः एवम् वेद ॥ १० ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
उत्कर्षात्	प्रथम मात्रा से उत्कृष्टहोने के कारण
वा	और
उभयत्वात्	अकार और मकारके मध्य बिषे स्थित होने के कारण
उकारः	उकार
स्वप्न स्थानः	स्वप्नस्थानी
तैजसः	तैजस
द्वितीया	दूसरी
मात्रा	मात्राहै
यः	जो उपासक
एवम्	इसप्रकारउ-कार और तै-जस की ए-कताको
वेद	जानताहै
सः	वह उपासक
ज्ञानस-न्तन्तिम्	ज्ञानकी वृ-द्धिको
उत्कर्षति	बढ़ाताहै
च	और
समानः	शत्रु मित्रा-दिकों से सम भाववाला
भवति	होताहै
+ च	और
अस्य	उसके
कुले	कुल बिषे
+ कश्चित्	कोई
अब्रह्मवित्	ब्रह्म का न जानने वाला
न	नहीं
भवति	होताहै



सुषुप्तस्थानःप्राज्ञो मकारस्तृतीयामात्रामितेरपीतेर्वा मिनोति हवा इदꣳ सर्वमपीतिश्चभवति यएवं वेद ॥ ११ ॥

पदच्छेद

सुषुप्तस्थानः प्राज्ञः मकारः तृतीया मात्रा मितेः अपीतेः वा मिनोति हवा इदम् सर्वम् अपीतिः च भवति यः एवं वेद ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
मितेः	= अकार और उकार अथवा विश्व और तैजस मकार या प्राज्ञ बिषे लीन होकर उत्पन्न होने से
वा	= और
अपीतेः	= अज्ञानरूप कारण तीनों अवस्थाओं बिषे एक होनेसे अथवा अकार उकार मकार की एकता होने से

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सुषुप्तस्थानः	= सुषुप्ति अवस्था वाला
प्राज्ञः	= प्राज्ञ
मकारः	= मकाररूप
तृतीया	= तीसरी
मात्रा	= मात्रा है
यः	= जो उपासक
एवम्	= इस प्रकार
वेद	= जानता है
हवै	= निश्चय करके
+ सः	= वह
इदम्	= इस
सर्वम्	= सारे जगत्को

मिनोति = यथार्थ जानताहै	अपीतिः = जगत् का कारणरूपआत्मा
च = और	भवति = होताहै

मूल ॥

अमात्रश्चतुर्थोऽव्यवहार्य्यःप्रपंचोपशमः शिवो-द्वैत एवमोंकार आत्मैवसंविशत्यात्मनाऽऽत्मानं य एवं वेद य एवं वेद ॥ १२ ॥

पदच्छेद

अमात्रः चतुर्थः अव्यवहार्य्यः प्रपञ्चोपशमः शिवः अद्वैतः एवम् ॐकारः आत्मा एव संविशति आत्मना आत्मानम् यः एवम् वेद यः एवम् वेद

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एवम्	= उक्तप्रकार	शिवः	= कल्याण स्वरूप
अमात्रः	= अमात्र	अद्वैतः	= द्वैतरहित
चतुर्थः	= रीय	आत्मा	= आत्मरूप
अव्यवहार्यः	= मन और वाणी का अगम्य	ॐकारः	= ॐकार है
प्रपञ्चोपशमः	= सकारण प्रपंच का नाशक	यः	= जो उपासक
		एवम्	= इस प्रकार
		वेद	= जानता है
		यः	= जो उपासक

एवम् = इस प्रकार	एवम् = निःसंदेह
वेद = जानता है	संविशति = { लीन होता है याने ब्रह्मरूपही होजाता है
सः = वह	
आत्मना = आत्माकरके	
आत्मानम् = आत्मा बिषे	

इतिमांडूक्योपनिषत्समाप्ता ॥

भी ऊपर लिखे हुये के अनुसार भावार्थ स्पष्ट कियागया और स-मझने की सुगमताके लिये गुरु शिष्य सम्बाद पूर्बक पूर्ण ज्ञान लखाया है ॥

मुंडकउपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत =)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित—जिसमें वादी प्रतिवादी के प्रश्नोत्तर से ब्रह्मका निर्णय व जगदु-त्पत्ति व प्रत्येक अन्नादि का संभव व अग्निहोत्रादि क्रियाओंका विधान मन्त्रों द्वारा बर्णित है ॥

तैत्तिरीयोपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत।—)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीकासहित—जिस में तैत्तिरीय शाखा के प्रकट होनेका उदाहरण और स्वरमात्रा व बुर्णों के उच्चारणकी शिक्षाका नियम व बर्णों के संबन्धरूप संहि-ताकी उपासना व बुद्धि व लक्ष्मीकी कामनावाले पुरुषोंके अर्थ साधन जप और हवनादि की क्रियायें बर्णित हैं ॥

ऐतरेयोपनिषद् भाषाटीकासहित, क़ीमत =)॥।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित—जि-समें आत्मा व ब्रह्मका निरूपण और प्राण व प्रणवकी उपासना की व्याख्या व संन्यासादि आश्रमों के लक्षण व धर्म अच्छे प्र-कार बर्णित हैं ॥

उपनिषद् सार, क़ीमत —)॥ पु०

मुंडक, मांडूक्य, तैत्तरीय, ऐतरेय, श्वेताश्वर, ईशावास्य, केन, कठ, प्रश्न, छांदोग्य, बृहदारण्यक, कौषीतकि, ब्राह्मण और मैत्री की भाषा टीका राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्दने रचनाकर अपने पुत्र पौत्र मित्र बान्धव योग्य अधिकारियों के निमित्त छपवायाहै।

छान्दोग्य उपनिषद् भाषा टीका, क़ीमत ॥≈)॥

पंडित यमुनाशङ्करजी कृत टीका भाषा ॥

ब्राह्मधर्मदोखंड में, ग़ैरमतबा क़ीमत १) पु०

तथा प्रथमखंड ग़ैर मतबा क़ीमत ॥≈) पु०

तथा द्वितीयखंड ग़ैर मतबा क़ीमत ।≈) पु०

यह अत्युत्तम उपनिषद् है इसको पंडित लक्ष्मणप्रसादजी ने बंगाली भाषा से हिन्दी भाषा में उल्थाकिया है मूलश्लोक और भाषा टीका समेत है ॥

(वेदान्त)

योगवाशिष्ठ दोभागों में, क़ीमत ५॥) पु०

श्रीमद्भागवत भाषाटीकासंयुक्त ७) रु० पु० ॥

इस ग्रन्थ के उत्तम होनेमें कदापि सन्देह नहींहै–इसका भाषा तिलक ब्रजबोली में बहुतही प्याराहै आशय प्रत्येक श्लोकों का है क्यों न हो इस के तिलककार महात्मा ब्रजवासी अङ्गदजी शास्त्रीहैं–यह तिलक ऐसा सरलहै कि इसके द्वारा अल्प संस्कृतज्ञ पुरुषों का पूराकार्य निकल सक्काहै–संस्कृत पाठकभी इससे श्लोकोंका पूराआशय समझ सक्केहैं इसबार यह ग्रन्थ टैपके अक्षरों में उम्दा काग़ज़ सफ़ेद चिकना में छापागयाहै और विशेष विद्वान् शास्त्रियों के द्वारा शुद्ध कराया गया है जिससे बम्बई की छपीहुई पुस्तकसे किसी काम में न्यून नहीं है उम्दा तसावीर भीप्रत्येक स्कन्धमें युक्तहैं–आशाहै कि इस अमूल्य रत्न के लेने में महाशय लोग विलम्ब न करैंगे ॥
